इतिहासकार जेम्स टॉड

व्यक्तित्व एव कृतित्व

सम्पादक
डॉ हुकमसिंह भाटी
निदेशक
प्रताप शोध प्रतिष्ठान उदयपुर





प्रकाशक
प्रताप शोध प्रतिष्ठान
विद्या प्रचारिणी सभा भूपाल नोबल्स संस्थान उदयपुर
(राजस्थान)

प्रकाशक
प्रताप शोध प्रतिष्ठान
उदयपुर 313 001

प्रथम संस्करण 1992

मूल्य 150 रु

सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन

मुद्रक
अनुग्रह प्रिन्टर्स
उदयपुर

विषय–सूची

आमुख

ढाई दशक पूर्व प्रताप शोध प्रतिष्ठान की स्थापना के समय जो सपना ठा. स्वरूपसिंहजी व गुमानसिंहजी ने संजोया था वह अब साकार होता जा रहा है। यह विशेष हर्ष का विषय है कि इस वर्ष प्रतिष्ठान के तत्वावधान में इतिहास, साहित्य व संस्कृति से जुड़ी हुई निम्नलिखित आठ योजनाएं क्रियान्वित हो रही हैं --

1- मेवाड़ के राजस्थानी ऐतिहासिक ग्रंथों का सर्वेक्षण
2- मेवाड़ के पट्टे - परवानों का प्रकाशन
3- पाण्डुलिपियों का परिरक्षण
4- पाण्डुलिपियों की खरीद
5- दुर्लभ पाण्डुलिपियों का जेराक्स
6- प्रताप शोध प्रतिष्ठान के ग्रंथों का सूचीकरण
7- मेवाड़ के अभिलेखों का सम्पादन
8- 'महाराणा भीमसिंह जागीरदारां रे गांव पट्टां री हकीकत बही' का सम्पादन

इसके लिये भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद नई दिल्ली और भारत सरकार राष्ट्रीय अभिलेखागार दिल्ली की ओर से 1 35,000/- रु का अनुदान मिला है। इन योजनाओं के माध्यम से प्रतिष्ठान में सैकड़ों मूल पट्टे परवानों व महत्वपूर्ण दस्तावेजों के अतिरिक्त भींडर, गोगूंदा और कानोड़ आदि ठिकानों की प्राचीन बहियों, पोथियों का संग्रह हो चुका है और ग्रंथों के सम्पादन व प्रकाशन का काम प्रगति के पथ पर है। यह विशेष संतोष का विषय है कि प्रतिष्ठान के निदेशक डॉ. हुकमसिंह भाटी निष्ठापूर्ण इस कार्य में संलग्न हैं। भूपाल नोबल्स संस्थान, अनुसंधान के इस केन्द्र को विराट स्वरूप देने के लिये कृत संकल्प है।

इस पुस्तक में इतिहासकार जेम्स टॉड के व्यक्तित्व एवं कृतित्व सम्बन्धी विद्वानों के आलेख संजोये गये हैं। इससे शोधार्थियों को [illegible] विषयक मार्गदर्शन व प्रेरणा मिलेगी ऐसा मेरा विश्वास है। प्रतिष्ठान की प्रवृत्तियों से जुड़े सभी विद्वानों व संस्थाओं का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

कुं. मनोहरसिंह कृष्णावत
प्रबन्ध निदेशक
भूपाल नोबल्स संस्थान, उदयपुर

सम्पादकीय

गौरवमय इतिहास और उज्ज्वल संस्कृति के बेजोड़ संगम वाले हमारे राजस्थान के कई विद्वानों को इतिहास अनुसंधान व लेखन की ओर प्रेरित किया जिससे इस वीर-वसुंधरा पर राजस्थानी गद्य पद्य में इतिहास लेखन की प्रवाहमयी धारा स्फुटित हुई। इस वाङ्मय धारा ने एक विदेशी विद्वान जेम्स टाड को इतिहासकारों की कड़ी में जोड़कर इतिहास के शोध खोज कार्य में सर्वथा क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया। दूसरे शब्दों में यह कह सकते हैं कि यहाँ ख्यात बात वंशावली हाल हकीकत बीगत याद्दाश्त वचनिका रासो रूपक झूलणा दवावैत आदि रचनाओं में विशिष्ट योद्धाओं और रजवाड़ों का इतिहास कलमबद्ध करने की पुख्ता परम्परा रही और इसी परम्परा ने हमारे राजस्थान के इतिहास को जिलाए रखा। जेम्स टाड ने इस परम्परागत इतिहास लेखन को आधुनिक स्वरूप दिया और सर्वप्रथम वैज्ञानिक ढंग से इतिहास लिखकर उसने इतिहास आयाम के अनेक द्वार खोल दिए।

व्यक्ति जो पुरुषार्थी होते हैं और जिनमें कुछ कर दिखाने की भावना प्रबल होती है ऐसे पुरुष बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी कहलाने के भागीदार हो जाते हैं। टाड इसका एक अनुपम उदाहरण है। उसने एक ओर जहाँ राजनैतिक प्रतिनिधि के रूप में कुशल प्रशासक की भूमिका निभाई तो दूसरी ओर राजपूताना के भूगोल व इतिहास का गहराई से अध्ययन कर इतिहासवेत्ता के रूप में अपना परिचय दिया।

टाड ने राजस्थान का इतिहास क्यों लिखा ? इस बिन्दु पर विचार करें और यहाँ के इतिहास लेखन की परम्परा पर अपनी दृष्टि डालें तो मुख्यतः तीन बातें हमारे सामने आती हैं —

1– टाड की इतिहास के प्रति अभिरुचि
2– राजस्थान का गौरवमय इतिहास
3– इतिहास सामग्री की विपुलता

टाड जन्मजात इतिहासज्ञ था। बचपन से ही इतिहास के प्रति उसकी गहरी रुचि थी। उसने अठारह वर्ष की आयु में ही यूरोप के इतिहास का ज्ञान अर्जित कर लिया था। भारत में पाँव रखते ही उसने यह विचार किया कि राजपूत जाति के सम्बन्ध में जिसका ज्ञान यूरोप के लोगों को नहीं है उसे उजागर किया जाना समूचे मानव समाज के लिए हितकर होगा। वह जब मेवाड़ में आया और राजस्थान के इतिहास की गौरव गाथाओं से उसका परिचय हुआ तो उसके हृदय में इतिहास जानने की जिज्ञासा और प्रबल हो गई। सही अर्थों में देखा जाय तो यहाँ के

गौरवमय इतिहास ने टॉड को अपनी ओर आकृष्ट किया। टाड को यहा की ख्यातें बातें व वंशावलियें और प्रशस्तियें इतिहास की घटनाओं से रची हुई मिली जिसमे उसके मन मे इतिहास लेखन की धारणा और गहरी हो गई। इतिहास सामग्री की विपुलता ने उसके कार्य को सुगम बना दिया।

इतिहास लेखन का प्रथम चरण है सामग्री सकलन। टाड इसके महत्व को भलीभाति पहचानता था। उसने राजस्थान के रजवाडो मे घूम कर और चारण व भाटो से सम्पर्क साध कर पाडुलिपियो व प्रकाशित ग्रन्थों के अलावा शिलालेख ताम्रपत्र ताडपत्र सिक्के आदि इतिहास - विषयक विपुल सामग्री सग्रहीत की। उसने यह सिद्ध कर दिया कि यहा इतिहास लेखन के साधनो का अभाव नही है क्योकि चार्ल्स ग्राट और जेम्स मिल जैसे इतिहासकारों की यह मान्यता रही थी कि यहा न तो कोई इतिहास ग्रन्थ है और न ही लोगो मे बौद्धिक परिपक्वता। टाड ने अथक परिश्रम कर इन पूर्ववर्ती विद्वानो की धारणा का खण्डन कर दिया। टाड ये सामग्री लदन ले गया और एनल्ज रचना के बाद रायल एशियाटिक सोसायटी को भेंट कर अपनी सूझ-बूझ व उदारता का परिचय दिया

टाड ने अपने गुरु यती ज्ञानचन्द से प्राचीन शिलालेख ताम्रपत्र आदि समझने मे सहायता ली। इसके अलावा उसने पण्डितों व चारण विद्वानो से यहा के परम्परागत रीति रिवाजो सास्कृतिक पहलुओ और इतिहास घटनाओ की जानकारी अर्जित कर बारीकी से इतिहास के मर्म को पहचानने का प्रयास किया। जिससे उसका ग्रन्थ केवल घटनाओ का लेखा जोखा ही नही बल्कि राजस्थान के अतीत का एक कोश बन गया। उसने हर घटना पर चिन्तन करते हुए अपने विचार दिए हैं इतिहास सम्बन्धित कई जटिल प्रश्नो के उत्तर दिए है, प्रत्येक युद्ध के कारणो और परिणामो पर टिप्पणी की है तथा घटनाओ के साथ साथ अपनी लेखनी को भी साथ लिया है जिससे वृतात सजीव व मौलिक बन पड़ा है।

इतिहास के प्रति उसका दृष्टिकोण व्यापक रहा है। उसने अतीत मे गोता लगाकर युद्ध अभियानों के अलावा राजा महाराजाओ के क्रिया-कलापो उनके जीवन आदर्शों, यहां कि सास्कृतिक सोपानों धार्मिक विचारों, सामाजिक मान्यताओ, प्राकृतिक प्रभावो भौगोलिक तथ्यो और आर्थिक पहलुओ आदि मानव जीवन से जुडे हर पहलू का सूक्ष्म अध्ययन कर इतिहास रचना-पद्धति को एक नयी दृष्टि दी। यहां की ख्यातो व बातो में केवल घटनाओ का विवरण मिलता है टॉड ने अपने विवेक से न केवल घटनाओं का विश्लेषण कर उसे इतिहास का स्वरूप दिया बल्कि इतिहास लेखन मे यह के स्थानीय स्रोत किस प्रकार उपयोगी सिद्ध हो सकते है इस ओर

हमारा ध्यान आकृष्ट कराया। इतिहासकार नैणसी के बाद इतिहास लेखन के क्षेत्र जो भारी रिक्तता आ गई थी टॉड ने उसको भरने का प्रयास किया।

उसने इतिहास रचना के आयाम में चित्र अंकन को स्थान दिया। वस्टीन वाय और घासी नाम के दक्ष चित्रकारो से दुर्ग, महल व मन्दिर आदि भवनो के चित्र बनवाने का काय सम्पादित करवाया। इस पहलू ने उसके ग्रन्थो में सजीवता ला दी।

टॉड ने राजनैतिक इतिहास के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक व सांस्कृतिक पहलुओं को उजागर का सफल प्रयास किया। इसके लिए उसने स्थानीय समाज रचना का बारिकी से अध्ययन किया और विशेषत राजपूत जाति और जागीरदारी प्रथा के बारे में अपने मत दिये और लोगो के संस्कारो, विश्वासो धार्मिक और सामाजिक रीति-रिवाजो की स्पष्ट व्याख्या करते हुए समाज एव संस्कृति की निरंतरता को उद्घाटित करने का प्रयास किया जिससे उसका एनल्स राजपूत जाति व समाज का कोश बन गया। यहा की संस्कृति से वह कितना प्रभावित था इसका प्रतिबिम्ब उसके व्यक्तिगत-वृतांत (Personal Narrative)[1] में देखा जा सकता है।

यह इतिहासकार होने के साथ कुशल प्रशासक भी था 1888 ई में जब मेवाड में उसकी नियुक्ति राजनैतिक प्रतिनिधि के रूप में की गई उस समय मेवाड की स्थिति बडी सोचनीय थी। पिंडारियों व लूटेरो की लूटमार के कारण कृषि, उद्योग धन्धे और व्यापार चौपट हो गये थे और मेवाड राज्य आर्थिक सकट से गुजर रहा था। मेवाड के जागीरदार न केवल महाराणा की आज्ञाओं की अवहेलना करने लग गए थे बल्कि इन्होंने खालसा गावों पर अधिकार जमा लिया था। ऐसी विकट परिस्थिति में सुधार लाने हेतु उसने महत्वपूर्ण कदम उठाए। लूटेरों का दमन किया, व्यापारियों को निमत्र पत्र जारी किये और मेवाड जागीरदारों के साथ कौलनामा कर महाराणा व उमरावों के बीच मेल स्थापित करने का प्रयास किया। इसके लिए उसने अपने सम्बन्ध यहा के जागीरदारो से बनाए और उनको अपने विश्वास में लिया। जागीर पट्टों की जाच पडताल कर उनका नवानीकरण किया। एक बात यह विचारणीय है कि दूसरे अग्रेज अधिकारियों की भाति उसने नियमों को लागू करने में कभी बल का प्रयोग नहीं किया और अल्प समय में ही एक कुशल व श्रेष्ठ प्रशासक के रूप में ख्याति प्राप्त कर ली। व्यक्ति के लिए अधिक प्रसिद्ध होना भी अभिशाप है। राजपूताना का रेजि

1 टॉड एनल्स भाग 1 पृ 519 621 भाग 2 पृ 477-613 टू वाल्यूम इन वन 1950 ई

हट' भाउटर लोनी उसस ईर्ष्या करने लगा और उसन टाड पर शिकायतो की झडी लगा दी परन्तु टाड न हौसला नही खाया और वह अपन कर्तव्य का पालन करता रहा। अन्तत जाच पडताल करने के बाद लोनी द्वारा लगाए गए सारे आरोप मिथ्या प्रमाणित हुए।

उसन एक अच्छे प्रशासक होने के साथ भूगोलवेत्ता के रूप म अपनी पहचान दी। अग्रजी सरकार को राजस्थान और उसके क्षेत्र म सैनिक कार्यवाहियो क लिए विभिन्न मार्गो पहाडो, घाटियो और कस्बों की स्थिति का ज्ञान होना जरूरी था। इस जटिल काय के सम्पादन का बीडा टाड न उठाया और कई भौगोलिक गुत्थियों को सुलझा कर उसन सवप्रथम राजस्थान का मानचित्र तयार करन का श्रेय प्राप्त किया। पहल बने नक्शा म चित्तौड का उदयपुर के उत्तर-पूव क बजाय दक्षिण पूव म बताया गया था। टॉड ने अपन विवेक से इस प्रकार की अशुद्धियो का निराकरण किया। इतिहास लेखन म भी उसका यह श्रम उपयोगी प्रमाणित हुआ।

समाज सुधारक के रूप मे टाड का योगदान कम महत्व का नही है। समाज मे व्याप्त कुरीतियो की ओर न केवल यहा क जागीरदारो व शासकों का ध्यान आकृष्ट कराया बल्कि जनता म सामाजिक जागति लाने का अनुकरणीय कार्य किया। इसक लिए उसन बेगार प्रथा और दासप्रथा उमूलन करन क आवश्यक कदम उठाए। आदिवासी जातियो क साथ अच्छा आचरण करने के लिए यहा के राजा महाराजाओं को सुझाव दिये।

जहा तक टाड की भाषा व शली का प्रश्न है उसकी भाषा प्रभावमयी होन क साथ बडी चटकली है। उसकी लेखनी म ऐतिहासिक तथ्यो का सहजता क साथ अभिव्यक्त करन की क्षमता है। इसक अतिरिक्त यहा की स्थानीय भाषा म उस बडा लगाव था। राजा महाराजाओ व जागीरदारो स वह राजस्थानी भाषा म पत्राचार करता था। उसकी पत्रावली म परम्परागत शैली के दशन होत है। जबकि आज क प्रशासनिक अधिकारी हिन्दी म पत्र लिखन स कतरात है और अग्रेजो म पत्र व्यवहार करना व अपनी शान समझत हैं।

यह भी उल्लखनीय है कि टाड विदेशी था और विदेशी होत हुए उसन राजस्थान क इतिहास-लखन का भारी श्रम किया। उसे न ता इतिहास लिखन हतु कोई आदेश मिला था न ही निर्देश। उसे न तो पी एच डी की उपाधि लनी था और न ही इतिहास-रचना स राजा महाराजाओ का खुश करक माल मत्ता अजित करन की उसकी लालसा थी। मूल म कोई तत्व

था तो वह था इतिहास के प्रति रुचि और राजपूत जाति के प्रति प्रगट श्रद्धा। इस निस्वार्थ भावना ने उसे इतिहासकारों की विशिष्ट श्रेणी में शामील कर लिया।

आज के शोधार्थी परिश्रम करने से कतराते हैं। मूल स्रोतों का अध्ययन करना दूर रहा उनके दर्शन करने की तकलीफ नहीं करते। वे प्रकाशित पुस्तकों में से अपने विषय से संबंधित सन्दर्भ बड़ी चतुराई के साथ चुराने में दक्ष होने का प्रमाण दे रहे हैं। खेद का विषय है कि कतिपय निर्देशक इसकी अनदेखी कर रहे हैं। यही कारण कि अनुसंधान के क्षेत्र में ठोस व मौलिक कार्य कम हो रहा है और शोध का स्तर घटता जा रहा है। इस में आज शोधार्थियों को टाड से प्रेरणा लेने की महती आवश्यकता है।

आज पी एच डी की उपाधि प्राप्त कर अथवा एक दो किताबें छपवा कर शोधार्थी इतिहासकारों की श्रेणी में जुड़ने का प्रयास कर रहे हैं। कतिपय लेखक जो कुछ पहले कार्य हुआ है और लिखा गया है आज उसी को हेर-फेर के साथ दुबारा प्रस्तुत कर यश अर्जित करने की लालसा में लिप्त है।

सही अर्थों में देखा जाए तो राजस्थान के वृहद इतिहास का बीड़ा टॉड के बाद गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने उठाया था। परन्तु समग्र राजस्थान का सम्पूर्ण इतिहास लिखना अकेले उनके बस की बात नहीं थी। आज शोध खोज कार्य से इतिहास विषयक विपुल सामग्री प्रकाश में आयी है और इतिहास लेखन में विविध पक्षों का समावेश होने लगा है अर्थात् राजस्थान के इतिहास को प्रकाश में लाने हेतु गावों अथवा ठिकानों व परगनों और वहां रहने वाली जातियों का इतिहास जानने के अलावा प्रत्येक राज्य का राजनैतिक सामाजिक सांस्कृतिक और आर्थिक पहलूओं का बारीकी से अध्ययन करना अपेक्षित है। ऐसा करने से वास्तव में समूचे राजस्थान का शोधपूर्ण इतिहास तैयार होगा। इसके लिए अनुसन्धान केन्द्रों शोधार्थियों व इतिहासकारों को मिलकर कार्य करना होगा। ऐसा करने पर ही हम टाड के कार्य को आगे बढ़ा पाएंगे और उसको सच्ची श्रद्धांजलि देने के पात्र बनेंगे।

टॉड ने राजस्थान का इतिहास उजागर कर राजस्थानवासियों का बड़ा भारी उपकार किया परन्तु आज दिन तक उस महान इतिहासकार के व्यक्तित्व व कृतित्व सम्बन्धी समग्र पहलूओं पर गहराई से चिन्तन नहीं किया गया और न ही उसकी उपलब्धियों के बारे में स्वतंत्र पुस्तक लिखी गई। इसकी पूर्ति हेतु प्रताप शोध प्रतिष्ठान में एक विचार गोष्ठी

का आयोजन किया गया। उसमें विद्वानों ने टॉड के व्यक्तित्व व कृतित्व सम्बन्धी लेख पढ़े और उन पर विचार विमर्श हुआ। विद्वानों से कुछ आलेख गोष्ठी के बाद में प्राप्त हुए। इस पुस्तक में उन सभी आलेखों का समावेश कर टॉड के व्यक्तित्व व कृतित्व को भलीभांति प्रकाश में लाने का प्रयास किया है।

प्रताप शोध प्रतिष्ठान के अनुरोध पर जिन विद्वानों ने आलेख तैयार कर अपना सहयोग दिया उनके प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूँ। प्रताप शोध प्रतिष्ठान - परामर्श समिति के सदस्यों का समय समय पर मार्ग दर्शन मिलता रहा अतः उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ। सुखाड़िया विश्वविद्यालय इतिहास विभागाध्यक्ष डा नारायण सिंह चूंडावत का सम्पादन कार्य में विशेष सहयोग रहा इसके लिये उन्हें हार्दिक धन्यवाद। आशा है टॉड के बहुआयामी व्यक्तित्व को समझने में हमारा यह श्रम उपयोगी सिद्ध होगा।

— हुकमसिंह भाटी

टॉड—एक सग्राहक

—डॉ जगनाथ कुमार ओझा

विश्व-पटल पर 'राजपूताना' को 'राजस्थान' नाम से अभिहित कराने वाले कर्नल जेम्स टाड का जन्म मार्च 20 1782 ई को इगलड के इस्लिंगटन म हुआ था ।[1] टाड का प्रारभिक उद्देश्य व्यापार था किन्तु उसके मामा पट्रिक हीटली ने उसे ईस्ट इंडिया कम्पनी के उच्च पद प सैनिक उम्मीदवारो म भरती कर दिया जिसस 1798 ई म वूलविच के रायल मिलीटरी एकेडमी म उसका प्रवेश हो गया । मार्च 1799 ई म सत्रह वर्षीय टाड को बगाल भेजा गया जहाँ जनवरी 9 1800 ई को दूसरी यूरोपियन रेजीमेण्ट म उसे स्थान मिला । सैनिक जीवन की सभी परिस्थितियो का अनुभव प्राप्त करत हुये टाड को मई 29 1800 ई को देशी पदल फौज की 14 वी रेजीमेण्ट का लेफ्टिनेण्ट नियुक्त किया गया । उसी रेजिमेण्ट क अधिकारी लफ्टिनण्ड कनल विलियम निकाल ने टाड के सरल-सहज स्वभाव की भूरि-भूरि प्रशसा करत हुए बताया कि वह उस सेना के सभी अधिकारियो का प्रिय बन गया था । उसम उस उ ीयमानता के सभी लक्षण दृष्टिगत होते थ जो बाद म उसने अपनी प्रतिभा के बल पर प्राप्त की थी । वह इजीनियरिंग के काम म निपुण था । अत 1801 ई म दिल्ली क निकट पुरानी नहर की पमाइश (सर्वेक्षण) करने का काम सौंपा जिसे उसन

---

1 टाड का पिता मिस्टर टॉड हेनरी टॉड और जेनेट मॉन्गीय का प्रथम सतान क रूप म अक्टू 26 1745 ई म पदा हुआ था । उसका उस प्राचीन वंश से सबद्ध था जिसने एक पूवज जान टाड ने राबर्ट ब्रूस क बच्चो की उस समय रक्षा की थी जब वे इगलण्ड म बदी थे । स्वयं बादशाह ने अपने हस्ताक्षरो से उसको नाइट बैरोनेट का पद और टाड का शीर्षचिन्ह (स्काटलड की भाषा म लोमडी को टाड कहत हैं) तथा Vigilantia (सतर्क) का 'आदश शब्द' (Mo o) प्रयुक्त करने की अनुमति प्रदान की थी । द्रष्टय-पश्चिमी भारत की यात्रा प 1

बड़ी तत्परता से किया। तत्पश्चात् 1805 ई में दौलतराव सिंधिया के दरबार पोलिटिकल एजेन्ट (मरे) के सहायक के रूप में उसकी नियुक्ति हुई।[2] डॉ गो ही ओझा के अनुसार यहीं से उसकी भावी असाधारण कीर्ति का प्रारम्भ हुआ।[1]

जेम्स टॉड में शोध खोज की प्रवृत्ति सूझ-बूझ व समझ लिये हुए थी उसे व्यावहारिक रूप देने का समय उसके समक्ष अपने आप ही आया जिसे सम्भवतया तब वह भी एकाएक समझ ना नहीं पाया होगा किन्तु इधर-उधर लिखित अलिखित, लौकिक-अलौकिक गीत छंद, कहानी, गल्प-गाथायें शिलालेखों, पुरातन पत्थरों, प्राचीन स्मारकों आदि स्वरूपों को घंटा देखता, विचारता आदि तौर तरीका की संग्रह नीति से स्पष्ट हो गया था कि कर्नल टॉड में जन्मजात इतिहास प्रिय अभिरुचि थी जिसे वह विविध प्रकार की ऐतिहासिक सामग्री का यथाशक्ति एवं यथा साधन संग्रह कर पूरा कर रहा था। सिंधिया के दरबार के साथ मध्य भारत राजस्थान तथा उसके निकटवर्ती क्षेत्रों में सैनिक कार्यवाही के लिये विभिन्न स्थानों तथा मार्गों का सर्वेक्षण करने-कराने का महत्वपूर्ण कार्य करते हुए कर्नल जेम्स टॉड ने एक ओर भौगोलिक गुत्थियों को सुलझाया एवं गलतियों को दुरस्त किया तो दूसरी ओर रास्ते में पड़ने वाले गाँवों वहां के निवासियों आदि से अपनी ऐतिहासिक सामग्री के संग्रह का कार्य भी किया। जून, 1806 ई में टॉड आगरा से उदयपुर रास्ते भर की पैमाइश करता हुआ पहुँचा। मरे ने बताया है कि अस्वस्थ होते हुए भी टॉड ने पैमाइश का कार्य इतना सुरुचि से किया कि उसमें किसी प्रकार के सुधार की गुंजायश नजर नहीं आती है। उदयपुर तक सर्वेक्षण का कार्य कर लेने के बाद टाड की यह प्रबल इच्छा थी कि राजपूताना एवं उसके समीपवर्ती प्रदेशों का एक अच्छा सा नक्शा तैयार किया जाय। अतः इस कार्य के लिए वह अपना काफी समय देता हुआ उन प्रदेशों का इतिहास जनश्रुति शिलालेख आदि का संग्रह भी करता गया। डॉ उसकी प्रथम कीर्तिमान पुस्तक एनाल्स एण्ड एन्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान की साधन सामग्री का एकत्र होना उसी समय प्रारम्भ हुआ।[3]

सर्वेक्षण के दौरान टॉड को कई रास्तों एवं क्षेत्रों से परिचित होने का अवसर भी मिला। अतः वह एक स्थान पर विभिन्न रास्तों से

2 पश्चिमी भारत की यात्रा—अ गोपालनारायण बहुरा पृ 1–4

3 गौ ही ओझा कर्नल जेम्स टॉड का जीवन चरित्र पृ 4

पहुँचने का प्रयास करता था। इसम उसे अपने जीवन की बहुत बडी जोखिम भी उठानी पडती थी जब 1807 ई म सिधिया की सेना ने राहतगढ पर घेरा डाला उस समय टाड साहब थोड स सिपाही साथ लेकर बेतवा नदी के किनारा क पास होते हुए चबल तक क मनात स्थलो म पहुचे और वहाँ से पश्चिम की ओर कोटा तक बढे। फिर दक्षिण को बहने वाली सब नदियो का माग मालूम कर चबल के साथ काली सिध पावती बनास आदि मुख्य-मुख्य नदियो के सगम का पता लगाते हुए आगरा जा पहुँचे। टॉड इन यात्राओं के बीच कई बार लूटा भी गया था किन्तु वह हतोत्साहित नहीं हुआ और निरतर अपनी खोज समझ व सग्रह हेतु सर्वत्र यात्रा करता रहा।[4] डा गौ ही ओझा के अनुसार राजपूताना और उसके आस–पास के प्रदेशो का इतिहास भिन्न भिन्न नगरो क बीच का अतर व माग वहाँ के रीति रिवाज आदि जानने के लिय वहाँ के निवासियो म स योग्य और वाकिफकार मनुष्यो को प्रीति या पारितोषिक के साथ किसी ढब म अपने पास बुला लेते थे। सन् 1812 से 1817 ई तक व ग्वालियर म रहे तब भी सिध घाट ऊमर-सुमरा क रण व राजपूताना के प्रत्येक भाग स वाकफियत रखने वाले मनुष्य बहुधा उनक पास रहा करते थे। ऐसे ही कासिद और चिट्ठी पहुचाने वाले हरकारा से भी रास्ता व शहरो की दूरी का हाल वे हर वक्त दर्याप्त करते रहते थे और भिन्न भिन्न देशो के कोसो का शुद्ध मान जान लेने क बाद उन लोगो की बतलाई हुई दूरी का यत्र द्वारा नापी हुई दूरी के साथ मिलान कर लेते थे। यो कुछ समय म ही कनल टाड न क्तन नक्शे तयार कर लिय कि उनकी 11 जिल्दें बनी। उसक य नक्शे तथा सग्रह किय हुये भूगोल सबधी वृत्तात अपने राजस्थान (एनाल्स) का इतिहास लिखने म काफी सहायक रहे।[5]

सामग्री-सग्रह करने म टाड का खूब धन खच हुआ तथा उसने स्वास्थ्य एव श्रम की भी कोई परवाह नही की थी। इससे उसक उत्साह की प्रबलता तथा मानसिक की दृढता का परिचय प्राप्त होता है। कनल कहते है कि जब तक म इस रेजीडेंसी म रहा वह इस प्रदेश के भूगोल सबधी अपने ज्ञान को बढाने क लिय प्रत्येक सुलभ और सभव अवसर का लाभ उठाता रहा, और मेरा विश्वास है कि उसक जीवन का बहुत बडा भाग

---

4 वही प 5 6 पश्चिमी भारत की यात्रा प 4-5

5 ओझा, कनल जेम्स टाड का जीवन चरित्र प 5 7

देश के विभिन्न भागों में कार्यकर्ता भेजकर उनके द्वारा स्थानीय सूचनाएँ प्राप्त करने में व्यस्त होता था। वह स्वयं भी इस उद्देश्य के लिये अथक परिश्रम करता रहता था और उसकी थकान को कम करके उसे पुनः सुस्वस्थ बनाने हेतु कभी कभी मुझे ऐसे प्रयत्न भी करने पड़ते थे कि उसकी प्रवृत्तियों में रोक पैदा हो जाय ......। मेजर के बाद रिचार्ड स्ट्रैची सिंधिया के दरबार में एजेन्ट बना तो पुनः 18 5 ई. में टॉड को उसका द्वितीय सहायक बनाया गया। स्ट्रैची का कहना है कि इस पूरे समय में वह मुख्यतः सिंधु और बुन्देलखण्ड तथा जमुना और नर्मदा के बीच के प्रदेशों से सम्बद्ध भौगोलिक सामग्री एकत्रित करने में व्यस्त रहा।[6]

1817-18 ई. में जब मेवाड़, मारवाड़, ढूंढाड़ व अन्य राजपूती रियासतों ने अंग्रेजों के साथ कूटनीतिक संबंध स्थापित किए तब गवर्नर जनरल लार्ड हेस्टिंग्स ने राजस्थान की स्थिति से सुपरिचित कर्नल टॉड को पश्चिमी भाग के इन राजपूत राज्यों का पोलिटिकल एजेन्ट बनाकर उदयपुर में नियुक्त किया।[7] यों भी अपने भारत प्रवास के 24 वर्षों में से टॉड के 18 वर्ष राजपूताना में और उनमें भी अंतिम पाँच वर्ष उसके मेवाड़, मारवाड़, जैसलमेर, कोटा, बूंदी और सिरोही के राजपूत राज्यों में व्यतीत हुये। इस बीच उसका संग्रह कार्य निरन्तर चलता रहा। अक्टूबर 1819 ई. में टॉड नाथद्वारा, कुंभलगढ़, घाणेराव, नाडोल आदि स्थानों से होते हुए जोधपुर गया। नाडोल में उसने राव लाखणसी[8] के समय के दो शिलालेख वि. सं. 1024 और 1039 ढूंढ निकाले जिनके संवत् टॉड की ही धारणा के अनुसार अजमेर व नाडोल के चौहान, जालोर के सोनगरे और सिरोही के देवड़ा का प्राचीन इतिहास लिखने वालों के लिए बड़े उपयोगी सिद्ध हुए।[9] वहीं से उसने दो ताम्रपत्र, कई उपयोगी प्राचीन हस्तलिखित

---

6 पश्चिमी भारत की यात्रा पृ. 7

7 डॉ. हुकमसिंह भाटी (द्वारा सम्पादित), राजस्थान के इतिहासकार, पृ. 37

8 राव लाखणसी सांभर के चौहान राजा वाक्पतिराज का दूसरा पुत्र और सिंहराज का छोटा भाई था जिसने नाडोल में अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित किया। द्रष्टव्य ओझा, कर्नल जेम्स टॉड का जीवन चरित्र पृ. 12

9 द्रष्टव्य डॉ. हुकमसिंह भाटी लिखित सोनगरा सांचोरा चौहानों का इतिहास।

पुस्तकें और कई अश्वनदा[10] शली के सिक्के संग्रह किये।

जोधपुर पहुँचने पर महाराजा मानसिंह ने टाड का स्वागत करते हुये विजय विलास सूरज प्रकाश मारवाड की ख्यात आदि जोधपुर राज्य के इतिहास से संबंधित 6 पुस्तकें दी। तब टाड ने भी महाराजा को फारसी की तारीख फरिश्ता व खुलासउतवारीख की नकलें करवा कर भेजी। जोधपुर से टाड मडोर (परिहार राजपूतो की प्राचीन राजधानी) गया तत्पश्चात् पुष्कर व अजमेर आदि प्राचीन स्थल देखते हुये वहाँ से कई प्राचीन सिक्के एकत्र करके दिसम्बर माह में पुन उदयपुर आ गया।[11]

टाड के संग्रह-स्नेह को इसीसे समझा जा सकता है कि जनवरी 1820 ई में वह कोटा बूंदी गया जहाँ वह बीमार हो गया। पुन लौटते समय जहाजपुर में मांडलगढ आया तब उसकी तिल्ली बढी हुई थी। उन 60 जोंके लगाई गई जो उसका रक्त पी रही थी उस पर भी वह खाट पर लेटे हुए ब्राह्मण और पटेलो से वहाँ का हाल मालूम करके लिखता जा रहा था।[12]

तदनन्तर टाड पुन कोटा से बाडोली जाकर प्राचीन टूटे फूटे मन्दिरो की खुदाई का काम देखने के लिये कुछ दिन वहीं ठहरा। तब उसे

---

10 एक ओर सवार तथा दूसरी ओर नन्दी बने सिक्के अश्वनन्दी कहलाते थे। चौहान राजा सामंत देव स्पलपति देव भीम देव सल्लक्षणपाल देव महीपाल देव मदनपाल देव अनगपाल देव कल्हू देव चाहड देव पीपल देव आदि हिन्दू राजाओं के और मुईजुद्दीन मुहम्मद बिन साम इल्तुतमिश जलालुद्दीन नासिरुद्दीन कुबाचा रुकनुद्दीन फीरोजशाह मुइज्जुद्दीन बहरामशाह अलाउद्दीन मसऊद शाह आदि मुसलमान बादशाहो या हाकिमो के अश्व नदी शली के सिक्के मिले हैं। टाड ने इन्हे नाडोल के चौहान राजाओ के सिक्के बताये हैं किन्तु ओझा का मानना है कि अब तक नाडोल के राजाओ का एक भी सिक्का नहीं मिला और न टाड के संग्रह में पाया गया। द्रष्टव्य ओझा कर्नल जेम्स टाड का जीवन चरित्र पृ 12 की पाद टिप्पणी

11 ओझा कर्नल जेम्स टाड का जीवन चरित्र पृ 12-13

12 वही पृ 13

वि स 981 का शिलालेख मिला तथा बाडोली से मानपुरा होकर मेनाल में घूमनार की गुफा आदि प्राचीन स्थान देखता हुआ झालरा पाटन आया जहाँ उस चन्द्रावती नगरी के खण्डहरों में कई प्राचीन शिलालेख प्राप्त हुये जिनमें वि स 746 का राजा दुर्गगण[13] का शिलालेख सर्वाधिक प्राचीन था। इसके अतिरिक्त यहाँ से वह अपने साथ कई देव मूर्तियाँ ले गया। कसवा (कोटा से थोड़ी दूर) के मंदिर में लगा वि स 795 (ब्राह्मण राजा शिवगण के समय का) का लेख भी मिला, डॉ ओझा ने बताया कि यह लेख भी टॉड के गुरु से पढ़ा नहीं गया था।[14] कर्नल टाड बिजोलिया गया जहाँ उस मामेश्वर के पास का (वि स 1226 का) चट्टान पर उत्कीर्ण एक बड़ा लेख मिला। इसके बाद वह मेनाल के खण्डहरों का अवलोकन करते हुए फरवरी 24, 1822 ई को बेगूं पहुँचा। बेगूं में टॉड हाथी पर सवार होकर वहाँ के रावत से मिलने गया। दरवाजा छोटा होने से महावत ने हाथी ले जाना ठीक नहीं समझा किन्तु इससे पूर्व एक हाथी को अंदर गये हुए देख कर टॉड ने महावत को हाथी अंदर ले जाने की आज्ञा दी। खाई व दरवाजे के बीच पुल पर जाते ही हाथी भड़क गया जिससे हौदा टूट गया और टॉड गिर पड़ा। दो दिन बाद होश आने पर जब वह पुनः रावत से मिलने गया तो दरवाजे को गिराया हुआ देख कर उसे बड़ा दुःख हुआ।[15] या ऐतिहासिक यादगार अथवा धरोहर को वह किसी भी कीमत पर नष्ट होते हुये नहीं देख सकता था।

टाड की ऐतिहासिक संग्रह की रुचि का यो समझा जा सकता है कि जहाँ कहीं भी वह जाता था वहाँ के वृद्ध और अनुभवी जानकार लोगों को बुला कर राजपूतों की वीरता तथा विभिन्न जातियों की रीति-नीति

---

13 टाड ने इस शिलालेख का जो सारांश दिया उसमें पाण्डव अर्जुन के विरोधी नामक राक्षस के साथ लड़ने का जो वृतांत लिखा है वह कपोल कल्पित है। ओझा को इस शिलालेख के फोटो में कहीं उसका उल्लेख नहीं मिला। उसका संवत 748 नहीं किन्तु 746 है। ऐसा प्रतीत होता है कि टॉड के गुरु उस लेख को ठीक से नहीं पढ़ सका था। द्रष्टव्य ओझा कर्नल जेम्स टॉड का जीवन चरित्र पृ 16

14 टॉड ने इस लेख का संवत् 597 दिया तथा आगे जैसा बताया जा ओझा के अनुसार सर्वथा गलत है। वही 16 17

15 वही पृ 17 18

अथवा धर्म संबंधी वृत्तांत पूछना। साथ ही प्रत्येक प्राचीन मंदिर, महल, भवन आदि के बारे में तथा उनको बनाने वालों का पता लगवाता। युद्धों में काम आये लोगों के स्मारक चबूतरों के लेख पढ़ा कर या लोगों से जानकारी प्राप्त कर उनका हाल एकत्र करता था। मांडल निवासी यति ज्ञानचन्द्र कर्नल टॉड का गुरु था जो उस प्राचीन संस्कृत लेख आदि के अनुवाद करने में पर्याप्त सहयोग देता था। ऐसा लगता है कि यति ज्ञानचन्द्र को प्राचीन भाषा एवं लिपि का अधिक ज्ञान नहीं था अतएव टॉड के लिए किये गये अनुवाद कार्यों में गलतियाँ रह जाना स्वाभाविक ही था। दो एक पंडित तो वह अपने साथ ही रखता था। अतः जहाँ कहीं भी ठहरते वहाँ के बारे में जानकारी प्राप्त कर वे लिख लिया करते थे।

सुदूरस्थ स्थानों पर प्राचीन लेखों आदि का पता लगाने के लिए टॉड अपने गुरु एवं उन पंडितों को भेज देता था किन्तु विशेष एवं महत्व की जगह स्वयं टॉड जाकर अवलोकन करता था। उठाने योग्य शिलालेख आदि को ऊँटों पर लदवा कर अपने साथ ले जाता था। इतना ही नहीं यत्र तत्र घूमते फिरते वहाँ के चारण भाटों को बुलवा कर वह क्षत्रियों की वीरता के गीत दोहे बातें, आदि सुनता तथा विशेष उपयोगी होते उन्हें लिखवा लेता था। कठिन काम चित्र बनाने में बड़ा दक्ष था। वह टॉड के लिए प्राचीन मंदिर महल किले मूर्ति आदि भारतीय शिल्प कला के चित्र बना दिया करता था। घासी नामक एक देशी चित्रकार को भी टॉड अपने साथ रखता था। यों वह राजा महाराजाओं प्रतिष्ठित पुरुषों के चित्र हिन्दी संस्कृत फारसी अरबी आदि भाषाओं में लिखे ऐतिहासिक या अन्य ग्रन्थों प्राचीन ताम्र पत्रों व सिक्कों का संग्रह करता था। सिक्कों के संग्रह के लिये मथुरा आदि नगरों में अपने एजेन्ट रखे हुए थे जो प्राचीन सिक्के एकत्र कर टॉड के पास पहुँचाया करते थे। वह तत्कालीन शासकों प्रतिष्ठित पंडितों लोगों जैन मन्दिरों आदि स्थानों में सुरक्षित हस्तलिखित ग्रन्थों को बड़े चाव से देखता उनमें से अपने काम के ग्रन्थों को लेने का प्रयास करता यदि सुलभ होने में कोई दिक्कत आती तो उनकी प्रतिलिपि करवा लेता था।

मेवाड़ के महाराणा भीमसिंह ने टॉड को अपनी ऐतिहासिक सामग्री सुलभ कराने में बड़ी मदद की। महाराणा ने निजी पुस्तकालय में संग्रहीत पुराण, महाभारत रामायण, पृथ्वीराज रासो आदि ऐतिहासिक पुस्तकों से राज पंडितों द्वारा सूर्य व चन्द्रवंशी शासकों की वंशावली तैयार कराके टॉड को प्रदान की। यों संग्राहक टॉड ने इंगलैंड जाने से पूर्व पुराण, रामायण

मध्यभारत, राजपूताना एवं अन्य अनेक राज्यों और राजवंशियों की ख्यातें, पृथ्वीराज रासो, खुमाण रासो, हमीर रासो, रतन रासो आदि कई रासो ग्रंथ तथा विजय विलास, सूरज प्रकाश, जगत विलास, जयविलास, राजप्रकाश, राज प्रशस्ति, नवसाहसांक चरित, कुमारपाल चरित्र, मानचरित्र, हमीर काव्य, जयसिंह कल्पद्रुम नामक ग्रंथ एवं इनकी तैयार कराई हुई राजवंशों की वंशावली आदि अनेक इतिहास संबंधी पुस्तकों का संग्रह कर लिया था। पृथ्वीराज रासो तो टाड को बेहद पसन्द आया। अतएव उसका अंग्रेजी में अनुवाद कर लिया। इन ऐतिहासिक ग्रंथों के अलावा टाड ने काव्य, नाटक, व्याकरण, कोश, ज्योतिष, शिल्प, महात्म्य व जैन धर्म संबंधी कई पुस्तकें तथा अरबी व फारसी के कई हस्तलिखित ग्रंथों का काफी अच्छा संग्रह किया था। इसी भांति कई प्राचीन स्थानों, राजाओं व सुप्रसिद्ध पुरुषों के चित्र, चित्तौड़गढ़, मेनाल, बाड़ौली, बिजौलिया, भैंसरोड़गढ़, मांडलगढ़, कुंभलगढ़, आदलपुर, आहाड़, नाडौल, बसवा आदि अनेक स्थानों के शिलालेखों, ताम्रपत्रों आदि की प्रतियाँ अथवा मूल को प्राचीन मूर्तियों एवं बीस हजार के लगभग प्राचीन सिक्कों का संग्रह किया था।[16]

स्वदेश जाने से पन्द्रह दिन पूर्व टाड इस अपूर्व संग्रह के साथ डबोक में उदयपुर आकर सहेलियों की बाड़ी में इस ऐतिहासिक निधि का वह परिचय करा रहा था। तभी एक दिन महाराणा भीमसिंह उससे विदाई के मिलने हेतु वहाँ आया तो टाड को साहित्य के बीच में देखकर उसे हँसी भी आ गई थी। महाराणा ने कहा कि मेवाड़ में पाँच वर्ष तक रहते हुए टाड ने इस राज्य की सेवा की, इसे क्षति से बचाया किन्तु जाते समय वह यहाँ की एक चुटकी मिट्टी भी नहीं ले जा रहा है।[17] निःसन्देह टॉड को किसी वस्तु या द्रव्य से प्रेम या लगाव नहीं था। उसके लिए तो उसका संग्रह ही सब कुछ था।

यों स्वदेश जाने की सारी तैयारी हो जाने पर जून 1, 1822 ई० को टाड ने उदयपुर से सदा सर्वदा के लिये अन्तिम विदा ली। जून 9 को वह सिरोही होते हुए जून 12 को आबू गया, जहाँ उसे कई शिलालेख मिले

---

16 वही पृ 19 21

17 वही पृ 21 22

जिनमे विशेषतया वि स 1265 का[18] परमार राजा धारावर्ष के समय का था ।[19] ऐतिहासिक खोज और उसके द्वारा भूतकालीन इतिवृत्त की अज्ञात लुप्त तथा विशृंखलित कड़ियों को जोड़ने के लिये टाड सतत समुत्सुक रहा । वह जानता था कि इन प्रदेशों में ऐसी सामग्री की कमी नहीं है जिसका उपयोग शोध (विषयक प्रवृत्ति) को समान रूप से सम्मानित और प्रोत्साहित करने में किया जा सकता है । शिलालेखों के आधार पर चरितों एवं ऐतिहासिक वृत्तों के तिथिक्रम के तथ्यों को निश्चित करना भाटों के बसों से [अनेकानेक] नामधारी विदेशी जातियों के उत्तरी एशिया से चलकर इन प्रदेशों में आ बसने के क्रम का पता लगाना उन विभिन्न पूजा प्रकारों पर विचार करना जो वे अपने पूर्व पुरुषों की भूमि से यहां पर लाए और जहां से जिन लोगों को हटाकर वे बस गए उनके रहन-सहन आदि के तरीकों में घुलनेमिलने से जो भी थोड़े बहुत परिवर्तन हुए उनके विषय में अनुमान लगाना तथा इस बात की भी शोध करना कि उनकी प्राचीन आदतों संस्थाओं में से कितनी अब भी बच रही हैं ये ऐसे विषय हैं जो किसी भी विचारशील मस्तिष्क के लिये कदापि हीन या उपेक्षणीय नहीं हैं और यहाँ शोध के लिये पूरी-पूरी सुविधाएं प्राप्त हैं ।[20] अतः आबू में उसने चन्द्रावती सिद्धपुर अनहिलवाड़ा (पाटन) खम्भात वल्लभी पालिताना शत्रुंजय सोमनाथ पट्टन जूनागढ़ गिरनार घुमली द्वारका आदि के महत्वपूर्ण मंदिरों बावड़ियों और खंडहरों में ही नहीं राह में पड़ने वाले सारे नगण्य और उपेक्षित परन्तु संभावित स्थानों में भी शिलालेखों की खोज की "कुछ महत्वपूर्ण शिलालेखों का अनुवाद" भी उसने परिशिष्ट में दे दिया है । इन शिलालेखों में परिशिष्ट में 7 का शिलालेख विशेष महत्व का है जो मूलतः सोमनाथ का होते हुए भी टाड को वेरावल में मिला था । उसमें सिंह संवत् का उल्लेख है जो तब तक अज्ञात ही था ।[21]

---

18 यह लेख आबू पर्वत पर ओरिया गाँव के पास कनखल तीर्थ के शिव मन्दिर में लगा हुआ है ।

19 ओझा कर्नल जेम्स टाड का जीवन चरित्र पृ 23

20 पश्चिमी भारत की यात्रा पृ 13

21 वही पृ 13 14

पश्चिम भारत की इस यात्रा के दौरान भी टॉड का ऐतिहासिक सामग्री का संग्रह-कार्य निरंतर चलता रहा। चन्द्रावती के खण्डहरों में से उसे परमार-कालीन कुछ शिलालेख मिले थे। मांडवी (कच्छ) की श्मशान भूमि व खण्डहरों में से भी उसे कई सती स्मृति के दो शिलालेख प्राप्त हुए थे। बाली में कैम्प करते में मेवाड़ के राजाओं से संबंधित महत्वपूर्ण ऐतिहासिक वंशावली का खर्रा प्राप्त किया। सोमनाथ पट्टन में एक पुराने काजी घराने के अनभिज्ञ वंशज के पास से एक हिन्दी काव्य की खण्डित प्रति प्राप्त की जिसमें पाटन के पतन की कहानी थी। द्वारका में एक भाटी यादव सरदार से उनकी वंशोत्पत्ति की विचित्र कथाएँ और वाघेला की उत्पत्ति संबंधी बहुत सी बातें उसने सुनी। द्वारका के ही एक वंश भाट की वंश बही तथा राजवंशावली में से उसने कुछ पत्रों की नकलें करली। भुज नगर पहुँचते ही वहाँ के भाटों और उनकी बहियों को उपलब्ध किया। यहाँ की रीजन्सी के प्रमुख सदस्य रतनजी से जाडेचा शासन का पूरा-पूरा ज्ञान प्राप्त किया और राजपूत शासन पद्धति से वह किन बातों में भिन्न था इसको भी ठीक तरह से समझा।[22] जैसलमेर से उसने कागज और ताम्रपत्रों की कितनी ही प्रतियाँ प्राप्त कर ली थी। टॉड ने पाटन और खंभात के जैन ग्रंथ भंडारों में से कुछ ग्रंथ प्राप्त करने का प्रयास किया। यति ज्ञानचन्द्र को पाटन के ग्रंथ भंडार में से 'वनराज चरित्र' और 'शालिवाहन चरित्र' की प्रतियाँ ढूंढने को भेजा। काफी परिश्रम एवं पूरा प्रयत्न के बाद भी वनराज चरित्र तो उपलब्ध न हो सका किन्तु 'कुमारपाल चरित्र' (वस्तुतः 'कुमारपाल रास') की कुछ प्रतियाँ टॉड ने अवश्य प्राप्त कर ली।[23] वर्षा के कारण टॉड को कुछ महिने खंभात में रुकना पड़ा। तब भी उसने अपना समय ग्रन्थ-खोज में व्यतीत करते हुए प्रतिदिन अपने संग्रह में कुछ न कुछ वृद्धि ही की। उसका यह संग्रह इतना बढ़ गया था कि इंग्लैण्ड पहुँचने पर (1823 ई.) उसे कोई 40 संदूकों का 72 पौंड चुंगी चुकानी पड़ी। टॉड ने अपने इस अमूल्य संग्रह को अनन्तर इण्डिया हाउस तथा लन्दन रायल एशियाटिक सोसायटी में जमा करा दिया जो अद्यतन सुरक्षित एवं सुव्यवस्थित है।[24]

22 वही पृ 15 16

23 वही

24 ओझा कर्नल जेम्स टॉड का जीवन चरित्र पृ 22 पश्चिमी भारत की यात्रा (प्रस्तावना लेखक डा रघुवीरसिंह) पृ 16 17

इस प्रकार कर्नल टाड एक सग्राहक इतिहासज्ञ था । उसने जितना लिखा उससे कही अधिक एकत्र किया था । निःसदेह तत्कालीन प्रारभिक इतिहास लेखन की शोध परक प्रक्रिया म उसम कई गलतिया भूलें अभाव आदि रह जाना कोई अनहोनी बात नहीं थी । उसने यह स्पष्ट कर दिया कि भारतीयो म इतिहास लेखन की प्रक्रिया व्याप्त रही है और यहाँ एतिहासिक सामग्री की विपुलता विद्यमान है । टाड द्वारा लिख एनाल्स एण्ड एन्टिक्वीटीज आफ राजस्थान एव ट्रेवल्स इन वेस्टर्न इडिया ग्रन्थ भी अपने आप म ऐतिहासिक व तात्कालिक रिपल सग्रह कह दिय जायें तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी । स्वय टाड ने कहा कि इस विषय को (एनाल्स) इतिहास की कठोर शैली म लिखने का मेरा कोई इरादा नहीं था क्योंकि ऐसा करने से अनेक ऐसे विवरण छूट जाते जो एक राजनीतिक जिज्ञासु के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते थे । मैं अपनी इस कृति को लगन व एकत्रित परिश्रम के साथ किये गये सग्रह के रूप म प्रस्तुत करना चाहता हूँ। [25]

सग्रहकर्ता को कभी सतोष नहीं होता है । टाड ने अपूर्व सग्रह के उपरान्त भी यह स्वीकार किया कि यदि स्वास्थ्य और पर्याप्त अवकाश मुझे मिलता तो जो कुछ मैंने किया है उससे दस गुना काम करता और यदि विशेष सुविधाएँ मिली होती तो इस दस गुने का भी दस गुना कर दिखाता—मेरे इस कथन पर विश्वास कर लेना चाहिये। [26] नवम्बर 17 1835 ई को टॉड तो इस नश्वर ससार को छोड गया किन्तु उसने अपने कठोर परिश्रम से जिन दुर्लभ मूल्यवान एतिहासिक स्रोतो को नष्ट होने से बचाते हुए सुरक्षित किया वह नूतन शोध कार्य हेतु अन्वेषको के लिये निश्चित ही प्रेरणा दीप बनी है तथा उसने इस महान सग्राहक को चिर अमरत्व प्रदान कर दिया है ।

---

25 डॉ हुकमसिंह भाटी स राजस्थान के इतिहासकार पृ 43 द्रष्टव्य डॉ एन एस चूण्डावत का शोध लेख टॉड का व्यक्तित्व व कृतित्व

26 पश्चिमी भारत की यात्रा पृ 256

जेम्स टॉड : जीवन-दर्शन और कृतित्व

—डॉ. छवीलाल पालीवाल

(अ) जीवन

प्रारम्भिक जीवन

लेफ्टिनेंट कर्नल जेम्स टॉड का जन्म 20 मार्च 1782 ई. के दिन इस्लिंगटन में हुआ था। उसके पिता का नाम जेम्स टॉड (प्रथम) और माँ का नाम मेरी हीटली था। उनका विवाह न्यूयार्क अमेरिका में 1780 ई. में हुआ था। जेम्स टॉड प्रथम अमेरिका त्याग कर अपने भाई जान की हिस्सेदारी में भारत में तत्कालीन आगरा एवं अवध के संयुक्त प्रांत में मिर्जापुर में नील बागान का मालिक बन गया था। बालक जेम्स टॉड (द्वितीय) के दोनों चाचा पैट्रिक और एस हिटली ईस्ट इंडिया कंपनी की सिविल सर्विस के सदस्य थे। इस भांति बालक जेम्स टॉड में अपने पिता और दोनों चाचाओं के भारत के साथ सम्बन्धों के कारण भारत के प्रति रुचि उत्पन्न हो गई। इसलिये जब वह सोलह वर्ष की आयु का था उसने अपने चाचा पैट्रिक हीटली की सहायता से 1798 ई. में ईस्ट इंडिया कंपनी की सेवा में कैडेटशिप प्राप्त की। अनन्तर उसको रायल एकेडमी वूलविच में शिक्षा प्राप्त करने भेजा गया। 1799 ई. में वह भारत के लिये रवाना हुआ और कलकत्ता पहुंचा। उसको दूसरी यूरोपियन रेजीमेंट में भर्ती किया गया। 29 मई 1800 ई. को उसको पदोन्नत कर चौदहवीं देशी पैदल सेना में लेफ्टिनेंट नियुक्त किया गया। 1807 ई. में उसको उसी पद पर पचीसवीं देशी पैदल सेना में स्थानान्तरित कर दिया गया। 1799-1800 के काल में उसने पहले मोलक्का द्वीप और बाद में मरीन जहाजों में जहाजपर काम करके सैनिक सेवा का अनुभव प्राप्त किया। बाद में वह कलकत्ता से हरिद्वार के मध्य के भूभाग में सैनिक अभियानों में व्यस्त रहा।

राजनयिक जीवन में प्रवेश

1801 ई में जब टाड दिल्ली में तैनात था उसकी रुचि और क्षमता को देखते हुए उसको दिल्ली की एक पुरानी नहर की पमाईश करने के लिये इंजीनियर बनाया गया। इस काय में उसने अपनी सूझ-बूझ और प्रतिभा का परिचय दिया जिससे अग्रेज सरकार बहुत प्रभावित हुई।

टाड सनिक सेवा के लिये नहीं पैदा हुआ था। वह प्रारम्भ से ही महत्वाकांक्षी रहा। दिल्ली के पमाइश काय की सफलता के बाद उसका आत्मविश्वास बढ़ गया। 1805 ई में अपने चाचा के मित्र ग्रीम मसर की सहायता से उसने राजनयिक सेवा में प्रवेश किया जिससे उसके जीवन ने एक महत्वपूर्ण मोड ले लिया। उस समय ग्रीम मसर मराठा सरदार दौलतराव सिंधिया के दरबार में अग्रेज सरकार की ओर से राजदूत एवं रेजीडन्ट नियुक्त था। उसने टॉड की इच्छा और प्रतिभा को देखते हुए उसको अपनी रक्षक सनिक टुकड़ी के कमान में नियुक्ति दिलवाकर अपने साथ ले लिया। इससे वह प्रशासनिक सेवा और राजपूत एवं मराठा राजनीति से परिचित हुआ तथा उसकी बौद्धिक प्रतिभा के प्रस्फुटन के लिये माग प्रशस्त हो गया।

ऐतिहासिक शोध काय का बीजारोपण

1806 ई में प्रारम्भ में वह ग्रीम मसर के साथ आगरा से चलकर जयपुर होते हुए उदयपुर के निकट प्राचीन नागदा स्थान पर पहुचा। उस समय सिंधिया मेवाड़ राज्य की राजधानी उदयपुर के निकट नागदा (एकलिंगजी मंदिर के पास) में डेरा डाले हुए था। उस वष जून माह में मेवाड़ के तत्कालीन महाराणा भीमसिंह और मराठा सरदार दौलतराव सिंधिया के बीच हुई मुलाकात के समय टॉड भी एक मूकदर्शी के रूप में विद्यमान था। एक दुबल पुत्र के सम्मुख प्राचीन एवं इतिहास प्रसिद्ध राजवंश के राणा की दयनीय स्थिति का अवलोकन करके टॉड के भावुक मानस पटल पर मार्मिक प्रभाव पड़ा। वहीं टाड ऊची अरावली पहाड़ियों के मध्य स्थित नागदा और एकलिंगजी के मंदिर के निकट स्थानों में प्राचीन एवं अत्यन्त भव्य कला के प्रतीक चिह्न मन्दिरों एवं मूर्तियों के ध्वंसावशेषों को देखकर मुग्ध हो गया। इस भांति वह मेवाड़ के प्राचीन गजघराने के उज्ज्वल इतिहास और उसकी तत्कालीन पतनावस्था से परिचित हुआ। उसके मन में राजपूतों के प्राचीन इतिहास और सांस्कृतिक उपलब्धियों के सम्बंध में जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई और इस प्रकार अनजान ही उसके मन में इस क्षेत्र के प्राचीन इतिहास संस्कृति समाज और नीतिगत आदि विषयों की खोज-बीन करने के निश्चय का बीजारोपण हो गया।

भौगोलिक सर्वेक्षण और पिंडारियों का दमन

इस काल में अंग्रेज सरकार विभिन्न पिंडारी सैनिक दलों को मिटाने में लगी हुई थी जो राजपूताना एवं मध्यभारत के विशाल भू क्षेत्र में लूटमार करके अराजकता उत्पन्न कर रहे थे। किन्तु इस भू भाग की सही भौगोलिक जानकारी के अभाव में कंपनी सरकार के लिये पिंडारी दमन का कार्य दुष्कर हो रहा था। 1791 ई. में डाक्टर विलियम हंटर ने इस क्षेत्र के भौगोलिक सर्वेक्षण का कार्य प्रारम्भ किया था किन्तु वह अपूर्ण रहा। स्वयं टॉड के शब्दों में उस समय अंग्रेज अधिकारियों की भौगोलिक जानकारी की यह स्थिति थी कि उदयपुर और चित्तौड़ की स्थिति मानचित्रों में उल्टी दिखाई गई थी। उनमें चित्तौड़ को उदयपुर के उत्तर पूर्व के बजाय दक्षिण पूर्व में दिखाया गया था। राजस्थान के लगभग तमाम पश्चिमी और मध्यभाग के राज्य अंग्रेजी मानचित्रों में नहीं थे और यह माना जाता था कि राजस्थान की सभी नदियों का भाग दक्षिण में नर्बदा की ओर है। युवक टॉड की प्रतिभा और रुचि को देखते हुए ग्रीम मर्सर ने राजस्थान और मध्यभारत के विशाल भू क्षेत्र की भौगोलिक पैमाइश करने का बड़ा उत्तरदायित्व टॉड को दिलवाया। सिंधिया की सेना के साथ एक स्थान में दूसरे स्थान पर यात्रा करते हुए टॉड ने अथक परिश्रम करके दस वर्षों में 1815 ई. तक यह कार्य लगभग पूरा कर लिया। उस वर्ष उसने पहली बार राजपूताने का संयुक्त भूगोल तैयार करके पिंडारियों के विरुद्ध एक बड़ी लड़ाई प्रारम्भ होने से पूर्व कंपनी के गवर्नर जनरल मार्क्विस आफ हेस्टिंग्ज को प्रस्तुत किया। उसके तुरन्त बाद उसने मालवा क्षेत्र का मानचित्र भी तैयार कर लिया। ये मानचित्र पिंडारियों एवं मराठों के विरुद्ध सैनिक अभियानों में बड़े उपयोगी सिद्ध हुए। इसके साथ टॉड ने लड़ाई शुरू होने पर युद्ध क्षेत्र का विस्तृत मानचित्र और युद्ध योजना अलग से बनाई और पिंडारियों के उद्भव, वृद्धि और स्वरूप के सम्बन्ध में दस्तावेज तैयार किया। ये दोनों जनरल डॉविन, मार्शल, एडम्स और ब्राउन के सैनिक अभियानों में बड़े सहायक सिद्ध हुए। गवर्नर जनरल हेस्टिंग्स ने टॉड के इस योगदान की अत्यन्त प्रशंसा की। हाड़ौती [illegible] के रावता नामक स्थान से उसने अपनी जानकारी के आधार पर इन अभियानों का निरंतर मार्गदर्शन किया। उसने स्वयं अपनी सैनिक टुकड़ी की सहायता से चम्बल [illegible] नदी की घाटी में सक्रिय पिंडारियों का सफाया किया और वहां से लूट में प्राप्त माल से कोटा के पूर्व में नदी पर हेस्टिंग्ज पुल बनवाया। इसी काल में उसने राजपूताने के तत्कालीन अधिपत्य दूरदर्शी राजनीतिज्ञ

एवं चतुर कूटनीतिज्ञ झाला जालिमसिंह को अपना मित्र बनाया और उसको कूटनीति द्वारा होल्कर से अलग करके अंग्रेजों का पक्षपाती बनाकर अपनी सरकार की बड़ी मूल्यवान सेवा की। 1813 ई. में उसको कप्तान पद पर पदोन्नत किया गया और 1815 ई. में उसको रेजीडेंट का द्वितीय सहायक बनाया गया। यह उल्लेखनीय है कि राजपूत राज्यों वाले भू क्षेत्र के लिए टॉड ने सर्वप्रथम 'राजपूताने' के स्थान पर राजस्थान नाम का उपयोग किया था। बाद में भी अंग्रेजी शासन के अन्तर्गत राजपूताना नाम का प्रयोग जारी रहा। स्व. गौ. ही. ओझा ने अपनी पुस्तक का नाम राजपूताने का इतिहास रखा इस क्षेत्र के प्रथम विश्व विद्यालय का प्रारंभिक नाम 'राजपूताना विश्व विद्यालय' रखा गया था। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात राजपूत राज्यों के विलय एवं एकीकरण के बाद नवनिर्मित राज्य का नाम राजपूताने के बजाय राजस्थान रखा गया। इसका श्रेय टाड को जाता है।

राजनैतिक प्रतिनिधि

पिण्डारियों के दमन और मराठों की पराजय में महत्त्वपूर्ण योगदान टाड और बोगल ने सूझबूझ पूर्ण राजनैतिक कार्यवाहियां ऐतिहासिक प्रमाणों के कारण राजपूताना क्षेत्र के सम्बन्ध सभी प्रकार की जानकारी ज्ञात कर राजाओं एवं मानवों से निकट सम्बन्ध बनाने तथा अपने व्यवहार एवं विचारों से जनप्रिय हो जाने आदि बातों का ध्यान करते हुए अंग्रेज सरकार ने मार्च 1818 ई. में कप्तान टॉड को ग्वालियर रेजीडेंट के प्रथम सहायक के पद से पदोन्नत कर मेवाड़ में अपना राजनैतिक प्रतिनिधि नियुक्त किया। उस समय डेविड ओक्टर लोनी राजपूताना का रेजीडेन्ट था। सरकार ने उसको दिल्ली में रेजीडेन्ट नियुक्त कर टाड को मेवाड़ के अतिरिक्त जोधपुर कोटा बूंदी जैसलमेर और सिरोही राज्यों के लिए भी अपने लिए प्रतिनिधित्व का दायित्व दे दिया। टाड की इस आकस्मिक एवं अप्रत्याशित पदोन्नति से आक्टरलोनी के मन में भारी ईर्ष्याग्नि उत्पन्न हुई। उसका दिल्ली में बड़ा प्रभाव था। उसने हर प्रकार से टॉड को नीचा दिखाने और अपमानित करने के लिए निरन्तर षड्यन्त्र किये और उसको चार वर्ष अधिक अपने पद पर नहीं टिकने दिया।

मेवाड़ में प्रशासनिक सुधार

जब टाड राजनैतिक प्रतिनिधि बन कर राजपूताने में आया उस समय राजपूत राज्यों की हालत बहुत खराब थी। मराठा आक्रमणों और पिण्डारियों

की लूटपाट के कारण वे विनाश और अराजकता के कगार पर पहुँच गये थे। आंतरिक प्रशासन नाम मात्र के लिये रह गया था। सामंत लोग विद्रोह आपसी कलह छीना झपटी और हिंसक कार्यवाहियों में लीन थे। डाकुओं एवं लुटेरों का उत्पात सर्वत्र फैल गया था। इन कारणों से कृषि, उद्योग और व्यापार चौपट हो गये थे। मेवाड़ के राणा भीमसिंह का शासन तो सिमटकर उदयपुर की पतनीय घाटी तक रह गया था और उसका निर्वाह कोटा के मंत्री राजा जालिमसिंह की मदद से हो रहा था। ऐसी स्थिति में उसको दोहरा दायित्व का भार उठाना पड़ा। एक ओर उसको अंग्रेज सरकार के आर्थिक एवं राजनैतिक हितों की रक्षा करनी थी दूसरी ओर मेवाड़ तथा अन्य राज्यों में व्याप्त अराजकता और लूटमार समाप्त कर उनमें शांति और सुव्यवस्था कायम करनी थी उसको करने के लिये नया काम मिला था। उसको पूरा करने के लिये वह सम्पूर्ण उत्साह योग्यता शक्ति और सामर्थ्य के साथ जुट गया। उसके साहस लगन और उत्साह में सच्चाई और ईमानदारी थी। वह महत्वाकांक्षी था और कुछ असाधारण करके दिखाना चाहता था। उसके इस उत्साह और जोश को देखकर और प्रधानतः मेवाड़ में शांति और व्यवस्था कायम करने उसकी सीमाओं को सुरक्षित करने और प्राचीन गौरव को पुनर्स्थापित करने के कार्य में जो सफलता प्राप्त की उसको देखकर अंग्रेज अधिकारी दंग रह गये और उससे ईर्ष्या करने लगे। प्रारम्भ में उसको गवर्नर जनरल हेस्टिंग्ज का विश्वास प्राप्त रहा। टॉड ने मेवाड़ का शासन सीधा अपने हाथों में ले लिया। उसने विद्रोही जागीरदारों को वश में किया और उनको बलात् हड़पी खालसा भूमि से हटने तथा राणा के प्रति आज्ञाकारी बनने के लिये बाध्य किया। भीलों एवं मीणा लोगों की जोर जबरदस्ती एवं लूटमार समाप्त की, राज्य की आय में वृद्धि के लिये भू-कर का नया बन्दोबस्त किया व्यापार के लिये मार्ग सुरक्षित किये और मेवाड़ छोड़कर गये व्यापारियों को अंग्रेज सरकार की गारंटी देकर वापस बुलाया। इन सब कार्यवाहियों से न केवल राणा का राज्य और गौरव पुनर्स्थापित हुआ अपितु आय में वृद्धि होने और कृषि व्यापार एवं उद्योगों के फिर से पनपने से मेवाड़ पुनः तरक्की करने लगा।

राजपूत राज्यों के प्रति नीति

मेवाड़ में टॉड के प्रशासन में जो परिणाम निकले, उसकी प्रशंसा हुई तो निन्दा भी हुई। आश्चर्य की बात यह है कि जिस प्रयोजन की पूर्ति के लिये टॉड ने काम किया उसी के विरुद्ध कार्य करने का उस पर

आरोप लगाया गया। मेवाड़ के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने मनमाने परिवर्तन करने राणा की स्वतन्त्रता और अधिकारों का हनन करने जागीरदारों के परंपरागत अधिकारों पर आघात लगाने आदि कार्यवाहियों के लिए उसको दोषी ठहराया गया और कहा गया कि ये सब कार्यवाहियाँ संधि की शर्तों के विरुद्ध हैं। उसके विरुद्ध भ्रष्टाचार की झूठी बातें भी फैलाई गई। किन्तु वस्तुतः इन आरोपों को लगाने वाले डेविड आक्टर लोनी जैसे अंग्रेज अधिकारी ही अधिक थे जो टाड की महत्वाकांक्षापूर्ण प्रवृत्तियों क्षमताओं और तीव्र प्रगति की संभावना से आशंकित थे। उन्होंने उसके विरुद्ध व्यापक वातावरण बनाया और उसके कार्य में बाधाएं उत्पन्न की। अपनी सफलताओं के जोश में तथा डेविड आक्टर लोनी जैसे प्रतिद्वन्द्वियों द्वारा पैदा किये प्रशासनिक अवरोधों की अवहेलना करने के लिये टाड ने कुछ ऐसे कदम उठा लिये जो सरकारी आदेशों के विपरीत थे। इससे उसका संकट और बढ़ गया और केन्द्रीय प्रशासन विरुद्ध हो गया। जोधपुर और कोटा राज्यों में किसी भी प्रकार के परिवर्तन करने से रोका गया। अधिकारों में कमी की गई। जोधपुर और कोटा के मामलों में उसको देहली रेजीमेण्ट आक्टर लोनी के मातहत कर दिया गया। तथा अन्य अधिकारियों को उसके काम में लगाया गया। अप्रेल 1822 तक कोटा बूंदी और जैसलमेर पूरी तरह उसके उत्तरदायित्व से ले लिये गये। अन्त में मेवाड़ के मामलों में भी अंग्रेज सरकार ने आक्टर लोनी को राजपूताना एवं मालवा क्षेत्र के लिये अपना सर्वोच्च अधिकारी नियुक्त कर टाड को उसका मातहत बना दिया। टाड ने इन कार्यवाहियों से स्वयं को अपमानित महसूस किया जबकि वह अपनी सफलताओं पर हर्षित हो रहा था, उसको उसके विपरीत दंडित किया गया। कुपित और विरक्त होकर उसने अस्वस्थता का कारण बनाकर त्यागपत्र दे दिया। 1 जून 1822 को सेवा मुक्त होकर वह उदयपुर से रवाना हो गया। वहां से वह पश्चिमी भारत के प्रधान प्राचीन ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व के स्थलों आबू सिद्धपुर अणहिलवाड़ा पाटन बड़ौदा भावनगर पालीताणा जूनागढ़ द्वारका सोमनाथ आदि का अवलोकन एवं अध्ययन करते हुए जनवरी 1823 में बम्बई पहुंचा जहां से वह लंदन लौट गया।

अंग्रेज अधिकारियों की अप्रसन्नता

टाड के प्रति उच्च अंग्रेज अधिकारियों की नाराजगी का बड़ा कारण राजपूत राज्यों के प्रति उसकी सहानुभूति उसके द्वारा अंग्रेज सरकार द्वारा उनके साथ की गई संधियों की शर्तों के पालन पर खुले रूप से जोर देना

तथा इस क्षेत्र के सभी वर्गों के लोगों के साथ उसका मेल-जोल और जनप्रियता था। उसने मेवाड़ राज्य के आंतरिक मामलों में सीधा हस्तक्षेप करके शासन के सारे अधिकार अपने हाथों में ले लिये थे किन्तु वास्तव में यह राणा के अधिकारों का पुनर्स्थापित करने के लिये की गई अस्थायी कार्यवाही मात्र थी। सिद्धान्ततः वह राजपूत राज्यों की मूल सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्थाओं, नियमों एवं रीतिरिवाजों में किसी प्रकार के बाहरी हस्तक्षेप अथवा परिवर्तन करने तथा उन पर अंग्रेजी कानून और रीति व्यवहार लादने का विरोधी था। दासतापूर्ण परिस्थितियों के कारण जो बुराईयां राजपूतों के सामाजिक एवं निजी जीवन में आ गई थी उनमें सुधार लाने के सम्बन्ध में उसका कथन था कि वह सुधार बाहरी शक्ति द्वारा न किया जाकर वे स्वयं करें। भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के स्थायित्व और दृढ़ता के लिये टॉड ने मुगलों के इतिहास का उदाहरण देते हुए अंग्रेज सरकार को यह राय दी थी कि राजपूत राज्यों के साथ ऐसा कोई कार्य नहीं किया जाय जिससे दासता अथवा हीनता की भावना उत्पन्न हो। उनके साथ विजेता अथवा संरक्षक की भांति व्यवहार न करके मित्र की भांति व्यवहार करें। उनके प्रति अंग्रेज अधिकारियों के निरंकुश एवं स्वेच्छाचारी व्यवहार की टॉड ने खुलकर आलोचना की और इस आचरण को सन्धि शर्तों के विपरीत बताते हुए टॉड ने लिखा था हम ब्रिटेन के संरक्षण में आई इन जातियों को दंड देते समय दया का नहीं दंड का व्यवहार करते हैं उनके साथ तलवार का न्याय करते हैं। हमारी सरकार के कर तथा अर्थ सम्बन्धी कानून इन राज्यों के प्रजाजनों के हित में नहीं बनाकर हमारा कोष भरने के लिये बनाये जाते हैं। निश्चय ही टॉड की इस प्रकार की कटु स्पष्टोक्तियों के कारण वह कम्पनी के उच्चाधिकारियों का कोप भाजन बना और साम्राज्य की सेवा में किये गये उसके अन्य कार्यों के लिये कभी भी सराहना भी नहीं की गई।

अन्तिम वर्ष

भारत छोड़ने के बाद टॉड केवल तेरह वर्ष और जीवित रहा। 1 मई, 1824 ई० को उसको मेजर पद और 2 जून, 1826 को लेफ्टिनेंट कर्नल के पद पर पदोन्नत किया गया। 16 नवम्बर 1826 ई० को टॉड का विवाह लन्दन के एक प्रसिद्ध सज्जन की पुत्री जुलिया से हुआ। जिससे दो पुत्र तथा एक पुत्री हुई। मार्च, 1823 में लन्दन में उसके सहयोग से रायल एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना हुई। वह उसका सदस्य बना तथा उसने उसके लाइब्रेरियन का दायित्व भी ग्रहण किया। उसने स्वयं द्वारा

भारत म सग्रहीत कई प्राचीन पाडुलिपिया शिलालेखो की छापें सिक्के आदि पुस्तकालय म भेंट किये । उसकी कृतियो को दर्शित करने वाले भारतीय कलाकार घासी एव केप्टन वाघ द्वारा तयार किय गये चित्र सूची बद्ध करके रायल एशियाटिक सोसाइटी लन्दन के पुस्तकालय म रखे गये ।

भारत म अपनी सेवा काल के दौरान टाड निरन्तर राजपूत राज्या क इतिहास पुरातत्व साहित्य, सस्कृति कला आदि विषयो का अध्ययन एव शोध करता रहा और उसने प्रचुर शोध सामग्री एकत्र की। अपनी यात्राओ के दौरान उसकी यह शोधप्रवृति अनवरत रूप से सक्रिय रही । अपने अध्ययन और शोध क आधार पर टाड ने पहिले राजस्थान के इतिहास सस्कृति आचार विचार और सामाजिक रीतिरिवाजो क सम्बध म एक विशाल ग्रथ तयार किया। इस ग्रथ का नाम एनाल्स एण्ड एंटीक्विटीज आफ राजस्थान रखकर उसका प्रथम भाग 1829 ई मे प्रकाशित कराया। दूसरा भाग 1832 म प्रकाशित हुआ । उसक बाद उसने 'ट्रैवल्स इन वेस्टर्न इन्डिया ग्रथ लिखा जो उसकी आकस्मिक मृत्यु के कारण चार वर्ष बाद 1839 ई म प्रकाशित हुआ । 17 नवबर 1835 ई को उसका देहान्त हुआ ।[1]

(ख) इतिहास दर्शन

भारत सम्बधी इतिहास लखन

अठारहवी शती के मध्यकाल तक ब्रिटेन का भारत सम्बन्धी इतिहास लखन बडी सीमित परिधि म अवरुद्ध रहा । उस समय तक अग्रेजी इतिहास लेखक प्राचीन भारतीय विद्या साहित्य और सस्कृति से अपरिचित रहने के कारण भारत के इतिहास को गौण मानकर उसको मुस्लिम इतिहास के एक अग क रूप म ही लिखते थ । अठारहवी शती क उत्तराद्ध म पाश्चात्य विद्वानो द्वारा प्राचीन भारतीय विद्या एव ज्ञान विज्ञान सम्बधि शोध-खोज किय जान से भारत सबधी विस्मयकारी तथ्य यूरोपियो के सम्मुख उदघाटित हुए । उसके बाद स्वतत्र रूप स भारत का इतिहास लिखन का क्रम प्रारम्भ हुआ । विलियम जान्स क प्रयत्नो म 1784 ई म कलकत्ता मे रायल एशियाटिक सोसायटी की स्थापना और 1788 ई म उसके द्वारा एशियाटिक रिसर्चेज पत्रिका प्रकाशित करन के बाद इस ओर विशेष ध्यान दिया जाने लगा ।

---

1 सन्दर्भ ग्रथ डा ओझा कर्नल जेम्स टाड का जीवन चरित्र
पश्चिमी भारत की यात्रा स गोपालनारायण बहुरा

तत्कालीन इतिहास दर्शन

उस समय ब्रिटेन के इतिहास लेखकों में प्रधानतः तीन प्रकार की दार्शनिक विचारधाराएं काम कर रही थीं— ज्ञानोदयी (Enlightenment) रोमानी (Romantism) और उपयोगितावादी (Utilitasianism)। तीनों विचार धाराओं का संस्कृति समाज, राज्य आदि के सम्बंध में अपना अलग अलग दृष्टिकोण था और उनमें विदेशी जातियों और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के उद्देश्यों एवं नीतियों के सम्बंध में मतभेद था। अठारहवीं शती के अंत में तथा उन्नीसवीं शती के प्रारम्भ में रोमानी और उपयोगितावादी विचारधाराओं वाले कई इतिहास लेखकों के भारत सम्बंधी इतिहास ग्रंथ प्रकाशित हुए। विलियम जोन्स (Hindu Culture) विलियम राबटसन (Disguisition Concerning Ancient India 1791 ई), थामस मॉरिस (Modern History of the Hindostan 1802 10 ई) वान्स कनेडी (Origin and Affinity of the principal languages of Asia and Europe 1828 ई) चार्ल्स हैमिल्टन (Timur 1783 ई) जैसे रोमानी इतिहास लेखकों ने प्राचीन भारतीय विद्या एवं ज्ञान को उजागर किया और भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को मानव सभ्यता की महान धरोहर बताया। विलियम जोन्स ने अपने लेखन में प्राचीन भारतीय भाषा, साहित्य धर्म, दर्शन कानून नीति विद्या पुरातत्व कला आदि सभी विषयों में विस्तृत विवेचन किया। रोमानी इतिहास लेखकों के मतानुसार प्राचीन हिन्दू लोग खोजी प्रतिभा रखने वाले लोग थे। वे सभी प्रकार की कलाओं में निपुण, शासन-कार्य में स्मृति विधि एवं न्याय के कार्य में विवेकशील तथा ज्ञान विज्ञान के सभी विभागों के ज्ञाता थे। विलियम जोन्स ने सिद्ध किया कि संस्कृत भाषा ग्रीक और लैटिन भाषाओं की बहन है। इन भाषाओं में लिखी गई पौराणिक गाथाओं में बीच घनिष्ट संबंध है तथा यूनानी, रोमन एवं भारतीय संस्कृतियों का उद्गम एक ही है। उसने यह भी कहा कि प्राचीन हिन्दू सभ्यता यूनानी एवं रोमन सभ्यताओं से अधिक प्राचीन और बढ़चढ़कर है। जोन्स ने यह मत भी प्रकट किया कि यूनानी सभ्यता की जो देन यूरोपीय सभ्यता को रही उसी प्रकार की देन हिन्दू सभ्यता की प्राचीन एशियाई सभ्यता को रही है। जिस भांति प्राचीन यूनानी विद्या एवं ज्ञान को पुनर्जीवित करने से यूरोप में सांस्कृतिक पुनर्जागरण हुआ उसी भांति यदि हिन्दुओं की प्राचीन विद्या ज्ञान, और साहित्य का पुनप्रकाशित किया जाय तो उससे न केवल एशिया में पुनर्जागरण प्रारम्भ होगा अपितु उसका प्रकाश यूरोप में भी फैलेगा।

भारत सबंधी विरोधी विचारधाराएं

चार्ल्स ग्रांट और जेम्स मिल जसे उपयोगितावादी विचारधारा के इतिहास लेखकों ने विपरित मत प्रकट करते हुए लिखा कि प्राचीन हिन्दुओं में प्रतिभा तथा बौद्धिक गुणों का अभाव था। उनका अपना कोई इतिहास ग्रन्थ नहीं, चूंकि उन्होने उसके लेखन के लिये आवश्यक बौद्धिक परिपक्वता कभी प्राप्त नहीं की। उनकी कोई व्यवस्थित एवं निश्चित न्याय प्रणाली और विधि संहिता नहीं रही। जेम्स मिल के अनुसार सभ्य भारत केवल कथाओं एवं पौराणिक गाथाओं तक ही सीमित था। हिन्दू राज्य व्यवस्था राजाओं एवं पुरोहितों की स्वार्थपूर्ण दुरभिसंधि और संयुक्त निरंकुश तानाशाही मात्र रही जिसके कारण हिन्दुओं की बौद्धिक उन्नति अवरुद्ध रही। रोमानी इतिहास लेखकों ने जेम्स मिल जसे इतिहास लेखकों की धारणाओं का कड़ा विरोध किया। प्रधानत 1829 ई में प्रकाशित टाड के ग्रन्थ Annals and Antiquities of Rajasthan जान ब्रिग्ज के ग्रन्थ History of the riseof Mohamadan Power in India (1829 ई) तथा राबर्ट ग्लेग के ग्रन्थ History of British Empire 4 Vols (1830 1835 ई) में उन विचारों का पूरा उत्तर दिया गया। इतिहासकार ग्लेग ने तो मिल की स्थापनाओं का बिन्दुवार उत्तर दिया। इस भांति ज्यों ज्यों प्राचीन भारतीय विद्या साहित्य कला पुरातत्व आदि विषयों की शोध-खोज का विस्तार हुआ भारत सम्बन्धी भ्रान्त प्रस्थापनाओं का लोप होता गया। 1841 ई में एल्फिन्स्टन की पुस्तक History of India के प्रकाशन के बाद तो उनको पूछने वाला ही नहीं रहा।

टॉड रोमानी विचारक

जेम्स टाड रोमानी विचारधारा का लेखक था। वह रावटसन जोन्स मिल मारिस जसे इतिहास लेखकों की मान्यताओं से प्रभावित था। टाड ने अपने लेखन में जेम्स मिल की भ्रान्त धारणाओं का खण्डन किया और ब्रिटेन में व्याप्त भारत सम्बधी निराधार एवं मिथ्यापूर्ण विश्वासों को मिटाने में महत्वपूर्ण योगदान किया। टाड के विचारों ने राबर्ट सेम एन पोकोक तथा अन्य परवर्ती इतिहास लेखकों को प्रभावित किया।

रोमानी दर्शन का इतिहास लेखन काव्यात्मक एवं कलात्मक अभिव्यक्ति से पूर्ण होता था। वसी ही भावाई श्रेष्ठता और ओजस्वी साहित्यिक अभिव्यक्ति टाड के इतिहास ग्रथो में दृष्टिगत होती है जो इतनी हृदयस्पर्शी एवं प्रभावोत्पादक है कि उनको बार बार पढने की इच्छा होती है। यही

कारण है कि टॉड का राजस्थान सम्बन्धी ग्रंथ 'एनाल्स' को उसके प्रथम प्रकाशन के एक सौ साठ से अधिक वर्ष बीतने और टॉड की भूलों एवं कमियों का ठीक करने वाले कई शोधपूर्ण इतिहास ग्रंथ प्रकाशित हो जाने के बाद भी मूल अंग्रेजी ग्रंथ तथा उसके भाषाई अनुवादों की माँग आज तक बनी हुई है और बराबर उनके नवीन संस्करण निकलते रहे हैं जबकि समकालीन अन्य सभी ख्यातनामा इतिहासकारों के ग्रंथों के पुराने संस्करण ही पुस्तकालयों में उपलब्ध होते हैं।

अंग्रेजी साम्राज्यवाद सम्बन्धी दृष्टिकोण

ब्रिटेन के रोमानी इतिहास लेखकों की विचारधारा का दूसरा पक्ष उनकी रूढ़िवादिता थी जो किसी भी सभ्यता की मौलिक विशेषताओं में सुधार अथवा परिवर्तन के विरुद्ध थी। यही दृष्टिकोण टॉड के लेखन में प्रकट होता है। उसके मतानुसार किसी भी राष्ट्र की संस्थाएं किसी भी काल में उसकी सम्पूर्ण जीवन पद्धति को अभिव्यक्त करती है और प्रत्येक राष्ट्र द्वारा स्वयं के लिये विकसित सामाजिक व्यवस्था ही उसकी अपनी विशिष्ट स्थिति और प्रतिभा (genius) के लिये सर्वोत्तम रूप से उपयुक्त होती है। इस भाँति उसने उपयोगितावादियों और ईसाइयत के प्रसार के पक्षधर विचारकों के विपरीत दृष्टिकोण अपनाया जो एशियाई सभ्यताओं को बर्बर मानकर उनमें पाश्चात्य आचार विचार के आधार पर सुधार चाहते थे। टॉड ने राजपूत जातियों के प्राचीन इतिहास उनकी सांस्कृतिक एवं सामाजिक विशिष्टताओं एवं गुणों को उजागर किया। उसने मुगल और मराठा आधिपत्य की परिस्थितियों में राजपूतों में उत्पन्न चारित्रिक दोषों एवं सामाजिक बुराईयों को दर्शाया और उनको दूर करने पर जोर दिया। किन्तु उसने लिए टॉड ने राजपूतों की मूल संस्थाओं, नियमों और विशिष्ट आचार विचार में किसी भी प्रकार के सुधार के लिये बाहरी हस्तक्षेप का विरोध किया। उस काल में अंग्रेज अधिकारी गण राजपूतों की सामाजिक राजनीतिक व्यवस्था में मनमाने ढंग से पाश्चात्य प्रकार के परिवर्तन लाने उन पर विशिष्ट प्रकार की शर्तें लादने तथा ऐसी अपमानजनक कार्यवाहियाँ करने की कोशिशें कर रहे थे जिनके कारण उनकी आन्तरिक स्वतन्त्रता और जातीय स्वाभिमान को आघात लग रहे थे। टॉड ने इन कार्यवाहियों से न केवल एक प्राचीन सभ्यता के अवशेषों के नष्ट होने का खतरा देखा, अपितु अंग्रेजी साम्राज्य द्वारा एक मित्र को खो देने का खतरा भी देखा जिसकी मित्रता का बंधन ही साम्राज्य की रक्षा और स्थायित्व का आधार था। निश्चय ही जहाँ एक ओर उसका भावुक हृदय

इस प्राचीन सभ्यता को छिन्न भिन्न और लुप्त होने से बचाना चाहता था। वहीं दूसरी ओर उसकी स्पष्ट मान्यता थी कि उनको कुचलने और आत्मसात करने की कार्यवाही अंग्रेजी राज्य की रक्षा और स्थायित्व के लिये खतरनाक सिद्ध होगी। उसने लिखा था हमारे हर प्रकार के हस्तक्षेप को बन्द करने पर ही उनकी स्वतन्त्रता निर्भर करती है अन्यथा उनके राज्य हमारे राज्य में विलय हो जाने से हमारे अतिशय बने हुए शासन के लिये भयानक संकट उत्पन्न हो सकता है टॉड उसके स्पष्ट और स्वतंत्र विचारों के लिये कितना ही कोसा गया हो उसकी चेतावनी सही निकली। 1857 की विप्लवकारी घटनाओं ने भारत में अंग्रेजी राज्य हिला दिया था।

अतिशयता

टाड के लेखन में जहां एक ओर प्राचीन हिन्दू सभ्यता के प्रति प्रशंसा और तत्कालीन हिन्दू समाज की पतनावस्था के प्रति सहानुभूति की भावना प्रकट होती है वहीं दूसरी ओर मुस्लिम विरोधी विचार दर्शित होते हैं। टाड ने मुस्लिम इतिहास के प्रति दुर्भावना से काम लिया है। इसका प्रधान कारण उपरोक्त तत्कालीन इतिहास दर्शन की दो विचार धाराओं का प्रबल पारस्परिक टकराव था। जेम्स मिल जैसे उपयोगितावादी इतिहास लेखकों ने मुस्लिम शासन और उसकी संस्थाओं को प्रधान महत्व देते हुए प्राचीन हिन्दू सभ्यता और उसकी संस्थाओं की अति भर्त्सना करने में दुर्भावना से काम लिया था टाड का लेखन प्रधान रूप से उसका प्रत्युत्तर था और उस टकराव में टाड भी प्रतिवादी मनोवृति से ग्रस्त रहा। अठारहवी शती में एक ओर सामाजिक संस्कृति स्तर हिन्दू मुस्लिम सभ्यताओं में समन्वय की प्रक्रिया चल रही थी दूसरी ओर तत्कालीन अराजकता की स्थिति में राजनैतिक स्तर पर हिन्दू मुस्लिम शासकों में टकराव की नई स्थिति पैदा होने पर हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच वैमनस्य और शत्रुता के बीज बोये जा रहे थे अंग्रेज सरकार के अधिकारी साम्राज्य को शक्ति को सुदृढ़ करने के लिये उसको बढ़ावा दे रहे थे। टाड को यह वातावरण भी मिला। किन्तु यह निश्चित है कि टॉड के लेखन से हिन्दुओं में पुनर्जागरण पुनरुत्थान एवं स्वाभिमान की भावना प्रबल रूप से उत्पन्न की तथा उससे अनचाहे ही आगे चलकर भारतीयों में अंग्रेजी शासन से स्वतंत्र होने के लिये आंदोलन किया किन्तु साथ ही उसमें भारतीय समाज में हिन्दू-मुस्लिम विष का साम्प्रदायिक विद्वेष भी फैलाने का कार्य भी किया।

भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन पर प्रभाव

टॉड ने राजस्थान के इतिहास ग्रंथ में राजपूतों की वीर गाथाओं का, राजपूत वीरों के अदम्य साहस अद्भुत वीरता और अनुपम शौर्य (यूनानी वीर योद्धाओं के साथ तुलना करते हुए) तथा उनके त्याग और बलिदान का जो ओजस्वी वर्णन किया है प्रधानतः चित्तौड़ के साकों, महाराणा प्रताप की वीरता और हल्दी घाटी युद्ध का जो वृत्तान्त दिया है उसको पढ़कर बीसवीं शती के प्रारम्भ में बंगाल महाराष्ट्र तथा अन्य प्रांतों की भाषाओं में स्वतन्त्रता की प्रेरणा देने वाले वीर चरित्रों पर आधारित कहानी, नाटक, उपन्यास और काव्य साहित्य लिखे गये। उनको पढ़कर अंग्रेजी दासता से मुक्ति के लिये युवकों ने गुप्त आतंककारी क्रांतिकारी संगठन स्थापित किये। प्रताप का आदर्श और हल्दी घाटी की मिट्टी उनके प्रधान प्रेरणा स्रोत बन गये। स्वतंत्र भावना के ये बीज टॉड ने अपने ग्रंथ में छोड़े। तत्कालीन अंग्रेज अधिकारियों को उनका पूरा आभास हो गया था[1]।

कम्पनी सरकार का हितैषी

टॉड एक व्यापारिक कंपनी का नौकर था। उसको कंपनी के आर्थिक हितों का पूरा ध्यान था। ब्रिटेन में नवोदित व्यापारी एवं उद्यमी वर्ग ने वहां के सामन्त वर्ग को अत्यधिक कमजोर कर दिया था और बड़ी सीमा तक राजा को उनके प्रभाव से मुक्त कर दिया था। टॉड के विचारों में तत्कालीन पतित एवं लूट खसोट में ग्रस्त राजपूत सामंत वर्ग के अधिकारों के लिये कोई उपयोगिता नहीं थी। उसके विचार से राजपूत राज्यों को अराजकता एवं अशांति से पूर्ण तथा मुक्त करने के लिये उन राज्यों में सामन्तों को शक्तिहीन तथा राजाओं को पूर्ण अधिकारी बनाना आवश्यक था जिससे अंग्रेज सरकार उनसे आसानी से खिराज प्राप्त कर सके और अपने आर्थिक एवं राजनैतिक लाभ प्राप्त कर सके। मेवाड़ में उसने यही नीति अपनाई और अपने ग्रन्थ में राजस्थान की सामंतवादी प्रणाली का वर्णन करते हुए इन्हीं विचारों का प्रतिपादन किया। राजस्थान के सामन्त वर्ग में इससे बड़ी हलचल मची और अंग्रेज अधिकारियों ने बड़ा विरोध किया किन्तु अन्ततः अंग्रेज सरकार को देशी राज्यों के साथ सम्बन्धों में मूल रूप से इसी नीति को अपनाना पड़ा।

---

1 विस्तृत विवरण के लिए देखें 'राजस्थान के इतिहासकार' पृ 58 61, प्रताप शोध प्रतिष्ठान (सम्पादक)

(स) इतिहास लेखन

शोध सामग्री का सर्वेक्षण एवं संग्रह

1806 ई के बसन्त में उदयपुर के निकट एकलिंगजी तथा नागदा के खण्डहरों में डेरा डाले सिंधिया के दरबार में रहते हुए जब टाड की मेवाड के प्राचीन राजवंशी महाराणा भीमसिंह से भेंट हुई तो उसके भावुक मस्तिष्क पर ऐसा प्रभाव पड़ा मानो वह गौरवमय अतीत की कोई झांकी देख रहा हो। पतनावस्था के गर्त में डूबे सिसोदिया राजवंश के प्राचीन इतिहास की गाथा सुनकर नागदा के प्राचीन कलापूर्ण खण्डहरों का अवलोकन कर तथा राजपूतों के विशिष्ट चरित्र स्वाभिमान की भावना तथा उनके विशिष्ट आचार विचार की भव्यता देखकर टाड मुग्ध हो गया। उसके देश के कई विचारक जिन लोगों को बर्बर एवं असभ्य कहते नहीं थकते थे अत्याचार और अन्याय के नीचे दबे पड़े उन लोगों में उच्च सांस्कृतिक मूल्यों एवं आचार विचार के दर्शन करके वह आश्चर्य चकित रह गया जैसे उसको एक नया प्रकाश नजर आया। उसको लगा कि राजपूतों का उच्च चरित्र स्वाभिमान की भावना और सौम्य आचार व्यवहार विश्व को सभ्यता का पाठ पढ़ाने का दावा करने वाली और अपनी उच्चता का अहंकार करने वाली यूरोपीय जातियों से कहीं बढ़कर है जिनको विश्व के सम्मुख प्रकट करना उसके जीवन का अन्त मूल्यवान कार्य होगा जो पश्चिम के लोगों की आँखें खोल देगा तथा उनके झूठे अहंकार तथा उनके सामाजिक राजनैतिक दोषों को प्रकट कर देगा। इसलिए दौलतराव सिंधिया के दरबार में रहते हुए जब उसको भौगोलिक सर्वेक्षण का कार्य दिया गया तो उसने साथ साथ राजपूतों के प्राचीन इतिहास धर्म संस्कृति सामाजिक प्रथाएं आचार विचार तथा उनकी विभिन्न प्रकार की कलात्मक उपलब्धियां सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने तथा उनसे सम्बन्धित शोधपूर्ण सामग्री का सर्वेक्षण करने तथा एकत्र करने के लिये समाज के विभिन्न वर्ग के लोगों से सम्पर्क स्थापित किया।

टाड ने राणा के प्राचीन साहित्य-ग्रन्थालय का अवलोकन किया चारणों और भाटों की वंशावलियां तथा ऐतिहासिक विषय की सामग्री देखी प्राचीन पट्टों परवानों ताम्रपत्रों शिलालेखों की नकलें प्राप्त की भाटों चारणों राव लोगों से लोक कथाएं वीर गाथाएं चारणी गीतों और किम्वदन्तियों का संग्रह किया। अपनी यात्रा के दौरान प्राचीन स्थानों मन्दिरों, मैदानों

कलात्मक भवनों आदि को देखा और उनके सम्बन्ध में लिखित एवं अलिखित सामग्री एकत्र की। मार्ग में जो भी साहित्य मिला शिलालेख देखे उनकी प्रतिलिपियां टॉड आदि प्राप्त की। टॉड लिखता है कि जब भी वह प्राचीन स्थल कलाकृति अथवा उसके भग्नावशेष देखता था तो उसके मन में नाना प्रकार के भावों का ज्वार उठता था। टॉड ने यूरोपीय साहित्य प्रधानतः प्राचीन यूनानी एवं रोमन साहित्य का विशद अध्ययन किया था तथा विलियम जोंस के विचारों और कलकत्ता से प्रकाशित एशियाटिक रिसर्चेज में प्रकाशित ग्रंथ लेखकों के साथ लेखों को पढ़ता रहता था। क्योंकि उसके शोध एवं अध्ययन के विषयों में न केवल इतिहास एवं पुरातत्व अपितु मानव जाति विज्ञान समाजशास्त्र नाटक धर्म लोक कला और लोक विश्वास जैसे विषय भी शामिल थे। स्वयं भाषा शास्त्री नहीं होने से उसने समय समय पर जैन यति ज्ञान चन्द्र और कई ब्राह्मण पंडितों से पुराने लेखों को पढ़ने एवं समझने में सहायता प्राप्त की।

29172

टॉड की मान्यताएं

उस समय भारत में प्राचीन शोध का कार्य अभी प्रारम्भिक अवस्था में ही था और अपने अल्प समय और सीमित प्रयासों के कारण टॉड तथ्यात्मक सामग्री बहुत कम मात्रा में एकत्र कर सका था। अतएव प्राचीन इतिहास के लिये टॉड को विभिन्न राजकुलों की अलग अलग वंशावलियों से प्राप्त सूचियों का ही उपयोग करना पड़ा। तत्कालीन सभी राजपूत राजवंश अपनी प्राचीन गौरवमय परम्परा एवं प्रतिष्ठा दर्शाने के लिये पुराणों में वर्णित सूर्यवंश एवं चन्द्रवंश से अपना सूत्र जोड़ते थे। किन्तु टॉड ने राजपूतों में प्रचलित रीति रिवाजों जैसे सूर्योपासना सतीप्रथा अश्वमेध यज्ञ, मद्यपान शस्त्र अस्त्रों और घोड़ों की पूजा आदि बातों की सीथियनों अथवा शक लोगों में प्रचलित बातों से समानता देखकर टॉड ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि राजपूत सीथियनों अथवा शकों से निकले हैं। टॉड ने तातारी और शक लोगों की पुरानी कथाओं और भारतीय पौराणिक कथाओं में समान बातों की ओर संकेत किया है। समानता दिखाने में टॉड ने अतिशयता से काम लिया है। उदाहरणार्थ सीथियनों में सर्प पूजा का प्रचलित होना बताना अथवा उत्तरी भारत में बसे जाट लोगों का नाम के आधार पर यूरोप के 'जट' अथवा गोथ लोगों के साथ सम्बन्ध स्थापित करना। हेनरी हलम ने जिसके ग्रंथ A View of the state of Europe during the Middle Ages में टॉड ने अपने लेखन में बड़ी सहायता ली है, लिखा है - बाहरी तौर पर दिखाई देने वाली समानताओं के सम्बन्ध में सावधानी आवश्यक है

चूंकि गहराई से देखने पर वे गायब हो जाती हैं। स्वयं टाड ने एक जगह लिखा है — मानव जाति के विकास की समान प्रकार की अवस्था में अलग अलग स्थानों पर रहने वाली अलग अलग जातियों में एक ही प्रकार की बातों का होना पाया जाता है। इसलिये यह आवश्यक नहीं कि वे एक दूसरे से निकली हों। यह बात यूरोप एशिया और भारत में मध्ययुग में उत्पन्न सामंती प्रथा के विभिन्न स्वरूपों के सम्बन्ध में कही जा सकती है। राजपूतों की सामंती प्रणाली में कई ऐसी मूल बातें मिलती हैं जो यूरोपीय प्रणाली प्रधानतः फ्रांस के गाल अथवा इंग्लैंड के नार्मन लोगों में भी दिखाई पड़ती हैं। किन्तु इसका यह आशय नहीं कि उनमें सभी बातें समान रूप से मिलती हैं- यहां तक कि यूरोप के विभिन्न लोगों में मिलने वाली इस प्रणाली के स्वरूपों में भी कुछ विभिन्नता दिखाई पड़ती है। किन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं है कि यह प्रणाली मानव जाति के विकास की समान अवस्था में एक समान आवश्यकता के कारण उत्पन्न हुई।

राजपूत जातियों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में प्राचीन क्षत्रिय राजवंशों से निकलने सम्बन्धी धारणा बहुत प्रचलित रही है। किन्तु यह सिद्ध हो चुका है कि ईसा पूर्व की दूसरी शती के मध्य में हुए शक एवं कुषाण आक्रमणों तथा उनके बाद के विदेशी आक्रमणों प्रधानतः गुप्त साम्राज्य को विनष्ट करने वाले सफेद हूणों के आक्रमण में भारत में जो राजनीतिक उथल पुथल हुआ उसमें पूर्व के क्षत्रिय राजवंश के प्रताप लुप्त हो गये जबकि बाहर से आकर भारत में बसने वाली विदेशी गूजर आदि जातियों ने हिन्दू धर्म अपना लिया और क्षत्रिय बन गई। पश्चिम और मध्य भारत में इन जातियों द्वारा राज्य करना पाया जाता है।

जयचन्द्र विद्यालंकार ने लिखा है आरम्भ में राजपूत कोई जाति नहीं थी। राजाओं के पुत्र राजपुत्र कहलाते थे और विवाह — सम्बन्ध प्रायः बराबर के राजघराने में होता था। ग्यारहवीं शती तक यह चलन मिलता है। उसके बाद सामाजिक जीवन में सकीर्णता आने के कारण वाह ग्रामों की दृष्टि से राजघराने निश्चित कर लिये गये जिससे राजपूतपन की शुद्धता बनी रहे। इससे राजपूतपन लकीर हो गया। इसके परिणाम स्वरूप जिन राज वंशों की संतानों के हाथ में राज न भी रहे फिर भी वे राजपूत कहलाते रहे और दूसरे कुलों के लोगों के राजा बनने पर भी वे राजपूत नहीं माने गये। सब राजकुलों को मिलाकर राजपूत बनाने की स्थिति परिपक्व रूप में सोलहवीं शती के लगभग सामने आई जबकि उसके पूर्व मुस्लिम शासन काल में क्षत्रियों के राज्य नष्ट होने गये और उनमें से अवशिष्ट राजवंश नाग

स्वतन्त्र राजा न रहकर सामन्त बन गये थे। ऐसी दशा में राजवंशी होने के कारण उनके लिये 'राजपूत' नाम का प्रयोग हुआ। 'राजपूत' नाम से जानी जाने वाली जातियों का संगठन और विकास प्रधानतः गुजरात, राजस्थान और मालवा के प्रदेशों में हुआ। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि इन कई राजपूत जातियों का उद्भव ईसा पूर्व की दूसरी शताब्दी में मध्य एशिया से आने वाली उन जातियों से हुआ जो हिन्दू धर्म को स्वीकार करके क्षत्रिय बन गई। गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने मत व्यक्त किया है कि 'भारत पर आक्रमण करने वाली शक और हूण जातियाँ आर्यों में भिन्न नहीं थी वे वस्तुतः क्षत्रिय ही थी और वैदिक धर्म को छोड़कर अन्य धर्मों (बौद्ध आदि) के अनुयायी हो जाने के कारण वैदिक धर्म के आचार्यों ने उनकी गणना विधर्मियों में की।

इसा की उन्नीसवीं शती के प्रारम्भ में टॉड ने राजपूतों को एक संगठित जाति के रूप में देखा और उनको राजपूतों के छत्तीस राजकुलों का विस्तृत वर्णन पढ़ने और सुनने को मिला। चूंकि पुराणों तथा अन्य प्राचीन ग्रंथों में छत्तीस राजपूत कुलों का वर्णन नहीं मिलता टॉड को कवि चन्द बरदाई कृत पृथ्वीराज रासो तथा चारण भाटों द्वारा रचित अन्य काव्यमय गाथाओं पर आधारित रह कर लिखना पड़ा और यत्र-तत्र अनुमान का सहारा लेना पड़ा।

टॉड के लेखन की समीक्षा

इतिहास लेखन की दृष्टि से टॉड के राजस्थान सम्बन्धी ग्रन्थ की बड़ी समीक्षा हुई है। उसकी कमियों, भूलों और अतिशयोक्तियों के सम्बन्ध में विस्तृत चर्चाएं हुई हैं। टॉड ने इस सम्बन्ध में स्पष्टतया लिखा है "प्रस्तुत विषय का इतिहास की कठिन शैली में लिखने की मेरी इच्छा नहीं रही क्योंकि उसके कारण मुझे ऐसी कई बातें छोड़नी पड़ती जो राजनीतिज्ञों एवं जिज्ञासु विद्यार्थियों के लिये उपयोगी होती हैं। मैं इस ग्रंथ को भावी इतिहासकारों के उपयोग के लिये प्रचुर संग्रह के रूप में प्रस्तुत कर रहा हूं।" निस्सन्देह ही टॉड अपने ग्रंथ के लेखन में पुराणों तथा कवि चन्द बरदाई द्वारा लिखित पृथ्वीराज रासो तथा अन्य चारण भाटों की काव्यमय गाथाओं पर अत्यधिक आधारित रहा, जिनसे उस काल के रीति व्यवहारों और विश्वासों के सम्बन्ध में जानकारी अवश्य मिलती है किन्तु जिनका वर्णन ऐतिहासिक तथ्यों की दृष्टि से पूरी तरह निष्पक्ष एवं विश्वसनीय नहीं था। उसके अथक प्रयासों के बावजूद समय और अवसर की सीमा के कारण वह अन्य प्रकार की शोध सामग्री बहुत कम जुटा पाया। किन्तु उसके लेखन में भूलों के अन्य कारण भी

उनका अत्यधिक उत्साह कल्पना और भावुकता भी रही जो राजपूतों और प्राचीन तथा यूरोपीय तथा एशियन जातियों के धार्मिक विश्वासों और कम काडों आदतों और रीति व्यवहारों के मध्य समानता दिखाने राजपूतों प्रधानत सिसोदियों और राठौडों की अत्यधिक प्रशंसा करने आदि के वर्णन से प्रकट होती हैं ।

टॉड के लेखन में जो भी कमियां और भूलें रही हों इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह राजस्थान के इतिहास का जनक प्रथम आधुनिक लेखक था । उसने अनेक अलग राजपूत राज्यों के इतिहास के सम्बन्ध में जो पद्धति अपनाई वह आगे के इतिहासकारों के लिये आधार और मार्ग दर्शक बनी । उसने इस भू भाग में प्रचलित भारतीय धर्म मानव विज्ञान और समाजशास्त्र का प्रथम मौलिक अध्ययन प्रस्तुत किया तथा साथ ही उसने लोक कलाओं लोक धर्म सामाजिक रीतिरिवाजों और व्यवहार नियमों का वर्णन दिया । कृषकों और आदिवासियों के धार्मिक विश्वासों का वह प्रथम अध्ययता और मौलिक प्रस्तुतकर्ता था । ऐतिहासिक तथ्यान्वेषण की दृष्टि से उसने न केवल सर्वप्रथम प्राचीन साहित्य शिलालेखों पुरालेखों भवनों, मन्दिरों स्मारक स्थलों आदि का उपयोग किया अपितु उनके महत्व को प्रकट करके इस प्रकार की तमाम सामग्री को विनष्ट होने से बचाने तथा संग्रहित करने की प्रवृत्ति को उत्पन्न किया । 1832 ई में लन्दन के क्वाटरली रिव्यू में ग्रंथ की समीक्षा करते हुए लिखा गया था इतिहास की सामग्री के सर्वाधिक मनोरंजनपूर्ण एवं परिश्रमी संग्राहक के तौर पर टाड का कार्य प्रशंसनीय है । उसकी स्वयं की वर्णन शैली कई स्थलों पर मुक्तता ओजस्विता एवं औजस्वता से परिपूर्ण है । सच्च सही मन्तव्य होने तथा कहीं कहीं कठिन और आडम्बरपूर्ण होने पर भी उसकी शैली अधिकतर सजीव और सरस है । उसकी कृति के दोष कृति के स्वरूप के कारण है । भिन्न भिन्न राजपूत जातियों के विशिष्ट एवं अलग अलग इतिहासों को एक गुथे हुए निरंतर इतिहास के रूप में ढालना असम्भव ही था । किन्तु इस प्रकार के स्वरूप के ग्रंथ लेखन के लिये सम्पूर्ण सामग्री एकत्र करने का कार्य केवल कर्नल टाड ही कर सकता था । इस प्रकार के कम लोग होंगे जो उनको इतने उत्तम ढंग से उपयोग कर सकते । ग्रंथ को पढ़ने के बाद निष्पक्ष पाठक ग्रंथकार के चरित्र के सम्बन्ध में उच्च भावना प्रकट किये बिना नहीं रहेंगे विद्वान लोग निश्चित ही उसके कृतित्व के प्रति सम्मान प्रदर्शित करेंगे और साहित्य की एक शाखा को जो सदा उसने की है उसके लिये अपनी कृतज्ञता जाहिर करेंगे ।

—

टॉड की दृष्टि मे राजपूत जाति

—डॉ मीना गोड़

टॉड रचित 'एनाल्स एण्ड एण्टिक्विटीज आफ राजस्थान' तथा 'ट्रेवल्स इन वेस्टन इण्डिया' राजस्थान के इतिहास के लिए एक अभूतपूर्व देन है। राजस्थान के इतिहास को जानने के लिए उसकी पुस्तक एक कोष के समान है। जेम्स टाड राजपूतो का प्रबल पक्षपाती था। वह राजपूतो के चरित्रगत विशेषताओ से काफी प्रभावित था। इस जाति के प्रथम साहस उत्साह की इच्छा, राजभक्ति, सम्मान, आचरण, आतिथ्य और सरल व्यवहार ने उसे विमुग्ध कर दिया था।[1] टाड को राजस्थान के निवासियो से काफी अनुराग हो गया था। अन्य अग्रेज अधिकारियो की अपेक्षा वह यहाँ का शुभचिन्तक बन गया और अपने अधिकारो का प्रयोग सबके कल्याण के लिये करने लगा। अग्रेज सरकार का एक अधिकारी होकर भी वह यहाँ के राजाओ और जागीरदारो को जनहितकारी तथा न्यायप्रिय कार्य करने के लिए प्रोत्साहन देता रहा। उसकी राजपूत रियासतो तथा राजपूतो के प्रति अनन्य भक्तिपूर्ण भावना के फलस्वरूप कम्पनी के अन्य अधिकारियो ने उस पर सन्देह तथा भ्रष्टाचार के आरोप लगाये जिसे टाड ने सहन नही किया और अपना त्यागपत्र कम्पनी को भेज दिया।[2]

टॉड ने एनाल्स मे राजपूत जाति की उत्पत्ति के सम्बन्ध मे काफी विस्तार के साथ वर्णन किया है। उसने इस बात की स्थापना का भरसक प्रयत्न किया है कि राजपूत मुख्य रूप से सिथियनो अर्थात् शको के वशज है।[3] अपने इस कथन के समर्थन मे टाड ने बताया है कि राजपूतो मे प्रचलित

---

1 जेम्स टॉड, एनाल्स एण्ड एण्टिक्विटीज ऑफ राजस्थान भाग 1 पृ 8, 21

2 नरसिंह ऑफ इण्डियन हिस्टारीकल रिसर्च सस्थान, उदयपुर

3 टॉड वही पृ 21

अनेक रीति रिवाज जसे सूयपूजा सतीप्रथा अश्वमधयज्ञ वीर व्यवहार युद्ध स्त्रियो के प्रति व्यवहार जुआ खेलना मद्यपान शस्त्रों तथा घोडों की पूजा आदि शक जाति के रीतिरिवाजा से बहुत मिलत जुलत हैं । टाड के मतानुसार तातारी तथा शक लोगा की पुरानी कथाओ तथा पुराणा की कथाओ म भी समानता पाई जाति है । इसके अतिरिक्त शको की वीरता उनका आदर्श तथा उनक विश्वास राजपूता म पूर्णरूप स देखने को मिलत हैं किन्तु बहुत से विद्वान उनकी मान्यता म सहमत नहीं हैं । आधुनिक शोध की दृष्टि से भी टाड की सिथियन उत्पत्ति सिद्धा त *को नकार दिया गया है तथापि उत्पत्ति विषयक प्रथमिक ध्यान आकर्षित करन क* सन्दभ म इस उपकल्पना का महत्व है ।

टाड ने राजपूता के सामाजिक परम्पराओ रीतियो रिवाजों रूढियों आचरणा प्रतिमाना आदर्शों आदि के सम्बन्ध म काफी लिखा है । टाड के ग्रन्थ राजपूत जाति और राजस्थान का गान करत हैं । उसने अपने वर्णनों द्वारा ब्रिटिश भारत सरकार का ध्यान उन अमानवीय कृत्यों क प्रति भी आकर्षित किया जो राजपूता म प्रचलित थ । इन कुरीतियो को मिटाने के लिए प्रशासनिक प्रयत्न आरम्भ किये गये थे । राजपूता की परम्परा व प्रियता पर प्रकाश डालत हुए टाड न लिखा है सहस्रो वर्षों क बीत जाने पर भी राजपूतो के नित्य व्यवहार व अन्य प्रथा की रीति सब प्रकार से अचलभाव *से स्थिर रही है ।*[4]

टाड राजपूतो की चरित्रगत विशेषताओ स काफी प्रभावित था । एनाल्स म उसन लिखा है कृतज्ञता आत्मसम्मान की रक्षा विश्वास पालन राजपूता का मूलमत्र रहा है तथा कृतघ्नता उनक लिए सबस बडा अपराध । राजपूत स्वभाव तो भल ही उग्र हो पर उनके हृदय म राजभक्ति तथा देशभक्ति की भावना सदा विराजमान रहती है । अकबर जहांगीर तथा औरगजेब न जिन युद्धो म विजय तथा गौरव पाया था उनक मूल में उसके राजपत मित्र हा थ ।[5]

टाड ने मडता म औरगजेब कालीन एक मस्जिद को देखा था जो बिल्कुल सही हालत म थी जब कि राठौड औरगजेब-युद्ध 30 वर्षो तक चला था । उसन अनुभव किया राजस्थान के लोग धम के प्रति दृढ तथा विश्वासी

4 टाड एन पृ 510

5 टाड एन पृ 97

होते हुए भी अन्य धर्म के प्रति सहिष्णु होते हैं । उसके विपरीत मुसलमानों द्वारा पुजारी का मशहूर मन्दिर उस आक्रमण के दौरान तोड़ दिया गया था ।[6] टॉड राजपूतों के इस चरित्रगत विशेषता से काफी प्रभावित हुआ था ।

राजपूतों में व्याप्त कुरीतियाँ भी टॉड की दृष्टि से अछूती नहीं रहीं टॉड ने राजपूतों को महज एक योद्धा के रूप में नहीं देखा बल्कि उसने समूचे राजपूत समाज एवं उनकी संस्कृति का भी गहन अध्ययन किया। उसने न केवल राजपूती शौर्य के समक्ष मस्तक झुकाया बल्कि राजपूतों के मध्य प्रचलित अफीम जैसी बुराईयों की तरफ भी लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। राजपूतों में प्रचलित अफीम के प्रचलन को उसने उनकी दुर्बलता क्रूरता तथा अमानवता के लिए उत्तरदायी ठहराया । राजपूत एक साथ अफीम का सेवन करते थे। राजपूत जाति संगठन ने इस प्रकार परस्पर एक साथ बैठकर जो प्रतिज्ञा कर ली वह प्रतिज्ञा शपथ की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ होती थी।[7]

तत्कालीन राजपूत समाज में प्रचलित कुरीति बहुविवाह प्रथा के सम्बन्ध में टॉड ने लिखा है कि भाईयों के मध्य आपसी झगड़ा का कारण बहुत हद तक राजपूतों के मध्य प्रचलित बहु विवाह प्रथा है। इसके फलस्वरूप पारिवारिक संकट उत्पन्न होते थे और उस संकट में छोटे छोटे बालक मार दिये जाते थे ।

विलासितापूर्ण से उत्पन्न होने वाली बुराईयों की तरफ टॉड का रचनात्मक कलम आगे नहीं बढ़ा । साथ ही मानवीय पीड़ा तथा अन्याय जो राजपूत समाज में प्रचलित था उसकी तरफ से भी टॉड विमुख हो रहा। राजपूत समाज प्रचलित सतीप्रथा तथा जौहर प्रथा में राजपूत स्त्रियों के त्याग तथा बलिदान से वह काफी प्रभावित था । उसने लिखा है अन्य देशों की स्त्रियों के सम्मुख राजपूत स्त्रियों का आत्म अत्यन्त ही शोचनीय प्रतीत होता है । जीवन के एक-एक पग पर मानो उनके लिए मृत्यु मुंह फैलाए खड़ी रहती थी । राजपूतों के युद्ध में पराजय होने पर या नगर पर शत्रुओं का अधिकार हो जाने की अवस्था में राजपूत स्त्रियां अपने सतीत्व

---

6 टॉड पश्चिमी भारत की यात्रा स डा गोपाल नारायण बहुरा, पृ 43

7 टॉड एन पृ 511

की रक्षा के लिए मृत्यु का वरण कर लेती थी।[8]

टाड राजपूता म प्रचलित घोर अमानवीय प्रथा कन्या वध के लिए जिम्मेदार उनके मध्य प्रचलित विवाह रीति को माना है। अपनी पुस्तक एनाल्स मे वह लिखता है राजपूत अपनी अपनी कन्याओ को बराबर वाले पात्र के हाथ म समर्पित करने म असमर्थ हो वश म कलक लगाने की अपेक्षा उस सुकुमारी कन्या को अफीम देकर मार डालते थे। राजपूतो म अपनी शाखा और अपने गोत्र म विवाह नही हो सकता था। विवाह म धन भी काफी खर्च होता था। शादी के अवसर पर ब्राह्मण कवि आदि दल बाधकर आते थे। और कन्या के पिता की उच्च प्रशसा कर उससे दान से ज्यादा दान लेने की अपेक्षा करते थे। यदि कन्या का पिता उनकी इस भावना को पूरा नही करता तो कविगण उसके अपमान की कविता बनाकर उसका घोर तिरस्कार करते थे। अत कन्या का पिता अधिक धन खर्च करने म सामर्थ्य नही होने पर भी मजबूरी किसी न किसी प्रकार अधिक धन खर्च करता था।[9]

राजपूतो के समीप रहकर टॉड ने यह अनुभव किया कि राजपूत जाति म दिनोदिन राष्ट्रीय भावना म ह्रास आता जा रहा है। उसका विचार था कि इसका मूल कारण उन पर मुसलमानों का अत्याचार तथा मराठों की लूटमार था। वह राजपूत राज्यों के पुनर्गठन के मत म था ताकि राजपूत जाति पुन अपनी गौरवशाली पूर्वावस्था को प्राप्त कर सके।

राजपूत जाति की राजनीतिक दुरावस्था के सम्बन्ध म उसने लिखा है कि राजपूतो म सगठन के अभाव ने उनके राष्ट्रीय शक्ति के निर्माण म बाधाएँ पहुचाई तथा इसी के अभाव के कारण वह कभी भी मराठो की भाँति अपनी केन्द्रीय शक्ति की स्थापना नही कर पाये। प्रत्येक राजपूत राजा स्वय या अपनी सेना की सहायता से अपने राज्य की रक्षा करता था किन्तु किसी अन्य बाह्य शक्ति के निर्माण की तरफ किसी ने कोई ध्यान नही दिया। राजपूत शासको द्वारा ब्रिटिश सरकार को किसी प्रकार के अनिष्ठ की आशका से वह मुक्त था। उसका विचार था कि राजपूत राजा सरकार का किसी प्रकार अनिष्ट

8 टाड पश्चिमी भारत की यात्रा पृ 33

9 टाड एन पृ 503

नष्ट कर सकते है। यदि राजपूत पूर्व के समान बल पराक्रम गौरव धन सम्मान को प्राप्त भी कर ले तो भी एकता के अभाव के कारण वे अग्रेजो का किसी प्रकार की क्षति नही पहुंचा सकते क्योकि राजपूतो मे एकता का अभाव शुरू से रहा है। अपनी जन्मभूमि की रक्षा के लिए विभिन्न राजपूत कभी एक नही हुए।

टॉड ने राजपूतो का एक सक्रमण काल मे होकर गुजरते देखा था। यद्यपि टाड को मराठाकालीन प्रवृत्तियो तथा स्रोतो का पता था वह स्वय भी तत्कालीन घटनाओ का प्रत्यक्षदर्शी था किन्तु उसने मराठा राजपूत सम्बन्धो पर समुचित प्रकाश नही डाला है अपितु मराठो को लुटेरा के रूप मे बतलाते हुए राजपूत पक्ष का अधिक लिखा। राजस्थान की सास्कृतिक परम्परा और राजनीतिक सस्थाओ के पतन मे भी उसे मराठा की कार्यवाहिया अधिक दिखाई दी। उसने अपनी पुस्तक मे लिखा है बाह्य दृष्टि से देखने पर यह पता चलता है कि दीर्घकाल तक विजातीय आक्रमण से राजपूत जाति मे प्रतिभा तथा वीरत्व का अभाव हो गया है, किन्तु यह कल्पना भ्रातिपूर्ण है विजातीय उत्पीडन और अत्याचार से राजपूत चरित्र मे इस समय जितने शोचनीय लक्षण दिखाई देते है शान्ति विस्तार के साथ साथ वह सब दूर हो जायगे।[10]

टाड एक ऐसा इतिहासकार था जिसने न केवल राजस्थान की राजनीति एव देशी राज्यो के युद्ध अभियान को महत्व दिया वरन् यहा की सभ्यता एव संस्कृति को भी अपने लेखन मे वृहद स्थान दिया। यह अवश्य है कि जिन तथ्यो को उसने अपने लेखन मे स्थान दिया उनमे ह्रास काल कारणो का सही विवरण नही कर सका। वह इस बात का भी तथ्यात्मक परीक्षण नही कर सका कि शौर्य एव वीरता का विपुल भण्डार होने के बावजूद राजपूतो ने अपनी आजादी क्यो खोयी? सम्भवत राजपूत वीरो के आत्मत्याग तथा उनकी वीरता ने टाड को अपने लेखन मे पुराण साथ न देने के लिए बाध्य कर दिया। टाड के राजस्थान के राजपूत शासकों सरदारो के साथ मधुर सम्बन्धो ने टॉड को एक इतिहासकार एव राजनीतिज्ञ की व्यापक दृष्टि प्रस्तुत करने मे महत्त्वपूर्ण प्रदान किया। टॉड ने अपने लेखन मे राजपूत वीरो एव वीरागनाओ का जो अतिशयोक्तिपूर्ण मार्मिक हृदयस्पर्शी चित्रण प्रस्तुत किया, उससे राजपूत जाति पर गहरा प्रभाव पडा। यद्यपि पाश्चात्य सम्पर्क मे मान तथा अग्रेजी सत्ता द्वारा

---

10 टाड एन पृ 505

सुरक्षा की गारण्टी दिये जाने के बाद यहा के नरेश ऐश्वर्य एव विलासिता में डूब गये । टाड के इतिहास से आगे चलकर राजपूतों को अनिवार्यरूपेण प्रेरणा मिली । वे अपने पूर्वजों के आदर्शों को समझने लगे । समाज में चली आ रही कुरीतियों को जड से उखाडने के लिये वे कटिबद्ध हो गये । राजा महाराजाओं ने टाड के इतिहास से प्रेरित होकर अपने अपने राज्यों का इतिहास लिखवाया था । टॉड के इतिहास लेखन ने राजपूत जाति में सर्वथा क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया ।



टॉड की दृष्टि में
पश्चिमी भारत के मन्दिर और उनका स्थापत्य

■ सोहन कृष्ण पुरोहित

कर्नल जेम्स टॉड की इतिहास में विशेष रुचि थी। इसलिये उन्होंने अपने भारत प्रवास के दौरान राजस्थान का इतिहास और पश्चिमी भारत की यात्रा शीर्षक ग्रन्थों की रचना की।[1] टॉड की पश्चिमी भारत की यात्रा से सम्बन्धित ग्रन्थ तो उनकी मृत्युपरान्त ही प्रकाशित हो पाया। इस ग्रन्थ को लन्दन की विलियम एच एलन एण्ड कम्पनी ने प्रकाशित किया। टॉड ने यह ग्रन्थ अपनी पत्नी श्रीमती कर्नल विलियम हण्टर क्लयर को समर्पित किया।

जेम्स टॉड ने पश्चिमी भारत की यात्रा शीर्षक ग्रन्थ में उदयपुर से स्वदेश रवाना होने तक की यात्रा का कलमबद्ध किया। इस ग्रन्थ में पश्चिमी भारत के ग्रामों, नगरों नदियों वनस्पति के अलावा वहाँ के सामाजिक, धार्मिक आर्थिक और राजनीतिक जीवन का सजीव चित्रण किया गया है।[2]

प्रस्तुत निबन्ध में हमारा उद्देश्य कर्नल टॉड द्वारा अपने ग्रन्थ पश्चिमी भारत की यात्रा में उल्लेखित मन्दिरों और उनके स्थापत्य पर प्रकाश डालना है। टॉड ने विवेच्य ग्रन्थ में मुख्य रूप से राजस्थान और गुजरात के उन मन्दिरों का उल्लेख किया है जो उसने अपनी पश्चिमी यात्रा के दौरान स्वयं देखे थे। उन मन्दिरों में से कुछ तो आज केवल इतिहास ग्रन्थों की ही विषयवस्तु रह गये हैं।

---

1 ह्यू डवनपोर्ट, द ट्राल्स एण्ड ट्रम्पस आफ द मवाड फिगडम पृ 79 84

2 टॉड जेम्स, पश्चिमी भारत की यात्रा (ट्रैवल्स इन वेस्टर्न इण्डिया का हिन्दी अनुवाद) से गोपालनारायण बहुरा

कनल टॉड द्वारा उल्लिखित वैष्णव शव शाक्त और जन मन्दिरो के विवरण को हम अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से दो भागों म बाट सकते है प्रथम राजस्थान के मन्दिर और द्वितीय गुजरात के मन्दिर।

कनल टाड स्थापत्य कला का विशेष जानकार न था लेकिन फिर भी अपनी बुद्धि चातुय से वह मन्दिरो का जितना विवरण सकलित कर सका उतना उसने किया। अब हम उन मन्दिरो का विवरण प्रस्तुत करते है जिनका उल्लेख टाड ने अपने ग्रन्थ मे किया।

राजस्थान के मन्दिर और उनका स्थापत्य

कनल टाड ने उदयपुर से जब यात्रा प्रारम्भ की तो माग म कई छोटे और बड मन्दिरो को उसने देखा और उनका विवरण उसने अपने ग्रन्थ मे प्रस्तुत किया। उसने गोगुदा होकर घस्यार का माग अपनाया। उसने घस्यार म श्रीनाथजी की प्रतिमा और मन्दिर का वणन करते हुए लिखा कि मराठा और पठानो न भगवान विष्णु का सम्मान नहीं किया। औरगजेब ने भी यमुना तट पर बने आदि मन्दिर को खण्ड किया तो नाथद्वारा के भगवान श्री न यहा शरण ली इसलिये इस स्थान को प्रसिद्धि मिली। इस स्थान के चारो ओर एक सुदृढ परकोटे से किलेबन्दी की गई थी।[3]

प्रकरण तीन म उसने अरावली के पश्चिमी ढाल की यात्रा के दौरान नायनमाता की प्रतिमा के दशन किये थ। यहीं पर बच्चो को चेचक रोग से बचाने वाली शीतला माता का भी मन्दिर था।[4]

बालपुर या बालनगर के शिवलिंग और उसके सम्मुख बने पीतल के बल ने उसे रोमाचित किया।

टाड ने सिरोही के सारणेश्वर महादेव के मन्दिर[5] का विस्तत

---

3 पश्चिमी भारत की यात्रा पृ 9 10

4 वही पृ 27

5 वही पृ 60, पटनी सोहनलाल अबुद मण्डल का सास्कृतिक वभव, पृ 35 39 ओझा गौरीशकर हीराचन्द सिरोही का इतिहास, पृ 200 म।

विवरण प्रस्तुत किया है। वह लिखता है कि यह मन्दिर छतरियों से घिरा हुआ है। मन्दिर की गोल और महराबदार छत खम्भों पर टिकी हुई है। गुम्बद की आकृति इस प्रदेश के रिवाज के अनुसार अण्डाकार है। जिसका छोटा भाग एक लम्बे आधार पर सीधा रखा हुआ है। मन्दिर के अन्दर शिवलिङ्ग विराजमान है और बाहर एक भारी त्रिशूल है जो 12 फीट लम्बा है और वह सप्त धातु का बना बताया जाता है। प्रवेश के ऊपर दो हाथी दरवाजे पर रक्षा के लिए खड़े हैं। पूरा मंदिर एक पक्के परकोटे से घिरा हुआ है। जिसे माण्डू के मुस्लिम सुल्तान ने बनवाया था। यहां पर स्थित कुण्ड का जल रोगों से मुक्ति दिलवाता है।

कर्नल टाड ने भरिया के पास जैन मन्दिरों का उल्लेख भी किया है। जिन्हें उसने स्वयं देखा था।[6]

टाड ने आबू की भी यात्रा की थी।[7] इस प्रसंग में उसने गणेश मंदिर का वर्णन किया है। वह लिखता है कि इस मंदिर पर चढ़ना कठिन कार्य है। ओरिया और अचलेश्वर मन्दिर के मध्य टाड ने मन्दिरों का एक समूह देखा था। जिसमें सबसे प्रमुख नागेश्वर का मन्दिर था। यह मन्दिर चन्द्रावती के प्रपाता पर बने हुए अणाभ्या और उदयपुर के पास बावड़ियों पर बने हुए मन्दिरों की अनुकृति था। वह लिखता है कि इसकी सरल ठोस बनावट, बाहरी चौकोर खम्भे जिनका ऊपरी भाग ठेठ देहाती ढंग का बना हुआ है। बिलकुल उसी ढांचे में ढले हुए हैं और उन्हें देखकर यही कल्पना होती है कि यह उसी काल में और उसी कारीगर द्वारा बनाया हुआ है।

आबू प्रवास के दौरान टाड ने अचलगढ़ के मन्दिरों का निरीक्षण किया। वह लिखता है कि अचलगढ़ में हनुमान मंदिर का दरवाजा ग्रेनाइट के पत्थरों का बना है।

---

6 टॉड पूर्वो पृ 74

7 वही पृ 77-118 आबू के दर्शनीय स्थानों के सम्बन्ध में द्रष्टव्य आबू दर्शन (जन सम्पर्क निदेशालय राजस्थान, जयपुर द्वारा प्रकाशित), पटनी पूर्वो पृ 171 178

अचलगढ का पार्श्वनाथ मंदिर दर्शनीय है। इस मंदिर का निर्माण माण्डू के श्रेष्ठी ने करवाया था। मन्दिर के स्थापत्य के सम्बन्ध म टाड ने लिखा है कि इसके खम्भे अजमेर के अढाई दिन के झोपड (जो मूलत जन मंदिर था) जस थ। वही पर ऋषभदेव के मंदिर को भी उसने देखा था। इस मंदिर म चौबीस म से प्रथम 12 तीर्थङ्करो की मूर्तियां विराजमान थी। इनका वजन कई हजार मन था तथा व सर्वधातुनिर्मित थी। दुग के पास स्थित एक अन्य मंदिर म पार्श्वनाथ की प्रतिमा प्रतिष्ठित थी। इस मंदिर का निर्माण कुमारपाल ने करवाया था।

टाड के अनुसार– अचलेश्वर आबू के रक्षक माने जाते हैं। मन्दिर म आकार के लिहाज से कोई खास बात नहीं है और सजधज बहुत कम है। यह एक प्राचीन मन्दिर था और एक चतुष्कोण के बीच बना हुआ था। सम्पूर्ण मन्दिर नीले स्लट के पत्थरा म निर्मित छोटी छोटी गुमटियों से घिरा हुआ था। वहा रानमराज पातालेश्वर का प्रसिद्ध अगूठा मुख्य पूजा पात्र था। वहा पवत की देवी की प्रतिमा की भी पूजा की जाती थी। इस मन्दिर म टाड न शिव क उज्ज्वल नख के भी दशन किये। मन्दिर के चारो ओर अन मंदिरो म स एक के बाहर प्रलयकालीन जल म हजार फनवाले शेषनाग पर भगवान नारायण की मूर्ति तर रही थी। बाहर खड स्तम्भो पर गज की मूर्तियां उत्कीर्ण थी। आबू म देलवाडा का[8] पुण्य देवालयो का स्थान है। इसलिय यहा के मन्दिरो क समूह को यह नाम दिया गया है। टाड इन मंदिरो के स्थापत्य को देखकर मुग्ध हो गया। इसलिये उसन यहा के जन मंदिरो का वणन विस्तत रूप स किया। उसने लिखा कि जनो के इन मंदिरो की सुन्दरता का वणन लेखनी स करना कठिन है। देलवाडा के जन मन्दिरो का विस्तत विवेचन मुनि जयन्तविजय ने भी किया है। लेकिन एक विदेशी होने पर भी टाड का विवरण कम महत्वपूण नहीं है।

टाड ने ऋषभदेव (देलवाडा) के मन्दिर का वणन करत हुए लिखा कि भारत क सभी मन्दिरो स उत्कृष्ट इस मंदिर की समानता ताजमहल के अलावा कोई इमारत नहीं कर सकती। इसका निर्माण विमल शाह न करवाया जो अणहिलवाड का व्यापारी था। मन्दिर के दरवाजे पर लक्ष्मी

---

8 देलवाडा के जन मन्दिरों क स्थापत्य के अध्ययन हेतु पठनीय टाड पूर्वो प 107 119 मुनिजयन्त विजय आबू (प्रथम खण्ड) प 25 105

की मूर्ति प्रतिष्ठित है । यह मन्दिर एक चौकोर चौक में स्थित है । चौक की लम्बाई पूर्व से पश्चिम 180 फीट और चौड़ाई 100 फीट है । अन्दर की तरफ किनारे किनारे कोठरियां बनी हुई हैं । लम्बाई की धार 19 और चौड़ाई की तरफ 10 कोठरियां बनी हैं । कोठरियों के सामने चारों तरफ चबूतरे पर दोहरे खम्भों वाली रविश बनी हुई है जो चौक की सतह से चार सीढ़ी जितनी ऊंची है। इसके बीच खम्भों की चौड़ाई भी इतनी ही है । इन चार खम्भों के अतिरिक्त इनके व कोठरियों के बीच की दीवार के अनुरूप ही दो ऐसे खम्भे और बने हुए हैं जिनकी छतें चपटी हैं। प्रत्येक कोठरी के सामने एक ऊंची वेदी बनी है जिस पर चौबीस जिनेश्वरों में से किसी एक की प्रतिमा प्रतिष्ठापित है। सम्पूर्ण मन्दिर श्वेत संगमरमर का बना हुआ है । इस मन्दिर के प्रत्येक खम्भे छतरी और वेदी की बनावट एवं सजावट अलग अलग है । पत्थरों पर की गई पच्चीकारी दर्शनीय है । मन्दिर के प्रत्येक अंग का अध्ययन करने हेतु कई दिनों का समय चाहिए ।

मन्दिर के स्तम्भों का वर्णन करते हुए टाड ने लिखा कि खम्भों के निर्माण में जैन वास्तुकलागत स्तम्भ सम्बन्धी नियमों का उदाहरण मौजूद है । मन्दिर के प्रत्येक कोष्ठ में उस व्यक्ति के इष्टदेव की मूर्ति विराजमान है जिसके व्यय से उसका निर्माण हुआ । निर्माणकाल सम्बंधी शिलालेख प्रत्येक दरवाजे की देहली पर उत्कीर्ण है । चौड़े पत्थरों वाले चौक के बाद सभा मण्डप है जो स्तम्भों पर टिका है । उस पर 24 फीट व्यास की अर्द्धवृत्ताकार छतरी है। खम्भों के बीच की जगह पर गुम्बदाकार और चपटी छतों पर रामायण महाभारत भागवतपुराण, के दृश्य उत्कीर्ण हैं । रास मण्डल में गोपियों घिरा हुआ कन्हैया भी यहां उत्कीर्ण किया गया है।

निज मन्दिर में ऊंची वेदी ऋषभदेव की सप्तधातुनिर्मित प्रतिमा विराजमान है। इस विशाल प्रतिमा के नेत्र चमकीले थे और ललाट पर हीरे का टीका सुशोभित था । ऊपर एक सुनहरा जरी का चन्दोवा लगा हुआ था । इसी मन्दिर के दाहिनी ओर भवानी को प्रतिष्ठापित किया गया था। पास के कक्ष में टाड ने नेमिनाथ के दर्शन किये । उनकी प्रतिमा प्रस्तर निर्मित थी । टॉड ने चौक से बाहर चौकोर कक्ष में जाने पर वहां मन्दिर के निर्माता की अश्वारोही प्रतिमा देखी । उसके पीछे उसका भतीजा बैठा हुआ था। निर्माता की प्रतिमा के पीछे एक स्तम्भ था जिस पर मनविजय द्वारा खड़े तारा में जिनेश्वर प्रतिमाएं थी।

देलवाड़ा में ही पार्श्वनाथ का प्रसिद्ध मन्दिर है। टॉड ने इस मन्दिर का

विवरण भी अपने ग्रन्थ म प्रस्तुत किया । यह मंदिर मानों ऋषभदेव क मंदिर स प्रतिस्पर्धा कर रहा था । तेजपाल वस्तुपाल नामक बन्धवधु इस मन्दिर के निर्माता थे । वे चन्द्रावती के निवासी थे । टाड के अनुसार इस मन्दिर के वभव म सादगी अधिक है । मन्दिर के कामदार खम्भे अधिक ऊंचे हैं । छत की कारीगरी उत्कृष्ट बन पडी ह । गुम्बद का व्यास 26 फीट ह । मन्दिर के विशाल लटकन देखने योग्य है । बीच के गुम्बद तथा आसपास की छतरियों पर खुदाई का काम है । मन्दिर म छेनी का काम इतनी सफाई म किया गया है कि वह सब मोम म ढला हुआ लगता है । मन्दिर म वेदी पर पार्श्वनाथ विराजमान है जिनका चिह्न सप ह । यहां वनदता देवताओं किन्नरों और व्यापारियों को भी संगमरमर पर उत्कीर्ण किया गया ह ।

टाड न भीनशाह के मंदिर का भी वर्णन किया । वह लिखता ह कि यह मन्दिर आकृति और शली म अन्य मन्दिरों स भिन्न ह । यह मन्दिर चार खण्ड ऊंचा और साम्नी क पास वाले मन्दिर स मिलता-जुलता था । यहां उसन जिन वर की 4 मन भारी पीतल की प्रतिमा को देखा । उनकी पृष्ठभूमि म तीर्थङ्करों मनुष्यों और पक्षियों की मूर्तियां बनी हुई थी ।

इन मंदिरों की खम्भों वाली छतें निर्माता की प्रचुर सम्पत्ति का प्रदर्शन तो कर रही थी लेकिन व उनकी कला क प्रति लगाव का उच्च स्तरीय सूचन भी कर रही थी ।

आबू म स्थित अबुदा देवी का मंदिर ऊंचाई पर प्राकृतिक वातावरण क मध्य स्थित था ।[9]

वशिष्ठ क मन्दिर क सम्बन्ध म टाड न लिखा ह कि इस मन्दिर की इमारत छोटी थी और उसका जीर्णोद्धार कई बार हो चुका था । मन्दिर म मुनि प्रतिमा क शिराभाग के दशन होत थ । यह प्रतिमा काल पत्थर स निर्मित थी । मन्दिर के एक हिस्से म अन्तिम परमार की छवी था । जिस पर अण्डाकार गुम्बद था और नीचे वेदी पर परमार की पीतल की मूर्ति रखी थी । जिसे मुस्लिम आक्रमणकारी न खण्डित कर दिया था । चाक क दाहिनी तरफ पातालेश्वर का मन्दिर था ।[10]

---

9 पश्चिमी भारत की यात्रा पृ 115

10 वही पृ 116

कनल टाड ने चन्द्रावती की भी यात्रा की जो परमारो की क्रीडास्थली थी। गिरवर और चन्द्रावती के मध्य स्थित मानव ग्राम म उसने अम्बा भवानी और तारिणा के मदिरो की चर्चा की ह। यह स्थल शव और जनों का तीथ स्थान बताया गया ह।[11]

चन्द्रावती की यात्रा के समय टाड ने एक ब्राह्मण [?] मदिर को जीणशीण अवस्था म देखा। जिसकी आकृतियां और चामत्कारिक वस्तुओं की सजावट बहुत बारीकी से एव उभरी हुई रीति से की गई थी। मानव आकृतिया जो मूर्तियो क समान थी आधार मात्र के लिये भवन मे लगाई गई थी। वहा एसी 130 मूर्तिया थी जिन म स छोटी स छोटी 2 फीट की थी। जिन्हें श्रेष्ठ कारीगरी से बनाये गय ताकों म रखा गया था। वहाँ की महाकाल की प्रतिमा ने उसे प्रभावित किया। यह सम्पूण मन्दिर श्वेत सगमरमर स निर्मित था। मदिर के भीतरी और मध्य की गुम्बद मे काम बहुत बारीकी मे किया हुआ था और वह उच्च स्तरीय भी था। मण्डप क अग्र की भूमि पर खड हुए खम्भे रविश क ही अग दृष्टिगोचर हो रह थे, जो कभी मदिर के चारो ओर घूम गई थी।[12]

टाड ने कोतियो की कुलदवी चामुण्डा माता के मदिर को भी देखा, जो शिखरों वाला और ऊचे टूगर (पहाड) पर स्थित था। यह मदिर गिरवर म चार मील दूर था।[13]

गुजरात के दर्शनीय मन्दिर और उनका स्थापत्य

कनल टाड न आबू स गुजरात म प्रवश किया और वहा के दुलभ, प्राचीन और स्थापत्य कला स परिपूण मदिरो को देखा। जिसका विवरण उसक ग्रन्थ पश्चिमी भारत की यात्रा म प्रकाशित हुआ है।

---

11 वही पृ 130

12 वही, पृ 134 जन के सा एन्श्येन्ट सिटीज एण्ड टाउन्स ऑफ राजस्थान, पृ 341 347

13 वही पृ 136

टाड ने गुजरात के सिद्धपुर के शिव मंदिर को देखा। यह मंदिर रुद्रमहालय (युद्ध के देवता की माला) के नाम से प्रसिद्ध था। यह मन्दिर आयताकार और पंच खण्डा था। उसकी ऊंचाई 100 फीट थी। टॉड की यात्रा के समय तक यह मन्दिर दो खण्डों का खण्डहर मात्र रह गया था। इसका निज मन्दिर तो मस्जिद में बदला जा चुका था।

इस मन्दिर के सम्बन्ध में टाड को सावला भाट ने बताया कि रुद्र के इस मन्दिर में 1600 स्तम्भ 121 रुद्र की प्रतिमाएं विभिन्न कक्षों में विराजमान थी। इसमें 121 स्वर्ण कलश 1800 अन्य देवी देवताओं की मूर्तियां 7213 विश्राम कक्ष 1,25,000 कुराईदार जालियां पर्दे निशान और ध्वज लिये हुए चोबदारों योद्धागणों यक्षों मानवों तथा पशुपक्षियों की हजारों लाखों पुतलियें बनी हुई थी। इस मंदिर के निर्माण पर सिद्धराज ने चालीस लाख स्वर्ण मुद्राएं व्यय की थी। यह मन्दिर अलाउद्दीन के द्वारा विध्वंस किया गया था।[14]

प्रकरण आठ में टॉड ने इतिवृत्त प्रबोध संग्रह के आधार पर लिखा है कि अणहिलपुर में अनेक मन्दिर और पाठशालाएं थी। यहां वन में जैन मन्दिर है और झील के किनारे सहस्त्रलिंग महादेव का मन्दिर भी बना हुआ है। वनराज ने वहां पर पार्श्वनाथ का जैन मन्दिर बनवाया।[15]

टाड ने गुजरात की तारंगी पहाड़ी पर नक्काशी से बने एक मन्दिर का संकेत किया है।[16] अणहिलवाड़ा के काली के मन्दिर का भी उल्लेख किया है जो कालीकोट अथवा अन्तरंग नगर का अवशेष मात्र था। जिसमें दो मजबूत बुर्जे बनी हुई था जो काली की छतरियां कहलाती थी।[17] शिलालेख को स्रोत मानकर टाड ने लिखा कि अणहिलवाड़ा में संवत 802 में देवीचन्द्र सूरि आचार्य ने अल्लेश्वर महादेव की प्रतिष्ठा सम्पन्न करवाई।[18]

---

14 वही पृ 142 143 उपाध्याय वासुदेव प्राचीन भारतीय स्तूप गुहा एवं मन्दिर पृ 253
15 वही पृ 164 165
16 वही पृ 202 (प्रकरण 9)
17 वही पृ 237
18 वही पृ 244 245

खम्भात में टॉड ने एक स्तम्भ देखा जो पार्श्वनाथ के जैन मन्दिर का अस्तित्व सिद्ध करता था। टॉड के समय भी वहां पार्श्वनाथ मंदिर और महादेव के मंदिर के अवशेष थे।

टाड ने वलभी के निकट स्थित भीमनाथ के दर्शन किये। यहां शिवलिंग बड़ के वृक्ष के नीचे खुले में ही स्थित था और वहां के जलस्रोत का जल चमत्कारी बताया जाता था।

प्रकरण चौदह में टाड ने जैन धर्मावलम्बियों के प्रमुख तीर्थ पलीताना का विवरण प्रस्तुत किया है।[19] यहां से शत्रुञ्जय पर्वत की भी टाड ने यात्रा की थी। इस तीर्थ की महत्ता का वर्णन शत्रुञ्जय माहात्म्य (धनेश्वर सूरि रचित) शीर्षक ग्रन्थ में मिलता है।

शत्रुञ्जय पर्वत 2 हजार फीट ऊंचा है। यहां के पवित्र आदिनाथ मन्दिर का जीर्णोद्धार सूर्यवंशी शिलादित्य ने 421 ई. में करवाया था। शत्रुञ्जय जैनों के पंचतीर्थों में से गिना जाता है। शत्रुञ्जय पर्वत तीन भागों में बंटा हुआ है जो टूंक कहलाते हैं। पहले का नाम मूलनाथ, दूसरा शिखर सोमजी का चौक तथा तीसरा माणी टूंक कहलाता है। इस पर्वत पर स्थित बाहुबली की मूर्ति 46 ई. की है।

टाड के अनुसार शत्रुञ्जय पर्वत पर पहली इमारत भरत ने, दूसरी पुंडरीक ने, तीसरी ईशानेन्द्र ने, चौथी महेन्द्र ने, पांचवीं ब्रह्मेन्द्र ने, छठी भवनपति ने, सातवीं सगर चक्रवर्ती ने, आठवीं व्यन्तरेन्द्र ने, नवीं चन्द्रयशा ने, दसवीं चक्रायुध ने, ग्यारहवीं राजा रामचन्द्र ने, बारहवीं पाण्डव बन्धुओं ने, तेरहवीं कश्मीर के व्यापारी जावड शाह ने, चौदहवीं अणहिलवाड़ा के राजा सिद्धराज के मंत्री बाहड़ ने, पन्द्रहवीं दिल्लीपति के काका समरा सारंग ने और सोलहवीं चित्तौड़ के मंत्री कर्माशाह ओसवाल ने बनवायी।

पलीताना में पर्वत की तलहटी में हिंगलाजमाता का मन्दिर स्थित था।

---

19 वही, पृ. 290-306; द्र. भारत के मन्दिर, पृ. 17
उपाध्याय भगवतशरण, भारतीय कला का इतिहास, पृ. 149
उपाध्याय वासुदेव, प्राचीन भारतीय स्तूप गुहा एवं मन्दिर, पृ. 252; भट्टाचार्य, स. न., भारतीय इतिहास कोश, पृ. 444

बाघनपोल के पास सिंह केसरी माता की लघु मूर्ति स्थित थी। हाथीपोल पर जिनेश्वर पार्श्वनाथ मन्दिर था। पार्श्वनाथ पर सहस्रफणों का सर्प दृष्टिगोचर होता था। यहीं पर जगत सेठ का सहस्र स्तम्भ मन्दिर था लेकिन उसमें 64 खम्भे ही थे। पास ही कुमारपाल के मंदिर में टाड ने 52 प्रतिमाएं देखीं। पहली से पांचवीं पोल के मध्य सूर्यकुण्ड के पास शिवालय और अन्नपूर्णा का मंदिर था।

इसके बाद टाड ने आदिनाथ मंदिर का विस्तृत विवेचन किया है। वह लिखता है कि यह एक भव्य इमारत है। निज मन्दिर एक चौकोर कक्ष के रूप में निर्मित है। जिस पर गोल छत है। इसी प्रकार सभामण्डप भी ऐसी ही छत से ढका है। देव प्रतिमा विशाल श्वेत संगमरमर की है। ऋषभदेव सुपरिचित विचार मुद्रा में पद्मासन लगाये बैठे हैं। जिनका चिन्ह वृषभ है। उनकी मुखाकृति गम्भीर है और नेत्र तराशे हुए हीरे के हैं। यह मन्दिर उच्च बनावट की आकृतियों के सुन्दर चित्रों से सजाया गया है। ड्योढ़ी पर संगमरमर की बनी हुई एक बैल की मूर्ति तथा एक छोटी हाथी की मूर्ति भी है। जिस पर आदिनाथ की माता मरुदेवी अपने पौत्र भरत और बाहुबलि को गोद में लिये विराजमान हैं।

शत्रुञ्जय पर्वत पर ही टॉड ने बाहुबलि का छोटा मन्दिर, प्रेम टूक पर स्थित आदिनाथ मन्दिर, शिवा सोमजी टूक पर चौमुखी आदिनाथ मन्दिर, मरुदेवी के मन्दिर का अवलोकन किया।

आदिनाथ मंदिर से उतरते समय टाड पश्चिमी ढाल पर स्थित कृष्ण की माता देवकी के 6 पुत्रों के थान पर आया जिन्हें कंस ने मार डाला था। यह मन्दिर षटकोणीय था। इसमें केवल चबूतरा और स्तम्भ विद्यमान था। वध किये हुए शिशुओं की प्रतिमाएं काले पत्थर से निर्मित थीं।

शत्रुञ्जय तीर्थ की यात्रा पूर्ण कर आगे बढ़ते हुए टाड ने तुलसाशाम में श्याम मंदिर, जामुनवाड और भीमनाथ के मध्य स्थित विश्वनाथ महादेव कारवार में रणछोड़ मन्दिर और सूत्रपाडा में सूर्य मंदिर भी देखा।[20]

सूत्रपाडा के पास नवदुर्गा का मंदिर था। वहां से उत्तर में सातमोर

---

20 टाड, पूर्वो पृ 331 335

दूर मधुराय का मंदिर और लूटेश्वर (लूटपाट के देवता) का मंदिर विद्यमान थे। लूटेश्वर शिव का ही स्वरूप माना जाता है।[21]

पट्टण सोमनाथ में टॉड को सूर्य मंदिर ने बहुत प्रभावित किया। उस समय तक इस मन्दिर के खण्डहर मात्र रह गये थे। मंदिर का शिखर और गर्भ गृह टूट रहे थे। यद्यपि मंदिर की बनावट ठोस थी। यह शिल्पशास्त्र सहित पवित्र शिखरबन्ध भवनों के विधाता से परिपूर्ण था। भित्तियों पर बनी आकृतियों के ढाँचे स्थूल और स्पष्ट थे। इसका प्रवेश द्वार पीत पत्थर से निर्मित था। मण्डप का व्यास 16 फीट था जो सजावट वाले खम्भों पर आधारित और चारों ओर बरामदे से घिरा था। मण्डप के आगे एक प्रांगण था जिसकी छतरियाँ चौकोर एक सीधे स्तम्भों पर टिकी हुई थीं। यहाँ से निज मंदिर में प्रवेश करते थे।[22]

सूर्य मन्दिर से टाड सिद्धेश्वर महादेव के मन्दिर में गया। यह मन्दिर चट्टान काटकर बनाया गया था। यहाँ दिवारों पर चारणों की देवी हिंगलाज और पातालेश्वर की मूर्तियों के दर्शन किये। छोटे से मण्डप की दीवारों पर कुछ अन्य मूर्तियाँ भी थीं। जो नवग्रह की बतलायी जाती थीं।

टाड ने उस स्थल की भी यात्रा की जहाँ से भगवान् श्री कृष्ण परम धाम पधारे थे। यहाँ पास ही पीपलेश्वर महादेव का मंदिर स्थित था। जिसका उल्लेख अबुल फजल ने भी किया है। यहाँ से टॉड ने हिरण्य नदी के आगे भीमनाथ के मन्दिर को देखा। इस शिव मंदिर का शिखर डेरे की भाँति था। उसकी छत पिरामिड के ठोस आकार जैसी थी। टॉड इस मंदिर के सम्बन्ध में प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए लिखता है कि यह मन्दिर सम्भवतः महाकाल के मन्दिर का प्राचीनतम प्रकार था। टॉड के अनुसार इस मंदिर के समीप ही महादेव का एक बहुविग्रह लिंग है। जो काशेश्वर के नाम से प्रसिद्ध रहा है। टॉड ने लिखा है कि यह शिवलिंग लाल पत्थर से निर्मित है और इस पर बहुत से छोटे छोटे लिंग बने हैं। इस पश्चात् इस विदेशी इतिहासकार ने पापेश्वर के मंदिर को भी देखा जिसकी इमारत नष्ट हो चुकी थी। कहा जाता है कि इसका निर्माण रुक्मणी ने करवाया था।[23]

---

21 वही पृ 335 337

22 वही प्रकरण 16 पृ 339-340

23 वही पृ 341-344

इतिहासकार टाड ने भगवान् सोमनाथ के मन्दिर का विस्तत विवेचन किया है । उसने देखा कि इस मन्दिर के शिखर जमीन पर बिखरे पड़े थे । मंदिर के प्रवेश द्वार पर कलशदार मिनारें थी जो मुस्लिम शिल्प का प्रतीक थी । यद्यपि मंदिर का अधिकांश भाग महमूद ने नष्ट कर दिया था । इस मंदिर की बनावट की तुलना टॉड ने चित्तौड के लाखा के मंदिर से की है । यह मन्दिर चार भागों म विभक्त था यथा बाहरी पाल निज मन्दिर का प्रवेश द्वार है जो स्तम्भ पंक्ति युक्त विशिष्ट मार्गों (बरामदों) से घिरा हुआ है । बाहरी परिधि 336 फीट लम्बाई 117 फीट और पूरी चौड़ाई 74 फीट है ।

मंदिर के बाहरी भाग का वणन करते हुए टाड ने लिखा है कि स्तम्भाधार भूमि चार भागो म विभक्त है और प्रत्यक का नामकरण उस भाग म हुए संगतराशी के काम पर हुआ है । पहल भाग म साधारण हजारो के मानाकार दानो पर ग्रहा के बहुत स मस्तक बने हैं । एक हल्की सी मखला इसको दूसरा भाग पक्ति स विभक्त करती है जो गजतुड है इसम श्रष्ठ प्रतिमाओ में ग्रश्व बन हुए हैं और इसम भी ऊपर की पट्टी म जो कुछ अधिक चौडी है मतवाले मर्यादि मतको की टोलियां उत्कीर्ण है । जो विविध प्रकार क वाद्य लिय हुए है और नाना प्रकार क हाव भाव प्रदर्शित कर रहे हैं । पीठिका के ऊपर उत्कीर्ण आकृतियों म से अधिकांश नष्ट हो चुकी ह । एक बचे हुए स्थान के कुछ अशो से ज्ञात होता ह कि यहां रासमण्डल की स्वर्गीय अप्सराओ का अकन हुआ ह ।

मण्डप का गुम्बज पूण ह । मेहराब की चौडाई 32 फीट ह और सिरा पर चपटे अर्द्धाण्ड का भाग होने क कारण इसकी ऊंचाई व्यास स अधिक ह अर्थात् धरातल से महराब की उठान तक लगभग तीस फीट ह । छतरी 8 खम्भो पर टिकी हुइ ह । जिनके शीष घने अतिभारी पट्टो द्वारा सम्बद्ध ह । गुम्बज की आकृति एक जहाजी पिण्ड के समान है । इस पर कितनी ही परतें चढ़ी हुई ह । उसे टकोरने पर इसम से धातु के समान ध्वनि निकलती है । इन खम्भों और शीष पट्टो की स्थिति से जो एक अर्द्धाण्डाकार गुम्बज क लिये अष्टकोण आधार बना हुई ह, यह प्रमाण मिलता है कि आडी डाट के सिद्धान्त क अनुसार इस छतरी की मूल आयोजना हिन्दू प्रकार की रही होगी ।

मुख भाग के अतिरिक्त जिससे दालान म होकर हम निज मन्दिर म जाते हैं इसकी अन्त स्तम्भ-सघटना सुघड और महराबदार है और ये

महरावें एक का छोडकर एक नुकीली अथवा दीप वलाकार है । इनरो क मुख्य भाग और निज मन्दिर क बाच म एक विस्तीर्ण आच्छादित और स्तम्भ पंक्ति युक्त प्रतिष्ठ है । जहा शिव लिंग था वह स्थान अब ध्वस्त पडा है । पश्चिमी दावार पर इस्लाम का धर्मासन खुदा हुआ है । मुख्य कक्ष और बाहरी दीवार के बीच भारी भारी खम्भा की पंक्ति ह जिन पर बन हुए चपटे अथवा प्रउवलाकार बाहर निकलत स्तम्भ शीर्षों पर छत की पट्टीया टिकी हुई है। सामनाथ मन्दिर अपने ऊंचे परकोटे स घिरे हुए विशाल चाकार चौक क बाच खडा है । इसके आसपास के मन्दिर उन्ह की भांति सामनाथ क मन्दिर की शोभा बढाते रहे होंगे। य मन्दिर अब काल कवलित हो गये थे। टाड न उन मन्दिरा के मलबे को देखा था । उसन सोमनाथ क मन्दिर के सम्बन्ध म लिखा कि भारत म ता इसकी समानता करने वाला काई स्थान नहीं ह।[24]

पट्टण स लगभग 40 मील की दूरी पर स्थित महीरा क गाव ठाव म टाड ने दो मन्दिरों के खण्डहर देख । उनम म एक सूय का दवालय था ।

जूनागढ़[25] गुजरात का एतिहासिक स्थान है । टॉड न यहा क दुग की यात्रा के दौरान कुमारपाल का मन्दिर तथा नमीनाथ मन्दिरा क अवशेष दस । दुग के बाहर पूर्वीय द्वार स आग चलन पर सानार कुण्ड क पास पहाडी पर उसने वाघश्वरी माता का मन्दिर देखा । इस मन्दिर म माता कांटों का मुकुट धारण किय हुए थी और उसका वाहन सिंह था।

गिरनार जाते समय माग म दामादर महात्म्य का मन्दिर है । पास ही छोटे मन्दिर म बलदेव की मूर्ति विराजमान है । टाड क ग्रंथ पश्चिमी भारत की यात्रा क सम्पादक गोपाल नारायण बहुरा क अनुसार यह प्रतिमा बलराम की नहीं अपितु विष्णु का है जो गदा चक्र तथा शंख

---

24 वहीं पृ 345-355 भट्टाचार्य सच्चिदानन्द भारतीय इतिहास कोश पृ 485 उपाध्याय वासुदेव, पूर्वो पृ 253

25 टाड पूर्वो, पृ 378 387

धारण किये हुए हैं।[26] नामादर महादेव के मन्दिर से आगे बढते हुए टाड न भावनाथ महादेव क मन्दिर को देखा । यह एक रमणीय स्थल था। गिरनार की तलहटी के समीप पाण्डवो का मन्दिर था । वही दो अन्य मन्दिर कन्हैया तथा द्रोपदी के थ। इन मन्दिरो की छतें ग्रनाइट के स्तम्भो पर आधारित थी।

गिरनार[27] पहुचकर टाड ने अम्बा गोरखनाथ और कालिका के मन्दिरों को देखा। उसन गोरखनाथ मन्दिर म सिद्धो की पादुकाओं के भी दशन किय ।

गिरनार जन धर्मावलम्बियो हतु श्रद्धा का प्रमुख केन्द्र है। यहा पर टाड न नमिनाथ मन्दिर क दर्शन किये । उसने तीन मन्दिरो की त्रिकुटी को भी देखा जिनका जिर्णोद्धार अथवा निर्माण तजपाल वस्तुपाल ने करवाया था । ये तीनो एक चबूतरे पर हैं और आबू के मन्दिरो स आधी शताब्दी पुराने है। बीच के मन्दिर म उन्नीसवें जन तीर्थङ्कर मल्लिनाथ की मूर्ति है । इनके दाहिनी ओर का मन्दिर सुमरु और बायी ओर का समेत शिखर कहलाता है। जो जन धर्मावलम्बियो का पच तीर्थों के पवित्र दो शिखरो के रूप म प्रसिद्ध है। मन्दिरों पर पत्थर की कारीगरी वडी सुन्दर है । मल्लिनाथ की मूर्ति श्यामल है। उनका मन्दिर चार मञ्जिलो का है जो एक क बाद एक छोटी होती चली गई है । सबसे ऊपर आठवें तीर्थङ्कर चन्द्रप्रभ विराजमान है प्रत्येक दिशा के कोने पर भी एक एक मूर्ति स्थित है । एक कोने पर पीत रत्न की बनी मेरु शिखर की लघु आकृति है जो छत क पार बनी गई है।

आगे वाला मन्दिर जो पार्श्वनाथ को अर्पित है, उसे सामप्रीति ने बनवाया था । मन्दिर स प्रवश द्वार से एक सोपान तारिण स्तम्भों पर टिकी ड्योढी तक जाती है। जिसमे होकर मन्दिर के मुख्य भाग मे प्रवेश करते हैं। तिहरी स्तम्भ पक्ति पर छत स आच्छादित विशाल कक्ष म होकर मण्डप में पहुचते हैं । जो प्राय 30 फीट लम्बा और इतना ही चौड़ा है । यह स्तम्भों पर खड़ा है। स्तम्भ पक्ति युक्त दीर्घाए जिसम चौकोर खम्भे दीवार के सहारे खड़े ह इसे दालान से और अन्तरग मण्डप से जोड देती है जो गुम्बजदार

26 वही पृ 385
27 वही, प 390-402



छत से प्राच्छादित है। इसके आगे वेदी पर पार्श्वनाथ की मूर्ति निज मन्दिर म विराजमान है ।

इस मंदिर से टाड भीम कुण्ड गया जिसके निकट एक मन्दिर का टूटी फूटी अवस्था म देखा । इस मन्दिर को अणहिलवाडा क कुमारपाल ने बनवाया था । मन्दिर का नक्शा पार्श्वनाथ मन्दिर जैसा ही था ।

इसके पश्चात ऊची दीवारो से घिरे हुए सहस्त्रफणी पार्श्वनाथ का देखा जो अत्यन्त सुन्दर ढग स निर्मित था । यह मन्दिर सोनी पार्श्वनाथ कहलाता था। क्योकि इस मंदिर का जीर्णोद्धार दिल्ली क सोनी सग्राम न करवाया था । मन्दिर क भीतर हल्क हरे और चमकील चट्टानी पत्थरों क खम्भा क कारण यह काफी अच्छा दिखाई पडता था । इस म दर की बनावट भी पूव वर्णित मंदिरा के समान ही थी। प्रागन क कोठरियो म महन्ता तथा भक्तो की प्रतिमाए स्थापित थी ।

गढ की टूक पर ऋषभदेव का मन्दिर था । जिसक कगूरे और स्तम्भ अत्यन्त सुन्दर थ । यहा सफद और पील सुवर्ण क बने हुए मरु और समत आदि पवित्र जन शिखरों की लघु आकृतिया विद्यमान थी तथा चौक की चार दीवारो क सहारे सहारे छोटी कोठरियो की पक्ति चली गई है जिनम चौबीस तीर्थङ्कर विराजमान थे ।

टाड के अनुसार समूह का अंतिम मंदिर खगार क महलों स सटा हुआ गिरनार क देवता नमिनाथ का है। यह मंदिर बहुत पुराना ह । इसका भीतरी भाग भी भित्ति चित्रो तथा चमकील जडाव स सजा ह।

गिरनार की यात्रा क बाद वापस टाड आग बढते हुए घूमली बरडा पहुचा। वहा का जठवा का मन्दिर बडा प्रसिद्ध था । टॉड लिखता है कि यह इमारत ग्राम की आकृति की है । मन्दिर एक चबूतरे की पीठिका पर खडा है। जिसका माप 163X120 फीट है । यह मंदिर तराशे हुए पत्थरों म बना है। इसकी भित्ति सज्जा सुन्दर है। मन्दिर म 23 फीट व्यास वाला एक अष्टकोणाकार मण्डप है जिसकी उचाई दो खण्ड है और इसक ऊपर गुम्बज है जो धरातल स 35 फीट उचा है। इसक आधार म लगभग 12 फीट उचाई क स्तम्भो की एक सारिणी है अष्टकोणाकृति म आयोजित की गई है और य स्तम्भ तोरणों का काम लिये हुए हैं और पट्टों स सम्बद्ध कर दिये गये है । इसी क उपर दूसरी स्तम्भ पक्ति है जिस पर तोरणों द्वारा उत्कीर्ण राम मन्दिर अथवा स्वर्गीय नृत्य मुद्राओं की मूर्तियों स सुसज्जित गुम्बद टिका ह । पूर्व और

पश्चिम की ओर भाग निकला हुई दो डयोढ़ियां हैं जो गिरिजाघरो के मध्य भाग के समान हैं। इनकी ऊंचाई तथा चौडाई 14 फीट व 18 फीट है। इनमें अनेक खम्भे व बीच में छत हैं जिसके मध्य में बारिकी और सजावट से एक कमल बनाया गया है। बडी गुम्बज के चारो ओर छोटी गुम्बजें भी हैं जो भी इसी की तरह खम्भों पर टिकी हुई है। पश्चिम में निज मन्दिर मूर्ति विहीन है। इसके ऊपर का शिखर तोडकर गिरा दिया गया है। यह मन्दिर सम्भवत शिव या हरसद माता का रहा होगा।[28]

इस मन्दिर से थोडा दूरी पर ही गणपति के मंदिर का भी टॉड ने अवलोकन किया। मन्दिर में कोठरियों के चारो ओर खम्भो के स्थान पर दीवारें और कोणदार खिडकियां थी और इसकी छत गुम्बदाकार थी। गणपति मन्दिर के उत्तर में बौद्धो का एक मन्दिर था। जिसमें एक दूसरे से सटे हुए चार मण्डप थे जो खम्भो पर टिके हुए थे। इस मन्दिर के भीतर पार्श्वनाथ की मूर्ति थी और एक पत्थर पर चौबीस तीर्थंकरो की मूर्तियां उत्कीर्ण थी।[29]

द्वारका प्राचीन काल से भारतीय व्यापार एवं वाणिज्य का प्रमुख केन्द्र रहा है। पौराणिक ग्रन्थो में द्वारका सम्बन्धी कई कथानक लिखे गये हैं। टाड के अनुसार यहा का कृष्ण मन्दिर समुद्र तल से कुछ ऊंचाई पर बना हुआ है। यह मन्दिर परकोटे से घिरा हुआ है। इसकी शिल्प कला वही है जिसे हम (शिखरबन्ध) देवालय की संज्ञा दिया करते हैं। अध्ययन हेतु इस मन्दिर को तीन भागो मे बांटा जा सकता है यथा मण्डप या सभा भवन, देवस्थान या निज मन्दिर (गर्भगृह) और शिखर। इस मंदिर का सभा भवन चौकोर है तथा इसकी ऊंचाई पांच स्पष्ट श्रेणियां (मंजिलो) में विभक्त है। प्रत्येक खण्ड में स्तम्भ समूह है। सबसे नीचे खण्ड की ऊंचाई बीस फीट है और अन्त तक यही सम चौकोण आकृति रहती चली गई है जिसमें आड़े शीर्ष पट्ट लगाये गये है जो उत्तरोत्तर गुम्बज के लिये आधार बन जाते हैं। सबसे ऊपर की चोटी धरातल से पचहत्तर फीट ऊंची है। प्रत्येक खण्ड चतुष्कोण के मुख भागो पर चार-चार भारी खम्भे खड़े किये गये हैं जो इस महान भार की नींव का काम करते हैं। परन्तु इन्हें भार वहन करने के लिये अपर्याप्त समझ कर प्रत्येक स्तम्भयुग्म के बीच बीच में कुछ अतिरिक्त

28 पश्चिमी भारत की यात्रा पृ 413-414

29 वही पृ 414-416

खम्भे लगा दिये गये हैं जिससे समरूपता का बलिदान हो गया है। लगभग दस फीट चौड़ाई की एक खम्भेदार 'भमती' या फिरनी सबसे नीचे की मंजिल में घूम गई है। जिससे उत्तर दक्षिण और पश्चिम की ओर के भाग खम्भों के सहारे और भी आगे बढ़ गये हैं। प्रत्येक खण्ड में एक भीतरी रविश भी है जिसके सिरे पर तीन-तीन फीट ऊंची दीवार बनी हुई है कि जिससे कोई असावधान मनुष्य नीचे न गिर जाय। इन छोटी-छोटी दीवारों पर पृथक-पृथक विभक्त भागों में खुदाई का बढ़िया काम हो रहा था। परन्तु विदेशी आक्रमणकारियों ने उन्हें नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। फिर भी इससे मूल इमारत को कोई क्षति नहीं पहुंची।

टाड के विवरण के अनुसार निज मन्दिर वर्गाकार है। इस मन्दिर में कृष्ण भक्तिकाल से पूर्व बुद्ध त्रिविक्रम की पूजा होती थी। जिसका एक लघु मन्दिर अब भी देवालय में विद्यमान है और कृष्ण की मूर्ति इससे बाहर पक्ष में स्थापित है। अत्यन्त प्राचीन शैली में निर्मित इस शिखर में एक के बाद एक पिरामिड बने हुए हैं जो जमीन से 140 फीट की ऊंचाई पर जाकर समाप्त होता है। जहां इस पिरामिड की आकृति वाले शिखर का व्यास बहुत छोटा हो जाता है उसमें पहले इसका सात मंजिलें स्पष्ट हैं। प्रत्येक मंजिल का मुख्य भाग एक खुले ओसारे से सजा हुआ है जिस पर छोटे छोटे खम्भों पर टिके हुए छज्जे भी बने हुए हैं। प्रत्येक मंजिल में भीतर की ओर खम्भों पर खम्भे टिके हुए हैं और इन पर टिके हुए मध्य पट्ट उन पर धरे हुए भार की घटती हुई मात्रा की अपेक्षा अनुमानतः अधिक भारी होते चले गये हैं। इन खम्भों के बीच का बिलकुल सादा है और चारों तरफ कुछ-कुछ भाग निकले हुए हैं कि उन पर मध्य पट्ट आसानी से टिक सकें। इस इमारत की पूरी बनावट जिसकी भीतर से लम्बाई चौड़ाई अट्ठावन फीट और छियालिस फीट है चट्टानी पत्थर या बलुआ पत्थर की है।[30]

यहां कृष्ण पूजन रणछोड़ के रूप में होता है। एक स्तम्भाधारित ढकी हुई सुरंग कृष्ण के मन्दिर को उनकी माता देवकी के मन्दिर से जोड़ती है। विशाल चौक में कुछ और भी छोटे-छोटे मन्दिर हैं। इनके सामने ही मुख्य मन्दिर के दक्षिणी-पश्चिमी कोने में कृष्ण के दूसरे रूप मथुराय (मथुरापुरी के स्वामी) का छोटा मन्दिर है।

---

30 वे.ऑ.पृ 431 433

द्वारका में ही टाड ने गोमती के किनारे पर समम नारायण के मन्दिर का उल्लेख किया है। वहां पर मायरे में मण्डप के दक्षिण पश्चिमी कोने में वलन्देव की प्रतिमा विद्यमान है। इसी प्रकार वहां चार्गे और एक्ता के देवता के मन्दिर का विवरण देते हुए टाड लिखता है कि यह मन्दिर त्रिविक्रम बुद्ध के प्राचीन मन्दिर पर ओखामण्डल के राजा बज्रनाभ ने बनवाया जो कृष्ण का पोता था।

द्वारका के मन्दिर के शिखर का सान्ध का काय औरंगजेब ने किया। परन्तु सामला मानिक वाघेर रणछोड़ की प्रतिमा को पहले ही बेट (द्वीप) में ले गया जहां वह अब तक मौजूद है।

टाड ने द्वारका के कृष्ण मन्दिर के अलावा कुछ और मन्दिरों का भी विवेचन किया है। प्रकरण बीस में मारमरा के निकट गोवर्धन नाथ का मन्दिर, शखोद्वार में शंख नारायण मन्दिर, वहीं मीरा बाई द्वारा निर्मित गोपाल मन्दिर, समद के समम नारायण मन्दिर (दस्युओं के देवता और रणछोड़) का संक्षेप में वर्णन किया गया है।[31] जेम्स टाड ने माण्डवी (रायपुर बन्दरगाह) के तरुणनाथ मन्दिर के प्राचीन अवस्था का भी निरीक्षण किया। यह एक समाधि स्मारक था।[32]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि कर्नल जेम्स टाड का भारतीय संस्कृति के प्रति विशेष अनुराग था। अतः भारतीय प्रवास के प्रत्येक क्षण का वह सदुपयोग करना चाहता था। उसने अपनी स्वदेश वापसी की यात्रा में भारत के सांस्कृतिक स्थलों को देखने का निश्चय इसी सन्दर्भ में किया। टाड ने जो भी स्थल देखा उसका विवरण लिपिबद्ध किया। उसने अपने यात्रा वर्णन में पश्चिमी भारत के मन्दिरों का विस्तार से विवेचन किया। मन्दिरों का उल्लेख करते हुए उसने उनकी स्थापत्य कला पर भी पूर्ण प्रकाश डाला। टाड का यह विवरण भारतीय कला में रुचि रखने वाले विद्वानों हेतु ज्ञान का महत्वपूर्ण स्थान है। उसके विवरण में पूर्णता है और कला सम्बन्धी नवनीत की झलक भी। कर्नल टाड ने पश्चिमी भारत की यात्रा शीर्षक ग्रन्थ में हमें उन कई मन्दिरों से अवगत करवाया है जो हमारे स्मृति पटल से लुप्त हो चुके थे। अथवा जिनका स्वरूप अब बदल गया है। इसका प्रमुख उदाहरण गुजरात का सोमनाथ का मन्दिर है जो अब इस रूप में विद्यमान नहीं है जिस रूप में उसे टाड ने देखा था। इस प्रकार कर्नल टाड प्राचीन भारतीय स्थापत्य परम्परा की निरन्तरता को बनाये रखने वाले प्रमुख कर्मी सज्जन है और उसका ग्रन्थ पश्चिमी भारत की यात्रा भी किसी कलाकोश से कम उपादेय नहीं है।

31 वही पृ 434 449
32 वही पृ 461

कर्नल जेम्स टॉड : समाज सुधारक

—डॉ. गोपाल व्यास

भारत के उत्तर प्रान्त (वर्तमान में उत्तर प्रदेश) के मिर्जापुर नामक स्थान पर जेम्स टॉड अपने पिता के साथ 8-10 वर्ष की अवस्था में भारत आया था।[1] यद्यपि वह यहाँ एक वर्ष भी नहीं रहा किन्तु उसके मन में इस भूमि के प्रति जिज्ञासा तभी से बनती रही होगी। इसीलिए वह ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेवा में भर्ती होकर 1800 ई. के आरम्भ में पुनः भारत आया।[2] कलकत्ता में कम्पनी की मरीन सेवा करते हुए उसने बंगाल के जन-जीवन को समीप से देखा। यहाँ से टॉड का स्थानान्तर दिल्ली कर दिया गया जहाँ से दो-तीन वर्ष उपरान्त 1805-06 ई. में उसका पदस्थापन दौलतराव सिंधिया के दरबार में किया गया।[3] सिंधिया के साथ रहते हुए केप्टन टॉड ने मालवा एवं राजपूताना के जन-जीवन को देखने और समझने का प्रयत्न शुरू किया। इसके फलस्वरूप उसकी रुचि भौगोलिक ऐतिहासिक तथ्यों का संग्रह करने की ओर अग्रसर हुई। 1818 ई. के प्रारम्भ में उसे मेवाड़, मारवाड़ तथा हाड़ौती का पॉलिटीकल एजेन्ट नियुक्त कर राजस्थान भेजा गया तब से 1 जून 1822 ई. तक[4] टॉड ने उदयपुर, जोधपुर, जैसलमेर, कोटा, बूंदी, सिरोही आदि राज्यों का प्रशासनिक यात्रा[5] ही नहीं बल्कि इस क्षेत्र

---

1. गुप्ता एवं व्यास — राजस्थान के इतिहास के स्रोत, पृ. 107
2. 1798 ई. में टॉड इंग्लैंड में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सेवा में एक कैडेट के रूप में भर्ती हुआ था, उपरोक्त, पृष्ठ-वही
3. उपरोक्त
4. फरवरी 1818 ई. में टॉड को उदयपुर जाने का आदेश हुआ तथा 8 मार्च 1818 ई. को वह अपना कार्य ग्रहण करने उदयपुर पहुँचा था।
5. टॉड — ट्रेवल्स इन वेस्टर्न इण्डिया (हिन्दी अनुवाद), प्रकाशकीय वक्तव्य प

पारिवारिक-कलह एव द्वष की उत्पत्ति ही नहीं वरन दहेज की ऊंची दरों शिशुवत कन्याओं की हत्या मन का वातावरण भी उत्पन्न कर दिया था।[8] दहेज प्रथा के विकृत स्वरूप ने राजस्थान म त्याग प्रथा के स्तर पर राजपूतों की आर्थिक नाश की परम्परा को स्थापित किया जिसके फलस्वरूप अन्ततः म प्रत्येक समृद्ध राजपूत भी पुत्री विवाह से कतराने लगा। इसका फल यह हुआ कि विवाह की उम्र हाल ... भी राजपूत परिवार में कुमारी बहन बेटियां परिवार की चर्चा द्वष तथा कलह बनाने का साधन बनने लगी।

सामन्ती-वातावरण ने अमानवीय व्यवहारों का इतना गहरा समाज म छा दिया था कि जहां दासों को पुत्रवत सम्मान प्राप्त होता आया था वहां अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध म यह दास-स्तर' जैसी स्थिति म पहुंचा दिए गए।[10] उनका अस्तित्व इनके स्वामियों की कृपा पर निर्भर रहता था। टाड कालीन राजस्थान के समाज म सम्प्रभु वर्ग द्वारा थोपी गई बेठ बगार[11] प्रथा भी सामाजिक शोषण का प्रतिमान बन गई थी। शासक प्रशासक एव समृद्ध जन का जीवन इतना विलासपूर्ण हो गया था कि कुज, अमल शराब तथा रखैल स्त्रियां उनके सामाजिक सम्मान की श्रेणी म आंकी जाने लगी थी।[12]

राजस्थान म मराठा अतिक्रमणों म प्रभावित कई जातियों ने अपना जीविका-साधन चोरी डकैती का बना लिया था।[13] इनम कंजर सांसी थोरी बावरी मेर मीणा भील मुख्य थे।[14] किन्तु अपने क्षेत्र और प्रभाव विस्तार हेतु छोटे छोटे जागीरदार (राजपूत) भी उनसे के कार्य करने म

---

9 बनर्जी ए सी-द राजपूत स्टेटस एण्ड ब्रिटीश पेरामाउन्टसी, पृ 45-46
10 सिंह नगार द इस्ट इण्डिया कम्पनी एण्ड मारवाड़, पृ 211
11 प्राचीनकाल म यह वस्तव्याभिमुख सामाजिक-आर्थिक सेवा रही थी (व्यास सामाजिक आर्थिक जीवन पृ 88-89) किन्तु इन दिन यह श्रम-शोषणकी ओर उन्मुख होने लगी टाड एनाल्स भा 1, पृ 237, 1088 ट्रवल्स (हिन्दी) पृ 100 और विनोद पृ 136
12 टॉड एनाल्स भा 1 पृ 350 (46 एव 1092 ट्रवल्स (हिन्दी) प 3,13 496 ओझा, उदै भाग 2 प 701
13 व्यास सामाजिक-आर्थिक जीवन प 130
14 उपरोक्त प 127-133

हिचकिचाते नही थे।[15] इसी प्रकार राज्य में सामाजिक कर्त्तव्य के प्रति लोगों में उदासीनता का भाव[16] कई प्रकार के राजनीतिक सामाजिक संकट पनपे हुए प्रशासनिक व्यवस्थाओं को प्रभावित कर रहा था इनमें रखवाली बोलाई जैसी राजनीतिक-आर्थिक स्वेच्छाचारिता और किसान व वणिक वर्गों का मातृभूमि से पलायन की समस्या प्रमुख थी।[17] इन परिस्थितियों में समाज का ब्राह्मण मारवाड़ी-वर्ग कृषि कार्य के प्रति निष्क्रिय था कि कई बार राजस्थान की उपजाऊ भूमि बंजर पड़ी हुई थी। फलस्वरूप समाज पीछे ही नहीं रहा था बल्कि आर्थिक दृष्टि से सामाजिक विषमता का [illegible] राजस्थान में जड़ जमा चुका था।

कर्नल जेम्स टॉड ने उल्लेखित वातावरण का अनुभव ही नहीं किया वरन् इसके लिए उसने सुधार हेतु प्रयत्न भी आरम्भ किये। उसके सुधारात्मक उपायों का अध्ययन दो प्रकार से किया जा सकता है (1) विद्यमान समस्याओं के प्रति टॉड के विचार एवं (2) सामाजिक रुग्णता के निराकरणार्थ टॉड के चिकित्सीय प्रयास। अब हम टॉड के सामाजिक सुधारक स्वरूप का अवलोकन करने के लिए दोनों ही प्रकारों के उपायों को एकीकृत रूप में व्याख्या करेंगे।

समाज सुधारक कर्नल टॉड

राजस्थान ही नहीं अपितु समस्त भारत अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में सामाजिक कुरीतियों के अभिशाप से ग्रस्त रहा था। फिर

---

15 टॉड के अनुसार स्वयं ठाकुर लोग अपने अधीन सेवकों अथवा अपराधकर्मी जातियों को संरक्षण प्रदान कर चोरी-लूटपाट बलात्कार आदि को बढ़ावा देते थे इसीलिए टॉड द्वारा किये गए संधि पत्र 1818 ई. में इनको रोकने हेतु निर्देश है एनाल्स भा 1 पृ 564

16 एनाल्स भा 1 पृ 631

17 राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली मर्गर्स - फारेन पानीटिकल कंसल्टेशन पत्र सं 19 20 1821 ई. 6 अक्टूबर वीर विनोद पृ 1743 14

राजस्थान में राजपूत राज्यों का समाज तो प्रशिक्षा के अन्धकार में कट्टर परम्परावादी तथा रूढ़ियों के भवर में फंसा हुआ था। कर्नल जेम्स टाड ने पोलीटीकल एजेंट का पदभार ग्रहण करने के साथ ही सर्व प्रथम सामाजिक राजनीतिक सुधार की ओर ध्यान दिया। मेवाड़ राज्य में सामन्तों की स्वच्छाचारी प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने के लिए उसने उच्च श्रेणी के जागीरदारों में व्यक्तिगत सम्पर्क किया और समझौता-पत्र पर उनके हस्ताक्षर कराये।[18] यद्यपि सरदारों ने इस समझौते का पूर्णत पालन नहीं किया किन्तु इसके परिणामत राजपूत समाज में राणा की पद प्रतिष्ठा पुन प्रतिष्ठित होने से राज्य का सामाजिक राजनीतिक जन-जीवन शनै शनै व्यवस्थित होने लगा। इस समझौते से रखवाली चुंगी जैसे अधिकार सामन्तों को छोड़ने पड़े साथ ही चोर डाकू ठग तथा हत्यारों को उनकी जागीर में शरण प्रदान करना दंड का कानूनी अपराध घोषित किया गया।[19] अपराधकर्मी जातियों के पुनर्वास हेतु टाड ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी के भारतीय शासन को अपनी योजना प्रेषित की थी।[20] पर कम्पनी की सरकार ने इस ओर ध्यान नहीं दिया क्योंकि केन्द्रीय सरकार ने राजपूताने (राजस्थान) के प्रति कोई निश्चित नीति टाड के समय तक निश्चित नहीं की थी।[21] इसीलिए टॉड ने अपने प्रयत्न शासकों तथा सामन्तों के मध्य निरन्तर रखे। उसने मेरों की गतिविधियों को रोकने हेतु मेवाड़ के पूर्वी उत्तरी पर्वत क्षेत्र में थाने स्थापित कराये तथा जोधपुर के शासक मानसिंह को भी इस हेतु परामर्श

18 टाड द्वारा चार्ल्स मेटकॉफ को प्रेषित रिपोर्ट फारीन-पोलिटीकल कन्सल्टेशन 1819 ई 6 जून सं-13 एव 18 राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली टाड एनाल्स भा 1 पृ 565-72

19 एनाल्स भा 1 पृ 564, ओझा उ ई भा 2, पृ 707 यद्यपि भरतपुर के अधिकार का समूम्बर तथा काठारिया के जागीरदार ने 1827 ई तक नहीं छोड़ा था फलत टॉड के उत्तराधिकारी कप्तान काब को अप्रेल 1827 ई में इस हेतु पुन प्रयत्न करना पड़ा था (उ इ भा 2 पृ 719 एव 734) बृक ज सी - हिस्ट्री ऑफ मेवाड़ पृ 72

20 टॉड द्वारा एडम को भेजा गया पत्र, फॉरीन-पालीटीकल कन्सलटेशन 1819 ई अप्रेल 17 स 38 तथा टॉड का मेटकाफ को पत्र, उक्त, 1821 ई, जनवरी 6, रा अ दि

21 वशिष्ठ वी के राजपूताना एजेन्सी पृ 231

लिया गया।[21] मेरो और भीलों के पुनर्वास हेतु मेरवाड़ा, पीडवाडा, खैरवाड़ा, सिरोही की छावनियों में इनकी भर्ती की जाने लगी वहाँ मेर और मीणा जाति के लोगों को कृषि कार्य हेतु प्रेरित करने उनमें भूमि का वितरण किया गया।[23] यद्यपि यह पुनर्वास अंग्रेजों के आर्थिक-लाभ को दृष्टिगत रखते हुए आयोजित किया गया था।[24] किन्तु अप्रत्यक्ष रूप से इसका प्रभाव सामाजिक शांति और सुरक्षा पर भी पड़ा। जब भी ऐसी अपराधगामी जाति के लोगों से टॉड का साक्षात्कार हुआ तो उसने एक उपदेशक की भाँति उन्हें घृणित कार्य को छोड़ने हेतु समझाया और उनसे प्रतिज्ञा कराई कि भविष्य में वह अपराधकर्म से विमुख रहेंगे।[2] टॉड ने खोई हुई आत्मा को जगाने का प्रयत्न समाज के हर वर्ग के लिए किया। फलस्वरूप जन राजा और सामन्त में प्रान्तीयता का बीज अंकुरित होने लगा तथा शासक और प्रजा के मध्य पिता एवं सन्तान का प्रेम प्रतिदिन से प्रगति की ओर उन्मुख हुआ। उदयपुर (मेवाड़) का शासक राणा... ने टाड के प्रभाव से स्वयं को हिन्दू संस्कृति के पोषणकर्ता के रूप में संस्थापन करना आरम्भ कर दिया।[25] इस तरह टॉड ने राजस्थान में सामाजिक-विधि तथा सामाजिक मर्यादा की पुनर्स्थापना के प्रति अपने प्रयत्नों द्वारा सामाजिक सुधार का ही मार्ग प्रशस्त किया था।

मराठा-अतिक्रमण एवं सामन्तों द्वारा अत्यधिक आर्थिक दबाव से पीड़ित किसान तथा व्यापारी राजस्थान के कुछ राज्यों से पलायन कर गुजरात, मालवा, तथा उत्तरप्रान्त चले गये थे।[27] कर्नल टाड ने इस हेतु घोषणा पत्रों तथा शासकों को प्रेरित कर सुविधाओं के मार्ग द्वारा व्यापारियों और कृषकों को स्वदेश बुलवाया तथा उन्हें व्यापार और भूमि सम्बन्धित सुरक्षा

22 टाड-एनाल्स भा 2, पृ 285 तथा उक्त ग्रन्थ पृ वही

23 बुक-हिस्ट्री ऑफ मेवाड़ पृ 26 27 72-73 उ इ भा 2 पृ 711

24 राजपूताने पर आधिपत्य का प्रभाव स्थापित हो जाने से गुजरात एवं बम्बई के बन्दरगाहों पर अंग्रेज व्यापारियों का माल राजस्थान के बीच से चित्तौड़, टाडगढ़, उदयपुर, सरवाड़ नामक आदि स्थानों से गुजरता था जहाँ मेर, मीणा और भील के आवास भाग में पड़ते थे।

25 ट्रेवल्स इन वेस्टर्न इण्डिया (हिन्दी अनु) पृ 56 एवं 59

26 शर्मा कालूराम राजस्थान का सामाजिक आर्थिक जीवन पृ 70

27 टाड-एनाल्स भा 1 पृ 555 56 559 एवं 562 ओझा उ इ भा 2 पृ 706 शर्मा मथुरालाल कोटा राज्य का इतिहास भा 2 पृ 548-49

एवं रियायतें दिलवाई।[28] इसके अतिरिक्त राज्य की आर्थिक-दशा को सुधारने के लिए विदेशी व्यापारियों को राजकीय बैंक के अधिकार प्रदान करवाये गये।[29] व्यापारिक काफिलों आदि के लिए मार्ग और उनकी सुरक्षा की व्यवस्था द्वारा राज्यों में व्यवस्थित आर्थिक-जीवन का सुधार करने के प्रयत्न टॉड ने किये थे।[30] सामाजिक-आर्थिक सुधार की दृष्टि से ही उसने तत्कालीन समाज में विशेषतः राजपूतों की ऋणग्रस्त रहने की आदत के प्रति मनन ही नहीं किया बल्कि इसके लिए जागीरदारों तथा छोटे छोटे जमींदारों को इसके दुष्परिणामों के प्रति सचेत भी किया।[31] यद्यपि टॉड को इसमें कोई सफलता नहीं मिली फिर भी इससे यह तथ्य तो स्पष्ट होता ही है कि उसके मन में सामाजिक उत्थान के लिए निश्चित् दृष्टिकोण अवश्य था। इससे राजस्थान की जनता का जीवन स्तर ही समृद्ध होता। कृषि के लिए भूमि और श्रम ही नहीं, अपितु उससे सम्बन्धित पानी की व्यवस्था के लिए टॉड ने शासक और प्रशासकों को नये तालाब खुदवाने और कुओं को गहरा कराने के लिए प्रोत्साहित किया था।[32] ऐसी समाज कल्याणकारी प्रेरणा से कृषकों की दशा में सुधार होने लगा। ग्रामीण-समाज के शोषणकर्त्ता स्वच्छाचारी पटेलों के लिए नियुक्ति-प्रथा को

---

28 एनाल्स भा 1 पृ 382 एवं उपरोक्त ग्रंथ पृ वही

29 उदयपुर राज्य का इतिहास भा 2 पृ 709

30 आधुनिक राजस्थान का इतिहास पृ 117 पर डॉ एम एस जैन ने टॉड को राजस्थान की आर्थिक अव्यवस्था के सिद्धांत का जनक' बतलाया है जो कि सर्वथा सत्यपूर्ण नहीं है। टॉड को कम्पनी के राजनीतिक अधिकारी के रूप में कम्पनी का हित अवश्य रखना था किन्तु वह राजस्थान से प्रेम करने वाला पहला अंग्रेज अधिकारी था जिसे राजपूताने की व्यवस्था को व्यवस्थित करने हेतु अपने ऊपर आरोपण भी सहन पड़े थे इसी के फलस्वरूप उसने अपना त्यागपत्र देकर इंगलैण्ड प्रस्थान किया था। जैसा कि डॉ जैन लिखते हैं कि टॉड का समझौता भील तथा मेरों से व्यापारिक आवागमन की सुरक्षा के लिए आवश्यक था (वही पृ 101) पर डॉ जैन इसके दूसरे पक्ष का अविस्मरण कर देते हैं कि इस समझौते से मार्गों और गांवों की लूट पाट से मुक्ति पाने की ओर समाज अग्रसर हुआ वहीं इन उल्लेखित जातियों का अपराधिक जीवन सम्मानित जीविका-यापन हेतु परिवर्तन की ओर उन्मुख हुआ।

31 एनाल्स भा 1 पृ 646

32 ईस्ट इण्डिया कम्पनी व मारवाड़ पृ 211

समाप्त कर निर्वाचन-परम्परा को पुनर्जीवित करने की पहल भी टाड ने ही की थी।[33] बेठ-बेगार राजस्थान के जनजीवन का एक आर्थिक अभिशाप बन गया था। सभी राज्यों मे प्रशासकों की इच्छानुसार इसमें वृद्धि होती रहती थी। टाड की मान्यता थी कि जनता पर आर्थिक भार राज्य की सुव्यवस्था के लिए घातक रहता है अतः उसने बेठ-बेगार प्रथा के उन्मूलन हेतु जो भी प्रयत्न किये होंगे उसका एक उदाहरण ही यहां समीचीन होगा [34]

" ... आबू और सिरोही का स्वामी राव श्योसिंह मुझ (टाड) मिला मैंने उसे समझाया कि प्रजा का उत्थान कैसे हो सकता है, बेगार प्रथा को बन्द कर देना क्यों जरूरी है व्यापारियों को सुविधाएं देना राज्य की तरफ से क्या आवश्यक हैं। इस तरह की बहुत-सी बातों के साथ-साथ मैंने राव को समझाया कि जंगली जातियों को अच्छा आदमी बनाने के लिए क्या किया जा सकता है।

कोटा राज्य मे हाली *लोगों पर अधिक अत्याचार होते थे। कर्नल टाड ने इस हेतु उनकी दशा सुधारने का प्रयत्न किया किन्तु मेवाड मे रहते हुए वह इस ओर अधिक ध्यान नही दे सका। वह दासो के प्रति शासको और सामन्तो मे सद्व्यवहार की अपेक्षा रखता था। उसके हृदय में इन उपेक्षित मानव मानवियों के प्रति करुणा थी इसीलिए उसने अपनी एजेन्सी से सम्बन्धित शासकों को गोला नामक दासों के प्रति उनके बर्बर व्यवहार के प्रति सचेत किया था।[35]

स्वेच्छाचारी-प्रचलन के उक्त सुधारों की दिशा में टॉड को कुछ स्तर पर सफलता मिली थी उसे हम उसके प्रति प्रजा और राज के द्वारा प्रदत्त सम्मान और स्नेह द्वारा आंक सकते हैं। वह जब राजस्थान छोड़ कर स्वदेश लौट रहा था तब उससे मिलने सामन्त ही नहीं अपितु साधारण जन भी आए और वह इसे समय म भी सामाजिक-राजनीतिक एवं आर्थिक

---

*कृषि सम्बन्धी कार्य करने वाला चाकर अथवा नौकर।

33 एनाल्स भा 1 पृ 664 666 बनर्जी- द राजपूत स्टेटस एण्ड ब्रिटीश पेरामाउन्टसी पृ 33

34 ट्रवल्स पृ 100

35 एनाल्स भा 1 पृ 1085 88 - इस्ट इण्डिया कम्पनी एण्ड मारवाड पृ 211

मान्यों के सुझाव लाखा को यथास्थान समझाता रहा था ।[36] मेवाड का राणा भीमसिंह उससे कितना प्रभावित था इसका उदाहरण इसीसे मिलता है–[37]

"... (भीमसिंह) आप(टाड)को तीन वर्ष की छुट्टी दे रहा रहा हू इस बात को भूल नही जाना अगर तीन वर्षों से अधिक ठहरना का आपने वहा (इगलण्ड) पर इरादा किया तो म स्वय आपको लाने के लिए आऊगा और जहा कहीं मिलेंगे पकड कर ले आऊगा।

टाड एक तरह से अग्रेज राजपूत हो गया था जो राजस्थान के हितार्थ विचार सजोया करता था। वह इगलैण्ड से जब भारत म आया तब उसके देश म भी कई सामाजिक रूढिया विद्यमान थी उनम डाकिन प्रथा जैसा अधवि श्वास की परम्परा एक थी। राजस्थान में कोटा तथा मेवाड इसम ग्रस्त थे।[38] अत टॉड ने इस समस्या हेतु विचार को तत्कालिन काठारिया के रावत के परिवार म पनप अन्धविश्वास के प्रति उल्लसित उसके विचार से समझा जा सकता है[39]

29171 2।

"... यह सोचने की बात है कि जिन परिवारो म स्त्रिया अन्ध विश्वासो म रहा करती है उस परिवार और वश का कल्याण कैसे हो सकता है।"

अन्धविश्वासों के प्रति जनमोह के कारण टॉड ने समाज म अज्ञान के वातावरण को माना था। वह लिखता है कि "अज्ञान के अधकार म पड हुए लोग दयालु हो कर, शुद्रिति चमारी को भी ज्ञान के लिए भावन देते हैं और ऐसा करने म वे कभी सकोच नही करते। मेवाड का आशय हम मय उदाहरण द्वारा ग्रहण कर सकते हैं जिसमे टाड ने

36 ट्रेवल्स (हिन्दी अनुवाद म, केशव कुमार), पृ 21।

37 उक्त पृष्ठ वही

38 एनाल्स, भा 3 पृ 1615 ट्रेवल्स पृ 35, वो /वि पृ 2039।

39 ट्रेवल्स (अनु केशवकुमार) पृ 34—काठरिया रावत की एक पत्नि के पुत्र की बीमारी से मृत्यु का पता मृत पुत्र की माता ने, अपनी सौतन पर यह कह कर लगाया कि उसने उसके पुत्र को (पिशाचनी) द्वारा हत्या करा दी है।

लिखा है— देवडा राजपूत सरदार ने बतलाया कि कुछ दिन पूर्व जब वह अपने भाई का दाह संस्कार कर रहा था तो एक अघोरी ने आकर मृत शरीर को यह कह कर मांगा कि शव की बहुत बढ़िया चटनी बनती है, उसी (राजपूत सरदार) ने बताया कि ऐसे लोगो (अघोरी) पर आदमी के मारने का अपराध नही लगाया जाता है।[1] टाड ने इस हेतु क्या प्रयत्न किये यह हमें विदित नहीं होता है किन्तु इसके लिए उसने लोगो को समझाया अवश्य होगा कि यह अमानवीय कृत्य मूलत सामाजिक अपराध है।[40]

टाड ने बहु विवाह और बेमेल विवाह के प्रति टॉड ने कोई सुधारात्मक चरण नहीं उठाये किन्तु इनसे उत्पन्न दुष्परिणामो का उल्लेख उसने अपने ग्रंथ में ही नही वरन् कम्पनी-सरकार को प्रेषित अपनी रिपोर्ट्स में भी किया है।[41] सम्भवत उसने अपने क्षेत्र से सम्बन्धित शासक और जागीरदारों मे पारिवारिक क्लेश के दावो को निपटाने के सन्दर्भ में इस पिछड़ी परम्परा की चर्चा की होगी। पर इसका परिणाम कुछ भी नहीं हुआ। राजपूत लोग बहु-विवाह को सम्मान एवं प्रतिष्ठा का साधन मानते रहे थे। सति प्रथा बाल-हत्या एव कन्या-वध जैसी कलंकित प्रथाए टाड के द्वारा प्रयत्न करने पर भी रुकी नही इसका मुख्य कारण कम्पनी प्रशासन का राजस्थान के सामाजिक जीवन के प्रति उदासीन व्यवहार कहा जा सकता है। किन्तु लार्ड विलियम बेंटिक द्वारा अपनाई गई सुधारात्मक-नीति का प्रभाव राजस्थान मे कार्यरत आग्ल अधिकारियो पर भी पड़ा और उन्होंने इस हेतु कानूनी-अधिकार मागना आरम्भ कर दिया। इस सन्दर्भ मे राजस्थान के शासकों पर 1840 ई के पश्चात् सुधारात्मक उपाय लागू करने अत्यधिक दबाव डाला गया तब भी राजस्थान, मे इन कुप्रथाओ का सर्वथा विनाश नहीं हो पाया। पर टाड के द्वारा राजस्थान मे व्याप्त कुरीतियों का सकलन उसके परवर्ती राजनीतिक-अधिकारियो को समस्या के समझने में सहायक सिद्ध हुए। शराब और अफीम के सेवन से होने वाली हानियो के प्रति भी टाड ने लोगों को सचेत किया था।[42] इसीके फलस्वरूप नशे की पीनक मे बल्ला अथवा वेरसन की भावना से उत्पन्न सामाजिक विघटन की ओर टाड

40 ट्रेवल्स पृ 83 85 एव 393

41 उक्त पृ 15-16 टाड द्वारा मेटकाफ को प्रेषित 207 अनुच्छेद की रिपोर्ट फा पा क 1819 ई जून 12, रा अ नि

42 एनाल्स भा 2 पृ 350 ट्रेवल्स पृ 3 एव 13, बनर्जी पराभाउण्टसी प 47

ने लोगो का ध्यान आकर्षित किया था ।[43] इन सभी प्रयत्नो का तत्कालीन प्रभाव शून्य ही दिखलाई देता है पर टॉड के पश्चात् आने वाले प्रग्रज राजनीतिक-अधिकारियो ने सामाजिक सुधार के लिए टॉड द्वारा इंगित अनुशंसा का ही अनुसरण किया । इससे स्पष्ट होता है कि टॉड चाहे अपने समय मे राजस्थानी समाज को जाग्रत करने मे सफल नही रहा हो[44] परन्तु कुछ समय बाद उनके प्रयत्न परिणाम भी उत्पन्न करने लगे थे ।

निष्कर्षत कहा जा सकता है कि कर्नल जेम्स टॉड का एक सुधारक के रूप मे अवलोकन उनके द्वारा किये गये (1) सामाजिक राजनीतिक (2) सामाजिक आर्थिक तथा (3) सामाजिक सांस्कृतिक क्षेत्र मे क्रियात्मक प्रयोग एवं उसके उल्लेखित विचारो से किया जा सकता है । और इस रूप मे वह प्रशासनिक योग्यता धारण किये हुए राजस्थान के समाज मे व्याप्त बुराइयो का प्रथम कल्पनाशील सुधारक था ।

---

43 उक्त-ग्रन्थ पृ 1090

44 इसका कारण 1867 68 ई की एडमीनीस्ट्रेटीव रिपोर्ट से पता चलता है कि राज्य के कर्मचारी और सामन्त अपने क्षुद्र स्वार्थों के फलस्वरूप सुधारो के विरोधी थे, रिपोर्ट आफ राजपूताना स्टेटस, पृ 19

कर्नल टॉड का समाज शास्त्रीय योगदान

—डॉ सी एल शर्मा

कर्नल जेम्स टॉड एक ऐसे अंग्रेज विद्वान एवं इतिहासकार कहे जा सकते हैं जिनके लेखन को केवल इतिहास विषय की सीमाओं तक ही परिसीमित नहीं रखा जा सकता। वे समाजशास्त्रियों के लिये भी उतने ही उपयोगी सिद्ध होते हैं जितने कि इतिहासकारों के लिये। इस लेख में उनके समाजशास्त्रीय योगदान पर विस्तार से प्रकाश डाला जा रहा है।

कर्नल टाड की दोनों प्रमुख रचनाओं का हिन्दी अनुवाद किया जा चुका है और इस लेख के संदर्भ के लिये इन्हीं अनुवादित पुस्तकों [1] को आधार माना गया है।

टॉड का समाज शास्त्रीय योगदान

हम दो आधारों पर किसी भी विद्वान के योगदान का मूल्यांकन समाजशास्त्रीय दृष्टि से कर सकते हैं-पहला पद्धतिशास्त्रीय एवं दूसरा सैद्धान्तिक। टाड की रचनाओं का मूल्यांकन भी इन दोनों आधारों पर किया जाना समीचीन होगा।

---

1 (i) टाड लिखित राजस्थान का इतिहास एनाल्स एण्ड एन्टिक्विटीज आफ राजस्थान का हिन्दी अनुवाद-अनुवादक केशव कुमार ठाकुर तथा भूमिका लेखक ईश्वरीप्रसाद, इलाहाबाद आदर्श हिन्दी पुस्तकालय 1965

(ii) पश्चिमी भारत की यात्रा ले कर्नल जेम्स टाड रचित ट्रेवल्स इन वेस्टर्न इण्डिया का हिन्दी अनुवाद अनुवादक एवं सम्पादक गोपाल नारायण बहुरा (राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर 1965) प्रस्तावना लेखक रघुवीरसिंह

पद्दतिशास्त्रीय योगदान

वैज्ञानिक विधि पर आधारित अनुसंधान में सर्वाधिक महत्व पद्धति का है अनुभविक पद्धति से तथ्यों का संकलन एवं संग्रह किया जाता है तथा उन्हीं पर आधारित विश्लेषण। फिर विश्लेषण के आधार पर सिद्धांत निर्माण किया जाता है। अतः दोनों आधार एक दूसरे के पूरक हैं। यद्यपि टॉड के द्वारा जिस पद्धति को प्रयुक्त किया गया वह केवल एक ही प्रकार की नहीं है। फिर भी तुलनात्मक पद्धति को उन्होंने अधिकांश रूप में अपनाया है। उनके द्वारा संकलित तथ्यों के स्रोत द्वितीयक एवं प्राथमिक दोनों हैं। प्राथमिक स्रोतों में उन्होंने स्वयं पुराने सिक्के शिलालेख ताम्रपत्र एवं अन्य प्रामाणिक ऐतिहासिक सामग्री का एकत्रित किया तथा उसको श्रेणीबद्ध करके अपनी ओर से विश्लेषण दिया है। इस कार्य में उन्हें एक ऐसे भारतीय मनीषी की आवश्यकता थी जो संस्कृत एवं प्राकृत तथा स्थानीय प्राचीन लिपियों का ज्ञाता हो। उन्होंने एक जैन मुनि को गुरू मानकर उनसे सभी प्रामाणिक शिलालेखों एवं अन्य ग्रंथों से प्राप्त भाषा में आवश्यक जानकारी हासिल की। वे थे यति ज्ञानचन्द। मुनि ज्ञानचन्द के अलावा एक ब्राह्मण पंडित से भी इसी प्रकार की सहायता ली थी किंतु ब्राह्मण पण्डित अधिक पढ़ा हुआ नहीं था। सामग्री संकलन की यह विधि वस्तुनिष्ठता को बनाती है तथा लेखक एवं अनुसंधानकर्ता के लिए उपयोगी सिद्ध होती है। समाजशास्त्र में उन नवीन अध्ययनों के लिए यह पद्धति अनुकरणीय साबित होगी जिनमें ऐतिहासिक तथ्यों का सहारा लिया जाता है। विशेष रूप से भारतीय सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन की दिशाओं आन्दोलनों एवं जमींदारी जागीरदारी व्यवस्था के अन्तर्गत भारत में कालान्तर में होने वाले परिवर्तनों को समझने के लिए इसी विधि का सहारा लिया जाना चाहिये। जो भी तथ्य संकलित इस प्रकार से कर लिये जाते हैं उनका मात्र वर्णन करने के बजाय विविध सामाजिक व्यवस्थाओं के तत्कालीन तथ्यों से तुलना करके विश्लेषण प्रस्तुत किया जाय तो उसकी शक्ति महत्ता अधिक प्रमाणित होती है।[2]

टॉड ने अपने एनाल्स में सर्वप्रथम राजस्थान की जागीरदारी प्रथा का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। यूरोपीय देशों और विशेषकर इंगलैंड में पाई जाने वाली जागीरदारी व्यवस्था से राजस्थान की जागीरदारी

---

2 ‎ शिव नारायणसिंह चुण्डावत टॉड का व्यक्तित्व एवं कृतित्व हुकमसिंह भाटी द्वारा सम्पादित राजस्थान के इतिहासकार उदयपुर प्रताप शोध प्रतिष्ठान पृ 34

व्यवस्था की तुलना की है और थोड़े बहुत अन्तर के बतावा दोनों व्यवस्थाओं में समानताएं अधिक बताई गई हैं। इसी तरह से राजपूत जाति की उत्पत्ति—तथा इसकी विविध उप शाखाओं वंश-धाराओं गोत्र-समूहों आदि का विस्तृत वर्णन टाड ने प्रस्तुत किया है। राजस्थान की जागीरदारी व्यवस्था का विश्लेषण इस प्रकार किया गया है कि उसमें उन सभी परिवर्तनों एवं गतिशीलताओं की जानकारी मिलती है जो जागीरदारी व्यवस्था की निरंतरता एवं सत्यात्मकता का प्रकट करती है। जिन तथ्यों को वे वस्तुनिष्ठ तथा मूल आधारों पर प्राप्त नहीं कर सके किन्तु जिन्हें वे उचित समझ रहे थे उन्हें भाट चारणों की गाथाओं महाभारत एवं अन्य पौराणिक ग्रन्थों तथा लोक कथाओं व जनश्रुतियों का सहारा लेकर प्रकट किया।[3] यह पाठक पर छोड़ दिया है कि यदि वे इन आधारों की वस्तुनिष्ठ वैधता को नहीं मानते हैं तो वे जो चाहे सो अपने निष्कर्ष निकालें। टाड ने बखूबी से राजपूत जाति की उत्पत्ति उसकी निरंतरता एवं इसकी विभिन्न उप जातियों का इन्हीं आधारों पर विस्तार से स्पष्ट किया है समाजशास्त्र में अब तक हुए जाति व्यवस्था के अध्ययनों में टॉड को उद्धरित नहीं किया है। किन्तु मेरी मान्यता है कि यदि जाति विशेष की (राजपूत जाति जो सत्ता में प्रमुख सम्पन्न रही है) स्थिति एवं उसकी उत्पत्ति तथा व्यवस्था सम्बन्धी विश्लेषण देखना है तो टाड की पुस्तक के प्रथम सात परिच्छेद[4] अधिक महत्वपूर्ण होंगे। इस भाग की सामग्री का आधार अधिकांश रूप से पौराणिक ग्रन्थों एवं चारणों की वंशावलियों को बनाया गया है। इसे इन्डोलोजिकल पद्धति के रूप में समाजशास्त्र में स्वीकारोक्ति प्राप्त है। राजस्थान में जागीर प्रथा की तुलनात्मक व्याख्या करते हुए टाड लिखते हैं राजस्थान की शासन व्यवस्था का आधार हजारों वर्षों से उसकी जमींदारी प्रथा थी और वह प्राचीनकाल से यूरोप की जागीरदारी प्रथा के समान थी। उसकी श्रेष्ठता बहुत समय तक कायम रही और बाहरी मजहबी जातियों के लगातार अत्याचारों तक छिन्न भिन्न नहीं हो सकी। भारत का प्राचीन गौरव इस शासन व्यवस्था का ऐसा प्रमाण है जिससे कोई निष्पक्ष और बुद्धिमान इनकार नहीं कर सकता। टाड ने न केवल यूरोप की जागीरदारी प्रथा से राजस्थान की जागीरदारी प्रथा की तुलना की बल्कि भारत के अन्य क्षेत्रों में भी जो

---

3 टाड लिखित राजस्थान का इतिहास एनाल्स एण्ड एन्टिक्विटीज आफ राजस्थान का हिन्दी अनुवाद पूर्व उद्धरित पृष्ठ 79–127

4 देखिये वही पृष्ठ 37–78

जागीरदारी प्रथा प्रारम्भ से अब तक रही है उससे भी राजस्थान की जागीरदारी प्रथा से तुलना की है। राजस्थान के राजपूत वंशों का भारत के राजवंशों से भी श्रेष्ठ बताया गया है

टाड की तुलनात्मक पद्धति मात्र एकल रूप में प्रयुक्त नहीं की गई है। इसका सही उपयोग ऐतिहासिक पद्धति के साथ किया गया है। राजस्थान के विविध क्षेत्रों की सत्ता एवं शासन व्यवस्था का अलग अलग वर्णन प्रामाणिक तथ्यों के साथ किया है। मेवाड़ मारवाड़ जैसलमेर बीकानेर जयपुर कोटा बून्दी तथा मरुभूमि के ऐतिहासिक वर्णन में हम उन सभी घटनाओं की जानकारी मिलती है जो सदियों से इन भूतपूर्व राज्यों में सामाजिक निरन्तरता तथा परिवर्तनों (कभी तीव्र तो कभी धीमे) को स्पष्ट करते हैं। ऐतिहासिक वर्णन नीरस न हो जाय इसके लिये टाड ने स्थान–स्थान पर राजवंशों की उन वास्तविक घटनाओं का विस्तार से विवेचन भी किया जिनमें राजपरिवार के लोग अपने ही सदस्यों के प्रति विश्वासघात व षडयन्त्र करते हैं और उनका मुकाबला भी किया जाता है। इस ऐतिहासिक विवेचन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि हर राज्य के बारे में उसकी स्थापना एवं प्रारम्भिक अवस्थाओं से लेकर 1818 ई की तत्कालीन राजनैतिक व्यवस्था तक राजघरानों एवं शासन व्यवस्था के बारे में सूचना दी गई है। अतः विश्लेषण का काल विस्तार अधिक है तथा केवल तिथियों एवं घटनाओं को ही न देकर उनसे सम्बन्धित परिस्थितियों का भी विश्लेषण है। अतः टॉड की ऐतिहासिक पद्धति समाजशास्त्रियों के लिये राजस्थान की प्राचीन एवं आधुनिक (सन् 1818 के पूर्व तक) संस्कृति एवं सभ्यता के शासक वर्ग में विद्यमान सभी लक्षणों के अध्ययन हेतु बहुत उपयोगी सिद्ध होगी। विविध जातियों एवं धार्मिक व्यवस्था, आर्थिक व्यवस्था आदि के बारे में भी वास्तविक जानकारी इस पद्धति से राजस्थान के समाज के बारे में मिलती है।

यात्रा विवरण के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था के विभिन्न पक्षों पर विवेचन भी टॉड ने अपनी पुस्तक पश्चिमी भारत की यात्रा में किया है। यह विधि समाजशास्त्र में अधिक प्रचलन में नहीं है किन्तु टॉड ने आनुभविक आधार पर जो तथ्य लोगों से सकलित किये उन्हें तीथिवार इस प्रकार प्रस्तुत किया कि सम्पूर्ण प्रस्तुतीकरण में उन्होंने कई सामाजिक संस्थाओं प्रक्रियाओं एवं समूहों के गतिशील पहलुओं पर एक समाजशास्त्रीय की दृष्टि से प्रकाश डाला है। विशेष रूप में धार्मिक संस्थाओं, सामाजिक संरचनाओं परम्पराओं का जैसा टॉड ने अपनी आँखों से देखा अथवा प्राचीन लेखागारों

तथा जनश्रुतियों से जैसा भी टॉड को मालुम हुआ उसका वर्णन सजीव ढग से किया गया है । कई प्रसगो म टाड ने वशावलिया एव मनुस्मृति जम प्रामाणिक ग्रथो का सहारा लेकर सामाजिक परम्पराओ एव जाति रुप ठनों क महत्व को स्पष्ट किया है । कनल टाड की यात्रा करीब सात माह म उदयपुर स प्रारम्भ होकर बम्बई म समाप्त हुई जो जून 1822 को प्रारभ हुई थी और जनवरी 1823 म सम्पूण हुई तथा उसके बाद हमेशा क लिय वे इगलण्ड चले गये । यात्रा का विवरण व अपने जीवन काल म प्रकाशित नही करा सके । वतमान स लगभग एक-सौ साठ वष पहल के राजस्थान म जिस प्रकार की सामाजिक परम्पराएँ रीतिरिवाज एक विदेशी प्रशासक की निगाह मे किस प्रकार विशष स्थान बना लेते हैं उसी का वस्तुनिष्ठ वणन टाड ने किया है ।

टॉड का सैद्धान्तिक योगदान मुख्य रूप स निम्न विषयो से सम्बन्धित सामग्री टाड की दोनो पुस्तको म मिलती है जिनका समाजशास्त्रीय महत्व अधिक है –

1 जागीरदारी व्यवस्था
2 राजपूत जाति की उत्पत्ति तथा उसकी विविध शाखाए तथा अन्य जातियो का वणन
3 सघष की प्रक्रिया के तथ्य-कारणो एव परिणामो के आधार पर युद्धो का वणन
4 शासन एव सत्ता की स्थिरता एव अस्थिरता के आयाम-काल की गहराई के अन्तर्गत वास्तविक घटनाओं का वणन
5 द्वद्व-समूहो के कारण एव परिणाम
6 विवाह सस्था-अनुलोम तथा अन्तर्धार्मिक
7 राजस्थान की जनजातियों का सामन्ता क साथ परम्परागत सम्बन्ध
8 *नगरीय एव धार्मिक तथ्यो का वणन*

उपयुक्त सभी विषयो का समाजशास्त्रीय महत्व है अत टाड अब केवल इतिहासकार ही नही बल्कि ऐसा समाजशास्त्री माना जा सकता है जिसने विषय की स्थापना तथा उसके प्रमुख सिद्धाता का तो निर्माण नहा किया किन्तु समाज विषयक वह तथ्य मूलक सामग्री अवश्य प्रदान की जो समाजशास्त्रीय सिद्धान्त निर्माण म अनिवार्यवश्यक समझी जा सकती है यद्यपि नवीन तथ्यो के आधार पर कनल टाड द्वारा दिये गये सामान्य कथन या सद्धान्तिक व्याख्याएं निरस्त हो जाती है किन्तु विज्ञान ने अनगत उन निरस्त

सिद्धान्तों का महत्त्व कभी भी कम नहीं होता जिनको वर्तमान नये तथ्य मक नित करके उन्हें निरस्त किया गया। विशेष रूप से टॉड द्वारा जागीरदारी व्यवस्था में राजस्थान तथा यूरोप की सामन्ती व्यवस्था की समरूपताओं को अधिक उभारा गया जबकि दोनों में भिन्नताएं अब अधिक दिखाई देती हैं। यहां हम उक्त लिखित सभी बिन्दुओं को तो नहीं ले सकते किन्तु कतिपय पर प्रकाश डालना उचित होगा।

जागीरदारी व्यवस्था

यद्यपि टॉड के विश्लेषण का सन्दर्भ राजस्थान की भूमि पर सदियों से विद्यमान जागीरदारी व्यवस्था के विविध प्रतिमानों से है फिर भी उन्होंने सामन्ती सत्ता के कुछ सामान्य आधार स्पष्ट किये हैं। उनके अनुसार राजस्थान की जागीरदारी व्यवस्था का मूल स्रोत भारत भूखण्ड के उत्तरी भागों में विद्यमान सामन्ती व्यवस्था है। यहां राजस्थान में सातवीं शताब्दी से ही सामन्तशाही व्यवस्था के उभरने के स्पष्ट तथ्य मिलते हैं। विशुद्ध राजपूत वंश के लोगों में से ही सत्ता का प्रमुख या उसका सामन्त बनता आया है। राज्य सत्ता को राजपूत वंश की श्रेष्ठता से जोड़ कर देखा गया है। पैतृकता के सतत अधिकार ने भूमि पर राजपूत वंश के लोगों को ही अपना एकाधिकार बनाने का चिरस्थाई नियम प्रचलन किया है। इसके अन्तर्गत परिवार में पिता की मृत्यु के बाद उसके सबसे बड़े लड़के को ही सम्पूर्ण भूमि पर अधिकार मिल जाता है। राजपूत जाति के लोगों ने अपने वंशों परिवारों की श्रेष्ठता के इस अधिकार के लिये बाहरी आक्रमणकारियों से युद्ध करके स्थानीय निवासियों की रक्षा की है तथा उन्हें अपने धर्म को बचाने के लिये अपनी सेवाएं भी दी हैं। इसके बदले में उन्हें भूमि पर सम्पूर्ण एकाधिकार मिला। कई सामन्तों का एक क्षेत्र या उनकी सांस्कृतिक पहचान होती है तथा उनका एक मुखिया होता है जो उनमें समायोजन स्थापित करके एक राज सत्ता का निर्धारण करता है। राजस्थान में महाराणा/राणा/राजा/महाराजा राव/महाराव/रावल आदि नाम से सामन्तों के प्रमुख पहचाने जाते थे। मेवाड़ राज्य में राणा या महाराणा का पद प्रमुख के लिये था तथा शासन का वास्तविक प्रमुख शिव या एकलिंगनाथ देवता को माना गया है। मेवाड़ की सामन्तवादी व्यवस्था ऐसी जागीरदारी परम्पराओं में संचालित थी जिसमें श्रेष्ठता के आधार ऊंची श्रेणी फिर उनसे नीची श्रेणी तथा उनसे भी नीची श्रेणी के जागीरदार होते थे। इन सभी के अलग—अलग अधिकार निर्धारित थे। निम्नलिखित चार श्रेणी के सामन्त मेवाड़ में सदियों से विद्यमान रहे हैं —

(घ) प्रथम श्रेणी— सोलह उमराव(सामन्त) इन्हीं में से महाराणा के मन्त्री मण्डल म सम्मिलित होते थ । इनकी वार्षिक श्राम पचास हजार से एक लाख रुपय तक की होती थी। य सवसता के प्रमुख हिस्सेदार थे।

(ब) द्वितीय श्रेणी— बत्तीसा सामन्त जिन जागीरदारों की श्राय पाच हजार स पच्चास हजार रुपय वार्षिक। इनकी नियमित उपस्थिति महाराणा की सेवाम रहती इनके पास एक लघु सनिक टुकडी भी रहता थी।

(स) तृतीय श्रेणी—गोल के सरदार ये महाराणा पर निभर रहते थ। राज्य की विविध सवाश्रो म इनको लगाया जाता था। राणा की निजी सुरक्षा म इन्ही सरदारो म से होते। सामन्ती विग्रह के समय राणा द्वारा इनको सामन्तों के विग्रह का स्थान म उपयोग लिया जाता।

(द) चौथी श्रेणी- राणा के परिवार के श्रन्य राजकुमारो की जो राणा नहीं बनकर छुट गया रह जाते म मात्र एक जागीर के हकदार ही रहते है।

उपयुक्त चारो स्तरो पर सत्ता के अधिकार सर्वाधिक स कम की श्रवस्था म प्राप्त होते हैं जो राजपूतो को ही प्राय मिलते रहे हैं। टाड ने यह देखा है कि राजपूतो के इस विशेषाधिकार का ध्यान परम्परागत है जिसे प्रमुख समाजशास्त्री मक्स वबर न परम्परागत प्राधिकारी व्यवस्था क लिय एक मात्र श्राधार बताया है। टॉड के अनुसार राजपूतों की तीन ही विशेषताए प्रमुख बताई गई ह—

(1) हथियार—तलवार ढाल भाले श्रादि
(2) घोडा —घुडसवारी क लिय
(3) शिकार —अपने आप को शारीरिक शक्ति म समर्थ रखन क लिय

मारवाड म सामन्तों के स्तरीकरण की दो स्तरीय व्यवस्था थी। प्रथम श्रेणी क उच्च स्तरीय सामन्त तथा द्वितीय श्रेणी क सामन्त। इसी स्तरीकृत रूप म अन्य रियासतो की सामन्ती व्यवस्था भी राजस्थान म विद्यमान रही। राजपूत सामन्तवादी व्यवस्था को युरोपीय सामन्ती शासन व्यवस्था क साथ समरूपता को कई विद्वानो न अस्वीकार किया ह। * डा वृन्दावन ने इस सदम म लिखा ह -

राजपूत सामन्तवाद मूल रूप में एक विशिष्ट प्रकार की सघीय राष्ट्रीय एवं प्रजातान्त्रिक संस्था है — राजस्थान में भूमि और उसकी मिट्टी पर उपज के आधार पर राजस्व के अतिरिक्त राजा का कोई अधिकार नहीं था। यूरोपीय सामन्त प्रणाली में मुख्य सिद्धात यह है कि राजा ही राज्य का सार्वभौम स्वामी और मूल स्वत्वाधिकारी होता है और समस्त अधिकार उसी में निहित होते थे तथा उसी से प्राप्त किये जा सकते थे। फिर यूरोपीय सामन्त प्रणाली में कृषक अथवा दास कोई सम्पत्ति प्राप्त नहीं कर सकता था और यदि वह कोई सम्पत्ति या भूमि खरीद भी लेता था तो वह स्वामी उसमें घुसकर स्वेच्छा से उसका उपयोग कर सकता था। जबकि राजस्थान में रयत अथवा किसान ही भूमि का असली मालिक होता था।[8]

वास्तव में देखा जाय तो टाड के द्वारा किया गया सामन्ती शासन व्यवस्था का राजस्थान के सदर्भ में तुलनात्मक विश्लेषण एक नींव का पत्थर है और उसके बाद अन्य विद्वानों ने अपने-अपने मत प्रस्तुत करके इस विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला है। एक विशेष राजनयिक की दृष्टि समाज वर्णानिक की तरह से ऐसी सामाजिक व्यवस्था पर केन्द्रित हुई थी जिस पर उसके पहले वर्णानिक विधि से विश्लेषण उपलब्ध नहीं थे। यही उनका सबसे बड़ा योगदान है।

टॉड ने सद्धांतिक तौर पर सामंतशाही व्यवस्था में निम्न लिखित प्रथाओं का वर्णन दिया है जो इस व्यवस्था को बनाये रखने में अपना योगदान देती है—नजराना जागीर का पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होना, पुत्रहीन सामंत के मरने पर जागीर का राज्य में विलय अथवा विधि सम्मत तरीके से गोद लिये पुत्र को जागीर मिलना, धन की सहायता, नाबालिग सामंत की रक्षा, तथा विवाह की विभिन्न रस्म। जागीरदारी में भूमि पर जागीरदार का सर्व सम्मत अधिकार होता था। मेवाड़ में यह अधिकार दो प्रकार बताया गया है—(1) ग्राम्य ठाकुर—स्थाई अधिकार तथा (2) भूमिया स्थाई अधिकार सम्पूर्ण सामंतशाही व्यवस्था में सभी श्रेणियों के सामंतों को टॉड ने तीन वर्गों में विभाजित किया है।

(1) सिपाही सामन्त—निश्चित अवधि तक भूमि पर अधिकार
(2) चिर स्थाई सामन्त
(3) वंशगत सामन्त

सामन्ती व्यवस्था के अन्तर्गत जागीरदारी अधिकारों के आधार पर

8 राजस्थान के इतिहासकार पृ 49 प्रताप शोध प्रतिष्ठान

समाज में राजपूत वंशो के कतिपय प्रमुख परिवारों को जो सर्वाधिक अधिकार प्राप्त थे और जिन्हें पतकता के आधार पर सत्ता के सभी अधिकार वंशियन में मिल गये थे उनमे धीरे धीरे गिरावट आई । टाड की मान्यता एक सद्धान्तिक सामान्य कथन के रूप में भी इस प्रकार से उभर कर आई कि जिस पतकता के अधिकार से सत्ता का निर्धारण हुआ उसी के कारण कालान्तर में अधिकारों की गिरावट भी आने लगी । एक प्रमुख सामन्ती मुखिया के पीढ़ी दर समयान्तर के साथ-साथ भूमि एवं सम्पत्ति का, सहर भाईयों में लगातार बटवारे से उनकी सत्ता एवं स्तर में गिरावट आती रही और इसी कारण राजपूत रियासतों की सर्वशक्ति कमजोर पड़ती गई और बाहरी शक्ति को आक्रमण करके उन्हें दबा देने का अवसर मिला । टाड लिखते है —

अपनी खोज में हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे है कि जागीरों के विभाजन एवं लड़कियों के विवाह में दहेज की प्रथा के कारण राजपूतों में शिशु हत्या की सृष्टि हुई है ।[6]

राजपूत जाति को कनल टाड ने अपनी भाषा में ट्राइब कहा है । किन्तु वे इस एक जनजाति के अर्थ में नहीं मानते थे । वे राजपूतों को एक ऐसी वीर-योद्धाओं वाली जाति समुदाय मानते थे जिसकी उत्पत्ति उन्होंने सिथियनों अर्थात् शकों से मानी है । राजपूत जाति की उत्पत्ति के बारे में महाभारत तथा अन्य पौराणिक आधारों मनुस्मृति आदि का भी सहारा लिया गया । प्राचीन काल से मध्ययुगीन काल तक राजपूत जाति के नामों को क्षत्रिय के नाम से सम्बोधित किया जाता था जिनके वंशों में मुख्य रूप में सूर्य वंश, चन्द्र वंश तथा अग्नि वंश के नाम आते है । टाड ने तुलनात्मक पद्धति का सहारा लेते हुए लिखा है —

मैंने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि राजस्थान एवं प्राचीन युरोप की वीर जातियां एक ही वंश वृक्ष की शाखाएं हैं भारतवर्ष में जो सामन्ती व्यवस्था प्रचलित है ठीक उसी प्रकार की सामन्ती व्यवस्था प्राचीन काल में युरोप में फैली हुई थी जिसके अवशेष आज हमारे देश के शासन नियमों में विद्यमान है । हम पूर्व और पश्चिम के नामों की उत्पत्ति एक ही वंश से होने के सम्बन्ध में अत्यन्त संशयवादी हो गये हैं । फिर भी

---

6 राजस्थान का इतिहास पृ 113

अपने प्रमाण विश्व के निष्पक्ष निर्णय के लिये प्रस्तुत करता हूँ । मैं मानता हूँ कि यद्यपि इन प्रश्नों का निर्णय नहीं कर सकती इतना महत्वपूर्ण है कि उनका अध्ययन और शोध आवश्यक है । इस प्रकार का परिश्रम निष्फल नहीं जायगा ।[7]

परिच्छेद प्रथम से लेकर परिच्छेद सात तक राजपूत जातियों का विस्तार से विवेचन किया गया है । यह भाग यद्यपि जिन तथ्यों पर आधारित है वे ऐतिहासिक दृष्टि से प्रामाणिक नहीं माने जाते फिर भी जो मान्यताएं समाज में प्रचलित हैं तथा जिन्हें वेदों, शास्त्रों, पुराणों, श्रुतियों, स्मृतियों को भारत की जनता में आज भी श्रद्धा एवं श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता है उनको आधार मानकर एक बौद्धिक विश्लेषण करना अप्रासंगिक नहीं है । एक विदेशी विद्वान द्वारा इतना गहन तथा तुलनात्मक विवेचन राजस्थान के राजवंशों या राजपूतों के बारे में और कहीं उपलब्ध नहीं है । समाजशास्त्र में गोत्र एवं वंश को महत्वपूर्ण सामाजिक इकाई माना जाता है । महाभारत एवं रामायण की चिर प्रतिष्ठित कथाओं के आधार से राजस्थान के राजवंशों को जोड़कर उनके प्रारम्भ के सूर्यवंश तथा चन्द्रवंश तथा बाद में विकसित छत्तीस राजवंशों का विवेचन है । फिर हर वंश की विविध शाखाओं का भी वर्णन किया गया है । राजपूतों में प्रमुख गहलोत राठौर परमार सोलंकी आदि की विविध शाखाओं की प्रस्तुति भी टॉड ने की है । कुछ अन्य ऐसी जातियों का वर्णन भी टॉड ने किया है जो राजवंशों की राजपूत जातियों के साथ साथ समय के अन्तराल में पनपती गईं जिनमें प्रमुख हैं—जाट, जाला, काठी, जेठवा, बट्टा, गोहिल, सरिमस्प, सिकार, गौड़, डाभी, बड़गूजर, शाहिया, दाहिमा, जंगलों में रहने वाली जातियां तथा व्यावसायिक जातियां शामिल हैं । इनके मात्र नाम अथवा कुछ पहचान ही बतायी गई है ।

समाजशास्त्र में सामाजिक प्रक्रियाओं का भी सैद्धान्तिक विश्लेषण किया जाता है मुख्य रूप से हर समाज में दो प्रकार की प्रक्रियाएं पायी जाती हैं—विघटनात्मक एवं संगठनात्मक । विघटनात्मक प्रक्रियाओं में सभी प्रकार के संघर्ष, विरोध, तनाव आदि सम्मिलित हैं जबकि संगठनात्मक प्रक्रियाओं में सहयोग, समायोजन, व्यवस्थापन, एकीकरण आदि हैं । टॉड की दोनों पुस्तकों में ऐतिहासिक सन्दर्भ के उन सभी घटनाओं एवं परिस्थितियों का वर्णन मिलता

7 गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, राजस्थान का इतिहास भाग 1 खण्ड 1 जयपुर, मंगल प्रकाशन 1963 पृ. 12

है जो वास्तविक रूप में राजस्थान की धरती पर सदियों पुराने समाज एवं संस्कृति की निरन्तरता में चरितार्थ हुई है। टॉड के विवरण में घटनाएं मोटे रूप में समाज के शासक वर्ग एवं सामन्ती व्यवस्था के अन्तर्गत राज सत्ता तथा उसके प्रमुख दावेदारों में होने वाली लड़ाईयों उनके कारणों तथा परिणामों पर ही तथ्य दिये गये हैं। राजस्थान के सभी प्रमुख राजघराने मेवाड़, मारवाड़, जयपुर, बीकानेर कोटा आदि सदियों से बाहरी आक्रमणों के शिकार रहे हैं। विशेष रूप से मुगल शासकों द्वारा समय समय पर राजस्थान के राजपूत राजाओं पर न केवल आक्रमण हुए हैं बल्कि उन्हें कई षडयन्त्रों का शिकार होना पड़ा। राजपूत राजाओं के राज्यों में आन्तरिक संघर्ष जो विविध सामन्तों या राजपूत वंशों की प्रभुता को लेकर हुए उनको भी टॉड ने तथ्यपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया। सभी घटनाओं को जानने के बाद एक निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जितने भी युद्ध और लड़ाईयां हुई हैं उनके पीछे सत्ता एवं शासन की वैधता एवं औचित्य का प्रश्न रहा है। सामन्ती शासन में परम्परा तथा परिपाटियों को सत्ता-अधिकारों की वैधता का आधार माना जाता है किन्तु इस आन्तरिक एवं बाह्य दोनों स्रोतों से चुनौती मिलने पर युद्ध एवं लड़ाईयाँ हुई तथा जिन्होंने युद्ध में जीत हासिल की और अपना वैध अधिकार स्थापित किया उन्हें फिर चुनौतियाँ मिली और इस प्रकार से यह क्रम निरन्तर चलता रहा।
टॉड ने अपने उपसंहार में अंग्रेजों की विशिष्ठ भूमिकाओं का जिक्र किया। अंग्रेज कम्पनी सरकार अधिकतर रूप से विविध प्रकार के संघर्षों का निपटारा में अपनी प्रभावी भूमिका कमजोर पक्ष का अथवा समर्थन देकर उसे जीताकर निभाती रही है। जहाँ जहाँ कम्पनी सरकार अपना सीधा शासन सम्भाल हुए थी वहाँ वहाँ की कानूनी व्यवस्था भारतीय जनता के हितों की रक्षा सही मायने में नहीं कर रही थी। यह तथ्य केवल टॉड ने तब उजागर किया जब वे अपनी नौकरी से इस्तीफा देकर स्वदेश लौट रहे थे और जिसे उनकी पुस्तक पश्चिमी भारत की यात्रा में उनकी मृत्यु के बाद लाया गया। उनके शब्दों में—

ब्रिटेन के संरक्षण में जो विभिन्न जातियाँ आ गई उनको सजा देते समय दया का व्यवहार बहुत कम किया जाता है न्याय का डंडा किसी न किसी को अवश्य मार गिराता है जिससे हमारा शासन तलवार का शासन कहा जाता है। हमारी सरकार द्वारा राजस्व तथा अन्य सम्बन्धी जो कानून बनाये जाते हैं वे प्रजाजनों की दशा सुधारने के दृष्टिकोण से नहीं वरन् हमारे (कम्पनी सरकार) लाभ को भरने के लिये बनाये जाते हैं।

भारतीय प्रजाजनों की गाढ़ी कमाई में लाखों स्वर्ण मुद्राएं प्राप्त करके उनका कौनसा भाग उनकी भलाई के लिये खर्च किया जाता है ।

इन उक्त लिखित परिस्थितियों से टाड का विश्वास था कि राजस्थान के राजपूतों को एक दिन अपना खोया हुआ गौरव पुनः प्राप्त होगा । ऐतिहासिक घटनाओं का ऐसा सजीव वर्णन जिसमें स्थान-स्थान पर अपने सद्धांतिक निष्कर्ष राजस्थान के शासक वर्ग और उससे जुड़े समाज के बारे में कहीं और उपलब्ध नहीं है ।

राजस्थान के विविध राज्यों का ऐतिहासिक लेखा-जोखा प्रस्तुत करने में टाड ने जो विद्वता दिखाई है वह सराहनीय है । किस प्रकार से किसी राज्य में-चाहे वह जयपुर हो या मेवाड़ अथवा बूंदी-राजा की मृत्यु के बाद उसके उत्तराधिकारी के रूप में नाबालिग या गोद लिये पुत्र को सत्ता बाद में किस प्रकार प्राप्त होती है तथा बलात्कार शासन एवं विद्रोही सामंतों में किस प्रकार संघर्ष होता है इसका सही-सही विवरण टाड ने प्रस्तुत किया है । राजपूतों के आंतरिक कलह को भी घटनावार प्रस्तुत किया है[8] । मेवाड़ में शक्तावतों एवं चूंडावतों के बीच अपने-अपने अधिकारों को लेकर तनाव एवं संघर्ष चलता रहा ।

संपूर्ण सामंतशाही व्यवस्था की कमियों पर भी टाड ने प्रकाश डाला है । यह भी उनकी सद्धांतिक दृष्टि ही थी । टाड के अनुसार मुख्य कमियां सामंतशाही की निम्न लिखित थी —

(i) एक व्यक्ति — शासन या प्रमुख सामंत (सामंतों का मुखिया)— की स्वेच्छाचारिता एवं उसमें शक्ति एवं प्राधिकार के केन्द्रीकरण से संपूर्ण समाज प्रभावित, शक्ति का दुरुपयोग अधिक होने की संभावना तथा समाज के सभी लोगों को उसके परिणामों को भुगतना होता है ।

(ii) सामंतों में परस्पर होड़ एवं शक्ति प्रदर्शन में प्रमुख शासन की केन्द्रीय शक्ति कमजोर होती है तथा शासन प्रणाली द्वारा नियंत्रण-कानून एवं व्यवस्था बनाये रखने — में कमजोरी आती है । अपराध एवं अस्थिरता बढ़ती है ।

---

8 पश्चिमी भारत की यात्रा पृ 64-67

जागीरदारों या सामंतों की आंतरिक संगठनात्मक व्यवस्था में भी अलग-अलग निजी स्वार्थों से गुटबन्दी विकसित होती रही। कभी कोई विजय वश या शौर्य के सामंत ने अपना एक अलग गुट बना कर उसी की सारी शक्ति जुटाई तथा उस गुट को स्वतः विरोध दूसरे समूहों से हुआ और इस प्रकार राजपूतों की गुट-समूहों ने सम्पूर्ण रियासत या राज्य की अन्दर इतना कमजोर बनाया कि किसी बाहरी आक्रमण की दशा में वह सर्गठित होकर युद्ध करने की स्थिति में न रहा। फलतः युद्ध में पराजय मिली। कभी जीत तो कभी पराजय जहां के आंतरिक गुट समूह अधिक बल एक साथ और अन्य साधन अधिक रहे तो वह रियासत उस अवस्था में जीत जाती।

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही राजस्थान की रियासतों पर अंग्रेजों की जोरदार नजर थी। 1806 में कम्पनी सरकार का दूत मेवाड़ भेजा गया था तथा महाराणा द्वारा मेवाड़ की मुख-पाल के प्रति सहानुभूति दर्शाई गई। सन 1817 में अंग्रेजों एवं मेवाड़ के बीच संधि हुई। इसी प्रकार से जयपुर राजा तथा अंग्रेजों की कम्पनी सरकार के बीच संधि 1803 में हुई थी। फिर 1818 में दुबारा संधि हुई। 1817 में मारवाड़ एवं ईस्ट इण्डिया कम्पनी के बीच संधि हुई। 1818 में राजस्थान प्रायः राज्यों के साथ भी कम्पनी सरकार की संधि तय हुई थी। सभी संधियों में अंग्रेज कम्पनी सरकार की बिना इजाजत के कोई रियासत किसी भी अन्य राज-शक्ति के साथ युद्ध की घोषणा नहीं कर सकती था। एक निर्धारित रकम ईस्ट इण्डिया कम्पनी को देना तय हुआ था। राजनैतिक एजेन्ट की निगरानी में नेकर रियासत के प्रमुख महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होने लगे। इस प्रकार से राजस्थान में जागीरदारी एवं सामन्तशाही शक्ति में कमजोरी बढ़ी।

टॉड ने हिन्दुओं एवं मुसलमानों के दोनों समुदायों की अलग-अलग सामाजिक वास्तविकता बताते हुए एक शक्तिशाली मुगल शासन व्यवस्था के द्वारा राजपूतों के अलग-अलग राज्यों एवं सामंतों को युद्ध या समर में हरा कर उनसे संधि करके तथा उनमें एक तरफा वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करके (जिसमें राजपूत कन्याओं से मुगल सम्राटों ने विवाह किये मुस्लिम कन्याओं से राजपूत राजाओं ने विवाह नहीं किये) उन्हें अपने अधीन किया। उनको समय-समय अन्य शक्ति का संचालक भी बनाया। राजपूतों को आपस में युद्ध करने के लिए प्रेरित किया। इस सम्पूर्ण वर्णन से हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष था में नये सिरे से मुखरित हुई। अंग्रेजों ने इस नीति को आगे चल कर और भी लाभ उठाया तथा हिन्दुओं और मुसलमानों को आपसी परिवेश में बहुसंख्यक एवं अल्पसंख्यक की श्रेणियों में विभाजित किया तथा अपने अपने

अधिकारों के प्रति दृढ़ संकल्प किया। कई मुगल शासकों को टॉड ने पक्षपातकारी चालाक एवं वचन को नहीं रखने वाला कहा है। दूसरी ओर कई राजपूत राजाओं को वीर, निडर एवं कुशल शासक बताया है।

विवाह संस्था के बारे में टॉड ने कई रुचिकर तथ्य प्रस्तुत किये हैं। कुछ तथ्य उनके अनेक ग्रंथ में दिये गये हैं जिनमें राजपूत कन्याओं का विवाह मुसलमान शासकों के साथ सम्पन्न हुआ है। विवाह का प्रकार बहुपत्नी भी रहा है विशेष रूप से उन लोगों में जो सामन्ती वर्ग के थे। बहिर्विवाह के नियमों का पालन विशेष रूप से किया जाता रहे जिसमें कई राजपूत घराने अपनी कन्याओं का गोत्र या वंश के बाहर ही विवाह कराते हैं। किन्तु एक सामन्त के एक से अधिक पत्नियाँ रखने की प्रथा विद्यमान थी तथा उनमें से सामन्त की इच्छानुसार किसी पत्नी को महारानी या पटरानी बना देता था। इसके साथ ही अवैध यौन सम्बन्धों को सामाजिक मान्यता प्रदान करने के लिये राजपूतों में रखैल रखने की प्रथा भी विद्यमान बनाई गई है। रखैल वह स्त्री कहलाती है जिसे विधिवत विवाह करके नहीं लाया जाता है किन्तु जो सामन्त या राजा के साथ यौन सम्बन्धों को बनाये रखती है।

प्राचीन राजपूत वंशों में अन्तःबहिर्विवाह पर बहुत अधिक प्रतिबन्ध नहीं बताया गया है। ऐसा विवरण टॉड ने अपनी पश्चिमी भारत की यात्रा पुस्तक में दिया है। फिर भी टॉड यह स्वीकार करते हैं कि वर्तमान में राजपूतों में अपने ही कुल या गोत्र तथा वंश में विवाह करना पूर्णतः वर्जित है।[9] विवाह सम्पन्न कराते समय यह अवश्य देखा जाता है कि दोनों परिवार उच्च कुलीन वंश के हैं। किन्तु विवाह के समय कन्या पक्ष को भार में अधिक दहेज देना पड़ता था। सामन्त या राजा की हैसियत से अधिक दहेज के कारण कई घटनाएँ कन्या वध की सामने आई हैं। सामन्त के घर लड़की का जन्म होना एक अभिशाप बन गया था। इस एक अपराध की सजा भी टॉड ने दी गया लिखा है कि वह जंग या वैर का कारण तो लड़की का विवाह बना है। युद्ध समाप्ति की एक शर्त यह भी होती थी कि जीतने वाला राजा या सामन्त को हारने वाले की कन्या का विवाह अल्पायु अवस्था में भी कराना होता था। विवाह के उपलक्ष पर धन का अपव्यय होता था।

---

9 पश्चिमी भारत की यात्रा पृ 469

टॉड द्वारा लिखित पश्चिमी भारत की यात्रा म उन्होंने स्वीकार किया कि जनजातिया विशेष रूप से भीलो के साथ सामन्तो के सम्बन्ध गहरे थे । भीलों को सैनिक शक्ति के रूप में सामन्तो में अपने साथ जोड़ा था ।। –

तीसरे अध्याय म भीलो के कई संस्कारो विश्वासो धार्मिक क्रियाए आदि का वर्णन भीलो की सभ्यता के पथ पर एक कदम आगे बनाया है । अन्य पिछड़ी हुई है । आदिम जनजातिया तथा कई पुरापाषाण आदिवासी लोगों में भील श्रेष्ठ थे ।[10] टाड ने आगे लिखा है कि– भारत की पिछड़ी जातियों भील कोली गोंड मीणा और मेर आदि के विषय म गहरी छानबीन करने से मानव के भौतिक इतिहास की बहुत सी महत्वपूर्ण कड़िया मिल जाती है परिगणित जातियो म भी चेहरे मोहरे और अनुकरण तथा स्थान भेद के कारण उत्पन्न हुए स्वभाव विश्वास एवं रीति रिवाजो की कभी कभी भिन्नताए देखने म आती है जाड़े अथवा जाड़ वाले तातारी मुखाकृति युक्त एस्कीमो तथा प्राचीन एवं महान मरुस्थल म और मेवाड़ के भाल तथा गिरजूर के घाटी म कोई बड़ा अन्तर नहीं है और अरबसागरीय समुद्र के किनारे रहने वाले लोगो तथा मथुरा की घुमक्कड़ जातियो में उतनी ही भिन्नता है जितनी कि हमारे वनो के आदिवासियों और पूर घुमक्कड़ राजपूतो म[11]।

राजस्थान की प्राचीन नगरीय संस्कृति एवं धार्मिक रीति रिवाजो की स्पष्ट व्याख्या टाड ने अपनी यात्रा पुस्तक म की है । यद्यपि इन तथ्यों से टाड ने स्वयं कोई सैद्धान्तिक निष्कर्ष नहीं प्रस्तुत किया बल्कि विविध स्थानो पर जो मन्दिर एवं अन्य दर्शनीय स्थान टाड ने देखे उनका ऐतिहासिक आधार खोजने का प्रयास किया है । जो समाजशास्त्री राजस्थान की नगरीय संस्कृति या पश्चिमी भारत की धार्मिक एवं सामाजिक व्यवस्था को ऐतिहासिक गहराई म देखना चाहे उनके लिये विस्तृत तथ्य उपलब्ध हैं । अनहिलवाड़ा और सोमनाथ का इतना अधिक विस्तार म वर्णन टाड ने प्रस्तुत किया है कि किसी भी समाजशास्त्री के लिये यह उपयोगी सिद्ध हो सकता है यदि वह समाज की व्याख्या ऐतिहासिक तथ्यो की गहराई के साथ करना चाहता है ।

---

10 पश्चिमी भारत की यात्रा 36

11 वही पृ 38

उपसंहार एवं सैद्धांतिक निष्कर्ष

टाड ने जो कुछ भी तथ्य प्रस्तुत किये वे सभी एक विदेशी विद्वान की हैसियत से संग्रहित किये गये थे। उनमें कई कमियां आ जाना स्वाभाविक था। उनको जो भी प्रामाणिक रूप में जानने के इच्छुक हैं वे जान सकते हैं तथा जिन बातों की प्रामाणिकता संदेहास्पद है उनको अस्वीकार किया जा सकता है। किन्तु यह स्वीकारना पड़ेगा कि टॉड ने अधिकांश ज्ञान पूर्ण प्रामाणिक एवं सत्यापित किये जा चुके हैं। उन्नीसवीं सदी के प्रथम चरण तक राजस्थान एवं इसके आस-पड़ौस के क्षेत्रों में राजनैतिक उथल पुथल तथा उसके सामाजिक परिणामों का विस्तृत विवरण कर टॉड ने समाज वैज्ञानिकों के समक्ष ऐसे मूल तथ्य प्रस्तुत किये हैं जो न केवल दुर्लभ थे बल्कि उनके बिना सामाजिक राजनैतिक परिवर्तनों की दिशा एवं प्रक्रिया के बारे में सिद्धांत निर्णय करना सम्भव नहीं था। टाड की पुस्तकों से न केवल राजस्थान के इतिहासकारों को नई प्रेरणा मिली बल्कि भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने वाले कई बुद्धिजीवियों को महाराणा प्रताप तथा अन्य राजपूत वीरों की स्वतन्त्रता की रक्षा की लड़ाईयों के वर्णन में मार्ग दर्शन एवं प्रेरणा प्राप्त हुए।[12]

अभिजन वर्ग तथा उनमें होने वाले परिवर्तनों के विषय पर कई समाजशास्त्रियों के सैद्धांतिक निरूपण उपलब्ध हैं जिनमें विलफ्रेडो परेटो का अभिजन चक्र का सिद्धांत[13] अधिक मान्य है। टाड के राजस्थान के इतिहास में जितने भी ऐतिहासिक तथ्य प्रस्तुत हैं उनमें इस सिद्धान्त की पुष्टि करने की पूरी क्षमता है। परेटो का यह कथन कि इतिहास कुलीनतन्त्रों का कब्रिस्तान है टाड की रचनाओं में पूरा तरह सत्य साबित होता है। सामन्ती शासन व्यवस्था में राजस्थान की राजनैतिक – सामाजिक संरचना किस प्रकार विभिन्न राजाओं एवं सामन्तों की निजी तथा सार्वजनिक नीतियों से प्रभावित हुई तथा किन किन परिस्थितियों में शासकों का उत्थान अथवा पतन हुआ इनका विस्तृत एवं तथ्यपूर्ण विवेचन से परेटो के अभिजन चक्र के सिद्धान्त की पुष्टि होती है तथा यह साबित होता है कि सतत रूप से चले आ रहे इस समाज की व्यवस्था में युद्धों के द्वारा जातियों एवं

12 राजस्थान के इतिहासकार पृ 60 61 प्रताप शोध प्रतिष्ठान

13 विलियम विल्फ्रेडो परेटो ट्रिटाइज ऑन जनरल सोशियोलॉजी अंग्रेजी अनुवाद डोवर प्रकाशन 1963

आदर्शों में सम्पन्न हुए हैं। यहां तक कि सत्ता की बागडोर भी विदेशी शक्ति के हाथ में चली गई। पहले यह विदेशी शक्ति मुगलों की थी और बाद में अंग्रेजों की। समय-समय राजस्थान के राजाओं ने राजनैतिक शक्ति को पुनः प्राप्त करने के असफल या सफल प्रयास भी किये किन्तु फिर यह शक्ति उनके प्रभाव से निकलती हुई दसी गई। टाड का विश्लेषण आज में लगभग दो शताब्दी पूर्व की सामाजिक राजस्थान व्यवस्था के बारे में है किन्तु उसकी सार्थकता किसी भी प्रकार से कम नहीं हुई है क्योंकि हर समाज में सनातनता एवं परिवर्तन के दोनों पक्ष विद्यमान हैं। कतिपय सामाजिक मूल्य व्यवस्था तथा जाति एवं धर्म व्यवस्था के केन्द्रीय आधार नहीं बदलते हैं। उनकी निरन्तरता से प्राचीनता के गौरव का सन्दर्भ सार्थक एवं प्रामाणिक हो जाता है। शायद टाड ने तो यह कल्पना भी अपने जीवन में नहीं की होगी कि उन्नीसवीं सदी के प्रथम चरण का ईस्ट इण्डिया कम्पनी सरकार का उपनिवेशक भारत अठारसौ सत्तावन की क्रांति के बाद पूर्ण रूप से अंग्रेज सरकार के अधीन हो जायेगा और फिर करीब एक शताब्दी की लम्बी आजादी की लड़ाई के बाद 1947 में पुनः आजादी की सांस लेगा। किन्तु उन्होंने राजस्थान के राजपूतों के खोये हुए स्वाभिमान को लौटाने और उनको स्वतन्त्र अपनी सत्ता चलाने की संभावना अवश्य व्यक्त की थी।

आजादी के बाद भी चार दशकों में भारतीय सामाजिक राजनैतिक व्यवस्था के अन्तर्गत परिवर्तन आये हैं। किसी एक व्यक्ति या परिवार का सामन्ती शासन की तरह अधिकार नहीं मिले क्योंकि यह व्यवस्था जनतांत्रिक प्रणाली पर आधारित है। राजस्थान के वर्तमान राजनैतिक क्षितिज पर भूतपूर्व जमींदारों, जागीरदारों एवं राजा-महाराजाओं का राजनीति में पुनः सक्रिय होना उसी अभिजन चक्र के सिद्धांत की पुष्टि करता है जिसे टाड के द्वारा प्रस्तुत तथ्यों से समर्थन मिल चुका है।

—

टॉड के इतिहास लेखन मे सास्कृतिक आकलन

—डॉ विक्रमसिंह राठौड़

राजस्थान के इतिहास लेखन की परम्परा पर दृष्टिपात करें तो यह बात स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि यहां के इतिहासकारों की रुचि सामाजिक और सास्कृतिक अध्ययन के प्रति इतनी अधिक नहीं रही जितनी राजनतिक अध्ययन के प्रति। राजनतिक क्रियाकलापो तक सीमित रहने वाला विवरण इतिहास का एकागी पक्ष ही कहलायेगा। इतिहास के समग्र स्वरूप को समझने के लिए जन समाज मे प्रचलित आचार विचार, मान्यताओ, रीति रिवाजों रहन-सहन खानपान, आमोद प्रमोद उद्योग, व्यापार आदि का वर्णन भी आवश्यक है जिससे किसी समाज की सामाजिक सांस्कृतिक और आर्थिक स्थिति का पता चलता है। आज इतिहास के इन अछूते या अल्पज्ञात पक्षो पर अधिक बल दिया जा रहा है तथा सामाजिक आर्थिक एव सास्कृतिक इतिहास लिखने की दिशा मे अपेक्षित सुधार हुआ है।

इतिहास लेखन मे सास्कृतिक आकलन के आधार पर देखा जाय तो राजनतिक घटनाक्रम को लिपिबद्ध करने की रूढ़ परिधि को लाघकर सपूर्ण समाज की झाकी प्रस्तुत करने का प्रारम्भिक प्रयास टाड के इतिहास लेखन मे मिलता है। टॉड ने अलग से राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास नहीं लिखा। यहा के राजनतिक इतिहास के साथ-साथ यहा की धार्मिक प्रथाओ धार्मिक एव सामाजिक उत्सव राजपूत चारण भाट आदि विभिन्न जातियो के रीति रिवाजो, राजपूत समाज में नारी की स्थिति वीरागनाओं के अद्भुत त्याग के प्रसग आदि के माध्यम से यहां की सांस्कृतिक विशेषताओ को उद्घाटित करने का प्रयास किया। यही टाड के इतिहास लेखन की सबसे प्रमुख विशेषता है। इतिहासवेत्ताओ और इतिहास के जिज्ञासु पाठको को मने प्राय यह कहते सुना है कि टॉड ने यहा के इतिहास को रोचक ढग से लिखा

है । टाड के इतिहास लेखन म इस रोचक तत्व का प्रादुर्भाव वास्तव म यहा की सास्कृतिक विशेषताओ को उद्घाटित करने से ही हुआ ।

टाड के इतिहास म पूव के एतिहासिक त्तिवर्तो से हम प्राय किसी प्रदेश जाति या समाज की बाह्यवस्था का पता चलता था भीतरी अवस्था की जानकारी नही के बराबर होती थी । टाड ने राजनतिक घटनाक्रम व राजनतिक क्रियाकलापो के अतिरिक्त यहा की समाजगत आतरिक अवस्थाओं को उद्घाटित करन म रुचि ली और यहा की सास्कृतिक विशेषताओ को अपने इतिहास लेखन म स्थान दिया । इस प्रकार राजस्थान के इतिहास लेखन म यहा के सास्कृतिक तत्वो को समाविष्ट करने का भी श्रेय किया ।

टाड का यह मानना था कि – सामाजिक आचार व्यवहार ही किसी जाति के इतिवृत्त का अधिक प्रयोजनीय अश है । उसकी इस मान्यता न ही उस यहा क सास्कृतिक तत्वो को अपने इतिहास लेखन में समाविष्ट करन हेतु किचित् रूप से प्रेरित किया होगा । इसके साथ ही यहा के सास्कृतिक तत्वो की अनुपमता और विशिष्टता के कारण टाड का उनकी और बरबस आकृष्ट होना भी स्वाभाविक लगता है । कारण कुछ भी रहा हो टाड ने सप्रयास या सहजरूप स ही सास्कृतिक तत्वो को लिपिबद्ध कर दिया तब हम भी उसकी गरिमा व महत्ता को भलीभाति जान सके ।

टाड क इतिहास लेखन म सास्कृतिक आकलन को जानने की यदि कोशिश की जाय तो यह बात स्वत ही स्पष्ट हो जायगी कि उसने यहा के सास्कृतिक पक्ष को भी सहज किन्तु रोचक व प्रभावी ढग से प्रस्तुत किया है । प्रत्येक रियासत के इतिहास म सास्कृतिक विवरणो का समावेश कर टाड ने अपने इतिहास लेखन म जहा तक सभव हो सका उसे स्थान दिया । जो प्रसग उसे प्रिय तथ अप्रतिम लगे उनका उसने विस्तार से वणन किया है । इन सास्कृतिक पक्षो एव तथ्यो के चयन म उसका निजी दृष्टिकोण ही प्रमुख रहा है अत जसा उसने देखा व सुना वसा ही उल्लेख किया ।

युगीन परिस्थितियों क अतगत टाड जसा एक विदेशी अग्रज इतिहासकार ही वस्तुस्थिति तथा यथाथ विवरण को लिपिबद्ध कर सकता था क्योकि वह निष्पक्ष भाव स इन तत्वो क प्रति अपनी राय दे सकता था ।

उस पर किसी प्रकार का दबाव या अंकुश नहीं था । यही कारण है कि उसके विवरण में जहां यहां की सांस्कृतिक विशेषताओं की सराहना मिलती है वहीं कुछ ऐसे पारम्परिक रूढ़ीगत रीतियों व विचारों की भर्त्सना भी । टाड के इतिहास लेखन में सांस्कृतिक पक्षों के विवेचन में जो निष्पक्षता व तटस्थता देखने को मिलती ही है राजनीतिक घटनाक्रमों में मिले या न मिले यह दूसरी बात है । यहां एक बात यह भी द्रष्टव्य है कि सांस्कृतिक पक्ष की परम्पराओं के वृत्तान्त में अपने व अन्य दूसरे देशों की ऐसी ही मिलती जुलती परम्पराओं या मिलते जुलते घटना प्रसंगों का तुलनात्मक उल्लेख भी मिलता है ।

राजपूतों के नारी विषयक शिष्टाचार का उल्लेख करते हुए टाड ने लिखा है कि – आजकल बहुत से लोग यह कहते हैं कि जो लोग स्त्री जाति के विशेष अनुरागी हैं वह सबसे अधिक सभ्य हैं । यदि इस सिद्धान्त का अनुमोदन किया जाय यदि स्त्री जाति के अनुराग और शिष्ट परिणाम के अनुसार जातीय सभ्यता की बराबरी की तुलना करनी हो तो अवश्य ही राजपूत लोगों की सभ्यता का अग्रनायक स्वीकार करना चाहिए । राजपूत लोग अपने हृदय से आराध्य देवता की भांति स्त्री की पूजा किया करते हैं यदि इस देवता का किंचित् भी अपमान हो जाय यदि उसके सम्मान या शिष्टाचार में जरा भी अंतर पड़ जाय तो तजस्वी राजपूतों के हृदय में आग सी जल उठती है और जब तक अपमानकारी के हृदय के रुधिर से अपनी आग नहीं बुझा लेते तब तक किसी प्रकार से उनकी शांति नहीं होती ।[1]

इसके अतिरिक्त बारह वर्ष की कन्या का पचास वर्ष के महाराणा लाखा [illegible] अनमेल विवाह करने के समय मेवाड़ में बड़े पुत्र के उत्तराधिकार की परम्परागत रीति में परिवर्तन आदि ऐसी सामाजिक गतिविधियों का उल्लेख भी टाड ने किया है जिससे मेवाड़ की सामाजिक व्यवस्था में ही व्यवधान नहीं हुआ बल्कि इसके राजनीतिक दुष्परिणाम का फल भी मेवाड़ को भविष्य में भोगना पड़ा । इन दो घटनाओं ने मेवाड़ और मारवाड़ के सीसोदियों और राठौड़ों के बीच वैमनस्य का जन्म दिया जिसमें दोनों ही

---

1 कर्नल जेम्स टॉड कृत राजस्थान का इतिहास (अनुवादक एवं सम्पादक बलदेवप्रसाद मिश्र एवं ज्वालाप्रसाद मिश्र) भाग 1 पृ 190 (प्रकाशक यूनिक ट्रेडर्स चौड़ा रास्ता जयपुर प्रकाशन वर्ष-1987)

रियासतो को आपसी संघर्ष में भारी मात्रा म धन और जन हानि सहनी पडी ।

महाराणा भीमसिंह की पुत्री कृष्णाकुमारी के आत्मबलिदान की मार्मिक गाथा का वर्णन करना भी कर्नल टाड नहीं भूला जिसकी व्याख्या का स्मरण कर आज भी पाठकों का हृदय द्रवीभूत हो उठता है। कृष्णाकुमारी की कथा के मध्य सती रोम की अभागिनी वर्जिनिया तथा ग्रीस की सुन्दरी इफीजिनिया के प्राण न्यौछावर करने की समानधर्मी घटनाओं का उल्लेख भी टाड ने किया है-[2]

श्रीमती वर्जिनिया रोम के महारथी विर्जीनियस वर्जिनियस की बेटी थी। कहते हैं कि एपियस क्लौडियस नामक एक दुष्ट ने वर्जिनिया को माता पिता के निकट से बलपूर्वक हरण करने की चेष्टा की थी। अपनी प्यारी बेटी के सतीत्व और उसके सम्मान के बचने का कोई उपाय न देख कर विर्जीनियस ने सबके सामने फोरम क्षेत्र म उसको अपने हाथ से मार डाला।

इफीजिनिया ग्रीस के महावीर एगमेमन की बेटी थी। जब अलिस नामक द्वीप म ग्रीसवालो का जंगी जहाज रुक गया तब डियाना देवी की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए एगमेमन ने अपनी बेटी के सामने बलि दिया था।

महाराणा राजसिंह की अन्य चारित्रिक विशेषताओं के अतिरिक्त उनकी शिल्पप्रियता का उल्लेख करते हुए कर्नल जेम्स टॉड ने राजसमद सरोवर का विस्तार से वर्णन किया है। राजसमद का यह विवरण राजस्थान की स्थापत्यकला का उदाहरण प्रस्तुत करता है जो इस प्रकार है—

राजसमद सरोवर - जातीय महत्ती प्रतिष्ठा और राजपूतो की कीर्ति का विशाल प्रमाण क्षेत्र यह राजसमद सरोवर राजधानी से साढे बारह कोस उत्तर और अरावली की तलटी से एक कोस पर स्थित है। गोमती नाम की टेढी चलने वाली पहाडी नदी की धार को एक बड भारी बध स बाधकर इस सरोवर को बनाया गया था। महाराणा ने अपने

---

2 कर्नल जेम्स टाड कृत राजस्थान का इतिहास भाग 1 पृ 618

नाम के अनुसार ही उसका नाम राजसमंद रक्खा था । ईशान और वायु कोण के अतिरिक्त और सभी ओर बंधा बना हुआ है । यह सरोवर[1] बड़ा गहरा है इसका घेरा प्रायः छः कोस 12 मील तक होगा । यह संगमरमर का बना हुआ है इसके किनारे से नीचे तक संगमरमर की रमणीय सीढ़ियां बनी हुई हैं जिन्होंने चारों ओर से इस सरोवर को घेरे रक्खा है । इस सरोवर के किनारे भी इसी पत्थर के हैं इसका बचा मिट्टी के परकोटे से घिरा हुआ । यदि राजसिंह और कुछ दिन जीते तो चारों ओर सुन्दर सुन्दर वृक्षों को लगाकर इसकी शोभा बढ़ाई जाती । सरोवर के दक्षिण ओर राणा ने एक नगरी और किला बनवाया था उस नगर को अपने नाम के अनुसार ही राजनगर नाम से विख्यात किया । पूर्वोक्त बंध के ऊपरी भाग में श्री कृष्णजी का एक अत्यन्त शोभायमान मन्दिर बनवाया था जिसमें समस्त कार्य संगमरमर से हुआ । इस मन्दिर के भीतर नाना प्रकार के मनोहर चित्र लगे हुए हैं, बीच में एक स्थान पर बड़े मोटे और साफ अक्षरों में लिखा हुआ उसकी प्रतिष्ठा कराने वालों का वृत्तान्त पाया जाता है । इसके बनवाने में और इसकी प्रतिष्ठा करने में महाराणा ने 98 लाख रुपये खर्च किये थे ।'[3]

कर्नल जेम्स टाड ने पौराणिक इतिहास की उपयोगिता के सम्बन्ध में लिखा है- धनुर्वेद आयुर्वेद स्मृतिशास्त्र राजनीति या विज्ञान चाहे जो कोई शास्त्र हो जिसके मूल में पौराणिक इतिहास नहीं है वह निश्चय ही अपूर्ण है । पौराणिक कथामाला के भीतर जो लोग केवल तेजस्विनी कल्पना की अधिकाई देख पाते हैं उन्होंने विज्ञान मूल सूत्रों को थोड़ा ही पढ़ा है । पुराण ही जाति की पहली अवस्था के विषय में साक्षी देते हैं और सब देशों के इतिहास की जड़ केवल पुराणों पर ही जमी हुई है । संसार के और दूसरे देशों को पौराणिक इतिहास का फल चाहे जैसा मिलता हो परन्तु सभ्यता के आदि स्थान इस भारतवर्ष के लिए वह अत्यन्त उपकारी है । सनातन हिन्दूधर्म विज्ञान मूलक है विज्ञान स्वभाव से ही नीरस और कठोर होता है परन्तु पुराणों में इस रसहीन और कठोरशास्त्र को ऐसे सुन्दर ढंग से ढक रक्खा है कि करोड़ों वर्षों के हेरफेर से भी वह पर्दा दूर नहीं हुआ । हिन्दूलोग इन पुराणों को वेद के समान पवित्र माना करते हैं । इन पुराणों में जिन महापुरुषों को देवभाव से पूजा गया है वह लोग

---

3 जेम्स टॉड कृत राजस्थान का इतिहास भाग 1, पृ 467

भाज तक भी देवभाव से पूजित हुआ करते हैं । भगवान शिव और विष्णु भाज तक भी इस विशाल भारत भूमि के करोड़ों मनुष्यों से पूजे जाते हैं ।[4]

मेवाड की धार्मिक स्थिति का वर्णन करते हुए कर्नल टाड ने मेवाड की शिवपूजा भगवान एकलिंगजी का मन्दिर शैव गोस्वामी जैन नाथद्वारे मे श्री कृष्णजी का मन्दिर और पूजा की रीति का उल्लेख करते हुए अन्त मे राजपूतो मे वैष्णव धर्म से उपकार की संभावना व्यक्त की है— राजपूत लोग यदि महादेवजी के निकट धर्म को छोड़ कर केवल शांति मे वैष्णव धर्म का आचरण करें तो राजपूत जाति का विशेष उपकार हो सकता है ।[5]

कर्नल टाड ने मेवाड प्रदेश के धार्मिक जीवन का वृत्तान्त लिखते समय जहा एक ओर मेवाड के राजवंश के प्रधान उपास्य देव एक लिंगजी का उल्लेख किया है वही मेवाड मे प्रचलित शिवपूजा जैन धर्मावलम्बी नाथद्वारे के श्री कृष्ण एवं वैष्णवधर्म का भी विवरण दिया है । इस प्रकार मेवाड मे हम हिन्दू धर्म का एक आदर्श स्वरूप देखने को मिलता है जो यहा की संस्कृति की एक सनातन विशेषता है । समय समय पर मेवाड मे विभिन्न धर्मों का उत्कर्ष हुआ । यह उस प्रदेश की धर्मपरायणता की विशेषता ही थी कि जब ब्रजधाम से वैष्णव लोग श्री कृष्ण की मूर्ति लेकर औरंगजेब के भय से इधर उधर भागते फिर रहे थे उस समय मेवाड ने श्री कृष्ण जी की पवित्र मूर्ति को अपने राज्य मे आश्रय दिया । एकलिंगजी तो उनके उपास्य देव थे उनके साथ ही श्री कृष्ण की देवमूर्ति की विधर्मियो से रक्षा करना भी उनकी धर्मपरायणता का एक आवश्यक अंग था। धार्मिक उदारता एवं धार्मिक सहिष्णुता दोनो ही विशेषताओ से युक्त इस प्रदेश का धार्मिक जीवन गौरवशाली था।

धार्मिक जीवन के साथ साथ कर्नल टाड ने मेवाड के विभिन्न पर्वोत्सवो का उल्लेख किया है जिनमे—वसन्त पचमी भानुसप्तमी शिवरात्री अहेरिया फागोत्सव, शीतलाषष्ठी राणा का जन्म दिन फूलडोर अन्नपूर्णा अशोकाष्टमी रामनवमी मदनत्रयोदशी नवगोरी पूजा सावित्री व्रत रम्भातीज

---

4 जेम्स टॉड कृत राजस्थान का इतिहास द्वितीय खड पृ 711
5 वही पृ 719

अरण्य षष्ठी रथयात्रा, पार्वती तीज नाग पचमी राखी पूर्णिमा जन्माष्टमी खड्गपूजा लक्ष्मीपूजा दीवाली अन्नकूट झूलनयात्रा मकर सक्रांति मित्रसप्तमी आदि प्रमुख है। इन सब पर्वोत्सव को मनाने की तिथि व विधि का पूरा वर्णन टाड ने किया है। इन पर्वों एवं उत्सवों के माध्यम से मेवाड़ की सस्कृति का स्वरूप मुखरित होता है जो राजस्थान की सस्कृति का ही एक अग है। राजस्थान की लोक सस्कृति को ये पर्व एव उत्सव सशक्त ढग से अभिव्यक्त करते हैं तथा यहा की सस्कृति के सवाहक व जीवन्त माध्यम है।

टॉड को राजस्थान की जाति व्यवस्था ने भी आकृष्ट किया इस-लिए उन्होंने यहा की अनेक जातियों में आचार विचार की जो भिन्नता पायी जाती है उसे भी अपने इतिहास लेखन में समाविष्ट किया है। किसी जाति के आचार विचार से हम उसकी उन्नति का अनुमान लगा सकते हैं। विख्यात विद्वान गाेटे का कथन है कि— जो जाति शिल्प और विज्ञान की जितनी उन्नति करे उस जाति के सामाजिक आचार विचार भी उन्नति पाकर उतने ही प्रकाशमान होते है।

राजस्थान की विभिन्न जातियों के आचार विचार का वर्णन करते हुए स्त्रियों पर राजपूतों की भक्ति और सम्मान का उल्लेख करते हुए लिखा है— प्राचीन जर्मन और स्कन्दनेवियो के समान राजपूत जाति प्रत्येक कार्य में स्त्रियों के साथ परामर्श करती थीं, और स्त्रियों के आचरण के ऊपर अपने शुभारम्भ का निश्चय करती थी यह भी उनका विश्वास था और वह स्त्रियों को कितना सम्मान करते थे कि उनसे स्त्रियों को गौरव की देने वाली दवि नाम की उपाधि मिली। जो मनुष्य इस बात को नहीं जानते हैं वह हिन्दू स्त्रियों को पराधीन बताकर शोक प्रकाशकर उनके अतपुर निवास को कारागार का वास बताते हैं।[6]

इसी प्रकार रनिवास की रीति और उसकी उपयोगिता राजपूतों की राजकुमारियों के गौरव को रखना, राजपूतनियों की असीम पतिभक्ति इतिहास तथा काव्यों के लेख राजपूत स्त्रियों की उदारता साहस प्रत्युत्पन्नमतित्व के उदाहरण सतीदाह शिशु कन्या की हत्या जुहार की रीति आदि का उल्लेख किया है। राजपूत चरित्र का सक्षिप्त विवरण करते समय शिकार व्यायाम

---

6 जेम्स टॉड कृत राजस्थान का इतिहास द्वितीय खड पृ 759

क्रीड़ा युद्धशाला गाना बजाना शिक्षा घर की सजावट और वेशभूषा आदि सभी कुछ लेखन का वर्ण्य विषय बने ।

हालांकि टाड के इतिहास लेखन में राजपूत जाति के आचार विचार तथा अन्य प्रकार के विवरण प्रमुखत इस जाति से सम्बन्धित रहे हैं । फिर भी केवल राजपूत जाति के सम्बन्ध में ही उल्लेख नहीं किया अन्य जातियों के सम्बन्ध में भी जो नवीन एवं रोचक जानकारी मिली उसका वर्णन करने में भी वह नहीं चूका । आहीर जाति के आचार व्यवहार का वृत्तांत यहां द्रष्टव्य है ।

आहीर लोगों में विवाह बन्धन जैसे सहज उपायो से सम्पादित होता है वैसे ही सहज उपायो से उस बन्धन का विच्छेद भी हो जाता है । यदि स्त्री पुरुषों में परस्पर एक दूसरे का मन फट जाय अथवा और किसी विशेष कारण से परस्पर चिर विच्छेद आवश्यक हो तो स्वामी अपने दुपट्टे का कुछ हिस्सा फाड़कर स्त्री के हाथ में देकर अपनी स्त्री से सबंध छुड़ा लेगा । त्यागी हुई स्त्री वह वस्त्र का टुकड़ा हाथ में ले शिर पर जल से भरे दो कलश तलक पर रखकर जिस मार्ग में इच्छा होगी उसी से चली जायगी और जो पुरुष पहिले उस त्यागी हुई स्त्री के शिर से जल कलश उतारना स्वीकार करेगा स्त्री उसको ही अपना भावी पति समझेगी । यह स्त्री त्याग प्रथा केवल मीना लोगों में ही प्रचलित नहीं है किन्तु जाट गूजर अहीर मानी और अन्यान्य बनती जातियों में भलीभांति प्रचलित है । जेहर लया उर निकम्या । अर्थात् कलश लेकर चली जाओ यह बात आहीरवारा की पहाड़ियों में साधारण रीति से व्यवहार की जाती है ।[7]

कर्नल जेम्स टॉड ने मरुभूमि के निवासियों के वृत्तान्त के अन्तर्गत इतिहास के साथ अन्यान्य आनन्द तथ्यों की भी जानकारी दी है जैसे भिन्न नाना प्रकार अधिवासी जाट राजपूत ब्राह्मण वैश्य और दास जाति । मारवाड़ राज्य के विस्तार के साथ साथ जनसंख्या तथा यहां के शिल्पकौशल का भी उल्लेख किया है जिससे यहां के सांस्कृतिक जीवन को समझने में मदद मिलती है ।

---

7 जेम्स टाड कृत राजस्थान का इतिहास द्वितीय खंड पृ 863

बीकानेर की उत्पत्ति भटनेर की उत्पत्ति, जाट जाति का ऐतिहासिक विवरण प्राचीन नगरों की सूची जसलमेर का नामकरण, जसलमेर का भौगोलिक विवरण जसलमेर के ग्रामों नगरों की संख्या उस क्षेत्र के अधिवासी, भट्टि जाति उसकी आकृति और वेशभूषा, अफीम और ताम्रकूट से भट्टिगणों का अनुराग पल्लीवाल जाति उसका धन परिमाण आय, विचित्र पूजा पद्धति तथा पोकरणा ब्राह्मण जाति इत्यादि प्रसंगों के विवरण में यहां के सांस्कृतिक जीवन की झांकी मिलती है ।

मेवाड मारवाड, बीकानेर जसलमेर ही नहीं जयपुर, कोटा बूंदी झालरापाटण इत्यादि विभिन्न स्थानों के भ्रमण के समय प्रान्त विशेष के अधिवासियों की जीवन शैली तथा उनके सांस्कृतिक आयामों का भी प्रभावी उल्लेख टॉड ने अपने इतिहास लेखन में किया है । कोटा के नरेशों के जैन मंदिर हों चाहे पठार देश का गुरुन्द का मन्दिर भवानी मन्दिर बूंदी के राजमहल हों चाहे चम्बल का प्राकृतिक रमणीय दृश्य इन सब के विवरण सांस्कृतिक पक्ष से जुडे हैं ।

टाड जहां एक ओर मन्दिरों के स्थापत्य से बहुत अधिक प्रभावित हुए वहीं दूसरी ओर विभिन्न जातियों के आचार विचार तथा उनके पर्वों त्यौहार आदि सांस्कृतिक पक्षों का भी वर्णन करने में गहरी दिलचस्पी ली । इन सांस्कृतिक विवरणों में वर्णन टॉड ने कोई अभाव नहीं रखा चाहे वह कोटा की होली का आयोजन हो चाहे बंजारों के जातियों का विवरण जो भी उसकी जानकारी में आया वे उसे रुचिकर लगा उसका संकलन अपने इतिहास लेखन में कर यहां की सांस्कृतिक विरासत को प्रकाश में लाया । टाड का यह प्रयास स्वाभाविक व सहज था । इत्यादि ही इन सांस्कृतिक तत्वों को टॉड अपने लेखन में ला सका मुख्य उद्देश्य तो उसका यहां के रजवाडों का राजनैतिक इतिहास लिखना ही रहा ।

अतः टाड के इतिहास लेखन में सांस्कृतिक पक्ष का मूल्यांकन करते समय इस तथ्य को ध्यान में रखना आवश्यक है कि लेखन टॉड का उद्देश्य यहां का सांस्कृतिक इतिहास लिखना नहीं रहा फिर भी यहां की सांस्कृतिक रचना से प्रभावित होकर यहां के कुछ सांस्कृतिक बिन्दुओं को उसने छुआ जो एक प्रशंसनीय कार्य माना जायगा । यों टाड अपनी

पश्चिमी भारत की यात्रा म सास्कृतिक उपादानो की विस्तार स चर्चा की है परन्तु उसका मूल्याकन अलग स करन की आवश्यकता ह । यहा तो उपयुक्त विवरण क आधार पर यह कहा जा सकता है कि इस सांस्कृतिक आकलन से टॉड क इतिहास से नवीनता एव प्रमाणात्मकता का सूत्रपात हुआ । इसक साथ ही टॉड का इतिहास मात्र राजनतिक घटनाक्रम का रूखा एव नीरस लेखा जोखा न बनकर यहा के निवासियो की सास्कृतिक जीवन्तता से स्पन्दित भी हुआ ।

—

टॉड के आर्थिक आकडे
एक सांख्यकीय अध्ययन

—डॉ बी एल भादानी

जेम्स टॉड राजस्थान के इतिहासकारों के लिए एक सुपरिचित नाम है। वे ईस्ट इण्डिया के प्रतिनिधि के रूप में राजस्थान की रियासतों में आए। वे एक नितान्त ही भिन्न भौगोलिक सामाजिक एव सांस्कृतिक वातावरण से आए थे एव उन्हें यहां विपरीत भौगोलिक परिस्थितियों एव सामाजिक व्यवस्थाओं का सामना करना पड़ा। एक तरफ तो दूर तक फैली रेगिस्तान की गर्म हवाएं थी तो दूसरी तरफ दूर तक पर्वत श्रृंखलाएं जो उनका स्वागत करने को तत्पर थी। टॉड को यहां की सांस्कृतिक परम्पराओं रीति रिवाजों एव वीर गाथाओं ने गहराई से प्रभावित एव प्रेरित किया। इसके प्रतिफल के रूप में उनके द्वारा लिखित राजस्थान का इतिहास हमारे सम्मुख आया।

भारत के बारे में उनके विचार यूरोप के आम विद्वानो के विचारों से नितान्त भिन्न थे। यूरोपियन इतिहासकारों की आम धारणा थी कि भारत का अपना कोई राष्ट्रीय इतिहास नहीं है जब कि टॉड की मान्यता थी कि जिस देश के लोग सभ्य - सुसस्कृत हो जिन्होंने विज्ञानों को परिपक्वता प्रदान की हो जिन्होंने न केवल ललित कला वास्तुकला मूर्तिकला काव्य एव संगीत का सृजन किया हो बल्कि गुरु का आसन ग्रहण कर लोगों को सिखाया हो एव सुव्यवस्थित नियमों के तहत इन कलाओं को परिभाषित किया हो। उन्होंने अत्यन्त ही काव्यात्मक शैली में लिखा कि जिन्होंने हस्तिनापुर एव इन्द्रप्रस्थ ■ शहर दिल्ली एव चित्तौड़ के विजय स्तम्भ आबू एव गिरनार के पवित्र स्थान एलोरा एव अजन्ता के गुफा मन्दिरों का सृजन किया हो। क्या ऐसे लोग अपने इतिहास की घटनाओं को लिखने जैसी साधारण कला से अनभिज्ञ रह सकते है?[1] कदापि नहीं। भारतीय

1 जेम्स टॉड एनाल्स एण्ड एन्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान इन्ट्रोडक्शन (लन्दन 1960) पृष्ठ 14

इतिहास एवं संस्कृति के बारे में ये विचार ही टाड को अंग्रेज इतिहासकारों की पंक्ति से अलग स्तंभ की तरह खड़ा करते हैं। इन विचारों के पृष्ठ भाग में भारत के विशेषतः राजस्थान के प्रति उनके प्रेम भाव की झलक के दर्शन किए जा सकते हैं।

उन्नीसवीं सदी का द्वितीय दशक वह समय था जबकि अभी पूरे तौर पर राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत इतिहास लेखन की परम्परा पूर्णतः विकसित नहीं हो पाई थी। अंग्रेज इतिहासकार निरंतर प्रयास कर रहे थे कि भारतीयों का अपना कोई इतिहास नहीं रहा है। इस समय में भारतीय संस्कृति एवं इतिहास के प्रशंसक एवं अंग्रेज प्रशासक ने सम्पूर्ण राजस्थान का इतिहास लिखकर राजस्थान में इतिहास लेखन की शुरुआत की। इसके लिए राजस्थान इतिहास के शोधार्थी सदैव उनके ऋणी रहेंगे।

टाड ने अपने इतिहास लेखन के लिए तत्कालीन समय में उपलब्ध सम्पूर्ण सामग्री का भरपूर उपयोग किया। उन्होंने पारम्परिक स्रोतों के अतिरिक्त चारणी साहित्य का उपयोग किया जिसकी मार्क ब्लाक जैसे फ्रांसीसी इतिहासकारों ने अत्यन्त प्रशंसा की है। टाड का मानना है कि चारणों को मानव जाति का प्राचीनतम इतिहासकार कहा जा सकता है। वे बिना किसी भय के अपने चरित्र नायक की प्रशंसा एवं उसके अवगुणों का वर्णन करते थे। इस साहित्य के अतिरिक्त रासो साहित्य, शिलालेखों, सिक्कों, ताम्रपत्रों, ऐतिहासिक काव्यों, सरकारी दस्तावेजों एवं शासकों द्वारा लिखित संस्मरणों आदि को अपने इतिहास लेखन में उचित स्थान दिया है। स्रोतों की खोज उन्हें जैन भण्डारों एवं जैन मुनियों के दरवाजों तक ले गई। कहने का तात्पर्य यह है कि मूल सामग्री के उपयोग के प्रति टाड का दृष्टिकोण आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि का परिचायक है। उनकी दृष्टि में मौखिक साक्ष्य भी काफी महत्वपूर्ण थे। यही कारण है कि उन्होंने अपने इतिहास में स्थान स्थान पर इनका उपयोग भी किया है। यह भी कहा जा सकता है कि साक्ष्यों के प्रति उन्होंने कुछ सीमा तक आलोचनात्मक दृष्टिकोण भी अपनाया है।

वम टॉड के राजस्थान की विषय वस्तु अत्यन्त विशाल एवं विस्तृत है। उन्होंने इतिहास के लगभग हर पक्ष पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। राजस्थान की विभिन्न रियासतों के उद्भव से लेकर उन्नीसवीं सदी के प्रथम तीन दशकों तक के इतिहास को रेखांकित किया है। राजस्थान की विभिन्न सामंती संस्थाओं, सामाजिक एवं सांस्कृतिक धार्मिक मान्य

यात्रा के बारे में उनकी स्थापनाएं अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। उनकी ये मान्यताएं शोध की प्रवृत्ति का उत्थान करती हैं। राज्यों की अर्थव्यवस्था का अध्ययन टाड की शोध रुचि का केन्द्रीय विषय प्रतीत होता है। उन्होंने कृषि उत्पादन, व्यापार एवं सिंचाई के विभिन्न साधनों, जनसंख्या एवं वाणिज्य व्यापार से सम्बन्धित असंख्य आंकड़े संकलित किए हैं जो आर्थिक इतिहास की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। इन आंकड़ों की महत्ता इसलिए भी और अधिक बढ़ जाती है क्योंकि इनमें से कतिपय आंकड़े उस समय से सम्बन्धित हैं जो आमतौर पर उपलब्ध नहीं होते हैं। मैंने प्रस्तुत अध्याय में टाड के आंकड़ों का पूर्ववर्ती एवं पश्चातवर्ती आंकड़ों के साथ तुलनात्मक अध्ययन करने का एक प्रयास किया है। इसके साथ ही आंकड़ों की विश्वसनीयता परखने एवं इनको संकलित करने के पीछे टाड के ऐतिहासिक उद्देश्यों को पहिचानने का प्रयास भी किया है। अन्त में उनके आंकड़ों के परिप्रेक्ष्य में आर्थिक परिस्थितियों में आने वाले परिवर्तनों को भी रेखांकित करने का किंचित सा प्रयास किया है।

जनसंख्या का अनुमान

किसी भी क्षेत्र की आर्थिक स्थिति के अध्ययन के लिए उस क्षेत्र की जनसंख्या की जानकारी अत्यन्त आवश्यक है। टाड ने उन्नीसवीं सदी के दूसरे दशक में सम्बन्धित जनसंख्या के आंकड़े संकलित किए हैं जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। राजस्थान की प्रथम जनगणना सन् 1881 ई. में हुई थी जो कि अपूर्ण थी। दस वर्ष पश्चात 1891 ई. में हुई जनगणना काफी मात्रा तक त्रुटिरहित एवं सही थी। उनके द्वारा प्रस्तुत सांख्यिकी इस जनगणना से लगभग साठ से सत्तर वर्ष पूर्व की है। उन्होंने दो तरीके से ये आंकड़े दर्शाए हैं प्रथम पृथक पृथक राज्यों की कुल जनसंख्या के आंकड़े एवं द्वितीय, मुख्य मुख्य शहरों की अनुमानित जनसंख्या। सर्वप्रथम विभिन्न रियासतों की जनसंख्या सांख्यिकी संकलित करके निम्न सारिणी में प्रस्तुत की जा रही है —

सारिणी—1

क्रम संख्या	क्षेत्र का नाम	1820 के दशक में अनुमानित जनसंख्या	1891 ई में कुल जनसंख्या
1	मारवाड़	20,00,000	25,28,178

2	बीकानेर	5 39 250	8 32 065
3	जसलमेर	74 400	1 15 701
4	ग्राम्बर	18 47 600	28 23 966

टाड ने मारवाड की जनसख्या का ग्रनुमान लगाने म पूर्ण भूमि के उपजाऊपन के ग्राधार पर विभिन्न क्षेत्रा क लिए प्रति वग मील व्यक्तिया का ग्रनुमान लगाया है । उन्होने न्मिएम पूर्वी क्षत्र क लिए प्रति वग मील ग्रस्सी व्यक्तिया का ग्रनुमान लगाया है जो कि सर्वाधिक उपजाऊ क्षत्र है । इसी तरह उत्तर - पूर्वी एव उत्तर - पश्चिमी क्षत्र क लिए क्रमश प्रति वग मील तीस एव दस व्यक्तिया का ग्रनुमान लगाया है । इसी के ग्राधार पर उन्होने मारवाड राज्य की बीस लाख जनसख्या ग्रनुमानित की है ।

मैंने ग्रपने शोध निबन्ध म 1654-65 ई के मध्य मारवाड [1] की कुल जनसख्या 19 91 995 एव 20 86 380 क मध्य ग्रनुमानित की है जो कि टाड क ग्राकडा के समतुल्य है । तब यहा यह प्रश्न उठाया जा सकता है कि क्या इस दौर म जनसख्या वृद्धि म ठहराव ग्रा गया था या फिर क्या टाड क ग्राकडा की सत्यता पर प्रश्न चिन्ह लगाया जा सकता है ?

बीकानेर राज्य की जनसख्या निर्धारित करने के लिए ग्रलग पद्धति लागू की है । सर्वप्रथम उन्होने स्थानीय मौखिक साक्ष्या क ग्राधार पर बारह शहरों की जनसख्या क ग्राकडे सकलित किए हैं । य ग्राकडे घरों की सख्या क रूप म है । इसक पश्चात उन्होने सम्पूर्ण गावा को चार समूह म विभाजित करक प्रत्यक समूह के लिए प्रति गाव घरा का ग्रनुमान लगाकर कुल घरा क ग्राकडे प्राप्त कर लिए हैं उदाहरणार्थ

100 गांव	प्रति गांव 200 घर	=	20 000 घर
100 गांव	प्रति गांव 150 घर	=	15 000
200 गांव	प्रति गांव 100 घर	=	20 000
800 ढाणिया	प्रति ढाणी 30 घर	=	24 000

---

[1] मेरा लख पोपुलेशन ग्राव मारवाड इन द मिडल ग्राफ द सैवन्टीन्थ सन्च्युरी द इण्डियन इकनामिक एण्ड सोशियल हिस्ट्री रिव्यू Vol XVI न 4 पृ 415-27

इस तरीके से अनुमानित घरों की संख्या को उन्होंने शहरों के घरों की संख्या में जोड़कर सम्पूर्ण राज्य के कुल घरों का अनुमान लगाया है। मन पारम्परिक दर से (प्रति घर 4.5 व्यक्ति) गुणा करके जनसंख्या निकाली है जो कि 5,39,250 होती है। इसकी जांच टाड द्वारा दिए गए घुआ नामक कर से मन से होने वाली आमदनी के आंकड़ों से की जा सकती है। इस कर से एक लाख की आय होती थी। इस कर की दर प्रति घर एक रुपया थी। इस रकम को पांच से गुणा करने पर पांच लाख जनसंख्या होती है जो मोटे तौर पर ऊपर के आंकड़ों से मेल खाती है। इससे टाड के आंकड़ों की विश्वसनीयता बढ़ जाती है। 1891 ई. में यह जनसंख्या बढ़कर 8,92,065 हो जाती है।

जैसलमेर की जनसंख्या का अनुमान लगाने के लिए भी यही पद्धति लागू की है। इस क्षेत्र के लिए उन्होंने कुल जनसंख्या के आंकड़े दिए हैं जिसका योग 74,400 माना है। यहां उन्होंने कुल घरों की संख्या को प्रति घर 40 व्यक्तियों की दर से गुणा करके जनसंख्या ज्ञात की है। जबकि खास जैसलमेर शहर में घरों को 5 की दर से गुणा की है। यह भी अलग-अलग दरें ठीक नहीं प्रतीत होती।

मेवाड़ राज्य की जनसंख्या के आंकड़ों के लिए उन्होंने एक नवीन तरीका अपनाया है। उन्होंने सम्पूर्ण राज्य का कुल क्षेत्र वर्ग किया है जो 14,900 वर्ग मील माना है। दूसरी तरफ प्रति वर्ग मील जनसंख्या भी अंकित है। अब दोनों को गुणा करके कुल जनसंख्या हासिल की जा सकती है।

शहरी जनसंख्या

इसी तरह टाड ने बीकानेर, मारवाड़, जैसलमेर एवं मेवाड़ के शहरों की जनसंख्या के आंकड़े संकलित किए हैं जो अत्यन्त मूल्यवान हैं। उन्होंने ये सांख्यिकी कहीं सिर्फ घरों की गिनती के रूप में तो कहीं घरों की गणना एवं कुल जनसंख्या दोनों के रूप में दिए हैं। मैंने पश्चातवर्ती आंकड़ों से तुलना करने की दृष्टि से घरों की संख्या को पारम्परिक दर से कुल जनसंख्या में परिवर्तित कर दिया है। सर्वप्रथम टाड द्वारा प्रदत्त सांख्यिकी, उसके पश्चात 1891 ई. एवं इन शहरों में जनसंख्या में घटोतरी अथवा बढ़ोतरी के आंकड़े निम्न तालिकों में दिए जा रहे हैं

सारिणी–2

बीकानेर जसलमेर की शहरी आबादी में परिवर्तन

क्रम सख्या	शहर का नाम	टाड द्वारा प्रस्तुत आकड (लगभग 1820ई)	1891 ई की जनसख्या [3]	कुल घटोतरी/ बढोतरी
1	बीकानेर	54 000	50 513	–3 487
2	नोहर	11 250	5 655	–5,595
3	भादरा	11 250	5 719	–5 531
4	रिणी	6 750	6 553	–197
5	राजगढ	13 500	4 679	–8 821
6	चूरू	13 500	14 019	+ 519
7	बागसर	4 500	4 392	–108
8	रतनगढ	4 500	10 536	+ 6 036
9	जसलमेर	35 000	10 343	–24,657

उपरोक्त सारिणी से यह दिलचस्प निष्कर्ष निकलता है कि नौ में से सात शहरों की जनसख्या में जबरदस्त गिरावट आती है। सर्वाधिक कमी जसलमेर में होती है। यहा के व्यापार में जबरदस्त पतन ही इसका कारण हो सकता है। इसके पश्चात राजगढ़ नोहर एव भादरा जस दूर दराज के क्षत्र भी अग्रजों की आर्थिक नीति के परिणाम से नही बच सके। रेलों के निर्माण ने पुराने सारे व्यापारिक मार्गों को महत्वहीन बना दिया परिणामस्वरूप शहरी जनसख्या मे पतन स्वाभाविक था। चूरू एव रतनगढ की जनसख्या में बढोतरी अपवाद प्रतीत होती है।

मारवाड के कुछ शहरों का घर-गणना टॉड ने दर्ज की है। नणसी ने भी इनमे से कुछ शहरों के घरों की सख्या अकित की है जिसका समय 1655 60 ई के मध्य का है।[4] टाड के आकडो की तुलना पूर्ववर्ती एव पश्चातवर्ती आकडो से भी की जा सकती है। निम्न सारिणी मे 1659 64 टाड एव 1891 के आकडे दिये गए हैं —

3 सेंसस आव इण्डिया वाल्यूम XXIV राजपूताना एण्ड अजमेर - मारवाडा भाग - 2 टेबुल्स कलकत्ता, 1922

4 मुणोत नणसी मारवाड रा परगना री विगत, स नारायणसिंह भाटी दो भाग।

सारिणी–3

मारवाड़ की शहरी जनसंख्या

क्रम संख्या	शहर का नाम	1659 64 की घर गणना	1820 के आंकड़े	1891 की तालिका
1	जालोर [5]	3 049	2 891	2 341
2	भीनमाल [6]	692	1 500	1 277
3	सिवाना	188	500	775
4	साचोर [7]	1 205	750	448
5	भाद्राजन	—	500	392
6	पोकरण	557	2 000	1 633
7	जोधपुर	—	20 00	13 513

उपरोक्त सारिणी के आंकड़े अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। जालोर एव साचोर शहरों में घरों की संख्या 1659–64 के मध्य 1820 ई म अधिक थी। दिलचस्प बात यह है कि उन्नीसवी सदी के दूसरे दशक एव 1891 ई के मध्य सिर्फ सिवाना को छोड़कर सभी कस्बों के घरों की संख्या म तेजी से गिरावट होती है। इसका तात्पर्य यह था कि इस दौर म कुल शहरी जनसंख्या म जबरदस्त गिरावट आई। स्पष्टत अठारहवी सदी म हुई इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रांति के बाद ईस्ट इण्डिया कम्पनी एव भारत के व्यापारिक सम्बन्धों म पूर्णत परिवर्तन आया था। भारत म तैयार माल की जगह कच्चा माल निर्यात होने लगा एव इंग्लैण्ड की फैक्ट्रियों म बना माल यहा आयात होने लगा था। इससे हिन्दुस्तान के समुद्रपारी

5 जोधपुर कविराजा संग्रह ग्रंथ न 59 पत्र 99 (अ)–(ब)नटनागर शोध संस्थान सीतामऊ।

6 भीनमाल के आंकड़े महारिया री पोथी म दिए हैं कविराजा संग्रह ग्रंथ न 78 नटनागर शोध संस्थान सीतामऊ।

7 नगमी ख्यात म बख्तावरमल मालरिया प्रथम भाग पृ 228–29

उद्योग धन्धों के उजड़ने की शुरुआत हुई[8]। इसी के साथ भारत में गैर औद्योगिकरण की प्रक्रिया के संकेत स्पष्टतः उजागर होने लग थे। इसी के परिणामस्वरूप शहरी जनसंख्या में जबरदस्त गिरावट आई। इस दुष्परिणाम से राजस्थान भी अछूता नहीं रहा। चूंकि टॉड स्वयं इंग्लैण्ड के प्रतिनिधि थे इसलिए उन्होंने राजस्थान पर पड़ने वाले दुष्परिणाम को पूरे तौर पर छुपाने का प्रयास किया। इस बात की पुष्टि उनके द्वारा दिए गए मेवाड़[9] से सम्बन्धित आकड़ों से और अधिक हो जाती है जिसमें उन्होंने यह बताने का प्रयास किया है कि 1818 ई. की संधि के पश्चात् यहां के राजस्व में वृद्धि हुई। यद्यपि टॉड द्वारा संकलित सभी आकड़े अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं लेकिन उनकी इस परिप्रेक्ष्य में जांच पड़ताल अत्यन्त आवश्यक है।

जालोर जातिवार घर गणना

टॉड द्वारा संकलित आकड़ों में कस्बा जालोर की जातिवार घर गणना दर्ज है जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। 1658 ई. में इसी प्रकार की व्यवसायिक जातियों के घरों की गणना[10] की गई थी। तत्कालीन समय की गणना अधिक व्यापक है। उसमें सभी व्यावसायिक जातियों के अलग अलग घरों की संख्या दर्ज की गई है। टॉड ने कई व्यावसायिक जातियों के घरों की संख्या को एक मद के अन्तर्गत दर्ज कर दिया है जैसे बनिया व्यापारी एवं दुकानदार अथवा मुस्लिम व्यवसाई एवं दस्तकारों को मुसलमान श्रेणी में रख कर अंकित किया है। इससे दोनों समय के आकड़ों का पूर्णतः तुलनात्मक अध्ययन करना थोड़ा मुश्किल हो गया है। फिर भी हमने 1658 ई. के आकड़ों को टॉड के अनुसार संयोजित करके तुलना-

---

8 उन्नीसवीं सदी में गैर औद्योगिकरण एवं गैर शहरीकरण की प्रक्रिया पर द्रष्टव्य मॉरिस डी. मॉरिस, टुवर्ड्स ए रिइन्टरप्रिटेशन आव नाइन्टीन्थ सेन्चुरी इण्डियन इकनामिक हिस्ट्री, आइ. ई. एस. एच. आर. वाल्यूम 1 नम्बर मार्च 1968 एवं विपिन चन्द्र, रिइन्टरप्रिटेशन आव नाइन्टीन्थ सेन्चुरी इण्डियन इकनामिक हिस्ट्री, आइ. ई. एस. एच. आर. वाल्यूम V नम्बर 1 1968

9 टाड प्रथम भाग पृ. 399

10 जोधपुर कविराजा संग्रह ग्रन्थ नं. 59 नटनागर शोध संस्थान सीतामऊ।

त्मक अध्ययन करने का प्रयास किया है । निम्न सारिणी म 1658 ई एव टाड के आँकड़ो को दर्शाया गया है

सारिणी–4

1658 ई एव 1813 ई म जालोर की घर-गणना सांख्यिकी

क्रम संख्या	जाति का नाम	1658 ई की घर गणना	1813 म घरों की संख्या
1	ब्राह्मण एव श्रीमाली	24	100
2	राजपूत एव टाक राजपूत	105	5
3	छीपा	20	20
4	पचोली	1	—
5	भोजग	20	20
6	जोगी सन्यासी	10	—
7	जुलाहा	30	100
8	जाट	4	—
9	कुभार	30	60
10	गूजर	40	40
11	ढेढ़	80	—
12	भाट	10	—
13	घोमी	100	—
14	माली	30	140
15	बाढ़ी	5	—
16	नाई	15	16

17	डाकोत	5	—
18	लोहार एवं सुथार	9	14
19	कलाल	—	20
20	खटीक	13	20
21	मुसलमान	—	936
22	ठठेरा	—	30
23	तेली	—	100
24	भील	30	15
25	मीणा	200	60
26	चोरी	2	—
27	चूड़ीवाला	—	4
28	कन्दाई	—	8
29	यति	—	2
30	सिपाई	1000	—
31	बन्यम, व्यापारी एवं दुकानदार[11]	1 279	1156
	(i) महाजन 900		

11 तुलनात्मक अध्ययन के लिए मैने ऐसा किया है कि जो जातियां दोनों समय में विद्यमान थीं उनको तो वैसे ही रहने दिया है। टाड ने बन्यस, व्यापारी एवं दुकानदारों का सिर्फ एक मद दिया है। उसमें उन्होंने इस बात का संकेत नहीं किया है कि उन्होंने इस मद में किन किन व्यवसाय के लोगों को सम्मिलित किया है। मैंने तुलनात्मक अध्ययन के लिए तत्‌सम व्यावसायिक जातियों के घरों को टाड के मद के अन्तर्गत कर दिया है।

	(ii) सोनार	40	
	(iii) पिंजारा	30	
	(iv) वघारा	30	
	(v) कसारा	12	
	(vi) भराथा	1	
	(vii) बेनादर	5	
	(viii) सिलावट	15	
	(ix) बागिया	50	
	(x) गुरडा	5	
	(xi) धोबी	10	
	(xii) माची	50 »	
	(xiii) नाल -धारा	2	
	(xiv) मावलगर	30	
	(xv) दरजी	40	
	(xvi) लुहार	5	
	(xvii) मरगरा	6	
	(xviii) तेरवा	3	
	(xix) डबगरा	1	
	(xx) हलालमार	25	
	(xxi) तम्बोली	2	
	(xxii) मराली	4	
	योग	1266	
26	ग्राम बुनकर	—	15
	कुल योग	3 049	2 881

उपरोक्त सारिणी से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि वर्तमान व्यापारी एवं दुकानदारों की जनसंख्या में 1658 ई की तुलना में 1813 ई में गिरावट आती है। जुलाहा मानिया (अर्थात फल-फूल सब्जियां उगाने वाला वर्ग एवं रेशम बुनकरों की जनसंख्या में बढ़ोत्तरी होती है जो दिलचस्प है। जुलाहा एवं रेशम बुनकरों की जनसंख्या में बढ़ोतरी ■ यह अनुमान लगाया जा सकता है कि कपड़ा उद्योग अभी भी संतोषजनक स्थिति में था। दूसरा कारण यह हो सकता है कि टॉड के आकड़े 1813 ई बाद के हैं इसलिए अभी 1813 ई के चार्टर एक्ट का प्रभाव पूर्ण राजस्थान तक नहीं पहुंच पाया था। इन आकड़ों से यह बात उजागर होती है कि नागौर उस समय भी व्यापार का एक महत्वपूर्ण केन्द्र था यद्यपि कुल घरों की संख्या में गिरावट होनी प्रारम्भ हो गई थी।

सिंचाई के साधन

अधिकांश राजस्थान में खेती मानसून की बरसात पर निर्भर करती है लेकिन कुछ एक भी क्षेत्र हैं जहां कुओं से सिंचाई होती है। टॉड ने अपने वर्णन में उपलब्ध विभिन्न क्षेत्रों में उपज व सिंचाई के साधनों का विवरण रूप से दर्ज किया है। जहां सिंचाई करना संभव था। मारवाड़ की भौगोलिक स्थिति का वर्णन करते हुए उन्होंने लिखा है कि लूनी नदी मारवाड़ के रेगिस्तानी एवं उपजाऊ क्षेत्र की सीमा रेखा है। स्वभावतः उन क्षेत्रों में अच्छी किस्म की फसलें होती हैं जहां पानी कम गहरा है एवं कुओं से सिंचाई होती है। मेड़ता एवं नागौर में उच्च श्रेणी के अनाज उगाए जाते रहे हैं क्योंकि यहां कुओं से सिंचाई होती है। मैंने अपने एक शोध निबन्ध में यह प्रमाणित करने का प्रयास किया है कि सत्रहवीं सदी में मेड़ता में मुख्यतः सभी कुओं की सिंचाई के आधार पर की जाती थी।[12] इसी तरह मारवाड़ के दक्षिणी जिलों के लिए उनकी मान्यता है कि यद्यपि इस क्षेत्र में पानी सतह से काफी नजदीक है लेकिन कुओं की संख्या उस अनुपात में नहीं है जितना कि मेवाड़ में है। टॉड के इस कथन में यह सत्यता तो हो सकती है कि मेवाड़ एवं मारवाड़ के दक्षिण क्षेत्र में कुओं का अनुपात समान नहीं है लेकिन यह कि इस क्षेत्र में कुए कम थे सही नहीं प्रतीत होता। जालोर परगना इस क्षेत्र का हिस्सा था। इस क्षेत्र के लिए मेरा यह निष्कर्ष है कि सत्रहवीं

---

12 द्रष्टव्य मेरा निबन्ध "इकनामिक कंडिशन्स इन परगना मेड़ता 1658 63 प्रासिडिंग्स आव इण्डियन हिस्ट्री काग्रेस 1975 पृ 216 17

सदी में जालोर में खेती कुओं की सिंचाई पर अधिक निर्भर करती थी। सम्पूर्ण परगने में 693 कुएं थे जिसका प्रति वर्ग मील छह कुएं से ऊपर आता है। यह स्थिति तो तब है जबकि जालोर में विगत में कुओं की गणना अपूर्ण है।[13]

लेकिन दूसरी तरफ बीकानेर एवं जैसलमेर के बारे में टॉड का वर्णन स्वभावतः नितान्त भिन्न है। इस क्षेत्र में पानी सतह से काफी दूर है। पानी के अत्यधिक गहरा होने के कारण सिंचाई के साधनों को काम में लेना अत्यन्त मुश्किल है। बीकानेर के समीप देशनोक में कुओं की गहराई लगभग तीन सौ फुट है।[14] जैसलमेर के बारे में उनका वर्णन काफी दिलचस्प है। राज्य के बारे में यह आम धारणा है कि यहां कुछ भी पैदा नहीं होता। पीने तक का पानी उपलब्ध नहीं होता। लेकिन टॉड का वर्णन इस चित्र का दूसरा पहलू दिखाता है। राज्य की राजधानी के आसपास के क्षेत्र में पानी को रोक कर बांध बनाकर अच्छी किस्म की पैदावार की जाती है। यहां बड़ी संख्या में गेहूं, चना, जौ एवं बागों में कई प्रकार के फल पैदा किए जाते रहे हैं। टॉड के इस वर्णन की सत्यता की गवाही सत्रहवीं सदी के मारवाड़ीवेत्ता मुहणोत नैणसी देते हैं। वे लिखते हैं कि इस क्षेत्र में पानी को एकत्रित करके यहां गेहूं, कपास एवं सभी प्रकार के अनाज एवं फल-सब्जियां पैदा की जाती हैं।[15] इस गवाही से टॉड के सर्वेक्षण में हमारा विश्वास और अधिक गहरा हो जाता है। कांठा भी ऐसा क्षेत्र था जहां सिंचाई द्वारा खेती होती रही है। यहां सिंचित भूमि को 'पीवल' कहा जाता रहा है। कुल मिलाकर टॉड का सर्वेक्षण यद्यपि इस सम्बन्ध में पूर्ण नहीं है फिर भी अत्यन्त शोधपरक है।

कृषि उत्पादन

टॉड सर्वप्रथम लगभग सभी राज्यों की भौगोलिक स्थिति का वर्णन करने के उपरान्त उस क्षेत्र में होने वाली मुख्य पैदावार का वर्णन करते

13 देखिए मदन मीणा, एग्रेरियन कन्डिशन्स ऑफ जालोर इन प्रोसीडिंग्स ऑफ हिस्ट्री कांग्रेस 1979, पृ 73-74
14 टॉड II पृ 157
15 मुहणोत नैणसी, ख्यात, द्वितीय भाग, पृ 8

हैं। बीकानेर क्षेत्र के बारे मे लिखा है कि कुछ हरे भरे स्थलो को छोड़-कर अधिकांश क्षेत्र रेतीला है। उत्तर पूर्वी क्षेत्र म राजगढ़ म नोहर एव रावतसर की मिट्टी उपजाऊ है। इसके साथ ही साथ भूतल का पानी भी सतह के समीप है इसलिए यहां सिंचाई के साधन सक्रिय हैं। इसी तरह भटनेर एव मोहिलावाटी का क्षेत्र भी अत्यन्त उपजाऊ है। यहा होने वाली बरसाती बाढ़ से भूमि के उपजाऊपन मे और अधिक बढ़ोतरी हो जाती है।

बीकानेर क्षेत्र के बारे मे यह आम धारणा रही है कि रेगिस्तान म सिर्फ एक ही फसल होती है। जबकि मध्यकालीन बहियात एव दस्ता वेजो से यह बात उजागर होती है कि यहा कुछ क्षेत्रो म दो फसलें उगाई जाती रही थी।[16] टॉड के सर्वेक्षण से यह बात प्रमाणित होती है कि उन्नीसवी सदी के दूसरे दशक तक क्षेत्री म पूर्ववत स्थिति कायम रही। टाड न न केवल खेती की पैदावार के नाम गिनाए हैं बल्कि उनकी विशेष ताओ का भी वर्णन किया है। उन्होंने लिखा है कि रेगिस्तान म पैदा होने वाला बाजरा मालवा की उपजाऊ भूमि से अधिक अच्छा होता है। इसी तरह कपास की भी विशेषता का वर्णन किया है।

टॉड ने इसी प्रकार से सभी क्षेत्रों में पैदा होने वाले अनाजो का वर्णन किया है। उनके द्वारा दी गई सूची यत्र तत्र बिखरी हुई है। सुविधा के लिए उत्तर-पश्चिमी राजस्थान के राज्यों (बीकानेर जोधपुर एव जैसलमेर) म पैदा होने वाले अनाजों को निम्न तालिका म दिया जा रहा है। इसमें मुख्यत दो कालम बनाए गए हैं। एक म सिर्फ वह फसल दी गई है जो सभी राज्यो म उपजती है एव दूसरे म प्रत्येक परगने के नाम के अन्तर्गत सिर्फ वह फसल दी गई है जो उसम पैदा होती है अन्या म नहीं।

---

16 कोठारी हासल भाछ री बही, न 12 वि स 1752 राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर जी एस एल देवडा राजस्थान की प्रशास निक व्यवस्था 1, अध्याय 6 तथा 71

सारिणी – 5

उत्तर – पश्चिमी राज्यों में कृषि – उत्पादन

सभी राज्यों में उपजने वाली फसल	जोधपुर	जैसलमेर	बीकानेर
गेहूँ जौ चना बाजरा मोठ मूंग तिल कपास ज्वार	चावल	ग्वार	ग्वार चावल

सत्रहवीं सदी में नैणसी भी जोधपुर राज्य की पैदावार में इन्हीं अनाजों की सूची देता है। जैसलमेर के आसपास गेहूँ व अन्य चीजें पैदा होती थीं। जोधपुर सोजत एवं जैतारण में अन्य उत्पादनों के अतिरिक्त चावल बोया जाता था।

आम्बेर के बारे में टॉड [illegible] कथन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। वे लिखते हैं यहाँ खरीफ एवं रबी दोनों फसलें होती हैं जो महत्त्व की दृष्टि से समतुल्य हैं। यहाँ सभी प्रकार के अनाज पैदा किए जाते हैं लेकिन ईख कपास एवं नील बड़ी तादाद में उगाई जाती है। ये सब नकद फसलें थीं जिनकी कि बाजार में माँग थी। इसका तात्पर्य यह हुआ कि किसानों का झुकाव लगातार नकद-फसलों की तरफ बढ़ता जा रहा था। इस प्रवृत्ति की शुरुआत सत्रहवीं सदी [illegible] होती है जिसकी ओर सत्यप्रकाश गुप्ता ने ध्यान दिलाया है। डा. गुप्ता ने विभिन्न नकद-दरों की प्रति बीघा दर का तुलनात्मक अध्ययन अपनी पुस्तक में प्रस्तुत किया है।[17] ईख की प्रति बीघा दर रु. 1.48 से 4.73 रु. के मध्य थी। टॉड ने यह दर रु. 4 से 6/ रु. के मध्य दर्ज की है।[18] इससे यह पता चलता है कि ईख की प्रति बीघा दर में काफी वृद्धि हो गई थी। स्वभावतः यह वृद्धि कीमतों में वृद्धि का ही परिणाम रही होगी। नील की खेती में वृद्धि यह दर्शाती है कि अभी तक इंग्लैण्ड से रंगाई की आधुनिक पद्धति ने अपने कदम यहाँ नहीं रखे थे। लेकिन यह बात नितान्त सत्य प्रतीत होती है

17 सत्यप्रकाश गुप्ता, एग्रेरियन सिस्टम ऑव ईस्टर्न राजस्थान (दिल्ली 1986) पृ. 55 73

18 टॉड II पृ. 348

कि किसान खाद्यान्न उत्पादनों की कीमत पर नकद फसलें अधिक उगा रहे थे । मेवाड़ के किसानों के इस प्रकार झुकाव से यह बात और अधिक पुख्ता होती है । इससे यह बात प्रमाणित होती है कि उन्नीसवीं सदी में पैदावार के पटर्न में परिवर्तन होना प्रारम्भ हो गया था ।

वाणिज्य एवं व्यापार

टाड ने राज्य में होने वाले वाणिज्य एवं व्यापार के सांख्यिकीय आंकड़े सकलित किए हैं जो अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं । सर्वप्रथम उन्होंने मुख्य व्यापारिक केन्द्रों का वर्णन किया है जहा पर सर्वाधिक व्यापारिक गतिविधियां होती थीं । व्यापारी अपना माल खरीदने एवं बेचने के लिए दूर दराज के क्षेत्रों से आते थे । इन सब गतिविधियों से राज्य को आमदनी होती थी इसलिए शासक वर्ग व्यापारियों को अपने राज्य की ओर आकर्षित करने के लिए विभिन्न प्रकार की रियायतें देते थे । टाड ने राज्य को सायर दाण एवं मापा से होने वाली आय के आंकड़े दर्ज किए हैं।

टाड लिखते हैं कि हर राज्य में कुछ व्यापारिक केन्द्र होते थे जहां से व्यापारिक वस्तुएं एक स्थान से दूसरे पर जाती थीं । मेवाड़ में भीलवाड़ा बीकानेर में चूरू ढूम्बर में मालपुरा एवं जोधपुर में पाली का वह स्तर हासिल था । उन्नीसवीं सदी में पाली व्यापार के एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र के रूप में विकसित हो चुका था जहां पर सम्पूर्ण भारत कश्मीर एवं चीन से माल आता था और उस माल की यूरोप अफ्रीका एशिया एवं अरब देशों के माल के साथ अदला बदली होती थी । इसी तरह बीकानेर में राजगढ़ एक ऐसा बाजार था जहां पर देश के विभिन्न कोनों से कारवां आते थे । पंजाब एवं कश्मीर का माल हांसी एवं हिसार होकर आता था । पूर्वी क्षेत्र के व्यापारी दिल्ली एवं रेवाड़ी से होकर आते थे । इन क्षेत्रों से रेशम नील, चीनी एवं तम्बाकू आदि सामान आता था हाड़ौती एवं मालवा से अफीम आता था । सिंध एवं मुल्तान के व्यापारी अपना माल यहीं तक ला के लाते थे । साथ ही भेड़ की ऊन का यह एक बड़ा उत्पादन का केन्द्र रहा है जो व्यापार की एक बहुत लाभकारी वस्तु था । टाड ने भी यहां के ऊन उत्पादन की काफी प्रशंसा की है ।

टाड इस व्यापार में निरंतर हो रही अवनति की ओर भी संकेत करते हैं लेकिन इस पतन के लिए जिन कारणों को उत्तरदायी ठहराते हैं

वे पर्याप्त नहीं है। वास्तव में जो कारण सम्भवतः मुख्य रहा होगा उसे वे अनदेखा करना चाहते थे। इस पतन का मुख्य कारण अंग्रेजी माल से भारतीय बाजारों का भर जाना है। अंग्रेजी माल की यह बाढ़ 1813 ई के चार्टर एक्ट के पश्चात और अधिक भयानक हो गई। सम्पूर्ण भारत एक बाजार में परिवर्तित हो गया जो पहले एक निर्यातक देश था। परिणाम स्वरूप यहाँ का पारम्परिक व्यापार अस्त-व्यस्त एवं बर्बाद होता चला गया।

राज्य के विभिन्न क्षेत्रों म वार्षिक मेलों को आयोजित किया जाता था जहाँ दूर-दराज से व्यापारी माल खरीदने एव बेचने आते थे। राज्य को इन मेलो से काफी आय होती थी। कुछ मेले तो किसी विशय वस्तु के लिए प्रसिद्ध हो जाते थे उदाहरणार्थ मारवाड़ में मूंडवा एव बालोतरा के मेले पशुओं के क्रय-विक्रय के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। बीकानेर में कालायत एव अजमेर के मेलों म आसपास एव शहर के लोग एकत्रित होते थे एव बड़े स्तर पर क्रय-विक्रय होता था। कहने का तात्पर्य यह है कि मेला राज्य के लिए एक आय श्रोत था।

निम्न सारिणी में टॉड द्वारा सकलित 'सायर' के आकड़ों को सयोजित किया गया है। साथ म कुल राजस्व के आंकड़े एव सायर की आमदनी का प्रतिशत भी दिया जा रहा है –

सारिणी–6

कुल राजस्व में 'सायर' का प्रतिशत

क्रम सख्या	राज्य का नाम	कुल राजस्व आय	सायर की आय	'सायर का प्रतिशत
1	मारवाड़	29 45,000	4,30 000	14 60
2	बीकानेर	6 50 000	75 000	11.54
3	जैसलमेर[19]	5,00 000	3,00 000	60 00
4	आम्बेर	20 55 000	1,90,000	9.25

19 टॉड द्वारा सकलित जसलमेर क आंकड़ अपूर्ण प्रतीत होते हैं। हो सकता ह इसीलिए सायर का प्रतिशत अधिक आ रहा हो।

उपरोक्त सारिणी से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जसलमेर में सायर से होने वाली आय काफी अधिक थी। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि राज्य में लेकर बड़ी तादाद में माल का आवागमन होता था इसलिए सम्भवत सायर से होने वाली आय अधिक हो। द्वितीय चूंकि यह एक शुष्क क्षेत्र रहा है इसलिए लगान से आय अत्यन्त ही कम होती रही होगी। इसके पश्चात मारवाड़ बीकानेर एवं आम्बेर[20] का स्थान आता है। क्योंकि पूर्व एवं पश्चातवर्ती समय के आंकड़े उपलब्ध नहीं है इसलिए इनका तुलनात्मक अध्ययन नहीं किया जा सकता।

उपरोक्त विषयों के अतिरिक्त भी टॉड ने महत्वपूर्ण सामग्री एकत्रित की है जो आर्थिक इतिहास के अध्ययन की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उदाहरणार्थ नमक एवं खनिज उत्पादन उद्योग धन्धा एवं विभिन्न करों के आंकड़े आदि। इसमें कोई सन्देह नहीं कि उनके द्वारा एकत्रित सामग्री अत्यन्त महत्वपूर्ण है। आवश्यकता मात्र इस बात की है कि उनके आंकड़ों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए तभी हम कुछ ठोस निष्कर्ष निकाल सकते हैं। यही जेम्स टॉड जैसे इतिहासकार को सही शोधपरक श्रद्धांजलि होगी।

---

20 आम्बेर के आंकड़ों से भी यह पता लगाना मुश्किल है कि राज्य में 'खालसा' से होने वाली आय कितनी थी। इसलिए केवल राज्य द्वारा प्रबन्धित क्षेत्र के आंकड़ों से सायर निकाला है।

—

एनल्ज के आलोक मे राजस्थान राज्यो के आय-स्रोत

—डॉ हुकमसिंह भाटी

डा जेम्स टाड प्रथम इतिहासकार थे जिन्होंने राजस्थान के राजनैतिक इतिहास के साथ सामाजिक धार्मिक व आर्थिक पहलुओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया। उन्होंने अपने ग्रन्थ एनाल्स एण्ड एन्टीक्विटीज ऑफ राजस्थान म जहा भूमि की उवरता कृषि के और तरीके औद्योगिक उत्पादन और व्यापारिक मार्गों का वणन किया है वहा राज्य के प्रमुख आय-स्रोतों के बारे म महत्वपूर्ण जानकारी दी है। भू-राजस्व आय का प्रमुख स्रोत रहा है। राज्य का खर्चा वहन करने के लिए भूमि का एक बड़ा भाग खालसा म रखा जाता था और शेष भाग राज्य की सुरक्षा हेतु जागीरदारो को उनकी सैनिक सेवाओं के बदले आवंटित किया जाता था। इसके अलावा वाणिज्यकर कृषि कर भूम कर, घुआ कर और अनेक प्रकार की लागतो व परम्परागत व्यवहारों से राजा को काफी आमदनी होती थी। टॉड ने इस प्रकार के आय-सूत्रों को राजकीय दस्तावेजो के आधार पर बड़ी सजगता स सजोने का यत्न किया है।

मेवाड

राज्य के आय स्रोतो के बारे म टाड ने काफी अध्ययन किया परन्तु उन्हें विभिन्न प्रकार के फुटकर करो स प्राप्त आय के आंकड उपलब्ध नही हुए। टाड ने निम्नलिखित आय-स्रोतो का विवचन किया ह।

(1) **कृषिकर**–टाड क अनुसार राज्य की निज अधिकार वाली भूमि (खालसा) ही राजशक्ति की धमनी और मासपेशी स्वरूप ह उसकी आय से राज्य काय सम्पादित किय जात हैं। दूसरी तरफ भूमि का स्वामी किसान माना गया। मेवाड म ही नहीं समस्त राजस्थान क लोग प्राचीन काल स कहत आय ह कि भोग रा धणी राजा हो, भोम रा धणी मा छो अर्थात्

भूमि का कर अधिकारी राजा है भूमि के मालिक हम है । मवाड म अनाज के ऊपर दो तरह से कर लिया जाता था। एक कूत व दूसरा भुटटई(बटा") । गना पान्त सरसो सन तम्बाकू रूई नील और फल फूलो की खती पर प्रति बीघा दो रुपये से 6 रुपये तक कर लने का प्रावधान था । बटाई प्रणाली के अनुसार जौ गेहू तथा रबी की अन्य फसलो की पदावार का एक तिहाई या 2/5 भाग वसूल किया जाता था । [1]

2 **वाणिज्य कर**— पहले मेवाड रा"य का "यापारियों के साथ उदार तापूण "यवहार रहा । व्यापारी निर्धारित कर रा"य को देकर अपना कर्त य निभाते थ जिससे परस्पर क सद्‌आचरण से उनम विश्वास बढता था । परन्तु बा" म आतंक बढ जाने से राजनतिक परिस्थितिया बदल गई और अधिक धन की माग से करो का बोझ बन गया जिसस यापारी वर्ग विरक्त हो गया । यद्यपि टाड न वाणि"य सम्बन्धी दाण [2] तथा दुमाला [3] आदि करों का उल्लेख नही किया ह परन्तु स्थानीय स्रोतों म इनकी जान कारी मिलती ह ।

3 **खान**— आय के स्रोत म मेवाड की खानें प्रमुख स्थान रखती ह। परन्तु इसके बारे म टाड को कम जानकारी थी क्योंकि टाड क समय जावर इत्यादि खानें सम्भवत बन्द पडी थी। जावर की खान महाराणा लाखा के समय प्रारम्भ हुई। महाराणा जगतसिंह व महाराणा राजसिंह के समय इसकीआय क्रमश 2 50 000 रु व 1 74 994 रु थी । [4अ]

---

1 एनल्ज एण्ड एंटीक्विटीज आफ राजस्थान द् वाल्यूम इन वन भाग 1, पृष्ठ 398

2 एनल्ज भा 1, पृ 117

3 महाराणा राजसिंह री पटटा बही (स डा हुकमसिंह भाटी) टकित पृ 6 7 प्रताप शोध प्रतिष्ठान उदयपुर

4 महाराणा अमरसिंह का पत्र कुशलसिंह शक्तावत विजयपुर के नाम(सामवार 6 अक्टूबर 1707 ई) अप्र थाहरा पटटा रा इतरा गाव रो दुमाला हजुर चुकीयो है । हवे इण गामा रा महाजन कसबा थी दुमाला री चानण नही करे । प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर

4 अ वही महाराणा राजसिंह री पटटा बही टकित पृ 20 पाद टिप्पणी एव परिशिष्ट 7

4 **बरार**-कतिपय कर बरार नाम से जाने गये। टॉड ने ऐसे निम्नलिखित करों का उल्लेख किया है—

(i) गनीम बरार-युद्ध सम्बन्धी कर जो युद्ध-विग्रह के समय जनता से लिया जाता था।

(ii) घरगुंती बरार-प्रति घर से लिया जाने वाला कर।

(iii) हल बरार-कृषि सम्बन्धी कर। कृषक को पैदावार के अनुसार कृषि-कर चुकाना पड़ता था। युद्ध कर की वसूली खेती की पैदावार के हिसाब से की जाती थी।

(v) पीला बरार-विवाह के समय लिया जाने वाला कर।

5 **नजराना**-किसी सामन्त अथवा सरदार के नवीन अभिषेक अथवा किसी जागीरदार के पट्टे परिवर्तन के समय सामन्त निर्धारित रकम महाराणा को नजर करते थे उसे नजराना कहा जाता था। इसके अलावा भोमिया सरदार निर्धारित नियमानुसार राजधन देते थे।

6 **दण्डकर**-नियम भंग करने वाले और अपराधियों से आर्थिक जुर्माना लिया जाता था।

7 **खड़लाकड़**-टॉड के अनुसार काष्ठ और खड़ का यह कर मेवाड़ राज्य में बहुत पहले से लागू था। जिस समय महाराणा युद्ध अभियान के लिये प्रस्थान करते उस समय प्रत्येक व्यक्ति सेना के व्यवहार के लिये काष्ठ व खड़ दिया करता था। आगे में शांति के समय भी यह कर लिये जाने लगा। आगे वे लिखते हैं-खड़-लाकड़ का अभिप्राय रसद से है। युद्ध काल में प्रत्येक नगर व गांव से सेना के लिये रसद एकत्र की जाती थी जिसमें खाद्य पदार्थों के अलावा अन्य बहुत सी वस्तुएं बटोरी जाती थी।[5] टॉड ने खड़लाकड़ कर का अर्थ देने में भूल की है। अभिलेखागार उदयपुर में संग्रहीत अभिलेखीय बहियों के अध्ययन से पता चलता है कि यह कर लकड़ी व चारे पर लगने वाला था। ग्रामीण अपने पशुओं को परत भूमि में चराते थे और ईंधन की पूर्ति भी वनों से की जाती थी इसलिये गांव का जागीरदार अथवा खालसा गांव का मुखिया ग्रामीण जनता से खड़लाकड़ कर वसूल कर राज्य कोष में जमा करता था।[6]

---

5 एनल्स, भा 1, पृ 118

6 बही महाराणा राजसिंह री पट्टा बही सम्पादकीय भूमिका टंकित पृ 9

8 **आबकारी**–मदिरा अफीम आदि अन्य मादक पदार्थों पर कर लिया जाता था जिससे राज्य को विशेष आय होती थी।[7]

रखवाली कर का उल्लेख करते हुए टाड ने लिखा है— पंचायती व्यवस्था के शिथिल होने तथा चारों ओर अशांति फैल जाने, राजाओं की शासन शक्ति कमजोर पड़ जाने और प्रजा के धन और प्राण की रक्षा में असमर्थ होने के कारण राजपूत राज्यों में जिस नये कर का जन्म हुआ उसे 'रखवाली' के नाम से प्रसिद्धि मिली। इसका अर्थ है रक्षा करना, आश्रय देना। धन प्राण और भूमि सम्पत्ति की रक्षा के लिये ही प्रजा सबल सामन्तों के आश्रय को ग्रहण करके रक्षा के बदले में यह रखवाली कर देने को विवश हुई। रक्षा करने वाले लोगों को अदायगी नगद रुपये अथवा खेती की पैदावार से करने का प्रावधान था। रखवाली के नाम पर सामन्त (भोमिया) जिस भूमि पर अधिकार पा जाते उसका वे सदा के लिये स्वामी बन जाते थे।[8]

इसके अलावा मेवाड़ के महाराणा अपनी पुत्रियों के विवाह खर्च के लिये प्रजा से उसकी आय का छठा हिस्सा वसूल करते थे। मराठों के आक्रमण के कारण मेवाड़ राज्य की आय काफी घट गई थी। 1818 ई. में अंग्रेजों के साथ संधि होने पर काफी सुधार हुआ। 1822 ई. में रबी की फसल से 9 35 640 रु. और वाणिज्य कर से 2 17 000 रु. की आमदनी हुई[9]।

मारवाड़

टाड द्वारा महाराजा मानसिंह के समय राज्य की आय दस लाख रुपये आंकी गई। पचास वर्ष पूर्व महाराजा विजयसिंह के काल में राज्य की आय सोलह लाख रुपये वार्षिक थी। अमरदत्त खुशाली के समय 29 45,000 रु. आय होने का उल्लेख हुआ है।

1 **खालसा भूमि का भूमिकर**—पहले अनाज पर बटाई के आधार पर कुल उत्पादन का चौथा या छठा हिस्सा लेने का प्रावधान था। परन्तु महाराजा मानसिंह के काल में उत्पादन का आधा भाग लिया जाने लगा। इसके अतिरिक्त किसानों को प्रति दस मन अनाज पर दो रुपये रखवाली कर चुकाना पड़ता था। महाराजा के पशुओं के लिये पहले प्रत्येक किसान से एक भूसा गाड़ा

---

7 एनल्ज भा 1 पृ 119
8 एनल्ज भा 1 पृ 141
9 एनल्ज भा 1 पृ 399

वसूल करने के स्थान पर अब एक रुपया लिये जाने का प्रावधान रखा गया, अकाल के समय रुपये के बदले करबी लेने की व्यवस्था था[10]।

टाड ने इस तथ्य की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट कराया है कि खालसा क्षेत्र के किसानों से जागीर क्षेत्र के किसानों की स्थिति अच्छी थी उन्हें कुल उत्पादन के पांच भागों में से दो भाग जागीरदार को देने पड़ते थे और अन्य फुटकर करों के बदले में सिंचित क्षेत्र के प्रति सौ बीघा पर बारह रुपये चुकाने पड़ते थे।

2 **नमक की झीलें**—कुल आय का आधा भाग नमक की झीलों से प्राप्त होता था। कुशहाली के समय राजकीय दस्तावेजों के अनुसार विभिन्न झीलों से इस प्रकार आमदनी होती थी।[11]

पचपद्रा	—	2 00 000 रु
फलोदी	—	1 00 000 रु
डीडवाना	—	1 15,000 रु
साभर	—	2 00,000 रु
नावा	—	1,00 000 रु
कुल		7 15,000 रु

साभर लवण नाम से प्रसिद्ध नमक सिंधु से गंगा तक बिकता था। सबसे अच्छी किस्म का लवण पचपदरा झील का माना गया।

3 **सायर अथवा वाणिज्य कर**—राजकीय अभिलेखों के अनुसार अलग अलग परगनों से इस प्रकार आमदनी होती थी।[12]

1	जोधपुर	76 000 रु	7	जालोर	25 000 रु
2	नागौर	75 000 रु	8	पाली	75 000 रु
3	डीडवाना	10 000 रु	9	जसवन्तपुरा वाला तेरह के मेल	41 000 रु
4	परवतसर	44 000 रु	10	भीनमाल	21,000 रु
5	मेड़ता	11 000 रु	11	साचोर	6 000 रु
6	सोजिया	5 000 रु	12	फलोदी	41 000 रु
					4,30,000 रु

10 एनल्ज, भाग 2 पृ 131
11 एनल्ज, भाग 2 पृ 133
12 एनल्ज भाग 2 पृ 132

4 **अ थाकर**—राज्य मे रहने वाले निवासियो (स्त्री-पुरुष) स प्रति व्यक्ति एक रुपया लेने का प्रावधान था।

5 **घासमारीकर**—घास चरने वाले पालतु पशुओ पर घासमारी कर लागू था। करीब पौने दो वष के अन्तराल म घासमारी कर दर म दुगनी वद्धि हुई। निम्नलिखित तालिका स इस तथ्य की पुष्टि होती है।

क्रम सख्या	पशु	महाराजा गजसिंह के समय घासमारी कर रु [13]	महाराजा मानसिंह के समय घासमारी कर रु [14]
1	गाय	0 12	—
2	भैंस	0 25	0 50
3	ऊट	1 50	3 00
4	बकरी	0 02	0 06

6 **किवाड़ी कर**—यह कर प्रत्येक घर से वसूल किया जाता था। इसे सवप्रथम महाराजा विजयसिंह ने लागू कर प्रति घर तीन रु लिये जाने का प्रावधान रखा। महाराजा मानसिंह न सकट काल क दौरान इसे बढ़ाकर 10 रु कर दिया। यह कर समान दर म वसूल नहीं कर गरीबो स दो रुपया और सम्पन्न परिवारो से बीस रु लिया जाता था।[15] इस प्रकार मालगुजारी के विभिन्न स्रोतों स राज्य को 29 45 000 रु की आय होती थी। टाड ने इसका खुलासा इस प्रकार किया है—[16]

1- खालसा क्षेत्र के 1484 गावो व नगरो की आय	15 00 000 रु
2 वाणिज्यकर या सायर	4 30 000 रु
3- नमक की झीलें	7 15 000 रु
4 हासल अर्थात् विभिन्न मदो से आय (अन्यकर)	3 00 000 रु
	29 45 000 रु

टॉड ने इन आकड़ो पर सन्देह प्रकट किया है क्योकि उस समय म इसका आधा भी वसूल नहीं हो पाता था। टॉड ने सामतो और मन्त्रियो

13 मारवाड रा परगना री विगत स डॉ नारायणसिंह भाटी भाग 1 पृ 88, राजस्थान के मेडतिया राठौड डा हुकमसिंह भाटी पृ 201
14 एनल्ज भाग 2, पृ 131
15. एनल्ज पृ 132
16 एनल्ज पृ 133

की जागीर आय 50 लाख रु दर्शायी है। ये आंकड़े वास्तविक आय के नही होकर जागीरो की आंकी गई अनुमानित आय (रेख) के हो सकते हैं। इसस उपज अथवा आय करीब आधी होता थी।

बीकानेर

बीकानेर म निम्नलिखित 6 प्रकार के करो से राज्य को आय होती थी।

1 **खालसा भूमिकर**—पहले राज्य को खालसा-भूमि से करीब 2 लाख रु की आय होती थी। परन्तु अनेक गाव उजड़ जाने से कृषि पर इसका बुरा असर पड़ा और आय घटकर एक लाख के करीब रह गई।

2 **धुआकर**—यह एक प्रकार का मकान (हाउस टैक्स) है जो राजा सूरतसिंह ने प्रत्यक घर से निकलन वाले धुए पर जारी किया था। प्रति घर म एक रुपया वसूलने का प्रावधान था। इस कर से 1,00,000 रु की आय होना इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि उस समय घरों की संख्या 1,00,000 के करीब थी। टाड न बीकानेर राज्य के घरो की संख्या 1,07,850 दी है।

3 **अगाकर**—अगकर अथवा शरीर कर राजा अनूपसिंह न लागू किया। प्रत्यक स्त्री पुरुष से चार आना वार्षिक कर लिया जाता था। इस बकरियो अथवा भेडो का एक अग मानकर और एक ऊट का चार अग के बराबर मानकर प्रति अग चार आने कर लिये जाने का प्रावधान था। राजा गजसिंह ने इसे दुगना कर दिया। इस कर से 2,00,000 रु की आमदनी का उल्लेख हुआ है। धुआ कर और अग कर के आकड़ों से हम प्रति घर परिवार के सदस्या की औसत संख्या का अनुमान लगा सकते हैं।

4 **सायर**—पहले यातायात अथवा वाणिज्य कर से राज्य को अच्छी आय होने के प्रमाण मिलते हैं परन्तु लुटेरो के आतक से पजाब के साथ सपर्क टूटने के कारण इसकी आय म काफी गिरावट आई। दो लाख की जगह अब 75 हजार की आय होने लगी। सो मन अनाज के विक्रय पर चार रुपय वसूल किये जाने का प्रावधान था।

5 **पुसेती (हलकर)**—पहले बाटा प्रणाली (हासल) के अनुसार अनाज की पैदावार का एक-चौथाई अनाज लिया जाता था। परन्तु भ्रष्टाचार बढ़ जाने के कारण राजा रायसिंह ने इसकी जगह प्रति हल पाच रुपये कर

लागू किया। इससे किसानों को भी राहत मिली और राज्य को अच्छी आमदनी होने लगी।

6 मलबा—राव बीका के समय जाट-कृषकों ने जब आत्मसमर्पण किया उस समय उन्होंने राव बीका को अपना स्वामी मानते हुए भूमि कर देना स्वीकार किया जो मलबा के नाम से जाना गया। कृषि योग्य सौ बीघा भूमि पर दो रुपये मलबा कर लेने का प्रावधान था।

इसके अलावा तीन वर्ष में केवल एकबार प्रतिहल पांच रुपये के हिसाब से धासुई कर लिया जाता था। बेनीवाल इत्यादि जाति के 120 गांव इस कर से मुक्त थे। इसके बदले रखवाली जैसी दूसरी सेवाएं उनसे ली जाती थी। प्रमुख सामन्तों को भी यह कर नहीं चुकाना पड़ता था।[17]

टाड ने राज्य की कुल आमदनी का ब्यौरा इस प्रकार दिया है।[18]

1	खालसा	1,00 000 रु
2	धुआकर	1 00 000 रु
3	अंगकर	2 00 000 रु
4	वाणिज्यकर	75 000 रु
5	पुसती कर	1 25 000 रु
6	मलबा	50 000 रु
	कुल	6,50 000 रु

इसके अतिरिक्त अपराधियों से दण्ड स्वरूप रुपये वसूले किये जाते थे। और युद्ध अभियानों के समय विजय व पराजय दोनों स्थितियों में विजय का उत्सव मनाने व पराजय के समय क्षतिपूर्ति करने हेतु आवश्यकतानुसार जनता से कर वसूल किया जाता था। टाड ने इस कर प्रणाली की बुराई बताते हुए आलोचना की है।

जैसलमेर

जसलमेर राज्य में वर्षा कम होने और भूमि कम उपजाऊ होने के कारण यहां की आय सन्तोषजनक नहीं थी। तथापि वाणिज्य कर से राज्य को अच्छी आय होने के संकेत मिलते हैं।

---

17 एनल्ज भाग 2, पृ 159 161
18 एनल्ज भाग 2, पृ 160-61

1 **कृषिकर**—खेती की उपज का पाँचवा भाग से सातवा भाग लिये जाने का प्रावधान था। राज्य का हिस्सा 'लौटाते समय पालीवाल ब्राह्मण राज्य म रहते थे उनके द्वारा वह हिस्सा खरीद लिया जाता था और ये धनराशि राजकोष मे जमा करा दी जाती थी। इस प्रकार कृषि कर से रोकड़ राशि प्राप्त हो जाती थी। कृषि कर के रूप म प्राप्त होने वाली आय के आकड़े टाड को नहीं मिल।

2 *वाणिज्यकर*—*हैदराबाद*, रोडी भक्कर, *शिकारपुर* और कुछ दूसरे स्थानो से वाणिज्य की वस्तुए जसलमर की ओर आती थी। इसके अलावा कोटा व मालवा का अफीम बीकानेर की मिर्चो जयपुर की बनी इस्पात की वस्तुए जसलमर के रास्ते से शिकारपुर व सिन्ध के नगरो म जाती थी। पहल वाणिज्य शुल्क से राज्य को कराब तीन लाख रुपये की आय होती थी, पर बाद म इसम भारी कमी आ गई।

3 *धुआ अथवा थालीकर*—यह एक प्रकार का मकान कर था जो प्रत्येक परिवार से वसूल किया जाता था इसस राज्य को बीस हजार रुपये वार्षिक आय होती थी।

4 **दण्ड कर**—पहले अपराधियो से दण्ड वसूल किये जाने का मापदण्ड था। परन्तु बाद म इसका कोई निश्चित मापदण्ड नहीं रहा। बजट घाटे की पूर्ति हेतु जब भी आवश्यकता होती कर वसूल कर लिया जाता। वि स 1857 और 1863 म क्रमश 60 000 रु व 80 000 रु दण्डकर क रूप म वसूल किय गये [19]।

इस प्रकार टॉड ने विभिन्न करो से प्राप्त आय क आकड इस प्रकार

---

19 एनल्ज भा 2, पृष्ठ 225 26

दिये हैं[20]।

कृषिकर	अज्ञात
वाणिज्यकर	3 00 000
दण्डकर	80 000
घु आकर	20 000
	4 00 000

महारावल जवाहरसिंह(1914-49 ई)के समय राज्य की आय 3 71,000 रु होने का प्रमाण मिलते हैं ।

---

20 टाड ने जसलमेर राजा का वार्षिक पारिवारिक व्यय का हिसाब इस प्रकार दिया है–

1	बार(राजा के निजी अनुचर आग रक्षक गुलाम आदि एक हजार व्यक्ति)	20 000 रु
2	रोजगार सरदार	40,000 रु
3	वतनिक सेना	75 0J0 रु
4	हाथी घोड़े ऊंट	35 000 रु
5	घुड़सवार 500	60 000 रु
6	रनिवास	15,000 रु।
7	तोशाखना	5,000 रु
8	दान पुण्य	5,000 रु
9	पाकशाला	5,000 रु
10	अतिथि	5 000 रु
11	उत्सव	5,000 रु
12	ऊट घोड़ों की खरीद	2 000 रु
		2 91 000 रु

जयपुर—टाड ने जयपुर राज्य म प्रचलित विविध करो का विवरण नही दिया है केवल विभिन्न स्रोतो स प्राप्त आय क आकड दिय है जो इस प्रकार है[21]–

खालसा भूमि से आय	39,19 000
वाणिज्य कर	1,90 000
राजधानी की कचहरी नगर चुगी आदि स आय	▮ 15 000
सामन्तो से वार्षिक कर	4 00 000
अय कर	1,59,00
	48 83 000

इसके अलावा सामन्तो की जागीर आय, ब्राह्मणो को दी गई भूमि की आय क्रमश 17 00 0C0 व 16 00 000 रु थी । ब्रिटिश सरकार क साथ राज्य की सधि हुइ तब वार्षिक कर निर्धारण करत समय 40,00 000 रु की आय मानी गई जो राजस्थान के दूसरे रजवाडा से कही अधिक थी[22]

राज्य आय मे जागीर भूमि की आय सम्मिलित नही की गई है। जागीरदार व पटटायतों को रोकड वतन नही देकर भूमि (गांव) आवटित की जाती थी । अत राज्य की कुल आय ज्ञात करत समय शोधा थियों को जागीर आय के आकडो पर दृष्टि डालना पडगी ।

आय स्रोतों के प्रस्तुतीकरण की एक यह बडी विशेषता रही है कि टॉड ने प्रत्येक राज्य के आय आकडो का आकलन करत समय पूव वर्ती स्थिति के बार म भी जानकारी दी है । पहल राजस्थान राज्यों की आय सतोषजनक थी परन्तु बाद म लुटेरो के आतक और कृषक व व्यापारी वर्ग क साथ राज्य-प्रशासन के व्यवहार म परिवतन आने से आय म गिरा वट आई । समग्रत आयस्रोतो पर दृष्टि डाले तो ज्ञात होता है कि उस समय राज्यो की सर्वाधिक आय खालसा भूमि स होती थी। इसकी तुलना म दूसरे करो से प्राप्त आकडे न्यून हैं। परिशिष्ट म मन राजस्थान राज्यों क आय-स्रोतो की तालिका अकित कर दी है इसस आय विषयक पहलुओं का अध्ययन करने म आसानी रहेगी[23] ।

---

21 एनल्स, भाग 2, पष्ठ 350 351

22 एनल्स भाग 2 पृष्ठ 351

23 दृष्टव्य परिशिष्ट (तालिका)

परिशिष्ट

राजस्थान राज्यों के आय के आंकड़े

राज्य	खालसा भूमि कर	वाणिज्य कर	खानों/नमक की झीलें	घु भावर	मगवर	अन्य	कुल
मेवाड़	9,36 640	2 17 000	○	–	–	★	11 53 640
मारवाड़	15 00 000	4 30 000	7 15,000	–	–	3 00,000	29 45 000
बीकानेर	1 00 000	75,000	–	1 00 000	2 00,000	1,75,000	6 50,000
जैसलमेर	□	3,00,000	–	20,000	•	80 000	4 00 000
जयपुर	39 19,000	1,90 000	–	–	–	7,74 000	48 83 000

○ गवार भू, जावर आदि खाने बन्द नहीं थी ।

★ अन्य करों से प्राप्त आमदनी के आंकड़े टॉड को उपलब्ध नहीं हुए ।

• आंकड़े उपलब्ध नहीं हुए ।

□ जैसलमेर में भूमिकर वसूल किया जाता था परन्तु उसके आंकड़े उपलब्ध नहीं हुए ।

कर्नल जेम्स टॉड का कार्यालय लेखा विवरण

—डॉ ब्रजमोहन जावलिया

पश्चिमी राजपूताना में राजनीतिक प्रतिनिधि के रूप[1] में कार्यरत रह कर कर्नल टाड द्वारा तैयार कराये गये अपने कार्यालय के लेखा विवरण जुलाई 1919 से 1 जून 1922 तक की रूपरेखा जो मुझे प्राप्त हुई है उसके आधार पर किंचित जानकारी यहाँ प्रस्तुत की जा रही है।

कर्नल जेम्स टाड के अधिकार क्षेत्र में कम्पनी की ओर से जो (पालिटीकल)एजेंट स्वयं तथा अधिकारी कर्मचारी चिकित्सक हरकारे या अन्य लोग नियुक्त थे-प्राप्त लेखा विवरण के अनुसार उनके नाम, (यत्र तत्र), पद और मासिक वेतन निम्नानुसार था—

	सनद रुपया	उदयपुरी रुपया
पालिटिकल एजेन्ट—	3500/–	4443/11/7
पालिटिकल एजेन्ट के सहायक (Assistant) प्रत्येक	400/–	507/13/8
सर्जन–	680/–	863/5/7
दफ्तर का अमला		
नल्लाह्–1		45/–
जमादार–1		20/–
हरकारे 8 प्रत्येक को		8/–
डाक कर्मचारी		
उदयपुर से मऊ के लिये		
मुन्शी – 1		25/–
हरकारे 40 पाँच पड़ावों (Stazes) के लिये प्रत्येक		5/–
सरबराही		10/–

उदयपुर से कोटा के लिये–

मुत्सद्दी — 1	20/–
हरकारे 27 पडावों (Stazes) के लिये प्रत्येक	5/–
सरबराही — 1	10/–

कोटा से बूंदी के लिये–

हरकारे — 4 मे पडावा के लिये - प्रत्येक—	5/–

उदयपुर से भीलवाड़ा के लिये

हरकारे 33 ग्यारह पडावा (Stazes) के लिये प्रत्येक	5/–

सिरोही राव के साथ

मुत्सद्दी—1	40/–
हरकारे 4 प्रत्येक	6/–

मवाड़ के सीमान्त से नीमच की छावनी में भवन निर्माण सामग्री और मजदूर आदि (Work man) भेजने के लिये

हरकारे 2	प्रत्येक को	7/–

चित्तौड़ भीलवाड़ा और अजमेर की सीमा पर होने वाले झगड़ों के अवसर पर प्रेषित सैनिक टुकड़ियों के मार्ग दर्शन और सूचना हेतु

हरकारे 4	प्रत्येक	6/–

कर्नल टाड के स्वयं के नियन्त्रण में प्रदेश के विभिन्न भागों में विभिन्न उद्देश्यों से नियुक्त

हरकारे 16	प्रत्येक	8/–

समाचार लेखक (News writes) प्रतिमास रु (उदयपुरी)

उदयपुर में एक हरकारे सहित — हरबक्तसिंह	60/–
कोटा में एक हरकारे सहित — हेमराज	60/–
बूंदी में एक हरकारे सहित — चुन्नीलाल	60/–
बूंदी में एक हरकारे सहित — लालजीमल्ल	60/–
जोधपुर में एक हरकारे सहित —कुरू म कुरू म[1]	60/–

सदर कार्यालय के अमल में कार्यरत व्यक्ति और उनके पद—

रहम रहमान	मुंशी	225/–
महेशचन्द बनर्जी	इंग्लिश राइटर	150/–
उद्धवचन्द्र बोस	इंग्लिश राइटर	112/–

1 यह व्यक्ति मेवाड़ का निवासी था। घर जाते समय उसको रु 60 अतिरिक्त दिया गया।

हिम्मतराम मेवाडी	राइटर	80/-
नारायणदास दूजरार		45/-
बिनरावनदास	फारसी मुन्शी	45/-
नाथूराम	हिन्दवी राइटर	25/-
रादाकिशन	हिन्दवी राइटर	25/-
खानबर	दफ्तरी	17/-

खरीद फरोख्त-

कनर जेम्स टाड न अपने कार्यालय के लिय जुलाई 1819 और सितम्बर 1820 म कलकत्ता स्थित फर्म टी **डोरमिका एण्ड कम्पनी गोल्डस्मिथ एण्ड ज्वलरस** कलकत्ता स 6720 रु आन 1 पाइ मूल्य की वस्तुए खरीदी । य सभी वस्तुए प्राय रजत निर्मित थी । उन क्रीत वस्तुओं क बिल की प्रतिलिपि यथावत् उद्धृत है—

Captaion games Tod Calcutta 30 th September 1820 bought of
Dormica & Co Gold smith & jewellers

1819 July To 1 Octogon shape silver Hircarrah plate with silver guilt Company s coat of arms crest & Political Agent W R S embassed on ditto 30/ /

To 1 Silver office seal with horn handle and compa ny s coal of arms engraved for the political Agent office 25/ /

17 To 1 Octagon shape silver Hircarrah plates with silver guilt compny s coat of arms crest and polical Ag ent W R S embossed on ditto at 30 330/ /

To 4 Silver circular vegetable dishes with covers & receptacles for Hot watered solid Gradoon ed ges pawleet & ca with workmanship and horn handle snt 897 2 1241/8/9

To 2 Silver oblong shape Bufstatic dishes with cov ers and livers to match wg 578 with work man hip and horn handles 730/ /

To 2 silver oval curry dishes to match wg 542 b with workmanship and horn handles 749/12/3

To 1 Handsome silver sauce or silver pan with shipl ine handles egg frame and stand w g 16 with workmanship and horn handles and tops 235/6/

To	1	Silver and jant dish with gradoon edges to ma tch wg 60 with workmanship	83/2/6
To	1	Silver circular pye dish wg 47 with do	64/10/
To	2	Silver sauce coals with covers and liners wg 192 with do E horn handles	267/ /
To	2	Silver sance ladles wg 7 with workmanship	9/10/
To	4	Silver muffineers gilt irside w ■ 39 8 with do	67/4/
To	4	Silver salt collars w g 56 with do and gilding	87/ /
To	4	Silver salt ladles mg 4 with do do	7/8
To	12	Silver egg cups mg 70 with do do	114/4/
To	1	Silver potent shape toast racks w g 58 13 do	80 10/
To	1	Pair silver Battle stands w g 39 12 with work manship mahogony bottoms and cloth for do	58/10 6
To	1	Pair of silver gilt do w g 25 12 with workman ship gilding mahogony bottom & cloth	81/2/6
So	3	Silver mounted cork.	12/ /
To	3	Silver gilt do	18/ /
To	2	Pierced silver gilt olverspoons	20/ /
To	1	Fashionble silver butterurn wg 190 with workm anship gilding lead snroy and horn handles	270/4/
To	2	Silver gravy spoons w g 24 12 with workma nship	34/ /6
To	1	Silver salted Torch w g 6 with do	18/10/3
To	1	Silver tumbler s cover mg 90 with do	128/4/
To	12	Silver claret glass do 61 12 with do—	84/2/
To	*12*	*Silver m dn era do 48 6 with do*	*66/8/3*
1819 To 17 th August		Engraving coat of arms brests and mottos	186/ /
To		Silvering for keys	90/ /
To	*2*	*Pounds of fine polishing alk 2 Boxes ot super* fine p ate power	6/ /-
		2 strong iron bound teek wood pl. a che ts w th lifting Trays partitions lined with green barg s spring patent Padlock and keys brass name pla tes with company s coat ot arms brest and math engraved W R S	196/ /
1820 To Jun 30 Sep 30	4	Silver Ice forms with covers Wg 37 6 with workmanship	57/6/

2	Silver of oblong shape dishes with Gradoon edges do	419/8/
	Making ditto	157/5/
	Horn handle wg	4/ /
2	Silver smale do wg	287/ /
	Making do	85/2/
	Horn handles	2/ /
1	Silver milk ladle wg	12/4/
	Making do -	4/9/7
1	Silver sugar urn - wg	100/8/
	Making do	87/11/
	Horn handle	2/ /
1	Silver Piereed sugar ladle	12/ /
1	Silver Nutring grates	32/ /-
1	Silver butter knife	6/ /
	Engraving coat of arms on ditto	31/8/
1	Silver gilt octagon shape Hircarrah plate with company s coat of arms	30/ /
	Packing case	1/ /-
	g Total	6720/2/9

sd

E E & content received

T dormica & co

True copy

सितम्बर 1820 म सरकार स प्राप्त स्वीकृति क आधार पर दिसम्बर 1820 म निम्नांकित खरीद की गयी।

23 ऊंट — जिनम से 2 मर गय—	रु 2308/—
डबल पोलिश पर्दे ट—	1158/—

कतिपय अन्य वस्तुए भेंट आदि देन क लिय खरीद कर टॉड क तोशाखान म जमा की गयी। जिनका विवरण दिसम्बर 1819 के टॉड क तोशाखान क लेखे म अंकित किया गया।

शाल का एक जोड़ा	110/–
दो दुपट्टे	110/–
एक पगड़ी	15/–
शाल क जोड़ 3 दर प्रति जोड़ा 120/– रु	360/—

किनख्वाब के टुकड़े 3	326/11/–
गुजराती मशरूम 4 टुकड़े	47/80/
पगड़ियाँ 6	99/12/–
साड़ी 1	108/80/–
मलमल (Muslins) 2	40/11/—
खिलअता पर स्वर्ण न्तु रेशम के मानपात्र 20 बनवाय जिन्हें	
टाड के तोशखाने म जमा करवाया	140/—/—

कोटा और बूदी म राजाओं तथा अन्य व्यक्तियो क भेंट हेतु यूरोप म निर्मित वस्तुए सरकारी स्वीकृति स मगवाई गई । 1475/-

पोलिटिकल एजन्ट क कार्यालय में देश के आगारा मथुरा फरूखाबाद आदि कोषागारो पर विभिन्न व्यक्तिया के पक्ष म बिल प्रवित करके सभी राशि प्राप्त की जाती थी । उनका तथा अन्य माध्यमों से प्राप्त आय का भी उल्लेख मिलता है । November 1920 के आय खात म पब्लिक कटल (Public Cattle) के विक्रय स प्राप्त राशि के अन्तर्गत—

हाथी	रु 800/—
एव घोड़ा	रु 500/—

म बचने का भी उल्लेख है।

इन्ही बिलो के प्रमाण म प्रभृति अनेक व्यक्तियो और संस्थाओं के नाम प्राप्त है जिनके पक्ष म देश क विभिन्न स्थानो के कोषागारों म बिल प्रस्तुत किये गये थ । य कोषागार वहाँ क कलक्टरों द्वारा सचालित थ।

व्ययतालिकाओं म कार्यालय में स्टेशनरी आदि पर खर्च दानपुण्य इनाम अन्धबधिर आदि अपगव्यक्तियों को सहयोग राजामहाराजा राणा राजराणा आदि स जीनत खिलअत आदि लकर आन वाले कर्मचारियों को इनाम आदि क विवरण भी लिखे गये हैं ।

यत्र - तत्र सनन्दी रुपये को उदयपुरी जोधपुरी आदि मुद्राओं में परिवतन अथवा इन देशी सिक्कों के सनन्दी सिक्कों म परिवतन पर लगन वाल बट्टे की राशि का भी उल्लेख प्राप्त है जो 21 रु 8 प्रतिशत स लगा कर 30 रु प्रतिशत तक मिलती है ।

उक्त लेखा तालिकाओं की पूर्ति म Contingent charges का विवरण तथा खर्चों के Abstracts भी प्रस्तुत किय गय हैं । यहा नवम्बर 1820 से अगस्त 1821 तक के खर्चों के एस Abstracts प्रस्तुत किये जा रह हैं—

Abstract charges general for the month of Nov 1820

SALARIES

Political Agent – western Rajpoot States		
▪	Rs 3500/	4443/11/7
Assistant to dittoo as per enclosure no 1	400/	507/13/8
Surgeon to ditto as per do no 2	680/	863/5/7
writers moonshee and lallahs as ec no 3		724/ /
News writers as end do	4	– 232/12/
contingent charges		6771/10/10
As per enclosures no 5		1122/8/3

EXTRA CHARGES

To Amount purchase of 23 camels in december laot sanctioned by government as per letter sept 1820 and with exception of 2 since di ed transfeired to the commissariate as enclosed receipt Sonat Rs 2300 or 2794 8 0

To Amount purchase of a double polid purpet te nt sanctioned by Government letter dates sept ember 1820 as enclosed accompanying voucher sont ruphees 1158 or 1406 15 ▪

	4201 7 6
Total Oodipoor Rupees	12095 10 7

oodipoor december 1st 1820 erros excep tes(signed)James Tod west Raj States Pol Agent

Abstract of charges general for the month of December 1820

Abstract Dec 1820

Dawk chayes	812/8
Hircarreh etc	248/2/0
Atra bettle etc for visitor	10/ /
Enaum & other chasitz	52/13/
Stationery for the persian and hindveedufter	18/11/6
	1142/2/6

JUNE 1921 Sent on 1st July 1921

Salaries	6771/10/10
Stationery for the Persion & Hindvee dufters	25 /
Atr bettle etc for visitors	10/ ,
Contingent charges as per enclosure no ■	1728/7/
Total ooditoor	8535/1/10

JULY 1921

Salaries	6910/15/4
Stationery for Per & Hindvee dufter	25/ /
Atr bettle for visitor	10 /-
Contingent charges	1537/7/6
Total	8383/6/10

AUG 1921

Salaries	6910/15/4
Stationery for the P & H dufter	25/
Atr bettle etc for visitors	10/ ,
Contingent charges	6436 5/6
Total	13382/4/10

उक्त लेखा तालिकाओं की पूर्ति के क्रम में Contingent charges का विवरण तथा सबके अन्त में इन खर्चों के Abstracts भी प्रस्तुत किये गये हैं। नवम्बर 1820 से मार्च 1822 तक के इन खर्चों के Abstracts का ज्यों का त्यों विवरण में प्राप्त है का वृतांत भी मिलता है।

प्रस्तुत लेखा विवरण से यह स्पष्ट होता है कि कर्नल जेम्स टॉड की प्रवृत्ति प्रत्येक कार्य का सम्पादन सुचारु रूप से करने की थी। उसने जिस प्रकार अपने द्वारा अपनाये गये भू-सर्वेक्षण और मानचित्रीकरण के कार्य को सुसम्पादित किया निश्चित योजना और दूर दृष्टि से मार्गों के और संधि समझौता विषयक कार्यों का निपटारा अपने द्वारा संग्रहीत ऐतिहासिक और पुरातात्विक सामग्री का सम्पादन कर विश्वजगत के सम्मुख प्रस्तुत किया उसी प्रकार अपने कार्यालय के आवश्यक लेखा विवरण को भी व्यवस्थित रूप देते हुए उसे लिखित रूप से भी सुरक्षित किया।

मैं अपने मित्र श्री इन्दुशेखर के प्रति आभार व्यक्त करना अपना कर्तव्य समझता हूँ जिनसे मुझे यह सामग्री प्राप्त हुई।

टॉड द्वारा वर्णित राजस्थान के दुर्भिक्ष

—डॉ कमला मालू

कर्नल टॉड के इतिहास का मुख्य उद्देश्य राजपूताना का राजनीतिक इतिहास उजागर करना रहा है। राजस्थान के इतिहास में राजपूत नायकों की शौर्य वीरता की विस्तृत चर्चा हुई है। किन्तु साथ ही कुछ ऐसे कठोर एवं कटु सत्य प्रसंगों का वर्णन करना भी था जिसके बिना राजपूताने का इतिहास पूरा नहीं हो सकता। वह विषय है राजपूताने में दुर्भिक्षों का वृत्तान्त।

टॉड ने अपनी ऐतिहासिक ग्रंथ एनाल्स में उन कुछ अकालों का वर्णन किया है जिन्होंने 17 वीं शताब्दी के बाद विशेषकर मेवाड़ की भूमि का विध्वंस किया। इन दुर्भिक्षों का वर्णन करते हुए टॉड ने अत्यधिक अभावों में रहने वाले व्यक्तियों के बहुत कष्टों एवं उनकी दयनीय स्थिति का जीवन्त चित्रण किया है।

टॉड ने अकाल को राजस्थान के पश्चिमी क्षेत्र की एक महान प्राकृतिक बीमारी बताया है।[1] (द ग्रेट नेचुरल डिजीज ऑफ दी वेस्टर्न रीजन ऑफ राजपूताना) उसने रेगिस्तान में जल समस्या के विषय में भी विस्तृत जानकारी दी है। उसके मत में इस क्षेत्र में अकाल का मुख्य कारण पानी का अभाव है। मरुस्थल में कुओं की गहराई का भी उसने वर्णन किया है।[2]

टॉड ने मेवाड़ की जलवायु का वर्णन करते हुए लिखा है कि यहाँ

---

1 टॉड, एनाल्स एण्ड एन्टिक्वीटीज ऑफ राजस्थान, भाग द्वितीय, पृष्ठ 264

2 उपरोक्त, पृष्ठ 264, मरुस्थल में कुओं की गहराई 65 से 135 फीट थी, कुछ कुए 700 फीट गहरे भी होते थे।

पर विभिन्न प्रकार की मिट्टी है तथा इस क्षेत्र में पानी का अभाव रहा है। हम जानते हैं कि मेवाड़ की भूमि राजस्थान का मरुद्यान कहलाता है। फिर भी मेवाड़ को अनेक बार अकाल का सामना करना पड़ा[2]।

सर्वप्रथम अकाल जिसका उल्लेख टाड ने एनाल्स में किया है वह 11वीं शताब्दी का भयंकर दुर्भिक्ष था। यह अकाल राजस्थान के पश्चिमी मरुप्रदेश में पड़ा था और वहां की जनता बारह वर्ष तक इस प्रकार के कष्टों से पीड़ित रही। चूंकि यह अकाल बारह वर्ष तक चला था और बहुत ही प्रचण्ड दुर्भिक्ष था तो सर्वप्रथम इसने सम्पूर्ण राजस्थान को प्रभावित किया होगा।[3]

इसके बाद टॉड ने मेवाड़ के जिस सर्वप्रथम भयंकर दुर्भिक्ष का वर्णन किया है वह 1661–62 ई. में पड़ा था। टाड के वर्णन से पूर्व भी इस महाकाल का वर्णन हमें राजप्रशस्ति द्वारा प्राप्त होता है। महाराणा ने कांकरोली में राजसमन्द झील का निर्माण करवाया था। उस पर उत्कीर्ण लेख राजप्रशस्ति से हमें ज्ञात होता है कि 1661–62 ई. में महाराणा ने अकाल राहत कार्य के रूप में इस विशाल झील का निर्माण कराया था।

कर्नल टॉड ने मेवाड़ के इस अकाल की परिस्थितियों का सजीव चित्रण किया है।[4] टाड के अनुसार महाराणा चारभुजा की कृपा प्राप्त करने के लिए मन्दिर में गए क्योंकि आषाढ़ का महीना समाप्त हो गया था और आसमान से एक भी बूंद पानी नहीं बरसा। इस प्रकार जीवन और आशा के महीने भी व्यतीत हो गए। पानी के अभाव में सर्वत्र निराशा छा गई और लोग भूख से पागल हो गए थे। ऐसी खाद्य जो खाद्य के रूप में नहीं खाई जाती थी लोगों द्वारा खाई जाने लगी। पति ने पत्नी का त्याग किया और माता-पिता ने अपनी सन्तानों को बेच दिया। [illegible] और ऐसा बुरा समय आ गया और यह अकाल दूर-दूर तक फैल गया। यहां तक कि ढोर-डांगर भी मरने लगे क्योंकि उनके खाने के लिए भी कुछ नहीं बचा था। हजारों व्यक्ति भूख के शिकार हो गए।

---

3 अ टाड एनाल्स भाग 2 पृ 264
  ब इम्पीरियल गजेटियर आफ इण्डिया प्रोविंशियल सिरीज राजपूताना पृ 62
4 टाड एनाल्स – भाग एक पृ 310 11

जिनको साद्य पदार्थ उपलब्ध होते थे अब वे दो बार खाते थे। पश्चिमी हवाएं चलने लगी जो घातक थी। आकाश इतना स्वच्छ था कि तारा-मण्डल रात्रि का स्पष्ट दिखाई देता था तथा दिन में भी बादल दृष्टिगत नहीं होते थे। यहां के लोग बादलों की गड़गड़ाहट व बिजली की चमक भूल चुके थे। इन अशुभ लक्षणों ने लोगों को भयभीत कर दिया था। नदियां झीलें और कुए सूख चुके थे। पुजारी अपने कर्तव्यों को भूल गए। अब कोई जातिगत भेद दिखाई नहीं देता था। तथा शूद्र और ब्राह्मण में अन्तर करना कठिन था। शक्तिशाली बुद्धिमान उच्च जाति जन जाति के सब भेद समाप्त हो चुके थे। प्रत्येक का ध्येय केवल भोजन प्राप्त करना था। चारों वर्णों की पृथक पहचान समाप्त हो गई भूख में सब कुछ खो गया। फल-फूल तथा अन्य वनस्पति यहां तक कि वृक्ष की छाल तक भी भूख की तीव्रता मिटाने के लिए उपयोग किया गया। मनुष्य-मनुष्य को खाने लगा। लोग नगरों से भागने लगे। परिवारों का समूल विनाश हो गया। महफिलें समाप्त हो गई थी।[5]

टॉड आगे वर्णन करता है कि इस भयानक तथा अनिष्टकारी महामारी से मेवाड़ मुक्ति का नाम भी नहीं ले पाया था कि इस क्षेत्र में मुगल सम्राट औरंगजेब के विनाशकारी धर्म-युद्ध प्रारम्भ हो गये। अकाल से पीड़ित किन्तु इस पवित्र मेवाड़ भूमि को औरंगजेब के विध्वंसक युद्धों ने और अधिक विनाश की ओर धकेल दिया।

टॉड राजसमन्द झील का अकाल सहायता कार्यक्रम के रूप में विस्तार से वर्णन करता है। टॉड ने इस झील के निर्माण को एक महान राष्ट्रीय कार्य की संज्ञा दी है जो सच भी है। टॉड इस विशाल झील की सुन्दरता का विस्तृत वर्णन करते हुए प्रशंसा करता है। वह कहता है कि इस झील की मुख्य सुन्दरता इसके परोपकारी उद्देश्य में निहित है। जिसके लिए इसका निर्माण हुआ है। अर्थात जब राज्य के दैव प्रकोप दुर्भिक्ष अथवा महामारी प्रभावित हो तो राज्य द्वारा भूखी प्रजा को रोजगार

---

5 म टॉड एनाल्स भाग I पृ 310 11

व इम्पीरियल गजेटियर आफ इण्डिया, प्राविन्शियल सिरीज, राजपूताना पृ 62

से बचाना तथा उनके श्रम व रोजगार का राष्ट्रीय हित में लगाना इस झील के निर्माण का मुख्य उद्देश्य था।[6]

इस झील के निर्माण में सात वर्ष लगे तथा महाराणा ने इस पर छियानवे लाख (96 लाख) रुपए खर्च किये। इससे अकालग्रस्त लोगों को कुछ राहत मिली।

टॉड द्वारा वर्णित उपरोक्त 1661—62 ई. के दुर्भिक्ष का विवरण महाराणा राजसिंह के शासन काल में रचित 'राज विलास' पर आधारित है। कर्नल जे सी ब्रुक ने अपनी सन 1870 की राजपूताना की अकाल रिपोर्ट में तथा कविराजा श्यामलदास ने भी अपने ऐतिहासिक ग्रंथ 'वीर विनोद' में उपरोक्त दुर्भिक्ष की विभिन्न घटनाओं का वर्णन किया है जो टॉड द्वारा वर्णित विवरण से बहुत मिलता जुलता है। उदाहरण के लिए जे सी ब्रुक ने महाराणा के इस परोपकारी कदम कांकरोली के संगमरमर के बांध की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि उदयपुर के महाराणा राजसिंह ने अपनी प्रजा को भयंकर विपत्तियों से बचाने के लिए दस लाख स्टर्लिंग व्यय किये थे। इस बहुमूल्य तथा अलंकृत संगमरमर के खम्भों के बांध का निर्माण पहाड़ों से बहने वाले पानी और झरनों को रोकने के लिए किया गया था। सात साल तक इस बांध के निर्माण से दुर्भिक्ष से पीड़ित व्यक्तियों को रोजगार प्रदान किया गया।[7]

सन् 1764 का दुर्भिक्ष —

सन 1764 ई. का वर्ष मेवाड़ राज्य के लिए एक अत्यन्त कष्टमय प्रकार का वर्ष रहा होगा क्योंकि टॉड इस समय का वर्णन करते हुए लिखता है कि अन्न और रुपयों का एक ही भाव था और वे एक के बाद उड़ पार चली जा रही थी।[8]

सन् 1803–04 का दुर्भिक्ष —

1803 04 का वर्ष भी राजपूताने में सामान्यतः अभाव व अकाल का

---

6 टॉड—एनाल्स एण्ड एंटीक्वीटीज ऑफ राजस्थान भाग 1 पृ 310 11

7 ब्रुक जे सी रिपोर्ट ऑफ दी फेमिन इन राजपूताना एण्ड अजमेर मेरवाड़ा 18 10 प 17 फेमिन डिपार्टमेंट ए मार्च 1811 न 84 36

8 राजपूताना गजेटियर भाग 1 ए पृ 60

वर्ष था । इस अकाल का प्रभाव मेवाड़ राज्य में अधिक विकट था क्योंकि मेवाड़ भूमि इस समय मराठों की उपस्थिति से अभिशप्त थी । मराठे जयपुर जा रहे थे और इस समय मेवाड़ में ठहरे हुए थे । टाड लिखता है कि मराठा नेता सिंधिया के सेनापतियों ने बदकिस्मत महाराणा से तीन लाख रू. ऐंठ लिये । महाराणा भीमसिंह को अपनी पारिवारिक बहुमूल्य वस्तुएँ तथा रनिवास की महिलाओं के जेवरात बेचकर यह राशि एकत्र करनी पड़ी थी ।[9]

टाड ने राजस्थान के दुर्भिक्षों की भयावह स्थिति का वर्णन करने के साथ अन्न संचय करने के उपाय आदि महत्वपूर्ण जानकारियाँ दी हैं । जैसे कोटा के शासक जालिमसिंह द्वारा अपनाई गई अनाज सुरक्षित रखने की पद्धति का टाड ने विस्तृत वर्णन किया है । टाड ने लिखा है कि जालिमसिंह ने ग्रेन पिटस या अनाज के गड्ढों में अनाज को वर्षों तक सुरक्षित रखने की परम्परागत वैज्ञानिक पद्धति को अपनाया । इसने देश के विभिन्न भागों से लगभग 50 लाख मन अनाज एकत्र किया और उसे ग्रेन पिटस में सुरक्षित कर लिया था । युद्ध समय में ही ये अनाज के भण्डार प्रकाश के दर्शन कर पाते थे । या फिर पड़ोसी राज्यों में अकाल के समय ये भण्डार खोले जाते जब अनाज की कीमत 12 रुपये प्रतिमनी (12 मन) से बढ़कर 40 रुपये या अकाल भाव 60 रु. प्रति मनी हो जाते ।[10] ऐसे समय में ये भण्डार सोने की खानों के समान होते थे ।

टाड के अनुसार कोटा राज्य द्वारा एक ही वर्ष में ऊँचा कीमतों पर 60 लाख मन अनाज बेचा गया । सन 1804 में दुर्भिक्ष में कोटा के शासक ने स्थिति का बड़ा लाभ उठाया । जब राजस्थान के रजवाड़े सन 1804 में एक तरफ तो अकाल से पीड़ित थे और दूसरी ओर भरतपुर में होल्कर तथा अंग्रेजों में युद्ध हुआ तो साधारण लोगों की स्थिति और भयावह हो गई । इस समय जालिमसिंह द्वारा सम्पूर्ण रजवाड़ा तथा घुमक्कड़ बंजारों की आवश्यकताओं की पूर्ति की गई । इस समय कोटा राज्य ने एक करोड़ रुपये का अनाज बेचा ।[11] यह माना जा सकता है कि कोटा के शासक ने मेवाड़ को भी अनाज बेचकर

---

9 टाड एनाल्स एण्ड एन्टीक्विटीज ऑफ राजस्थान, भाग 1 पृ. 362
10 टॉड एनाल्स एण्ड एन्टीक्विटीज ऑफ राजस्थान भाग 2 पृ. 437
11 उपरोक्त—भाग 2 पृ. 439

दोनों हाथों से धन बटोर कर अपने राज्य का खजाना भरा होगा क्योंकि कोटा राज्य उस समय अकाल से प्रभावित नहीं था।[12]

1812-13 का दुर्भिक्ष—

सन् 1812-13 में बम्बई, गुजरात, राजपूताना तथा यमुना पार के नोर्थ वेस्ट प्राविन्सेज में अकाल का संकट व्याप्त था। राजपूताना में सन् 1812-13 का अकाल उतना ही भयानक था जितना सन् 1661 का अकाल था।[13] मेवाड़ में फसल बिल्कुल नष्ट हो गई थी अतः वहाँ की स्थिति अधिक संकटमय हो गई। श्यामलदास के अनुसार मेवाड़ के महाराणा भीमसिंह ने अपने सेवकों के जीवन की रक्षा के लिए राज परिवार के व्यक्तियों के निजी आभूषणों को बेच दिया।[14] किन्तु उसमें ऐसा कोई उल्लेख नहीं है कि सामान्य प्रजा के लिए महाराणा ने कोई उल्लेखनीय काम किया हो। उस समय मेवाड़ राज्य वित्तीय दृष्टि कोण से दिवालियापन की स्थिति में था तथा राज्य के पास लोगों को राहत पहुँचाने के वास्ते कोई सुव्यवस्थित नीति भी नहीं थी।

यह एक अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि टॉड ने 1812-13 के इस महान दुर्भिक्ष का कहीं वर्णन नहीं किया है जो कि राजपूताने में 19 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध का सबसे गम्भीर अकाल था।[15] जब कर्नल ब्रुक ने 1868-69 के दुर्भिक्ष पर रिपोर्ट लिखी तो वृद्ध व्यक्तियों के मस्तिष्क में 1812-13 के अकाल की विभीषिका की याद तरोताजा थी।[16] हम सभी जानते हैं कि 1812 से 1817 तक कर्नल टॉड राजपूताना एवं मध्य भारत के भौगोलिक एवं स्थान-वर्णन सम्बन्धी आंकड़े एकत्र करने में व्यस्त था। उसके पश्चात वह 1818 से 1822 तक अपनी एनाल्स के लिए सूचनाएं तथा आंकड़े एकत्रित करने में व्यस्त रहा था। इस अवधि में अपने भ्रमण

12 टॉड, एनाल्स एण्ड एन्टीक्वीटीज आफ राजस्थान, भाग 2, पृ 438

13 एडम्स, ए., वेस्टर्न राजपूताना स्टेटेज, पृ 143

14 (अ) राजपूताना गजेटियर्स, भाग 2, पृ 60

(ब) श्यामलदास, वीरविनोद, भाग 4, पृ 1740

15 विलियम डिग्बी, ब्रिटिश इण्डिया, पृ 125-126

16 फॉरेन डिपार्टमेंट, इन्टरनल, ए, मार्च 1871, नम्बर्स 34-36, ब्रुक, जे. सी., रिपोर्ट आन दी फेमीन इन राजपूताना एण्ड अजमेर मेरवाड़ा 1870, पृष्ठ 7

के दौरान राजपूताना के अनेक भागों में अकाल की स्थिति का ज्ञान टाड को अवश्य रहा होगा। क्योंकि उसने रेगिस्थानी इलाके में उत्पन्न प्रभावों का वर्णन कुछ शब्दों में किया है।[17] टाड के अनुसार अनाज के अभाव में यहां के लोगों को पेड़ की पत्तियां छाले जड़ व झाड़ियां खानी पड़ी थी। सिरोही मारवाड़ में कई लोग भूख के कारण मर गये थे। इसके अतिरिक्त टॉड ने मेवाड़ में दुर्भिक्ष या अन्य स्थानों में अकाल के प्रभावों का कहीं वर्णन नहीं किया है।

जबकि एडम्स ने एक स्थान पर लिखा है कि सन 1812-13 के अकाल में मारवाड़ में अनाज की कीमत इतनी ऊंचाई पर पहुंच गई थी कि एक रु. का केवल आठ सेर अनाज मिलता था।[18]

टॉड द्वारा राजपूताना के कतिपय दुर्भिक्षों के चित्रण का यदि हम एक नजर देखें तो पायेंगे कि सम्पूर्ण वृत्तान्त क्रमवार वर्णनात्मक है।

दूसरी मुख्य बात उसके वर्णन में यह देखने को मिलती है कि उसके द्वारा अकाल की परिस्थितियों का वर्णन पूर्व वर्णित वृत्तान्तों पर आधारित है। क्योंकि जिन दुर्भिक्षों का टॉड ने वर्णन किया है उन अकालों को टाड ने स्वयं ने नहीं देखा था।

इसी प्रकार अकाल के कारणों पर भी टॉड ने विशेष प्रकाश नहीं डाला है। अधिकतर उसने वर्षा के अभाव को ही अकाल का कारण बताया है। टॉड ने यह भी कम ही दर्शाया है कि इन भयंकर दुर्भिक्षों के राजपूताना के रजवाड़ों पर क्या दुष्प्रभाव पड़े?

राज्य द्वारा अपनी प्रजा को दिए गए अकाल राहत कार्य के विषय में भी टॉड ने कोई विशेष वर्णन नहीं किया है। हां अकाल राहत कार्य के रूप में कांकरोली पर राजसमन्द झील के निर्माण कार्य का विस्तृत वर्णन एक अपवाद है।

---

17 टॉड एनाल्स एण्ड एन्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान भाग 2 पृ 264
18 एडम्स - दी वेस्टर्न राजपूताना स्टेट्स, पृ 143

यद्यपि टाड ने सन 1661 के मेवाड़ के अकाल का अत्यन्त विस्तृत वर्णन किया है। किन्तु उसके पश्चात बाद में पड़ने वाले अकालों का वर्णन नहीं किया है। उदाहरणार्थ सन 1747 1756 1764 1783 85 एवं 1789 के अकालों[19] का वर्णन उसकी पुस्तक में नहीं मिलता है। सम्भवतः इन दुर्भिक्षों का विस्तृत वर्णन टाड को उपलब्ध नहीं हुआ होगा। बाद में जो भी अकाल की फमीन रिपोर्ट में तथा राजपूताना गजेटियर में इन अकालों का कुछ वर्णन हमें मिलता है।

लेकिन टाड के एनाल्स से हमें राजपूताना के कुछ राज्यों में अकाल सम्बन्धी जो वर्णन प्राप्त होता है उसकी कमियों को हमें नजरअन्दाज करना पड़ता। क्योंकि हम बात से हम भलि भांति परिचित हैं कि टाड का एनाल्स लिखने का मुख्य उद्देश्य राजपूताने के विभिन्न राज्यों के राजनैतिक इतिहास का वर्णन करना तथा राजपूत जाति के शौर्य एवं वीरता के कार्यों की विशिष्टता प्रदान करना था। फिर भी जो वर्णन टाड ने राजपूताना के अकालों के विषय में किया है उसका ऐतिहासिक महत्व कम नहीं है। इसीलिए टाड के इन वर्णनों का उल्लेख हमें बाद के कविराज श्यामलदास के वीर विनोद ग्रन्थ तथा इम्पीरियल गजेटियर में मिलता है।

---

19 अ इम्पीरियल गजेटियर आफ इण्डिया प्रोविन्शियल सिरीज राजपूताना पृ 62
ब सरकार, जे एन फाल आफ दी मुगल एम्पायर भाग 1 पृ 284
स फोरेन डिपार्टमेंट जन ए, मार्च 1871 नं 34 36 बक जमी रिपोर्ट आफ दी फैमीन इन राजपूताना एण्ड अजमेर मेरवाड़ा 1870 पृ 7
द राजपूताना गजेटियर्स भाग 2 पृ 60

टॉड के नाम महाराणा भीमसिंह के पत्र

—डॉ गिरीशनाथ माथुर

जनवरी 13 1818 ई को ईस्ट इण्डिया कम्पनी के प्रतिनिधि चार्ल्स थियोफिलस मेटकाफ व मेवाड़ के प्रतिनिधि ठाकुर अजीतसिंह के माध्यम से कम्पनी व महाराणा भीमसिंह के मध्य सुरक्षात्मक संधि हुई।

संधि की छठी शर्त के अनुसार यह तय किया गया कि पाँच वर्ष तक वर्तमान उदयपुर राज्य की आय का चतुर्थांश (एक चौथाई) प्रति वर्ष अंग्रेजी सरकार को खिराज में दिया जायगा और इस अवधि के बाद हमेशा रुपये पीछे छः आना। खिराज के विषय में महाराणा किसी और राज्य से कोई सम्बन्ध नहीं रखेंगे और यदि कोई उस प्रकार का दावा करेगा तो अंग्रेजी सरकार उसका जवाब देने का इकरार करती है।[1]

टॉड के अनुसार मेवाड़ की राजस्व से होने वाली आय 1818 ई से 1821 ई तक दिन दिन बढ़ती रही।[2] किन्तु संधि के अनुसार खिराज की राशि नहीं चुकाई जा सकी और वह बढ़कर आठ लाख रुपये हो गई। तब महाराणा भीमसिंह ने टॉड को पत्र लिखकर बकाया खिराज चुकाने का आश्वासन देते हुए उन गांवों के राजस्व को सौंप कम्पनी को देना भी तय किया जिनकी आय बकाया खिराज के बराबर थी।[3]

राजस्थान राज्य अभिलेखागार, उदयपुर में उपलब्ध महाराणा भीमसिंह

---

1 ओझा गौरीशंकर हीराचन्द उदयपुर राज्य का इतिहास दूसरी जिल्द पृष्ठ 704

2 देखिये परिशिष्ट 1 टॉड जेम्स, एनल्स एण्ड एण्टिक्विटीज ऑफ राजस्थान भाग 1, पृष्ठ 309

3 देखिये परिशिष्ट दो - गांवों की सूचि कप्तेन कॉब का आवदर जाना का का निर्णय पत्र 27 जून 1823 नं 20 23, रा अभि नई दिल्ली

द्वारा टॉड को लिखे पत्रों से ईस्ट इण्डिया कम्पनी के बकाया खिराज के भुगतान के प्रति महाराणा की कटिबद्धता का पता चलता है।

प्रस्तुत प्रथम पत्र में महाराणा ने टॉड को लिखा कि राजस्व के अधिकारियों को चार वर्ष के बकाया रुपये देने हैं —सके सिवा तीन वर्ष के (आय)रुपये खर्च नहीं करेंगे। तुम्हारे माध्यम से सात बरस (वर्ष) तक कम्पनी के रुपये देने हैं। मेरा वचन है कि वो रुपये साथ ही जमा करवा दिए जायेंगे।

महाराणा ने इस पत्र में यह भी लिखा कि वे सात वर्ष के बाद ही जमा (राजस्व)खर्च करेंगे। क्योंकि तीन वर्ष के बाद अधिकारियों(कम्पनी अधिकारी)का उस पर कोई अधिकार नहीं होगा। चार लाख रुपये बाकी निकले हैं उसमें से छः लाख रुपये पहुँचेंगे। उसके बाद हम खर्च करेंगे। इससे दोनों पक्षों की ओर से किसी प्रकार की बाधा नहीं पहुँचेगी।[4]

दूसरे पत्र में महाराणा ने टॉड को लिखा कि 1879 के सावण वदि 1 से कम्पनी (रुपये का लेन देन) बकाया चल रहा है। उसके बदले में जहाजपुर, भीलवाड़ा मांडलगढ़ से प्राप्त आय जमा होगी। सं 1879 के पूर्व के दस से सात वर्ष की आय असल दिली। 1879 के वर्ष से ये गाँव लिए। इन गाँवों के रुपयों में से एक पैसा भी खर्च नहीं करेंगे। मेरा वचन है कि वह सारा रुपया साहब लोगों (अधिकारियों) के पास पहुँचा दिया जावेगा। अधिकारियों को तो रुपयों से काम है। इसमें गाँव के अधिकारियों पर दावा नहीं है।[5]

तीसरे पत्र में महाराणा ने लिखा कि सरकार कम्पनी की संवत 1874 माह सुदि 2 से 1878 के असाढ़ सुदि 15 तक की तीन बरस की बढ़ी हुई राशि को चुकाने के लिए राजस्व आय लिख दी है। यह बकाया राशि के बदले पहुँचेगी। उसमें किसी प्रकार की कमी नहीं होगी। तीन वर्ष तक हम एक भी पैसा खर्च नहीं करेंगे।[6]

---

4 टॉड के नाम महाराणा भीमसिंह का पत्र, जेठ वदी 9, बुधवार संवत 1878 राज रा अभि उदयपुर, देखें परिशिष्ट में 3

5 टॉड के नाम महाराणा भीमसिंह का पत्र, जेठ वदि 9, बुधवार, सं 1878, राज राज्य अभि उदयपुर देखें परिशिष्ट में 4

6 टॉड के नाम महाराणा भीमसिंह के सम्बन्ध में लिखा गया पत्र, जेठ वदि 9, बुधवार संवत 1878 राज रा अभि उदयपुर देखें परिशिष्ट में 5

परिशिष्ट सं 1

1818 से 1821 तक मेवाड़ राज्य को करों से होने वाली आय

रबी की फसल से सन	1818 में	40 000 रु
	1819 में	4 51 281 रु
	1820 में	6 59 100 रु
	1821 में	10 18 476 रु
वाणिज्य से होने वाली आय	1818 में	नाम मात्र की
	1819 में	96,683 रु
	1820 में	1,65 108 रु
	1821 में	2,20,000 रु

परिशिष्ट सं 2

गाँवों की सूचि जिनकी आय महाराणा ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी को बकाया खिराज के बदले देना तय किया—

	गाँवों के नाम	संग्रह	खर्च	आय
1	जहाजपुर	90 000	30 000	60,000
2	सादड़ी बनेड़ा	44 000	8 000	36,000
3	मूंज भरक एवं कपासन	35 000	10 000	25 000
4	पुर मांडल	21 000	03 000	18,000
5	हुरड़ा आगूचा	41 000	06 000	35,000
6	सांगानेर ऊखा	10 000	02 000	[illegible] 000
7	भीलवाड़ा से प्राप्त आय	23 000	5 000	18000
8	कुम्भलमेर	84 000	24 000	60000
9	चित्तौड़गढ़	42000	12 000	30,000
10	माण्डलगढ़	42 000	12,000	30 000
11	रायपुर	5,000	1 000	4,000
12	कल्याणा	5 300	1 300	4 000
13	करेड़ा उण्टाला	10 000	2,000	8 000
14	पारसोली भीमसरी	75000	500	7 000
15	मेवाड़ की चुंगी	2,50 000	—	2 50 000
16	रानियों व कुंवरों की जागीर	2 00 000	—	2,00,000
	कुल	9 59 800	1 16 800	8,43,000

परिशिष्ट सं 3

महाराणा भीमसिंह के टॉड के नाम पत्र

पत्र नं 1

स्वीत श्री टॉड साहब जोग सप्रव । देस दाण की देसरा गाम को इजारो थे साहब मान रा बरस 4 रा अपाप्दा लगा जो पटे बरस 3 सुधी आगे अगे या परवाना नवा बरस 3 सुधी कपनी रा हवाल्या हवा यारी मार फत सो परवाना ज्या करा म्हारा वचन हे लगत मुवानी त्या दवारी माजन मा उन्दर। काम जो कर लग बरस तीन पाछ अमो म परवाना साहब लोग ना भीन बरस पर मान्ने नाल रा लाबा नहीं रु 800000 लाख नीकल्या पटे जत रो ननदा य रु 600000 पुगता तीन बरस सुधी पाछ मागा म पर वाना मारो है ता म दाम नरजा नवाबन हो पडता अठ सनो 9 सुद स 1878 का

परिशिष्ट सं 4

पत्र नं 2

॥ स्वस्ति श्री टॉड साहब जाग सप्रव । स 1879 रा मावण बीद 1 थी चोमासी पड जा पर जाजपुर मांमडा वगथी रा मान्दा बाप पड 79 रा बरस थी जो पटे उमा सभी 79 रा बरस पहली लगा हु जो ता बरस 3 दाण माडा तान बरस मु । 79 रा बरस थी ही नाम माडा जा गामा म कना मा । क परवाना ग्हा म्हारा वचन ह वामनी म्हारा साहब लोग रे पुगाया जामी साहब लाल र ता नहीया या काम हे नाम गडा था दावो नहीं लख्य म दी ै नमन्ड तवाइज हुआ पडता अन दन 9 बद म 1878 रा बर

परिशिष्ट सं 5

पत्र नं 3

माथ श्री दीवानजी आग्यानु मारवार वजीरी चोप स 1874 रा म्हा सुद 2 थी मा ■ 1878 रा रा असाड सुद 15 सुधी री बरस 3 री थड़ी चोथ पर देस दाण रा तनपा व माड शीधी मा क्याया ननपाव पर पाचमा हम स्पा-वज पड रा पहीन 1 म कड़े परचा की तीन बरस पाछ अमा म परवाना मारो वचन है लाग थी नवा वजारा ना पातजो कर दाणा मनो मचहुर

—

जेम्स टॉड का मेवाड़ सामन्तों के साथ कौलनामा

—डॉ [illegible] माथुर

जेम्स टॉड का राजस्थान के इतिहास लेखन परम्परा में सर्व प्रथम के रूप में जाना जाता रहेगा। यह उसके 24 25 वर्षों के निरन्तर परिश्रम और सतत अन्वेषण का परिणाम है कि इतिहास जगत को एनल्स एण्ड एण्टीक्विटीज ग्राफ राजस्थान नामक ग्रन्थ उपलब्ध है जिसे आधार बनाकर आधुनिक इतिहासकार शोध के क्षेत्र में आगे बढ़ने में सक्षम हुए हैं। टॉड जब ग्वालियर सिंधिया के यहां पोलिटिकल एजेंट नियुक्त था तब से ही उसका राजपूताना के सभी महत्वपूर्ण राज्यों यथा जोधपुर बीकानेर, जयपुर कोटा बूंदी और मेवाड़ से सम्पर्क बनाया हुआ था। 13 जनवरी 1818 ई को मेवाड़ और ईस्ट इण्डिया कम्पनी के मध्य सुरक्षात्मक संधि होने पर ब्रिटिश सरकार ने उसे वहां का पोलिटिकल एजेन्ट नियुक्त किया।[1]

मेवाड़ दरबार में उपस्थित होने पर वहां के सभा भवन का वर्णन करते हुए टॉड ने गवर्नर जनरल के सचिव जे एडमस को लिखा कि राज सभा में अनेक सामन्त उपस्थित थे, उनमें से कई एक ऐसे भी थे जिन्होंने प्रथम बार महाराणा के दरबार में उपस्थिति दी।[2] उनकी उपस्थिति का कारण बतलाते हुए टॉड ने लिखा कि उनमें से अधिकांश जागीरदार ऐसे थे, जिन्होंने मेवाड़ की अस्थिरता के समय में या तो खालसा भूमि (राजकीय भूमि) पर अनाधिकृत अधिकार कर रखा था अथवा अन्य प्रमुख

---

1 फोरिन सिक्रेट 6 फरवरी 1818 नं 104 107 राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली

2 फोरिन - सिक्रेट, 15 मई 1818 नं 23 राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली

घाटों पर अधिकार कर लिया था जहां से व्यापारी अपना सामान लेकर निकलते थे और ये जागीरदार उनसे भारी रकम चूंगी के रूप में एकत्रित करते थे। स्पष्ट था कि ये जागीरदार न तो खालसा भू भागों से अपना अधिकार छोड़ना चाहते थे और न ही घाटों से प्राप्त आय। अतः उन्होंने अपने सभी पारस्परिक मतभेदों को कुछ समय के लिये भुला दिया और सभी महाराणा के विरुद्ध संगठित हो गये। कुछ इसी प्रकार के उदाहरण देते हुये टाड ने लिखा कि भीण्डर के महाराज जोरावरसिंह ने 43 खालसा कस्बा और गावो पर अधिकार कर रखा था। भैन्सर के रावत हमीरसिंह के पास इस प्रकार के 20 गाव थे। आमेट के रावत सालिमसिंह और लावा के रावत सामन्तसिंह के पास भी महाराणा के अनेकों गाव थे। देवगढ़ के रावत गोकलदास ने मारवाड़ को जाने वाले घाटे पर अधिकार कर रखा था, जहां से वह प्रति वर्ष व्यापारी काफिलो से 60 हजार रुपये चूंगी के रूप में एकत्रित करता था।[3] सलूम्बर के रावत पदमसिंह के अधिकार में खालसा के अनेकों गाव थे। इसके अतिरिक्त वह निरन्तर अपने परम्परागत भाजगढ़ के अधिकार की पुनर्स्थापना की माग कर रहा था।[4]

उपरोक्त जटिल प्रश्नो के सदर्भ में टाड के लिये महाराणा और जागीरदारो के मध्य परस्पर मधुर सम्बन्धो की स्थापना और उन दोनो के बीच समझौता करवाना अत्यन्त कठिन कार्य था। इसके उपरान्त भी टॉड ने अपने प्रयास जारी रखे। उसने कूटनीति का अनुसरण करते हुए एक ओर महाराणा को आश्वस्त रखा कि वह उसके समस्त प्रदेश और राजस्व के अन्य साधन सामन्तो से दिलवा देगा दूसरी ओर उसने असन्तुष्ट जागीरदारो को भी विश्वास दिलाया कि उनके हितो की पूर्णत रक्षा करने का प्रयास करेगा। इसके पश्चात उसने मेवाड़ की तत्कालीन परिस्थितियो का अध्ययन करते हुये एक समझौता प्रपत्र अथवा कौलनामे का प्रारूप तैयार किया और उस पर हस्ताक्षर करने के लिये समस्त जागीरदारो को मेवाड़ दरबार में आमन्त्रित किया। टाड के प्रयासो का परिणाम यह हुआ कि 27 अप्रेल 1818 को तीनो श्रेणियो के लगभग 145 जागीरदार उदयपुर दरबार हाल में इकठ्ठे हो गये। उपरोक्त समझौते की धारायें निम्न लिखित थी—

---

3 फोरेन सिक्रेट 15 जून 1818 न 67 राष्ट्रीय अभिलेखागार दिल्ली
4 उपरोक्त

(1) जागीरदारों द्वारा पूर्व में हस्तगत की गई समस्त राजकीय भूमि महाराणा को लौटा दी जाय। इसके अतिरिक्त जागीरदारों ने एक दूसरे के भू भागों पर भी जो अधिकार कर रखा था तो वह भी वास्तविक जागीरदार को लौटा दी जाय।

(2) जागीरदारों को रखवाली नामक कर और भोम बराड़ के अधिकार को त्यागना होगा।

(3) दाण, बिस्वा और चुंगी एकत्रित करना, महाराणा का अधिकार है। अतः जागीरदारों को इसे त्यागना होगा।

(4) कोई भी जागीरदार अपने जागीरों में चोरों को नहीं होने देंगे। बावरी और थोरी जाति के लोग जिनका प्रमुख काम चोरी डकैती करना था, जागीरदार शरण नहीं देंगे। उनके द्वारा लूटी गई समस्त सम्पत्ति उनके वास्तविक अधिकारी को लौटा दी जायेगी।

(5) अपनी जागीर सीमा में प्रत्येक जागीरदार व्यापारियों और बनजारों के काफिले को पूर्ण सुरक्षा प्रदान करेंगे तथा उन्हें किसी प्रकार की हानि नहीं पहुंचायेंगे।

(6) प्रत्येक जागीरदार को वर्ष में 3 माह के लिये मेवाड़ दरबार में चाकरी करनी होगी। वर्ष में एक बार दशहरा उत्सव पर सभी जागीरदार उदयपुर में एकत्रित होंगे।

(7) सभी परगने महाराणा के सम्बन्धी और कामदार जिन्हें महाराणा का समर्थन प्राप्त है अलग अलग सेवायें करेंगे। वे न तो महाराणा के विरुद्ध षड्यंत्र में सम्मिलित होंगे और न अन्य राज्यों में सेवा करेंगे। जागीरदारों के उप-जागीरदार अपने स्वामी जागीरदारों की यथावत सेवा करते रहेंगे।

(8) सभी जागीरदार मेवाड़-ब्रिटिश संधि का अनुमोदन करेंगे।

संधि की अन्तिम धारा में सभी जागीरदारों को मेवाड़ के ईष्ट देव एकलिंगजी की शपथ दिलवाई गई थी।[5]

---

5 फारिन सिक्रेट कन्सलटेशन 5 जून 1818 नं 68-69 राष्ट्रीय अभिलेखागार दिल्ली

यदि हम उपरोक्त समझौते का विश्लेषण करें तो स्पष्ट है कि टाड सभी धाराओं के माध्यम से टॉड महाराणा और सामन्तों के मध्य मधुर पूर्ण सम्बन्ध स्थापित करना चाहता था।

परन्तु यह स्वीकार करना होगा कि यह कौलनामा एक पक्षीय था इसमें जागीरदारों के हितों की उपेक्षा कर महाराणा के हाथ मजबूत करने का प्रयास किया गया। एक ओर जहां रखवाली और भोम लागत जमा कर वसूल करने का अधिकार जागीरदारों का था समाप्त कर दिया गया वहीं दूसरी ओर उनपर दायित्व का बोझ बढ़ा दिया गया। परिणामतः यह कौलनामा पूर्णरूपेण अमल में नहीं आया और 1827 अप्रेल के महिने में कप्तान काब की अध्यक्षता में जागीरदारों के साथ नया कौलनामा हुआ। टाड के कौलनामे से एक तथ्य यह भी हमारे सामने आया है कि टाड की सहानुभूति मेवाड़ के सामन्तों से महाराणा के प्रति अधिक था। यद्यपि टाड का प्रभाव सामन्तों पर था जागीरदारों की उपस्थिति इस तथ्य को मान्य करती है परन्तु आगे चलकर इसमें कोई आशानीत सफलता नहीं मिली। टाड एक सन्तुलित कौलनामा तैयार करता तो महाराणा और जागीरदारों के हितों की अधिक रक्षा होती और समस्या का कोई स्थायी हल निकलता।

—

कर्नल टॉड एवं पुरोहित रामनाथ

—डॉ. राजेन्द्रनाथ पुरोहित

19वीं शताब्दी के पहले दशक में मेवाड़ की राजनैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक अस्थिरता अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच चुकी थी। सीमान्त राज्यों में मेवाड़ की भूमि सुरक्षित न थी मराठों तथा पिंडारियों के निरन्तर आक्रमण और लूट खसोट ने न केवल महाराणा अपितु प्रजा को भी दुर्दशा की स्थिति में पहुँचा दिया।[1] मेवाड़ की अधिकांश प्रजा सीमान्त राज्यों मालवा तथा हाड़ौती में जाकर निवास करने लगी।[2] महाराणा का खजाना बिल्कुल खाली था स्वयं का खर्च चलाने के लिये कोटा के झाला जालिमसिंह से रुपये उधार लेने पड़े।[3] मेरों तथा भीलों की लूटपाट से मार्ग तथा व्यापारी माल भी सुरक्षित न रहे।[4] मेवाड़ के कतिपय सरदारों ने खालसा की भूमि पर अपना अधिकार जमा लिया।[5] ऐसी विकट परिस्थिति में महाराणा भीमसिंह के पास ब्रिटिश-सरकार के संरक्षण के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प शेष न रहा।

1818 ई. में राजपूताना के शासकों तथा ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के मध्य संधि सम्पन्न हुई,[6] कप्तान जेम्स टॉड उदयपुर, जोधपुर, कोटा, बूंदी तथा जैसलमेर राज्यों के पॉलिटिकल एजेन्ट नियुक्त होकर उदयपुर आये। कप्तान टॉड ने मेवाड़ राज्य का प्रबन्ध अपने हाथ में लेकर महा-

---

1. गौ. ही. ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग 2 पृ 702
2. वही पृ 702
3. वही पृ 703
4. वही पृ 710 714
5. वही पृ 705
6. वही पृ 704

राणा और सरदारों के मध्य कौलनामा स्थापित … बाहर सरदारों से खालसा की भूमि को प्रतिस्थापित किया … से जहाजपुर का क्षेत्र छुड़वाया मेरवाड़ा में मेवाड़ की सेना भेजकर मेरों को पराजित किया भोमट के भोमिया सरदारों के विरुद्ध सैन्य अभियान कर उन्हें मेवाड़ के अधीन किया तथा मेवाड़ में स्थायी शान्ति व्यवस्था स्थापित की।

उक्त कार्यवाही के दौरान मेवाड़ राज्य के दरबार … (मास्टर आफ सरमनी) पुरोहित रामनाथ ने महाराणा भीमसिंह तथा कप्तान टॉड के मध्य एक विश्वासपात्र मध्यस्थ एवं सदस्य के रूप में राज्य को अपनी सेवाएँ अर्पित की।[8] तदनुसार पुरोहित रामनाथ कप्तान टॉड को राज्य की समस्याओं के बारे में महाराणा के दृष्टिकोण से अवगत कराते तथा विमर्श के पश्चात् पुनः टॉड के संदेश को महाराणा तक पहुँचाने का कार्य किया करते थे।[9] इस समय पुरोहित रामनाथ की गणना मेवाड़ के प्रमुख व्यक्तियों में थी। मराठा तथा पिंडारियों के आक्रमण से मेवाड़ में अशान्ति फैली हुई थी तब चित्तौड़ की रक्षा हेतु राजकुंवर के साथ पुरोहित रामनाथ को भेजा गया।[10] फरवरी 1818 ई. में टॉड के उदयपुर आगमन के अवसर पर अतिथि की पेशवाई हेतु एक प्रतिनिधि मण्डल टॉड के निवास-स्थल पर भेजा गया जिसका नेतृत्व रामनाथ ने किया।[11] इस दिन राजमहल में महाराणा भीमसिंह ने टॉड के स्वागतार्थ एक दरबार आयोजित किया जिसका संचालन दरबारी … कप्तान टॉड के कार्यकाल 1818 ई. में अच्छी सेवा के पुरस्कार स्वरूप महाराणा भीमसिंह ने रामनाथ को निकोड़ गाँव (कुंदवा का गुडा) जो उनके पूर्वजों के अधीन था एवं महाराणा अरिसिंह (द्वितीय) के काल में हाथ से निकल गया था पर पुनः उनका कब्जा करवा दिया।[13] (परिशिष्ट सं 1) इस सन्दर्भ में महाराणा ने

---

7 वही पृ 706 से 716

8 पुरोहित देवनाथ का हस्तलिखित ग्रंथ पृ 16–17

9 वही, पृ 88

10 गौ-ही ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास भाग – 2 पृ 1027

11 डा राजेन्द्रनाथ पुरोहित राजस्थान के इतिहास के पिता कर्नल टाड और उदयपुर शोध-पत्रिका वर्ष 34 अंक 3 4 पृ 55

12 पुरोहित देवनाथ का हस्तलिखित ग्रंथ पृ 249

13 गौ ही ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास भाग 2 पृ 1027

कप्तान टाड को मन्दार [illegible] पत्र[14] लिखा था, तदनुसार टॉड ने उक्त जागीर पर कब्जा करवाने में सहयोग प्रदान किया (परिशिष्ट सं 2) कुंवर जवानसिंह रीवां की राजकुमारी से विवाह करना चाहते थे इस प्रकरण में ब्रिटिश सरकार की अनुमति आवश्यक थी तदनुसार पुरोहित रामनाथ ने टाड को निवेदन कर कुंवर जवानसिंह को रीवां विवाह की स्वीकृति उपलब्ध करवाई इस सेवा से प्रसन्न होकर कुंवर जवानसिंह ने रामनाथ को एक प्रशंसा-पत्र[15] प्रदान किया (परिशिष्ट सं 3)।

1821 ई में मध्यभारत तथा मालवा के पॉलिटिकल एजेन्ट जनरल माल्कम उदयपुर आये इस अवसर पर पुरोहित रामनाथ ने कप्तान टाड एवं जनरल माल्कम के सानिध्य में रहकर उन्हें पिछोला-झील स्थित जग मन्दिर एवं जगनिवास महलों का अवलोकन करवाया।[16] कप्तान टाड ने मेवाड की शासन व्यवस्था में संलग्न ब्राह्मणों की सेना के सन्दर्भ में पुरोहित रामनाथ के बारे में लिखा है कि इन ब्राह्मणों में वीरता एवं साहस की कमी न थी तलवार इनके लिये उतनी परिचित है जितनी माला। वर्तमान महाराणा के एक योग्य कर्मचारी रामनाथ का पितामह जहाजपुर जिले का गवर्नर था।[17] महाराणा भीमसिंह ने उत्कृष्ट सेवा के पुरस्कार स्वरूप 1821 ई (वि सं 1878) में पुरोहित रामनाथ को उमड गांव, हाथी तथा सोने के लंगर [illegible] ने [illegible] महाराणा से निवेदन किया कि श्रीमान की मुझ [illegible] सोना प्रदान करने की जो इच्छा है तो इन सोना पुरस्कारों के व्यय से एक सदाव्रत स्थापित करने की आज्ञा प्रदान करावें, तदनुसार महाराणा ने उदयपुर के राजमहल की बडीपोल बाहर 'लंगर का कोठार' कायम किया जहां से प्रतिदिन निर्धन तथा असहाय व्यक्तियों को

14 पुरोहित देवनाथ का हस्तलिखित ग्रन्थ पृ 377

15 पुरोहित देवनाथ का हस्तलिखित ग्रन्थ पृ 258

16 वही पृ 364

17 जेम्स टाड [illegible] एनल्स एण्ड एन्टिक्विटीज ऑफ राजस्थान, भाग प्रथम पृ.440 (संस्करण 1880 ई)

सम्पादित किया गया।[18] कप्तान टाड ने प्रस्तुत पत्र[19] (परिशिष्ट 4) के माध्यम से पुरोहित रामनाथ को महाराणा द्वारा प्रदत्त उपरोक्त जागीरी तथा सेवा की गारन्टी (सुरक्षा) प्रदान की। कप्तान टाड की ओर से रामनाथ को दिये गये इस पत्र का आशय इस प्रकार है

पुरोहित रामनाथ (मास्टर आफ सरमनी) तथा आप जिनकी गलू डिग्री (प्रदान) की सेवाओं से प्रसन्न होकर कप्तान टाड ने लिखा है कि रियासत सम्बन्धी कार्यों में महाराणा और हमारे मध्य एक विश्वास पात्र मध्यस्थ के रूप में तुमने सेवा की है इन सेवाओं के बदले महाराणा की ओर से जारी डेढ़ सौ हजार में जो तुम्हें जागीर तथा सम्मान प्रदान किया है उसकी हमने बीच में रहकर जुबान दी है यदि भविष्य में कभी इस मामले में तल्खी पड़े तो यह हमारे लिये प्रतिष्ठा का प्रश्न होगा यद्यपि किसी प्रकरण में हमारी मध्यस्थता रहना ठीक नहीं किन्तु जुबान से कही गई बात बहुत बड़ी है यद्यपि गारंटी (हुंडी) प्रदान करने के लिए हम बाध्य नहीं फिर भी यह गारन्टी (हुंडी) भिजवा दी है। कामकाज कागज पत्र लिखावें। वि. स. 1878 कार्तिक बदी नागपंचमी ता. 25 अक्टूबर सन 1821 ईस्वी।

इस पत्र से पुरोहित रामनाथ तथा कप्तान टाड के मध्य घनिष्ठ सम्बन्धों पर प्रकाश पड़ता है किन्तु साथ ही ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी संधि के उद्देश्यों पर सन्देह व्यक्त होता है जिसकी शर्तों के अनुसार 'उदयपुर के महाराणा हमेशा अपने राज्य के खुदमुख्तार रईस रहेंगे और उनके राज्य में अंग्रेजी हुकूमत का दखल न होगा'[20] का स्पष्ट उल्लंघन प्रकट होता है। कप्तान टाड द्वारा प्रदत्त इस गारन्टी का दूरगामी परिणाम 1861 ई. में परिलक्षित होता है जिसके अनुसार पुरोहित रामनाथ के पुत्र श्यामनाथ की जागीर महाराणा शम्भूसिंह द्वारा जब्त किये जाने पर राजपूताना के एजेन्ट टू दी गवर्नर जनरल ने मामले में हस्तक्षेप करते महाराणा को लिखा[21] कि इस मामले में ब्रिटिश सरकार का वचन है जिससे वह मुकर नहीं सकती जागीर बहाल रहेगा।

18 (1) पुरोहित देवनाथ का हस्तलिखित ग्रंथ पृ. 17
(2) गौ. ही. ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास भाग 2 पृ. 1027

19 पुरोहित-संग्रह मूल-पत्र द्वारा कप्तान टाड पुरोहित रामनाथ को 25 अक्टूबर 1821 ई.

20 गौ. ही. ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास भाग 2 पृष्ठ 705

21 पुरोहित संग्रह मूल पत्र द्वारा ऐजेन्ट टू दी गवर्नर जनरल राजपूताना महाराणा शम्भूसिंह को, 31 दिस. 1861 ई.

ग्रन प्रस्तुत "ाघ पत्र म य" भी स्पष्ट होता है कि इस काल म मवा" क प्रशासनिक प्रबन्ध म राज्य क प्रशनिक ग्रधिकारियों (मुसद्दियों)की भूमिका महत्वपूण रही जो ब्रिटिश ग्रधिकारियों क प्रभाव म स्वय क तथा राज्य क पक्ष म निणय करवान म सफल रहत थ ।

परिशिष्ट

(1) महाराणा भीमसिंह का पत्र शाह शिवदास स्नूणिया क नाम

श्री रामजी

श्री एकलिंगजी सही

सिध श्री उदयपुर सु थान महा श्री सोवनासजी वचनातु गाम नीराड कुदवा सममत पटल लागा जोग समाचार वाच वा प्रटारा समाचार भला है थारा कहावजो ग्रप्रच । गाम नीरोड कुदवा रा गुडा प्रोहत रामनाथजी र ग्राणा सु ताबा पत्र है जो ग्रणा रो ग्रणा र सावत हे हासल ग्रणा रा मान्सी ह दीजो जमा खातर राग कमाई करजो । 1877 का बैसाख सुद 9

मुद्रिका
महाराणा
भीमसिंह

(2) महाराणा भीमसिंह का पत्र कप्तान टॉड क नाम

॥ श्री एकलिंगजी ॥

श्री बाणनाथजी श्री नाथजी

स्वस्ति श्री टाट साहब जोग ग्रप्रच गाम कुदवा रो गुडो प्रोत रामनाथ र ताबा पत्र रो ह सो मरेटा रा फन मीसोनी पल्मो ताता हा सो श्रा जी रो ग्रमल हुम्मलवड माह ग्रमर श्रा जद पाछा ग्रणी रे सावत कर दीदो सो हासल सीवाली रो रामनाथ नीन्ते ग्रवार सीराने पदमो उठ कामदारा सु मल ने हासल लीदो सो या गाम ता खालसा म है नहो हीरो री सावत हे सो ग्रठा सु रुका लीस दवाणा है ने उठा सु पण थाणो कमाल लीराय दाणा मारी ग्रतम मुरजी है, 1875 वर्ष सावण वीद 10

(3) कुवर जवानसिंह का पत्र पुरोहित रामनाथ के नाम

॥ श्रीरामजी ॥

श्री एकलिंगजी श्री नाथजी

स्वस्ति श्री कुवरजी वापजी रो हुकम प्रोहत रामनाथ जा है ग्रप्रच । थ बादुगड रा जाव मनन कर टाट साहब नीरा था हासल कराद सो ग्रणी वात सु म्हे घणा राजी वीया था रा चाकरी म्हे ग्रतस म जाणी, समत 1877

सप वसाष वीन 10 मुत्र। थे तो दूर् ह चाकरी म हो जो मु जाणु परा थ। दुरग रा याद करायो ई बात मु म गगा राजी वीया।

(4) कप्तान जेम्स टॉड का पत्र पुरोहित रामनाथ के नाम

सीध श्री उदेपुर सुभ सथान सबपोपमा पाहतजी श्री रामनाथजी जोग्ये मुकाम कासी सोध बनार ग्राम रामपुरा सा राजे श्री कपतान जिमस टाट सान्ब के नि राम राम बाचसा यहा रा समाचार भला है तुमारा भला चाहीय ग्रप्र-रच ईन दीना म पलीता श्री दरबार क नाम भजो सा पुहचसी उसस सब समाचार जानोगा। तुम ईस बात की बीचारी साहजी न श्रोर तुमन श्री दरबार का कहा माफक कइ बार इस मुकदमा म हमम कहा श्रोर श्री दरबार का तीन बार कहा मगाई लीया जब हम थान का बाप म हम ग्रान कर जुवान दी ई मार ग्रब जो ईस बात म कामी बात का कसर पड तो थान बाहत हलकी दीस है सो ग्रब साह जी को उहा ग्राया हवा है सा इस बात की वाचार ग्रच्छी तरह म करोगा ग्रार नहीं ग्रागा न हम कोमी बात का बीच म कभी ग्राऊना का नहीं हम ना पक्का जुबान दा च है पक्का बात चाहय कभी ग्रार हुडी का भेजना का हमार पास काया काम है सा जलदी भज माई है कामकाज कागद पम लीपायली 1878 कातीक सुदी 11 दीपमालका ता 25 ग्रकतुबर सन् 1821 ईस्वी

(हस्ताक्षर जेम्स टाड)

—

रॉयल एशियाटिक सोसायटी, लंदन में

कर्नल जेम्स टॉड का पाण्डुलिपि संग्रह

—शरद चन्द्र जावलिया
एम ए (इतिहास)

रायल एशियाटिक सोसायटी, लदन मे भारतीय संस्कृति और सभ्यता के इतिहास पर प्रकाश डालने वाला साहित्य अनेक हस्तलिखित ग्रन्थों और प्रस्तरकला द्वारा मुद्रित पुस्तकों के रूप में उपलब्ध है। इस संस्था को ऐसे साहित्य की भेंट समय समय पर जिन साहित्यिक रुचि सम्पन्न अंग्रेज अफसरों की ओर से की गयी थी, वे सभी प्रायः भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेवा में नियुक्त रहे हैं और अपने भारत-निवास काल में ही उन्होंने इस सामग्री का संकलन किया था। कर्नल जेम्स टाड का नाम उनमें सर्वोपरि है। अन्य महानुभाव हैं— मेजर वान फार्ड कर्नल सर क्लाड मार्टिन वाड (1794 1861) मेजर जनरल जान ब्रिग्स (फरिश्ता और सियार-उल-मुताखिरीन का अनुवादक)(1785 1875 ई), डा जान म्यूर (1810 1822 ई) वेलिंग्टन बुक (जो कालान्तर में जेम्स ब्रुक के नाम से प्रसिद्ध हुआ), राजा सारावाक (1803 1868 ई) सर हेनरी मायर्स इलियट (1808 1853 ई), सर चार्ल्स डब्ल्यू विलियम्स विन की विधवा पत्नी और सर हेनरी बार्टल एडवर्ड फ्रेरे (1815-1884 ई) मिस्टर डब्ल्यू एच वावन ने भी प्रस्तर कला पर मुद्रित (Litho Printed) अनेक भारतीय ग्रन्थ भेंट कर इस संग्रह की श्री वृद्धि में योग दिया था।

L. D. Barnett द्वारा प्रस्तुत Catalogue of the Tod collection of Indian Manuscripts in the Possession of the Royal Asiatic Society से साभार।

कर्नल जेम्स टाड ईस्ट इण्डिया कम्पनी की भारत स्थित शाखा में सन 1799 ई से 1823 ई तक विभिन्न पदों पर नियुक्त रहा। अपने सेवाकाल के अंतिम चार वर्ष उसने पश्चिमी राजपूताना के पालिटिकल एजेन्ट के रूप में व्यतीत किये। पालिटिकल एजेंट के रूप में उसने अपना केन्द्रीय कार्यालय, राजपूत संस्कृति के सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थल उदयपुर में स्थापित करते हुए ऐतिहासिक और पुरातात्विक सामग्री के संकलन और लेखन में अपनी अभिरुचि की पूर्ति का लाभ उठाया। कम्पनी की सेवा मुक्ति के समय प्रचार सामग्री वह अपने साथ लंदन ले गया। रायल एशियाटिक सोसायटी में समर्पित उसके संग्रह की सामग्री में संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश राजस्थानी हिन्दी गुजराती मराठी आदि भाषाओं में निबद्ध साहित्य प्रमुख है जिनमें ख्यात वात वचनिका प्रशस्ति काव्य वंशावलियां आदि का सर्वाधिक महत्व है। यहां से सामग्री अधिगृहीत कर उसने एनाल्स एण्ड एण्टिक्विटीज आफ राजस्थान का प्रणयन किया था। इस समर्पित संग्रह में प्राकृत भाषा निबद्ध जैन धर्म ग्रंथ और उन पर रची गयी संस्कृत टीकाएं प्राकृत अपभ्रंश तथा देश्य भाषाओं में प्रणीत जैन काव्य भारतीय सभ्यता के विभिन्न कालों तथा विषयों का प्रतिनिधित्व करने वाले ग्रन्थ शब्दकोष व्याकरण खगोल भूगोल विषयक शास्त्र भविष्यवाणियां इतिहास आदि से सबंधित ग्रंथ भी प्रभूत मात्रा में हैं। कतिपय महत्वपूर्ण ग्रंथ जिन्हें राजस्थान की संस्कृति और सभ्यता के इतिहास की दृष्टि से उपादेय कहा जा सकता है की एक लघु सूची यहां प्रस्तुत की जा रही है।

ग्रन्थ सूची

क्र सं ग्रंथांक

(1) 1 **हकीकत** महाराजा जगतसिंह तक के (आमेर) जयपुर के राजाओं का विवरण। (राजस्थानी)

(2) 31 **कुमारपाल राजर्षिरास या कुमारपाल रास** रचनाकाल 1670 वि रचयिता रिषभदास आरम्भ मंगल (राज) इसमें अणहिलपाटन के चालुक्य सम्राट कुमारपाल की विजयों का पद्यात्मक विवरण है।

(3) 34 **कालिकाचार्य कथानक**–(जैन प्राकृत संस्कृत) रचयिता भवदेव। इस ग्रंथ में कालकाचार्य के जीवन की वार्ता है।

(4) 42 **हमीर चरित**–नयचन्द्र सूरि रणथम्भोर के महाराजा हमीर चौहान का ऐतिहासिक विवरण (संस्कृत)

(5) 64 **राठौड़ा री वंशावली**–नयचन्द्र मिश्रित (राज) राठौड़ा का वंश वर्णन।

(6) 72 **वचनिका खींची अचलदास री**– शिवदास कृत गद्यपद्य मिश्रित (राज.) ऐतिहासिक काव्य है।

(7) 73 **भाटी वंश की ख्यात** – जसल भाटी जो (मूलतः लोद्रवा का वासी था और जिसने कालान्तर में जैसलमेर बसाया) से सं. 1744 तक का वर्णन है। (राजस्थानी)

(8) 78 **राजनिरपण** – रचयिता स्वर्णनिराय महाराजा माधवसिंह के संरक्षण में लिखित पत्र लेखन पद्धति - (संस्कृत)

(9) 111 **वालजोइयारी** - सुल्तान अलाउद्दीन के काल से लगाकर राणेश का गद्यपद्य मिश्रित ऐतिहासिक विवरण।

(10) 125 **गुटका** – जिसमें (1) जयसिंह गुण (जयसिंह से संबंधित प्रशस्ति (राजस्थानी)

(2) जयसिंह का इतिवृत्त (राज.) अपठित

(3) राजतरंगिणी - मिश्र रघुनाथ द्वारा संस्कृत और हिन्दी गद्य में विरचित हाथवर रिपमन्द के पुत्र कुरु से लगाकर अनगपाल तक के राजाओं का ऐतिहासिक विवरण।

(11) 4 **गुहिलोतान्वय** – सवाई जयसिंह के आदेश से विरचित गुहिलोतों की वंशावली (राज. गद्य)

(12) 5 सवारीख सिकन्दर इ इस्कन्दरी का हिन्दी (राज ?) अनुवाद (अकबर से लिए गये अंशों का)

(13) 6 मुन्तखबुत्तवारीख का अंशात्मक अनुवाद (राज.)

(14) 7 विक्रमादित्य कथा (संस्कृत)

(15) 1¹6 **गुटका** – जिसमें निम्नांकित रचनाएं संकलित हैं।—

(I) **हिन्दुस्तान की बादशाही का प्रमाण व ओप कारखाना की किताब** (हिन्दुस्तान के बादशाहों के प्रशासनिक कार्यविधियों का तालिका निबद्ध विवरण। इसके साथ संवत 1414 वि. में तमूर के आगमन से लगाकर जयसिंह के शासनकाल तक का विवरण (राज. गद्य)

(II) **विक्रमविलास** – मिश्र गांगा द्वारा विरचित विक्रमादित्य की कथाएँ (राज. गद्य पद्य मिश्रित)

(16) 127 चित्तौड़ से प्राप्त दस शिलालेखों की सुन्दर प्रतिलिपियों का संकलन ग्रंथ। इसमें संस्कृत के नौ और राजस्थानी के एक शिलालेख की प्रति संकलित है।

(17) 129 **खुमाणरासो** – दलपति विजयकृत पद्यात्मक काव्यग्रंथ। इसमें मेवाड़ के रावल खुमाण और उसके वंशजों का ऐतिहासिक आख्यान दिया गया है। (राज.)

(18) 130 **विजय विलास** – जोधपुर राज्य का पद्यबद्ध ऐतिहासिक काव्य (राज.)

(19) 132 **सीसोदिया की वंशावली** – पद्मिनी से लेकर राजसिंह तक का मेवाड़ के शासकों से सम्बन्धित संक्षिप्त वंश वर्णन।

(20) 133 **वंशावली** – जयसलमेर के शासकों का इतिहास महारावल जसवन्तसिंह (1702 ई.) के राज्यकाल पर्यन्त (राज.)

(21) 134 **राजरूपक** (अभयसिंहजी का परमजस) रचयिता वीरभाण (राज.) महाराजा अभयसिंहजी के राजदरबारी वीरभाण द्वारा विरचित जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह (1678 1724) और उनके पुत्र अभयसिंह का जीवन चरित्र [चरित काव्य]

(22) 141 **सूरजप्रकाश** – कविया करणीदान द्वारा विरचित 7500 छन्द रूप ऐतिहासिक काव्य ग्रंथ जिसमें महाराजा अभयसिंह का ऐतिहासिक चरित्र वर्णित है।

(23) 142 **रतनरासो** – औरंगजेब के विरुद्ध धरमात में महाराजा जसवन्तसिंह द्वारा लड़े गए ऐतिहासिक युद्ध तथा रणधाम के मध्य पर राव रतनसिंह के वीरतापूर्वक स्वर्गारोहण का ऐतिहासिक वृत्त (चारणी काव्य)

(24) 143 **राजा कहाबाद री वार्ता** – अनन्तराय सांखला से लेकर ... तक का गद्यपद्यात्मक वर्णन [राज.]

(25) 145 ऐतिहासिक प्रशासकीय पत्रों की सुन्दर प्रतिलिपि से युक्त जिल्द [राजस्थानी ग्रन्थ]

(26) 163 **गुटका** – जिसमें निम्नलिखित रचनाएं संकलित हैं—

(I) मेवाड़ के शासकों की प्रशस्ति में विरचित ऐतिहासिक काव्य ग्रंथ जिनमें सर्वप्रथम जयसिंह गुणवर्णनम् तथा द्वितीय अमरसिंह गुणवर्णनम् काव्य ग्रंथ संकलित हैं। संपूर्ण काव्य जयविलास नामक रहा होगा—ऐसी कल्पना की गयी है। रचयिता रणछोड़ भट्ट (संस्कृत)

(II) **राज रत्नाकर** - रचयिता सदाशिवनागर (संस्कृत) महाराणा राजसिंह के समय की घटनाओं का वृतान्त।

(27) 165 **गुटका** – जिसमें निम्नलिखित रचनाएं ग्रथित हैं—

(I) केशव पुत्र महेश द्वारा विरचित प्रशस्ति काव्य जिसमें मेवाड़ के महाराणा कुम्भा के आदर्श चरित्र का मय वर्णन है। [यह संभवतः चित्तौड़ के कीर्तिस्तम्भ की शिलांकित प्रशस्ति का प्रतिलिपि हो है]

(ii) **राजविलास** — रचयिता मानकवि । 18 विलासों में विरचित इस पिंगल काव्य में मेवाड़ के महाराणाओं का ऐतिहासिक वर्णन है। सूची पत्र में इसे संस्कृत और हिन्दी में विरचित कहा गया है जो विचारणीय है—

(28) 166 **गुटका** — इसमें निम्न दो ग्रन्थ संकलित हैं—

(i) सूर्यवंशानुवर्णनम् — [संस्कृत]

(ii) चन्द्रवंशानुवर्णनम् । [संस्कृत]

इनकी प्रतिलिपि कर्नल टॉड के गुरु और सहायक पंडित ज्ञानचन्द्र [यति] ने सन् 1819 में उदयपुर में निवास करते समय की थी।

(29) 167 रुपनगुहव (भाग I) रचयिता मुन्शी हाशी (बदाऊनी)—भारत का इतिहास मूल फारसी राजस्थानी भाषानुवाद ।

(30) 170 **गुटका** — इस गुटके में संस्कृत और राजस्थानी [हिन्दी] भाषा निबद्ध वंशावलियाँ गाथाएँ पट्टे परवाने गद्यात्मक विवरण आदि संकलित है।

—

टॉड की सिरोही यात्रा

— प्रद्युम्नसिंह चूंडावत

टाड प्रणीत पश्चिम भारत की यात्रा ग्रन्थ के लिए हम यह कह सकते हैं कि टॉड ने यात्रा के विवरण खोजने और लिखने में अपनी उस विशाल ऐतिहासिक जिज्ञासा का परिचय दिया जिसका अनुमान राजस्थान का इतिहास पढ़ने में नहीं होता। यात्रा के सम्पूर्ण कथानक मनोरंजन व ज्ञान वर्धक होने के साथ मौलिकता लिये हुए है। विशेषतः सिरोही की यात्रा के वृतांत से टॉड के अगाध इतिहास के ज्ञान का परिचय मिलता है।

पता चलता है कि टाड राज्यों के बीच आपसी झगड़ों को खत्म कराने के लिए कितना प्रयत्नशील था। प्रजा के हित के लिये उसके मन में कितने उदार विचार थे। टाड की लेखनी से उसकी मनोवृत्ति और मानव हृदय का बोध होता है।

कर्नल टॉड ने अपनी सिरोही यात्रा में अपनी ही सरकार की आलोचना की है एवं अनेक स्थानों पर उसने इस बात को बतलाया है कि अंग्रेजों को भारत वर्ष में रहकर यहां की संस्कृति को समझना चाहिये और उसी प्रकार शासन करना चाहिये। टाड राजपूतों का बहुत अधिक प्रशंसक था और राजपूतों की त्रुटियों को दूर करना चाहता था। अपने यात्रा वृतान्त में उसने सिरोही के महाराव से इन त्रुटियों को दूर करने के लिए कहा था। वह सिरोही राज्य का सच्चा हितैषी था। एवं इस बात को सिरोही के महाराव ने स्वीकार किया था। इस प्रकार कर्नल टाड की सिरोही यात्रा सिरोही के लिए एक बहुत महत्वपूर्ण यात्रा थी, जिससे कि सिरोही की रक्षा हो सकी एवं सिरोही में एक नये युग का शुरुपात हुआ जो आगे जाकर सिरोही और अंग्रेजों के मध्य संधि में बदल गया। कर्नल टाड सिरोही यात्रा वृतांत इस प्रकार करता है—

यह रियासत बहुत छोटी है लेकिन इसकी प्रसिद्धि राजपूताना की किसी भी रियासत से कम नहीं है। इस रियासत को कुछ विशेष अधिकार मिले हुए हैं। टॉड ने अपनी पूरी शक्ति लगाकर मारवाड़ से इसकी राजनैतिक स्वतंत्रता की रक्षा की थी। मारवाड़ के नरेश ने इसको अपने अधीन बनाए रखने के लिए यह साबित करने की पूरी कोशिश की थी कि सिरोही मारवाड़ राज्य का एक अंग है। मारवाड़ ने अपने पुष्ट प्रमाणों के द्वारा गवर्नर जनरल कौंसिल की मंजूरी प्राप्त कर ली।

सिरोही के मामले में सारे अधिकारियों का मत एक तरफ व टॉड का निर्णय दूसरी तरफ था। वह सिरोही की समस्या को न्याय के साथ सुलझाना चाहता था अन्त में उसे सफलता मिली।[1]

सिरोही की समस्या बड़ी उलझन से भरी हुई थी। जोधपुर के महाराजा अभयसिंह के समय से सिरोही के रावों से कर और नौकरी लेने का अधिकार साबित करते थे। टाड को उन्हीं के इतिहास से इसके विपरीत प्रमाण मिले जिससे प्रमाणित होता था कि सिरोही रियासत के अधिकारियों ने जोधपुर के राजाओं को नौकरी दी है परन्तु वह मारवाड़ के राजा के लिए नहीं थी बल्कि साम्राज्य के प्रतिनिधि के लिए थी। इसके अलावा अहमदाबाद की चढ़ाई में जब देवड़ा राजपूत लड़ाई पर गए थे उस समय महाराजा अभयसिंह का नेतृत्व उन लोगों ने स्वीकार किया था। इस प्रकार के राजनैतिक और ऐतिहासिक प्रमाण थे जो सिरोही रियासत की स्वतन्त्रता का समर्थन करते थे।

मारवाड़ के अधिकारियों का यह भी कहना था कि सिरोही के प्रमुख और प्रधान सरदार नीम्बज के ठाकुर ने जोधपुर की नौकरी की थी। इस प्रमाण का खण्डन के लिए टॉड ने दलील दी कि सभी रियासतों में कुछ न कुछ दगाबाज़ी और अवसरवादी लोग रहे हैं। सिरोही में भी ऐसे लोग थे जो सिरोही की मर्यादा के विरुद्ध कार्य करते थे। और उन दिनों में सिरोही राज्य की शक्ति इतनी कमजोर पड़ गयी थी कि उसकी तरफ से ऐसे लोगों को दबाने और रोकने की व्यवस्था नहीं की जा सकती थी।

---

1 टाड, पश्चिमी भारत की यात्रा, पृ [illegible], अनुवादक [illegible]कुमार ठाकुर, आदर्श हिन्दी पुस्तकालय, 492 भारतीय, इलाहाबाद 1969

2 टॉड, पश्चिमी भारत की यात्रा, पृ 83

इसलिए किसी सरदार के ऐसा करने से उसकी जिम्मेदारी सिरोही रियासत पर नहीं आती थी।

नीम्बज मारवाड की सीमा पर था इसलिए उसके लिए यह आवश्यक था कि उचित और अनुचित किसी भी तरीके से वह मारवाड को अप्रसन्न होने का मौका न दे। कृपा प्राप्त करने की अपनी अभिलाषा में नीम्बाज के ठाकुर के सामने एक ही रास्ता था कि वह हर तरीके से जोधपुर नरेश को प्रसन्न करने का प्रयास करे। उस हालात में जोधपुर ने जो कुछ चाहा उस अवसरवादी ठाकुर ने उसे पूरा किया।[3]

सिरोही मारवाड के अधिकार में नहीं था और न ही वह कर देता था। जबरदस्ती जो लूट मार करके वसूल किया उसकी सूची मारवाड के प्रतिनिधि ने सामने लाकर इस बात को साबित करने का प्रयत्न किया कि सिरोही से मारवाड कर वसूल किया करता था किन्तु कर वसूल करने में यह सूची काफी नहीं थी उसको देखकर साफ जाहिर होता था कि यह सूची कर वसूल करने की नहीं है। मारवाड के अधिकारियों के सिवा उस सूची में कहीं पर भी सिरोही की तरफ से किसी के हस्ताक्षर नहीं थे।

प्रत्येक अवस्था में यह प्रमाणित होता था कि मारवाड के हमलों का कारण सिरोही की कमजोरी थी और जो कर वसूल किया हुआ दिखाया गया था वह सिरोही में की गई लूटमार का धन था। किसी भी प्रकार यह साबित नहीं हो सकता कि सिरोही की रियासत मारवाड के अधिकार में रही है।[4]

मारवाड की ओर से एक दस्तावेज ऐसा अवश्य पेश किया गया जिसमें सिरोही के वर्तमान राव के बडे भाई के हस्ताक्षर थे। अपनी विषम परिस्थिति और बेबसी में फंस कर बडे राव ने जोधपुर की अधीनता को स्वीकार करने के लिए हस्ताक्षर किये थे। बडे राव अपने पिता की अस्थि गंगा में प्रवाहित करने के लिए जा रहे थे उसी मौके पर वे कैद कर लिए गये और उनसे अधीनता स्वीकार करने के लिए लिखावट करवाली गयी। न्याय के सामने इसका कोई महत्व नहीं हो सकता। वास्तव में अपनी इच्छा से सिरोही के अधिकारियों ने एक पैसा भी जोधपुर को कभी अदा नहीं किया।

---

3 वही पृष्ठ 83

4 टॉड पश्चिमी भारत की यात्रा पृष्ठ 84

इसके बाद सिरोही के प्रतिनिधि ने प्रश्न किया यदि हमारे मीणों के हमलों से - जिनको रोक सकने की क्षमता आज हममें नहीं है जोधपुर की फौज हमारी सीमा के भीतर प्रवेश करती है और हमारी सीमा के अन्तर्गत अपनी चौकियां कायम करती है जैसा कि किया भी गया है तो जोधपुर की पहाड़ी जातियों व पड़ौसियों को जो नुकसान लगातार पहुंच रहा है उसका उत्तर मारवाड़ के पास क्या है ?

मारवाड़ की तरफ से सभी प्रमाण बड़ी बुद्धिमानी के साथ रखे गये थे। लेकिन स्टुअर्ट ने टाल के कारण उनके घरामयी होने में देर न लगी। टाड मारवाड़ की राजनीति को भलीभांति समझ रहा था। वह जानता था कि मारवाड़ के अधिकारी सिरोही की स्वाधीनता के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। इस अन्याय समझ कर उसने सिरोही की स्वतन्त्रता को सुरक्षित बनाने में पूरी शक्ति के साथ काम किया।

जोधपुर और सिरोही के पुराने मामले निपटाने एवं दोनों राज्यों के आपस में सम्बन्ध सुधारने के लिए कर्नल टाड ने दोनों राज्यों के मध्य एक समझौता कराया। कर्नल टॉड के प्रयत्नों से दोनों राज्यों के मध्य एक सन्धि की गई और एक निश्चित रकम जोधपुर को वार्षिक सिरोही से दिला कर हमेशा के लिए झगड़ा शान्त कर दिया गया। सिरोही अब अपने सभी मामलों में स्वतन्त्र है और उस समय से वह ब्रिटिश सरकार के अधीनता में है। उस सन्धि के बाद सिरोही की हालत बदलने लगी वहां के युवक राव ने अपने कर्त्तव्यों का पालन किया। अपराध और आक्रमण करने से मीणा जाति को रोक दिया गया है। सम्पूर्ण रियासत में सुरक्षा के लिये चौकियां कायम की गई हैं। किसानों गृहस्थों और व्यापारियों को अभय - पत्र देकर विश्वास करा दिया गया है कि उनको अब किसी भी तरह से चिन्तित हो जाना चाहिये। पूरी रियासत जो उजाड़ हो रही थी फिर से आबाद हुई। लुटेरे और आक्रमणकारियों के भय से जो किसान खेती नहीं करते थे उन्होंने निर्भय होकर खेती करना आरम्भ किया। रियासत में दुकानदारों का पता नहीं था अब वहां पर दुकानें खुल गयी हैं और जो मीणा लोग गिरोह बनाकर लूटमार किया करते थे वे सब अब आदमी बनकर सबके बीच में आते - जाते और अपना काम करते थे।[5]

---

5 टॉड पश्चिमी भारत की यात्रा पृष्ठ 86 - 87

कर्नल टाड स्वयं अपने देश की सरकार की आलोचना करने लगता है और भारत के विषय में कहता है —

प्रजा पर जब करों का बोझ इतना बढ़ जाता है कि उससे उनकी गरीबी लगातार बढ़ती जाती है तो हम यह कहने का साहस किसी भी दिशा में नहीं कर सकते कि हमारे शासन का बोझ अधिक और असह्य नहीं है। इस दिशा में कोई कुछ कहे हम तो स्पष्ट रूप में यह कह देना चाहते हैं कि हमारी सरकार द्वारा प्रजा से वसूल करने के लिए जो कर लगाये जाते हैं वे प्रजा के आर्थिक ढांचे को उठाने के लिये नहीं बल्कि सरकारी खजाने भरने के लिये लगाये जाते हैं। आज वर्षों से भारत हमारी सरकार के सम्पर्क में है और इन दिनों में जो कुछ यहां पर सरकार की तरफ से किया गया है वह किसी से छिपा नहीं है। ईमानदारी के साथ यहां की पहले की परिस्थितियों का आज के जीवन के साथ मुकाबला किया जाय तो जो अन्तर सामने आता है उस पर धूल नहीं डाली जा सकती।[6]

आगे टाड लिखता है— इस देश का शासन प्राप्त करने में तलवार का महत्व दिया जाता है। उसके सम्बन्ध में यहां पर एक उदाहरण देना आवश्यक समझता हूं। इस देश की प्रजा में जो कानून हम चलाने की चेष्टा करते हैं उनकी रचना इंगलैण्ड में हुई है। वहां के रहने वाले अंग्रेजों को यहां के निवासियों का अधिक अनुभव नहीं है। जब तक इस देश की प्रजा का अनुभव नहीं होता उसकी आवश्यकताओं का ज्ञान नहीं होता उस समय तक कोई भी शासक प्रजा के साथ अच्छी भावना रखते हुए भी अपने उन कर्तव्यों का पालन नहीं कर सकता जिसमें राजा और प्रजा दोनों का हित हो।

सिरोही की भौगोलिक स्थिति के बारे में कर्नल टाड लिखता है यह रियासत किसी साधारण अंग्रेजी प्रान्त से बड़ा नहीं है इसकी लम्बाई 70 मील और चौड़ाई 50 मील है। इसकी जमीन का एक बड़ा भाग पहाड़ी है और जो हिस्सा बराबर जमीन का है वह रेगिस्तान का किनारा पड़ता है। हो सकता है सिरोही का नाम उसकी भौगोलिक स्थिति के अनुसार पड़ा हो जिसका अर्थ है सिर अर्थात् ऊपरी भाग और रोही अर्थात्

---

6 टॉड पश्चिमी भारत की यात्रा पृष्ठ 88 - 89

जगत इस प्रकार बना सिरोही। रियासत के पहाड़ी हिस्से में कितनी ही उपजाऊ घाटियाँ हैं। जमीन और समतल जमीन में मक्का गेहूँ और जो अधिक पैदा होता है। इसके सभी भाग अरावली और आबू पहाड़ से निकलने वाले छोटे झरनों के द्वारा रियासत में आगे जाकर बह जाते हैं। इसकी सीमा नक्शा देखने से साफ समझ में आती है। पूर्व में अरावली पहाड़ उत्तर और पश्चिम में मारवाड़ के पश्चिमी जिले गोड़वाड़ और जालोर हैं। पश्चिम एवं दक्षिण की तरफ पालनपुर की रियासत है।[7]

सिरोही की रियासत विस्तार में बड़ी है और उसके मकान खूबसूरत हैं और ईंटों के बने हुए हैं। लेकिन आजकल में अब भी लगभग आधे मकान खाली पड़े हैं। पानी बीस हाथ से लेकर तीस हाथ तक नीचे पाया जाता है। राव का महल एक छोटी सी पहाड़ी की ढाल पर बना हुआ है। लेकिन इसके निर्माण में किसी प्रकार की सुन्दरता का आभास नहीं होता।

राजस्व के बारे में टाड लिखता है सिरोही की मालगुजारी में होने वाली आमदनी शान्ति के दिनों में सात लाख रुपये से लेकर चार लाख रुपये वार्षिक होती है। और लगभग इससे आधी आमदनी रियासत की जागीरदारों से हो जाती है। इस रियासत में चार बड़े जागीरदार हैं—नाथावत, लाखावत, पाडीव, कालन्द्री और बाम्बरिया। ये चारों जागीर राजधानी से चौदह से बीस मील की दूरी पर हैं। सिरोही का नगर अपने अधिक व्यापारिक आमदनी वाली है। यहाँ की तलवारें भी अच्छी मानी जाती हैं ठीक उसी प्रकार जैसे फारस एवं तुर्क देशों में दमिश्क की तलवारें। सिरोही की तलवारें हिन्दुस्तान में बड़े सम्मान के साथ देखी जाती हैं।

सिरोही के राव के बारे में टॉड लिखता है 'रावशिवसिंह 27 वर्ष का जवान लड़का है। उसका कद छोटा है। उसकी मुखाकृति से बुद्धिमत्ता का परिचय नहीं मिलता है। उसके बदन का रंग गोरा है और देखने सुनने में बुरा नहीं है लेकिन उसके शरीर में वह ओज है जिसको राजपूत जाति अपना वैभव मानती है। इसमें शासन के अनुभव की कमी मालूम पड़ता है। इसका कारण था अब तक इसने अपनी जिन्दगी में मीणा जाती कोलियों और अपने पड़ोसी जोधपुर के भयानक लोगों के हमला

7 पश्चिमी भारत की यात्रा पृ.सं. 90 91

का मुकाबला किया था और उसकी अपने यान्दिन नाम्बज के ठाकुर के इन फरेबों में व्यतीत करने पड़े थे।

टाड सिरोही में राव से मुलाकात का वर्णन करता है दवरा राज पूतों की राजधानी मिरा। म मेरा आने पर अभिनन्दन किया गया। उस अभिनन्दन में सिरोही की श्रेष्ठ सुन्दरियों ने मेरे स्वागत में गान गाये। उस समय का सुन्दर दृश्य हिन्दुस्तान को छोड़कर मैंने अन्यत्र प्रकार में कभी नहीं देखा था। उनके गानों में पीतल के मजीरों की तान बड़ी प्रिय और आकर्षक मालूम हो रही थी। ये सुन्दरियां गाना गाती हुई राव के साथ चल रही थीं। अभिनन्दन करने वालों का यह जुलूस मुझे अपने नगर में ले जाने के लिए आया था। मैं उनके नगर में जाता हुआ अपने उस समय में ऐसा गया जो दूल्हा की तरह लगभग आधा मील के फासले पर था।

दूसरे दिन उस रियासत में ठहरकर टाड राव से मिले। इस मौके पर राव के सभी सरदार एकत्रित थे। राजा के सम्मान में इस प्रकार महत्वपूर्ण समारोह कदाचित पहले कभी नहीं हुआ था। मालिक राज के वंशज के सम्मान में जिस प्रकार की सामग्री की कमी थी उसको समझ कर टाड ने अपनी सरकार की तरफ से नजराना पेश किया। ऐसा करने में टॉड को अधिक सोच नहीं करना पड़ा। क्योंकि अवाहिरात और कीमती चीजें तो उस समय के राणा के यहां से भेंट में मिला था। उसके सिवा कीमती साज से सजा हुआ एक हाथी एक घोड़ा जवाहिरात से जड़ी हुई मालाएं की माला एक कीमती सिरपेच और अच्छी संख्या में ढालें दुशालें पारचा मलमल के थान अच्छी पगड़ियां साफे और कितने ही प्रकार के बने हुए कपड़ों से भरा हुआ थाल उन्हें भेंट किया गया।

प्रासाद पवन पर राव श्यामसिंह और उनके सरदारों से मिलकर टाड ने इस प्रकार आलिंगन किया जैसे पिता और पुत्र आपस में मिलते हैं। सबसे मिलकर और उनका स्नेह प्राप्त करके टाड बहुत सुखी हुआ। जब यह सब कुछ हो चुका तो राव ने गद्दी की अपने साथ चलने और सिंहासन पर बैठने का अनुरोध किया। परन्तु टाड ने हंसकर उनके इस सम्मान को नम्रता के साथ नामंजूर कर दिया।

---

5 टाड पश्चिमी भारत की यात्रा पृष्ठ 96 97

राव के दिल में आज किसी प्रकार की घबराहट न थी और आबू के पवित्र वातावरण में स्वतन्त्रता के सुख का वह अनुभव कर रहा था। इस समय टॉड ने उसके साथ कुछ देर तक बात की। ये बातें उसके राज्य की भलाई के सम्बन्ध में थी और कुछ दूसरी बातें भी थी। टॉड ने राव को समझाया कि प्रजा का उत्थान कैसे हो सकता है, बेगार की प्रथा को बन्द कर देना क्यों बहुत जरूरी है? व्यापारियों को सुविधाएं राज्य की तरफ से क्यों आवश्यक है?

इसके बाद राव के पूर्वजों के विषय में कुछ देर बातचीत होती रही। टॉड को इस बात की खुशी थी कि उनके सम्बन्ध में जितनी उन्हें जानकारी है उतनी राव को उसके पूर्वजों और उनके इतिहास के सम्बन्ध में नहीं है। टॉड ने राव को आग्रह करते हुए कहा कि वह अपने राज्य के प्रति और अपनी प्रजा के प्रति सदा ईमानदार और उदार रहे।

कर्नल टॉड ने केवल सिरोही की रक्षा ही न की बल्कि जोधपुर एवं सिरोही राज्यों के मध्य संधि कराकर दोनों राज्यों के परम्परागत मन मनमुटाव को कम करने का प्रयत्न किया। इसका परिणाम यह हुआ कि सिरोही एक बार पुनः आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न राज्य बनने लगा। अपराध एवं आक्रमण कम होने लगे। सम्पूर्ण रियासत में सुरक्षा की भावना पैदा होने लगी जिसके परिणाम स्वरूप प्रजा को सुख एवं सन्तोष मिलने लगा। किसान कृषि कार्य करने लगे व्यापारी व्यापार करने लगे। रियासत भी उजाड़ हो गई थी एक बार पुनः आबाद हो गयी।

टॉड की सिरोही की यात्रा से एक लाभ यह भी हुआ कि आबू पर्वत जिसकी जानकारी लोगों को बहुत कम थी विशेष रूप से विश्व में टॉड ने उसको अमर बना दिया। परमारों की प्राचीन राजधानी चन्द्रावती जो विस्मृत हो गई थी अब लोगों को इस बात की जानकारी हुई कि मध्यकाल में इतनी वैभव पूर्ण राजधानी राजस्थान में थी। अन्त में टॉड के सद् प्रयत्नों से ही सिरोही और मारवाड़ के मध्य 11 सितम्बर सन 1823 को एक संधि सम्पन्न हुई जिसके परिणाम स्वरूप सिरोही में एक बार पुनः शांति और समृद्धि का युग प्रारम्भ हुआ।

—

टॉड की बनेड़ा व बेगू ठिकाने की यात्राए

मेवाड़ के इतिहास में वर्ग के जागीरदारों की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका रही इसलिये वे मेवाड़ के स्तम्भ माने गये। टॉड यह अच्छी प्रकार जानता था कि मेवाड़ की समस्याओं का समाधान अकेले महाराणा से परामर्श करने से नहीं होगा इसलिये उसने यहां के प्रमुख उमरावों को अपने विश्वास में लेने उनसे मेल मिलाप बढ़ाने तथा उनकी निजी समस्याओं का हल ढूंढने हेतु मेवाड़ के ठिकानों की यात्राएं की जिसमें बनेड़ा व बेगू की यात्राए विशेष महत्व रखती है।

बनेड़ा की यात्रा टाड मार्गशीर्ष सुदि 11 1875 (1818 ई) को बनेड़ा पहुंचा। बनेड़ा के राजा भीमसिंह (द्वितीय) ने टाड का भव्य स्वागत किया और आदर-सत्कार कर उसका मान बढ़ाया। इसका विवरण स्वयं टाड ने कलमबद्ध किया है—

बनेड़ा का किला मेवाड़ राज्य के समस्त प्रभावशाली दुर्गों में एक है और यहां के राजा समस्त सामन्तों में प्रथम है। उनकी राजा की पदवी नाममात्र की नहीं है वरन एक राजा के समस्त लवाजमा में वह सुशोभित है। उदयपुर के महाराणा के वह निकटतम सम्बन्धी है।

मेरे मित्र राजा भीमसिंह ने बनेड़ा से [illegible] मील आकर मेरी अगवानी की। वे मुझे महलों में ले गये। मैं वहां तीन घन्टे रहा। इस अवधि में मुझे मेवाड़ राज्य के अधीनस्थ राज्यों की व्यवस्था तथा राजा का रहन सहन देखने का सुअवसर मिला। राजा राजसी ठाट बाट से रहते हैं और सुसभ्य है। उन्होंने खुले मन से तथा किंचित मात्र मदभाव न रखते हुए मुझसे बातचीत की। उनको शाही मरातिब लवाजमा तथा सम्मान मिला है।

राजा ने मुझे चांदी के मखमली गद्दे पर बिठाया। उसके सामने के सभा भवन में बनेड़ा राज्य के सामन्तगण बैठे थे। वे मुझसे एक

भाई के समान घरेलू तथा राजकीय विषयों पर वार्तालाप करते रहे और मेरी राय पूछते रहे ।

मेरे विदा होते समय उन्होंने मुझे उपहार देने चाहे मैंने उन्हें स्वीकार तो किया किन्तु हमारी राजकीय नीति के अन्तर्गत उन्हें साथ ले जाना स्वीकार नहीं किया।

माननीय लार्ड बिशप जब बनेड़ा आये थे तब उनका भी राजा ने उत्तम स्वागत किया था । वह मुझ से मिलने आये । मैंने उन्हें एक जोड़ा पिस्तौल तथा एक दुर्बीन भेंट की । जिससे वह आगन्तुक के प्रश्न को दिल पर से ही देख सकें । मिलने के समय हम दोनों को जितना आनन्द और सन्तोष मिला उतना ही विदा के समय हम दोनों ने दुःख का अनुभव किया।[1]

बेगू की यात्रा–टाड की बेगू यात्रा के दो कारण थे । एक तो महाराणा भीमसिंह और मेवाड के सरदारों का पारस्परिक सम्बन्ध स्थिर करने के लिए 1818 ई में टाड द्वारा जो कौलनामा तैयार कराया उस पर बेगू के रावत मेघसिंह (द्वितीय)ने सब सरदारों में पहले हस्ताक्षर किये। इससे टॉड की श्रद्धा बेगू ठिकाने के प्रति बढ़ गई थी । दूसरा बेगू के कई गाँव सिंधिया ने दबा लिए थे उन पर विचार किया जाना जरूरी था । अतः टाड 1822 ई फरवरी के माह बेगू गया । रावत मेघसिंह चूण्डावत ने उसको आतिथ्य कर रावला में उसे ठहराया । विश्राम करने के बाद टॉड ने हाथी पर आरूढ होकर रावत से मिलने के लिए प्रस्थान किया। बेगू गढ़ का दरवाजा काली मेघ चूण्डावत ने बनवाया था वह इतना ऊंचा न था कि हौदे सहित हाथी अन्दर प्रवेश कर सके । इसलिए महावत ने दरवाजे के दूर ही हाथी को रोक दिया और टाड को हाथी से नीचे उतरने के लिए कहा । परन्तु टाड ने उस समय एक दूसरे हाथी को द्वार में प्रवेश होते देख लिया इस लिए उसने महावत को हाथी अन्दर ले जाने को कहा । लेकिन ड्योढी पर बने पुल पर जाते ही हाथी मस्त गया और वह महावत के काबू में नहीं रहा। हौदे के साथ टॉड नीचे गिर पड़ा जिससे वह बेहोश हो गया । तम्बू में लाकर उसे लेटाया गया । आधी रात को उसे होश आया जब तक रावत मेघसिंह उसके शिविर में ही बैठे रहे।

---

1 एन स भाग 1, पृ 829 30 बनेड़ा राज का इतिहास पृ 124 5

दूसरे दिन सूर्य उदय होते ही रावत ने गढ़ के दरवाजे को ध्वस्त करा दिया। दो दिन के बाद टाड जब बिल्कुल स्वस्थ हो गया तब वह किले में गया। उस समय गढ़ का मुख्य द्वार टूटा हुआ देख कर टाड को बड़ा दुःख हुआ क्योंकि किसी प्रसिद्ध पुरुष के स्मारक को यों नष्ट करना उसे अच्छा नहीं लगता था। पूर्णरूपेण जांच पड़ताल करके टाड ने 32 गांव रावत महासिंह को दिलाये और इसके बदले 24000 रु. सिंधिया को दिलाकर झगड़ा समाप्त किया। बेगू ठिकाने के लिये टाड की यात्रा लाभदायक सिद्ध हुई। गांवों पर अधिकार हो जाने से ठिकाने की आर्थिक दशा में धीरे धीरे सुधार होने लगा।

—

राजस्थान के इतिहास के पिता कर्नल टॉड

—जसवन्तसिंह सिंघवी

भारत के अनूठे ग्रंथों में कर्नल टॉड कृत राजस्थान का इतिहास अनुपम ग्रंथ है। क्षत्रियों के परम हितैषी टॉड ने पच्चीस वर्षों के सतत परिश्रम से राजपूतों की कीर्ति से मण्डित राजस्थान का इतिहास लिखा, जो ऐतिहासिक सामग्री का एक अपूर्व भण्डार है। राजस्थान का कोई क्रमबद्ध इतिहास लिखा हुआ नहीं था। ख्यातों, बातों, वंशावलियों में इतिहास के सूत्र बिखरे हुए थे। टॉड ने अथक परिश्रम कर स्थानीय सामग्री का संकलन किया और वैज्ञानिक ढंग से राजस्थान का इतिहास लिखकर शोध जगत में एक नई क्रांति लाने का अनुकरणीय कार्य किया। इसलिये वे राजस्थान के इतिहास के पिता के रूप में याद किये जाते हैं।

टॉड की ख्याति एक महान इतिहासकार के रूप में तो सर्व विदित है ही वे राजस्थान और उसके आस-पास के प्रदेशों के भूगोल के भी प्रथम शोधक थे। उन्होंने दिल्ली से राजस्थान और मध्य भारत के अनेक प्रमुख स्थानों के मार्गों को उत्तम रीति से पैमाइश का कार्य सम्पादन कर अपनी सूझ-बूझ और पैनी दृष्टि का परिचय दिया। टॉड ने राजस्थान और उसके आस पास के प्रदेशों का एक प्रामाणिक नक्शा तैयार करने में भी कठोरतम परिश्रम किया। इस उपयोगी काम में अपना समय लगाते हुए उन्होंने इतिहास, प्राचीन ग्रंथ, पुराने सिक्के, जन श्रुति और शिला लेख प्राप्ति का भी संग्रह किया। जान को जोखिम में डालकर वे विकट मार्गों में होकर अपने भौगोलिक और ऐतिहासिक शोध के कार्य में अनवरत लगे रहे। अपने इस दस वर्ष के असाधारण श्रम से उन्होंने राजस्थान का पहली बार एक प्रामाणिक नक्शा बना लिया। सन 1715 में उन्होंने यह नक्शा हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल हास्टिंग्ज को भेंट किया जिन्होंने टॉड के इस महान कार्य की बड़ी प्रशंसा की। प्रदेश में सुधार व्यवस्था स्थापित करने में यह नक्शा अंग्रेजी सरकार के लिये बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ। टॉड ने अपने

भूगोल सम्बन्धी महत्वपूर्ण शोध के द्वारा हमारे देश के भौगोलिक ज्ञान में अनुपम वृद्धि की। सन् 1829 में जब उन्होंने अपने राजस्थान इतिहास की पहली जिल्द छपवाई तो उसके आरम्भ में यह नक्शा दिया और अपने संग्रह किये हुए राजस्थान के भूगोल सम्बन्धी वृत्तान्त का सारांश लिखा।

सन् 1810 के अक्टूबर में टॉड सिंधिया के दरबार के रेजिडेन्ट रिचर्ड स्ट्राचो के दूसरे असिस्टेन्ट नियुक्त हो गये। इसी नियुक्ति से इनका पोलिटिकल विभाग में प्रवेश हुआ। उस समय राजस्थान में मरहठों का प्रभाव बढ़ा हुआ था। राजपूत रईसों के आपसी फूट से मरहठा से लोहा लेना नामुमकिन हो रहा था। मरहठों और पिंडारियों के उत्पात से राजस्थान वीरान होता चला गया। टॉड को राजस्थान की ऐसी दुर्दशा देख कर बहुत दुःख हुआ। उन्होंने अपनी पुस्तक राजस्थान में इस दयनीय स्थिति का विस्तृत विवरण दिया है। सन् 1887 में गवर्नर जनरल हास्टिंग्ज ने लूटपाट एवं अराजकता के हालात को समाप्त करने के लिये दृढ़ संकल्प कर लिया। इस काम में सरकारी फौज का टाड ने उत्तम पथ प्रदर्शित किया। पिंडारियों और मरहठों का उपद्रव समाप्त होने पर ब्रिटिश गवनमेन्ट ने राजस्थान के राज्यों से संधि करना आरम्भ किया।

टॉड को उदयपुर, जोधपुर, कोटा, बूंदी और जैसलमेर के राज्यों का पालिटिकल एजेन्ट नियुक्त किया। सन् 1818 के फरवरी महीने में वे जब उदयपुर आये उस समय मेवाड़ की दशा शोचनीय थी। भालवाड़ा और कई अन्य कस्बे मरहठों के उत्पात से उजड़ गये थे। राज्य प्रबन्ध शिथिल हो रहा था। राज्य की आय बहुत घट गई थी। मेवाड़ में इस समय महाराणा भीमसिंह शासन कर रहे थे। उन्होंने टाड का आदरपूर्वक स्वागत किया। टॉड अपने उत्तम स्वभाव के कारण कुछ ही दिनों में महाराणा भीमसिंह के पूर्ण विश्वास पात्र और मुख्य सलाहकार हो गये। उन्होंने टॉड की सलाह से शासन प्रबन्ध में सुधार के अनेक कदम उठाये। प्रदेश में शांति रहने के कारण राज्य की आय दुगुनी हो गई। तीन बरस में उदयपुर नगर की आबादी दुगुनी हो गई उजड़े गांव फिर बसने लगे। यों टाड की उपस्थिति मेवाड़ और राजस्थान के अन्य राज्यों के लिए वरदान सिद्ध हुई।

अपने कार्यकाल में टाड ने अपनी सरकारी यात्रा में राजस्थान के अनेक स्थानों पर पुरातत्व प्राचीन ग्रंथ और शिलालेखों की खोज का काम किया। अपने मृदुल स्वभाव और सरल प्रकृति के कारण वे जहाँ गये

लोकप्रिय हो गये थे। इतिहास से उन्हें इतना लगाव था कि अस्वस्थता की हालत में भी गांव में खाट पर लेटे हुए वे जनता की समस्याओं और ऐतिहासिक विषयों पर लोगों से बातें करते रहते थे। वे राजपूत रईसों और उनके सामन्तों के विश्वासपात्र थे। उन्होंने मध्यस्थता कर राजाओं और उनके सामन्तों में अनेक विवादों का निपटारा कराया। निरन्तर कठिन परिश्रम के कारण उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया था। डॉक्टरों ने उनके शरीर की जांच कर उनको स्वदेश लौटने की सलाह दी।

ता. 1 जून 1822 को टॉड ने उदयपुर से स्वदेश के लिये प्रस्थान किया और बम्बई में तीन सप्ताह रह कर टॉड जहाज से स्वदेश के लिये रवाना हुए जहां तक जहाज पर से भारत का तट दिखता रहा वे एक टक अपनी प्रिय कर्मस्थली को देखते रहे। स्वदेश पहुंच कर भी टॉड ने भारतीय इतिहास और प्राच्य विद्याओं में अपना शोध जारी रखा। वे लन्दन नगर की रायल एशियाटिक सोसायटी नामक संस्था के सदस्य हो गये। सन 1829 में उन्होंने अपनी विख्यात पुस्तक एनाल्स एण्ड एन्टीक्वटीज ऑफ राजस्थान की पहली जिल्द छपवाई और सन 1832 में उसकी दूसरी जिल्द प्रकट हुई। इस पुस्तक की यूरोप अमरिका और हिन्दुस्तान के इतिहास प्रेमियों ने बहुत प्रशंसा की। अपनी नई पुस्तक ट्रैवल्स इन वेस्टर्न इण्डिया को छपवाने की लन्दन में व्यवस्था कर ही रहे थे कि अचानक उनको मिरगी की बीमारी हो गई। 17 नवम्बर 1835 को 53 वर्ष की अवस्था में भारतीय इतिहास और संस्कृति के इस परम उपासक और भारतवर्ष के सच्चे हितैषी का लन्दन नगर में निधन हो गया। ब्रिटिश सरकार के एक उच्च अधिकारी होते हुए भी टॉड की इतिहास दृष्टि निष्पक्ष स्वतन्त्र और सत्य पारखी थी। यही कारण है जहां ब्रिटिश सरकार ने हमारी इतिहास कीर्ति का नाश करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी टॉड ने उसी सरकार का अंग होते हुए भी भारतीय राष्ट्र की ख्याति उजागर करने हेतु राजस्थान का इतिहास लिखा। भारत के सभी विद्वानों ने यह स्वीकार किया है कि टॉड के इतिहास ने भारतीयों में देशप्रेम और स्वाधीनता की भावना को जागृत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। राजस्थान इतिहास के पिता और इस अमर इतिहासकार को निम्न काव्यांजलि श्रद्धा सुमन के रूप में सादर अर्पित है—

पुरातन ग्रंथ और पुरालेख शोधि शोधि
नभ इतिहास चन्द्र कौन चमकावतो ।
चारण सुविप्र एवं अन्य सुधी सयनि ने
प्रबल पराक्रम की गाथा कौन गावतो ॥
कपटी लुटेरों की अराजकता नष्ट कर
कौन सुव्यवस्था और शान्ति सरसावतो ।
भारतीय गरिमा कौन करतो विश्वव्यापि
जो "राजस्थान इतिहास" टाड न रचावतो ॥

—

कर्नल टॉड - व्यक्तित्व एवं कृतित्व

—डॉ गोपीनाथ शर्मा

जब मराठों की शक्ति का ह्रास हो रहा था और ब्रिटिश सत्ता के प्रभुत्व की आभा छा रही थी एवं राजस्थान के नरेश अपने पूर्वजों के शौर्य को खो चुके थे तथा प्रजा सामन्तों तथा नरेशों के शोषण से कराह रही थी उस समय कुछ एक अंग्रेजी शासन के अधिकारी ऐसे थे जिनका राजस्थान के भारतीय शौर्य और संस्कृति से कुछ लगाव हो गया था। ऐसे व्यक्तियों में कर्नल टॉड एक था।

कर्नल टॉड के व्यक्तित्व पर दृष्टि डालें तो कई महत्वपूर्ण पहलू हमारे सामने आते है। प्रथम तो उसमें एक विलक्षण एवं सर्वतोमुखी प्रतिभा थी जिससे जिस काम को वह हाथ में लेता था उसे वह पूरी दक्षता से पूरा करता था। जब उसका चयन वूलविच के शिक्षा-स्थान में किया गया तो चयन एक प्रकार से उसकी योग्यता के आधार पर था क्योंकि इसमें प्रवेश इने गिने शिक्षार्थियों को लिया जाता था जो संस्था के मापदण्ड के अनुकूल उतरते थे। इस परीक्षण में ठीक उतरने पर उसे रेजीमेंट में कमीशन दिया गया। जब वह मराइन द्वीप भेजा गया तो वहां नाविक दल के काम में भी खरा उतरा। बंगाल में आने पर वह रेजीमेंट का लेफ्टिनेन्ट और दिल्ली में सर्वेक्षण इन्जीनियरी आदि पद पर काम करने में सक्षम समझा गया। उसके उदीयमान गुणों से प्रसन्न होकर मिस्टर ग्रीमसर ने उसे अपने साथ सिंधिया दरबार में ले जाना उपयुक्त समझा। यहां जाने पर आठ वर्ष के अथक परिश्रम द्वारा उसने सर्वेक्षण के मानचित्र एवं आरेख मिलाकर नर्मदा और नर्मदा से यमुना अंचल के सामरिक तथा राजनीतिक उपयोग के लिए तैयार कर अपने ऊपरोक्त अधिकारियों के दिल में एक प्रमुख स्थान ग्रहण कर लिया। ये सामग्री आगे होने वाले सर्वेक्षण के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध हुई।

इन बहुमुखी प्रतिभा से चमत्कृत होकर लार्ड हेस्टिंग्ज ने अपनी विस्तारवादी नीति को सफल बनाने के लिए उसे मराठों व पिण्डारियों के दमन में लगाया जहाँ वह जालिमसिंह के सहयोग से पूर्णतः सफल हुआ। सिंधिया के दरबार में स्ट्रेची के घर जाने पर वह रेजीडेन्ट का द्वितीय सहायक और फिर उदयपुर में एजेन्ट के पद पर पदासीन हुआ। एजेन्ट पद पर रहते हुए उसने अपने अधिकार क्षेत्र में यत्र तत्र छिपे व बिखरे उपद्रवियों का सफाया कर शान्ति स्थापित की। यही नहीं आन्तरिक झगड़ों और सामाजिक जीवन के असन्तुलन को निपटाने में उसने अथक परिश्रम किया। टॉड ने नरेशों व राजस्थानीय सामन्तों के पारस्परिक विवादों का निपटारा, राजपूत राजनीति की विषम विडम्बनाओं को सुलझाने और अपने पद की गरिमा बनाये रखने में कोई कसर न रखी। ऐसा तभी सम्भव हो सका जब वह स्वयं हर समस्या को समझने और निष्पक्ष पूर्वक जटिल समस्याओं का दृढ़ता से मुकाबला करने की क्षमता रखता था। यही कारण था कि उसके शासन काल में उजड़ी हुई बस्तियाँ पुनर्स्थापित हो गईं। असुरक्षित मार्ग फिर यातायात के लिए उपयोगी हो गए और बाहर से आने वाले व्यापारी राजस्थान के अनेक नगरों में अपना कारोबार जमाने में लग गये। भीलवाड़ा जो बस्ती के लिहाज से उजड़ चुका था वहाँ पुनः 3000 घरों की बस्ती हो गई। 1818 में उदयपुर में जहाँ 3500 की आबादी थी 1822 में 10 000 हो गई। 1818 ई. का राजस्व जो 40 000 रु. वार्षिक था बढ़कर दस लाख तक पहुँच गया। इस विकास और वृद्धि का श्रेय कर्नल टॉड को है जिसने अपने परिश्रम और अध्यवसाय से अपने दायित्व को निभाया। इस प्रकार बुद्धि, प्रशासन, कूटनीति, अध्यवसाय, परिश्रम, कार्य कुशलता व क्षमता प्राप्ति के क्षेत्र में वह कसौटी पर हर प्रकार से ठीक उतरा।[1]

इसके जीवन का एक अन्य पहलू भी है जिसमें कुछ उसके प्रशंसकों और कुछ उसके विरोधियों के विचार हैं। एक अधिकारी जिसका नाम कर्नल विलियम डिक्सन था जिसने इसके साथ मेवाड़ रेजिडेन्सी में काम किया था उसने लिखा है कि टॉड सरल प्रकृति का था और सभी सरकारी अफसर उसे प्यार करते थे तथा उसमें उस उदीयमानता के सभी लक्षण परिलक्षित होते थे जो बाद में उसने अपनी प्रतिभा के बल पर प्राप्त की थी।[2]

---

1 टाड एनाल्स भा 1 पृ 561 585 प्रस्तावना प 29 30 35

2 टॉड, ट्रेवल्स, प 18

मिस्टर ग्रीमसमर ने टाड को अपने साथ सिंधिया दरबार में से जाने के लिए अपने ऊपरीय अधिकारियों को जो प्रशंसात्मक पत्र लिखे थे उनमें उनके स्वभाव और स्वतंत्र चरित्र की भूरि भूरि प्रशंसा की गई थी। मिस्टर मसर ने इसकी कार्य कुशलता और त्यागवृत्ति के सम्बन्ध में लिखा है कि जब तक मैं इस रेजिडेन्सी में रहा वह इस प्रदेश के भूगोल सम्बन्धी अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए प्रत्येक सुलभ और शक्य अवसर का लाभ उठाता रहा और मेरा विश्वास है कि उसके वेतन का बहुत बड़ा भाग देश के विभिन्न भागों में कार्यकर्ताओं को भेजकर उनके द्वारा स्थानीय सूचनाएं प्राप्त करने में व्यय होता था। वह स्वयं भी इस उद्देश्य के लिए अथक परिश्रम करता रहता था और उसकी थकान को कम करके उसे पुनः सुस्वस्थ बनाने हेतु कभी-कभी मुझे ऐसे प्रयत्न भी करने पड़ते थे कि उसकी प्रवृत्तियों में रोक पैदा हो जाय क्योंकि गठियावाद से प्रभावित उसका स्वास्थ्य बहुधा साधारण व्यायाम करने में भी असमर्थ हो जाता था।[3]

मिस्टर स्ट्रेची जिनके साथ टाड ने काम किया था लिखता है 'इस पूरे समय में वह मुख्यतः सिन्धु और बुन्देलखण्ड तथा जमुना और नर्मदा के बीच के प्रदेशों से सम्बद्ध भौगोलिक सामग्री एकत्रित करने में व्यस्त रहा। मेरे पद से सम्बन्धित कर्तव्यों का इन प्रदेशों में निरन्तर सम्बन्ध बना रहता था और इस विस्तृत क्षेत्र के विषय में उसके भौगोलिक ज्ञान से मैंने बहुत लाभ उठाया। प्राप्त जानकारी को प्रस्तुत करने के लिए वह सदैव तत्पर रहता था जो महत्व के अवसरों पर बहुत उपयोगी सिद्ध होती थी सरकार ने भी उसके इस कार्य की बहुत प्रशंसा की है।[4]

लार्ड हेस्टिंग्स तथा पिण्डारियों के विरुद्ध तैनात प्रत्येक जनरल ने टाड द्वारा प्रेषित मानचित्रों, सेना और मोर्चों की रचना के प्रबन्ध और सामरिक प्रगति के सम्बन्ध में उसकी सेवाओं के लिए अनेक बार आभार व्यक्त किया। करीमखां व चीतू के विरुद्ध टॉड द्वारा की गई मोर्चाबन्दी के सम्बन्ध में लॉर्ड हेस्टिंग्ज ने उसकी अत्यन्त प्रशंसा की और व्यक्त किया कि अभियान को आगे बढ़ाने में मार्गदर्शन सम्बन्धी आपकी सेवाओं के विषय में प्रत्येक क्षेत्रीय जनरल से प्रशंसात्मक प्रमाण पत्र प्राप्त हुए हैं।[5] कोर्ट आफ डायरेक्टर्स ने भी सदा ही उसकी सराहना की। वह इतना स्वाभिमानी था

3 टॉड ट्रेवल्स, पृ 19 22
4 टॉड ट्रेवल्स पृ 22 23
5 टॉड ट्रेवल्स पृ 26 27 29

कि युद्ध म जाने क लिए तो आगे आकर उसम सम्मिलित होने को उद्यत रहता था परन्तु सम्मान सम्बधी प्राप्य अधिकार क लिए याचना करने के लिए वह निम्नस्तर पर उतरना कभी पसन्द नही करता था। [6]

सिरोही कोटा मवाड आदि रियासतो की जनता टाड की बडी प्रशसा करती थी। इसक दो वष बाद आने वाल विशोप हैबर ने इन भावनाओ को अकित करते हुए लिखा है मेवाड के सम्पूर्ण उच्च एव मध्यम वग म बहुत ही सौहार्द और आदर से टाड का नाम लिया जाता था। डाबला और आगे मुकामो म वहाँ के कोतवाल आदि हम निरतर टाड साहिब के बारे म पूछते रहे कि इग्लण्ड लौटने पर उनका स्वास्थ्य ठीक हुआ या नहीं और अब उसस फिर मिलना हो सकेगा या नही इत्यादि। जब उनको कहा जाता कि ऐसी सम्भावनाए अब नही है तो वह बहुत अफसोस प्रगट करते और कहते कि उसके आने से पहले देश म शांति का नाम भी नही था और सभी मालदार व गरीब लोग डाकुओ और पिंडारियो के सिवाय उसस समान रूप से प्रेम करते थे। [7] डा स्मिथ का भी कहना था कि वह वास्तव म इस देश के लोगो से प्रेम करता था और उनकी भाषा व रीति रिवाजो को स्वाभाविक रूप स जान गया था। भीलवाडा म भी प्रत्यक व्यक्ति कप्तान टाड की भूरि भूरि प्रशसा कर रहा था। लोगो न उसके नाम पर भीलवाडा म एक बाजार का नाम टॉडगज रखवाया जिसे स्वय टाड ने निरस्त कर महाराणा के नाम रखवाया क्योकि वह चाहता था कि प्रत्येक लाभकारी काय का गौरव राजा को ही प्राप्त हो। [8] इन उद्धरणो व घटनाओ से सिद्ध है कि वह अपने उच्चअधिकारियो और जनता का विश्वास भाजन बन गया था। सत्तावादी नीति के माहौल म सरकार व जनता दोनो को सन्तुष्ट करना ही दोधारी तलवार पर चलना था जिसम वह हर प्रकार स सफल सिद्ध हुआ।

टाड का परोक्ष और अपरोक्ष रूप से 18 वर्षो तक पृथक पृथक पदो पर रहने के कारण उसका राजपूताना के साथ बराबर सम्बन्ध बना रहा। अपने सरल स्वभाव स उसकी लोकप्रियता भी इतनी बढ गई थी

---

6 टाड ट्रवल्स प 59

7 टाड, ट्रवल्स प 36

8 टाड ट्रवल्स प 36 37

कि उनका मन यहीं रमन का हो गया था।[9] फिर प्रश्न यह उठता है कि वह भारत छोड़कर इंग्लैंड क्यों चला गया ? इसका उत्तर कई रूप में दिया जाता है। ऊपरीय तौर पर यही बतलाया जाता है कि शारीरिक अस्वस्थता के कारण उसका स्वदेश जाना आवश्यक था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि अथक परिश्रम के कारण वह गठिया से पीड़ित था जिसका उपचार वह व्यायाम तथा औषधियों के सेवन द्वारा करता रहता था परन्तु 1819 से 1822 तक के सरकारी दस्तावेजों के अवलोकन से स्पष्ट हो जाता है कि उसकी लोकप्रियता से उसके साथियों में जलन की भावना उत्तरोत्तर तीव्र होती गई और कुछ स्वार्थी तत्व उसके राजपूत नरेशों के सम्पर्क का विपरीत अर्थ लगाकर उसके विरुद्ध मिथ्या प्रचार करते थे। इन्हीं राजाओं के साथ स्नेह रखने की बात को इतना बढ़ाया गया और गवर्नर जनरल के मन में उसके जीवन व नीति के सम्बन्ध में सन्देह उत्पन्न कर दिया गया। सरकारी दस्तावेजों की भाषा जो प्रशंसात्मक 1818 तक थी उसमें आगे चलकर कड़ाई का प्रयोग किया जाने लगा। कर्नल टॉड इस प्रकार के सन्देह से अप्रसन्न रहने लगा और उसने सरकारी सेवा छोड़ देने का संकल्प 1821 में ही कर लिया। इतना अवश्य था कि अपने कर्तव्य को निभाने में अथवा ब्रिटिश सत्ता के प्रति उसके मन या कर्म में निष्ठा और वफादारी वैसे ही बनी रही। स्वयं हैबर तथा उसकी पत्नी ने भी यह लिखा है कि राजपूतों का स्नेह भाजन बनने से सरकारी अफसर उस पर सन्देह करने लग थे और उस पर भ्रष्टाचार व घूसखोरी का आरोप लगाते थे। परन्तु इन तथ्यों से स्पष्ट रूप से लिखा है कि जब हमने इन आरोपों की जाँच की तो सब मिथ्या साबित हुए। उनकी मान्यता है कि स्नेह भाजन बनना उसके उदार विचार से सम्बन्धित था। उसमें न कोई उसकी चाल थी या भ्रष्टाचार था। शोध के प्रति निष्ठा होने के कारण तथा ऐतिहासिक तथ्यों की खोज की प्रवृत्ति होने के कारण उसने राजपूतों या अन्य वर्गों के साथ सौहार्दपूर्ण व्यवहार बढ़ाकर लोकप्रियता प्राप्त की थी जो उसके कतिपय साथियों को अच्छी नहीं लग रही थी।[10]

इन मिथ्या आरोपों के कुछ कारण भी थे। मारवाड़ भी टॉड के प्रशासन में था परन्तु वहाँ का वकील दिल्ली में ही रहता था। महाराजा मानसिंह कम स्वतन्त्र विचार का व्यक्ति था जो ब्रिटिश हुकूमत के

9 टॉड का पत्र महाराणा को व मर्सी
10 मन प्रा॰ तथ्य प्रार सी, जा 21, 1944, प 94-96

विरुद्ध था । वह तथा उसका मुसाहिब चाहते थे कि टाड जो मवाड एजेंसी पर था उसकी निगरानी मारवाड के निकटतम क्षेत्र अजमेर स होती थी और वह बार बार दौर कर ब्रिटिश सत्ता का प्रभुत्व मारवाड क इलाके म स्थापित करता था । यहा तक कि मारवाड के हिसाब किताब की जाच एव सामन्तों के लेख जोख की जाच की जाती थी । महाराजा का जोधपुर किले के अधिकार से भी हटान की माग कलकत्ता स चल रही थी । इस धारणा को लेकर टाड के प्रशासन की मारवाड म कारिंदे अवहेलना करन लग थे । महाराजा तथा उसका मुसाहिब अपना सीधा सम्बन्ध दिल्ली स चाहते थे ताकि मारवाड स सत्ता का दबाव मवाड की तुलना म दूर स बना रहे जिससे जाच पडताल एव निगरानी म प्रभुत्व म शिथिलता आ जाय । अतएव मारवाड क वकील न दिल्ली म रहते हुए टाड क खिलाफ मिथ्या आरोप भी म ढ लगा दी और आक्टरलोनी जो टाड क मारवाड अधिकार से प्रसन्न नही था वह भी वकील का समर्थक बन गया । इस प्रकार के षडयन्त्र से टाड की स्थिति बडी नाजुक हो गई । जब भी वह मारवाड पहुचता तो उसके साथ व्यवहार म वहा का स्थानीय वग उपेक्षा दिखाता इस आशय से कि वह तग आकर मारवाड क्षेत्र स अलग हो जाय । अन्त म वकील एव आक्टरलोनी की साजिश क कारण टाड स मारवाड क्षेत्र हटा लिया गया और मेवाड से दूरस्थ अमलसर का इलाका द दिया गया जहा वह अपनी कारगुजारी प्रभावशील न प्रदर्शित कर सके और उसकी बदनामी हो [11] ।

कुछ साथियो की व्यक्तिगत दुर्भावना क अतिरिक्त कुछ एक ऐसी भी घटनाए था जो सदेह स जुडी थी और धीरे धीरे उनका स्वरूप राजनीतिक बन गया । हाडती म सन्धि के अनुसार राजराणा जालिमसिह को कोटा के प्रशासन म प्रमुखता दी गई थी परन्तु जब उम्मेदसिह के पश्चात किशोरसिह गद्दी पर बठा और जालिमसिंह पक्षाघात स पीडित था तो किशोरसिह क राज्य म जालिमसिह का पुत्र माधोसिंह राजराणा की हैसियत स कोटा महाराव क प्रशासन में हस्तक्षप करन लगा । वास्तव म ये हस्त क्षेप वाजिब नहा था क्योंकि सन्धि क अनुसार जालिमसिंह क विशेष अधि कार का उपभोग माधोसिंह लोग के सन्दभ में नहीं हा सकता था । कोटा महाराव इस बढत हुए माधोसिह के प्रभाव को सहन नहीं कर सकता था ।

---

11 फो प १९ 14 अप्रल 1821 टॉड का पत्र न 65 टाड और स्विन, न 5 1921

टॉड ने स्थानीय परिस्थिति को देखते हुए किशोरसिंह का पक्ष लिया परन्तु जब किशोरसिंह ने माधोसिंह के हस्तक्षेप के विरुद्ध बखेड़ा खड़ा किया तो इसका कोई सन्तोषजनक उत्तर न दिया गया। बल्कि टॉड को आदेश दिया गया कि वह अपने फौजी दबाव से राजराणा के प्रभुत्व को बरकरार कायम रखावे। अब से महाराव चम्बल पार पहुंच गया और राजराणा ने कोटा पर प्रभुत्व कायम कर लिया। टॉड बिहड़ जंगल तथा दवगीन मार्ग की असुविधा के कारण समय पर कोटा न पहुंच पाया। इस बात को लेकर सरकार टॉड के प्रति आक्रोश से महाराव चम्बल पार कई ठाकुरों का विद्रोह करने का षड्यन्त्र कर रहा था और टॉड ने सनिक कार्यवाही में ढिलाई कर महाराव को सहायता पहुंचाई थी हालांकि ब्रिटिश मत से महाराव को पुनः कोटा की गद्दी का अधिकारी बना दिया गया, जैसा टॉड मन के अनुसार चाहता था पर हाड़ौती के स्वतन्त्र अधिकारों से वंचित कर दिया गया। उसे आदेश दिये गये कि वह मालवा और राजपूताना के रेजिडेन्ट ओक्टरलोनी से आदेश प्राप्त कर कोटा एजेंसी का काम करे।[12]

अब यही मेरी मेवाड़ एजेन्सी जहां उसने बड़े लगन से ब्रिटिश हितों की रक्षा की और जनजाति व सामन्तों के उपद्रवों को शान्त कर राजस्व का आय बढ़ाने में सफलता दिखाई और वहां की आय 30-40 हजार से 10 लाख के लगभग बढ़ा दी वहां भी उस पर भ्रष्टाचारों की लीनता का अंकुश लगा दिया गया। जब मेवाड़ में शांति स्थापित हो गई और मीना के उपद्रव शान्त हो गये तथा सामन्तों एवं महाराणा के सम्बन्धों में सुधार हो गया तो सन्धि के अनुकूल उसने महाराणा को पुनः स्वतन्त्र की छूट दे दी। इस कार्यवाही को भी सन्देह की दृष्टि से देखा जाता रहा। सरकार ने इस प्रस्तावना में उस पर आरोप लगाया कि वह ब्रिटिश सत्तावादी नीति के प्रतिकूल आचरण कर रहा है और महाराणा से उसकी सांठगांठ बढ़ती जा रही है जो नई प्रभुसत्तावादी नीति और राजपूताना पर प्रभाव स्थापित करने में विडम्बना का साधन बनेगी। अपने 16 जुलाई 1821 के पत्र में जो उसने स्विटन को लिखा था, उसमें उसकी व्यथा का समुचित चित्रण है जिसमें स्पष्ट दर्शाया गया है कि उत्तरोत्तर

---

12 एचीसन भा 3 पृ 361 टॉड का पत्र मेटकाफ का फो पो न 20 1821, स्विटन का पत्र टॉड को फो पो 5 1821 मेहता हेस्टिंग्स पृ 154, डॉ वशिष्ठ का लेख पृ 27 33,1991 पाण्डुलिपि।

मारवाड कोटा सिरोही और फिर मेवाड से टाड का प्रभुत्व हटाया जाना उसके विरुद्ध षडयन्त्र मात्र है उसके जैसा स्वामीभक्त तथा प्रजा सेवक अधिकारी इस अपमान सूचक व्यवहार को सहन न कर सका । इसके पश्चात उसने मेवाड मे अपनी नई योजनाओं को क्रियान्वित करने मे ढील कर दी। अपना चार्ज 1 जून 1822 को कैप्टिन वाघ को सुपुर्द कर वह 22 जून 1822 को यूरोप यात्रा के लिए चल पडा । वास्तव मे इस प्राणवान और निस्वार्थ व्यक्ति पर भ्रष्टाचार तथा हिंदू मुसलमान जनता के साथ सद्व्यवहार एव राजाओ के सामन्तो म सौहार्द्रपूर्ण सम्बन्ध का ब्रिटिश सत्ता को मजबूत बनाने के साधन थे उनके विपरीत प्रतिक्रिया का वातावरण बनाया गया वह उसके लिए घोर अन्याय का सूचक है । जिस नगर म उसने निष्ठा के साथ ब्रिटिश सत्ता की सेवा का शुभारम्भ किया था वहा उसको अपमानित किया जाने लगा । भला एक निष्ठावान दूरदर्शी और सच्चा अधिकारी इस अपमान को कैसे सहन कर सकता था यदि हम स्वाभिमान का उदाहरण ढूढना है तो वह टाड के व्यक्तित्व म मिलता है ।[13]

एनाल्स की समालोचना —

टाड के व्यक्तित्व म एक उज्ज्वल और सेवा भाव की भावनाओ का समन्वय था जिससे स्वदेश एव राजस्थान म उसकी लोकप्रियता हो गई । सम्भवत 19 वी शताब्दी म शासन काल सत्ताधारी अधिकारियो म वह अपनी सानी का एक ही था । ऐसे स्वभाव से उसे ख्याति मिली परन्तु शाश्वत ख्याति उसकी कृतियो प्रमुखत 'एनाल्स पर आधारित थी । लेखक होने का राज यह था कि उसको घूमने फिरने सर्वेक्षण करने सामग्री इकट्ठा करने की प्रवृति नैसर्गिक थी । अपनी राजकीय सेवाओ में ज्यो उसे फुरसत मिलती थी वह इस दिशा म लगन म जुट जाता था । इतिहास लेखन पद्धति के साधन एव इतिहासकार और समाजशास्त्री आज जानता है या उनका उपयोग वह करता है उनका समुचित उपयोग अपने समय म टाड ने अपना लिया था । वैसे उसने अपना दुनिया के लिए कभी इतिहास का मना देने का आग्रह नहीं किया परन्तु उसके एनाल्स म पुरातत्व सामग्री स्थापत्य मुद्रा(20 हजार) शिलालेख ताम्रपत्र पट्ट पर दान ऐतिहासिक साहित्य लोक साहित्य और आख्याएं एव जन सम्पर्क से जानकारी प्राप्ति इत्यादि के सभी मार्गो का समावेशित पाते म हम उसकी कृतियों का इतिहास की सन्दर्भ म कोई आपत्ता नहीं । लगता है प्राचीन राम

13 टाड टवल्स पृ 1

के इतिहास ने उसे पूर्ण प्रभावित किया था क्योंकि स्थापत्य की वंश परम्परा व आदर्शों के अध्ययन और प्रस्तुतीकरण में टॉड ने गिबन के लेखन शैली का उपयोग किया है जो कई प्रसंगों में स्पष्ट है। यदि उसने प्राचीन भवन या मन्दिर को झांका तो उसका ध्यान स्वभावतः राम के समय की ओर खिंचा और उस स्थापत्य की विशेषता में भारतीय स्थापत्य का समावेश या समानता स्थापित करने के प्रयत्न में लगाया। कुम्भलगढ़ की वेदी में भी उसका यही प्रयास रहा है जो विशुद्ध वेदान्त विधि से बनाई गई थी जिसमें पाश्चात्य कला का कोई सम्बन्ध नहीं था।

इसी प्रकार जब उसने राजपूत जाति की उत्पत्ति की खोज करनी शुरू की तो सीथियनों के कुछ रस्म-रिवाजों की जानकारी उसे राजपूतों के रस्म रिवाज व मान्यताओं की सम्मान स्थिति में पाया। राजपूतों की अर्चना-पूजा घोड़ा का अर्पण बलिदान और शौर्य को उसने इसलिए सीथियन परिपाटि से जोड़ दिया। विद्वान महाशय की भूल यह हो गई कि उसने गहराई से यह न सोचा कि भारतीय संस्कृति के विशालकाय दायरे ने सम्पूर्ण मध्य एशियाई एवं यूरोपिय संस्कृति को प्रभावित कर दिया था। इसी कारण ऊपरीय तौर से उसे समानता दिखाई दी थी और उसी समानता को विदेशी उत्पत्ति का स्रोत बतला दिया।

उसने इतिहास में क्रमबद्ध को सम्बद्ध करने में ख्यातों व वंशावलियों का प्रचुर उपयोग करने से समय, नाम, वंशानुप्रणाली आदि में भूलें हो गई जिसका उसके लिए विदेशी होने के नाते स्वाभाविक थी। अपने वहां से अपरिचित होने से हल्दीघाटी की स्थिति का निराकरण उससे न हो सका अतएव उसे अरावली से सहाड़ा की पहाड़ियों में हल्दीघाटी स्थान का विवरण देना पड़ा जो गोलमटोल सा है।[14] परन्तु उसके द्वारा किये गये सामाजिक चित्रण में बड़ी जान दिखाई देती है क्योंकि टॉड स्वयं जानकारी के लिए निकट सम्पर्क में विश्वास करता था। अतएव हर तबके से मिलकर पूछताछ की और उसके बाद छानबीन द्वारा उसने अपनी धारणा बनाई। फलतः उसके वर्णन में नवजीवन का संचार हो गया। उसने आबू, कुम्भलगढ़, आदि ऐतिहासिक स्थलों के अलावा महाराजा मानसिंह, महाराणा प्रताप आदि सम सामयिक व्यक्तियों का ऐसा खाका खींच कर रख दिया है कि जैसे स्थापत्य वैभव शौर्य और स्वभाव आंखों के आगे नाच रहे हों।

---

14 टॉड, एनाल्स भा 1, पृ 393

इसके इतिहास लेखन में पौराणिक एवं ख्यात प्रणाली की भी झलक प्रतिबिम्बित होती है । भौगोलिक वर्णन और वंश वर्णन में पौराणिक पद्धति का उपयोग उसके इतिहास में मिलता है । ख्यातों में लिये रोचक प्रसंगों से वह बड़ा प्रभावित हुआ जिनका समावेश उसने 'एनाल्स' में बड़ी भावुकता से किया है । जैसा ख्यातों में बड़ी-चढ़ी घटनाओं का जिक्र रहता है लेखक महोदय ने उसका भी प्रयोग यथा साध्य किया परन्तु ख्यात लेखन प्रणाली को कुछ हद तक अपनाकर कभी कभी ऐतिहासिक तथ्यों का निभाव वह नहीं कर सका । टाड की लेखक होने की ख्याति को प्रशंसा और लेखन सामग्री का उपयोग का प्रथम सोपान लार्ड हेस्टिंग्स के पत्रों द्वारा दृष्टिगोचर होता है । उसकी रिपोर्टों मानचित्रों व संकेतों का वितरीकरण सभी ब्रिटिश सेनाओं व अधिकारियों में किया गया जिसके फलस्वरूप चारों ओर से उसकी प्रशंसा का तांता लग गया जो हेस्टिंग्स के प्रलेखों से प्रमाणित है । इस प्रारम्भिक प्रयास के क्रम में इतिहास के साधन की विपुल सामग्री का मूल्यांकन 1806 से 1813 तक हो चुका था और उसकी मान्यता एक अच्छे संग्राहक के रूप में हो चुकी थी ।[15]

उसकी शोधक बुद्धि का परिचय विद्वानों को प्रथम बार हुआ जबकि उसने कई मार्मिक और खोजपूर्ण शोध प्रबन्ध रायल एशियाटिक सोसाइटी में पढ़े, और उन्हें तथा अन्य लेखों को पेरिस एशियाटिक सोसायटी को भेजा । इन शोध प्रबन्धों के विषय महत्वपूर्ण थे । जिनमें गुप्त मन्दिरों, राजपूत वंशों, मेवाड़ के धार्मिक संस्थानों, यूरोपियन एवं भारतीय मुद्राओं के अलावा शिलालेख थे । जिससे उसके पांडित्य का सौरभ देश विदेशों में प्रसारित हुआ । पुनश्च जो सामग्री वह अपने साथ लन्दन में लाया था उसका प्रकाशन राजस्थान के मध्य और पश्चिमी राज्यों के सन्दर्भ में एनाल्स एण्ड एन्टीक्वीटीज के नाम से पहली जिल्द 1829 में और दूसरी जिल्द 1835 में प्रकाशित हुई । उसने 1835 में अपनी पश्चिमी भारत यात्रा का ग्रन्थ समाप्त कर लिया था परन्तु जब उसे छपवाने का वह 14 नवम्बर को लन्दन आया तो 27 घण्टे मूर्छित रहने और अन्त में निधन के कारण उसका प्रकाशन देखने न पाया । 17 नवम्बर 1835 ई. को 53 वर्ष की अवस्था में वह इस संसार से विदा हो गया ।[16]

---

15 टाड ट्रैवल्स पृ 47
16 टाड ट्रैवल्स पृ 50 51

कर्नल टाड की ख्याति उसके 'एनाल्स' पर अधिक आधारित है। परन्तु उसकी अन्वेषण प्रवृत्ति का परिचय कई लेख जो यूरोपिय सभ्यताओं के सम्बन्ध में है वे उसी आभा के साथ प्रस्फुटित होते हैं। तो इस प्रश्न का उठना स्वाभाविक है कि तब उसने फिर राजस्थान का इतिहास क्यों लिखा? सबसे प्रभावशील कारण यही हो सकता है कि नर्मदा से यमुना और इडस से बुंदेलखण्ड के सर्वेक्षण ने तथा एतद् सम्बन्धी शोध के जन सम्पर्क ने लोगों की स्थानीय लोक गाथाओं रस्म-रिवाजों तथा मान्यताओं से परिचित करा दिया। मध्य भारत मध्य प्रदेश राजस्थान एवं संयुक्त प्रान्त के अञ्चलों के अतिरिक्त राजस्थान के शौर्य और बलिदान की आख्यायिकाओं से वह बड़ा प्रभावित हुआ। जब जब वह अपने परिजनों को तथा मित्रों को पत्र लिखता था उसने सदैव राजस्थान के निजी ममता का काफी जिक्र किया। इसी अर्से में 1806 ई. में उन्हें फिर मर्सर के साथ दौलतराव सिंधिया तथा महाराणा भीमसिंह की था एकलिंगजी के मन्दिर की मुलाकात तथा समझौते में सम्मिलित होना तथा कृष्णाकुमारी के अमानुषिक बलिदान की घटना को सुनकर उसका मन भर आया, उस उद्वेग से कि भारतीय बलिदान की कसौटी पर उतरने वाले राजवंश की यह दयनीय अवस्था है जिसको उभारना तथा प्रकाश में लाना उसका फर्ज है। वह स्वयं लिखता है कि पहले-पहल राजस्थान के पुनरुद्धार की उदार योजना का विचार यहीं मन में उठा और उसी के वशीभूत एनाल्स लिखने की लालसा उसमें जाग्रत हुई। सम्भवतः जब जब अवसर मिला उसका सर्व अभिप्राय राजस्थानी शौर्य की कहानियों के संकलन में परिणित हो गया। इस धारणा के 20 वर्ष के अन्तराल में राजस्थान की प्रथम तथा अग्रणी गाथा प्रकाशित हुई। जिसमें श्रद्धा सद्भाव, प्रेम तथा सौहार्द से ओत-प्रोत भारतीय शौर्य का विवरण है।[17]

इस देदीप्यमान टाड की कृति के कई अंग्रेजी में संस्करण प्रकाशित हुए और उनके हिन्दी अनुवाद भी प्रकाश में आये। जो भी राजस्थान के शोध प्रबन्ध इतिहास में हैं या होंगे "एनाल्स" एक उच्च कोटि का आधार ग्रन्थ की गरिमा बनाये हुए है। शोध संस्थाओं का ये दायित्व है कि राजपूत वंश की उत्पत्ति सामन्त प्रथा वंशक्रम राजनैतिक स्थिति, यूरोपियन रिवाज व भारतीय रिवाजों की तुलना, राजस्थान की आर्थिक दशा आदि विषयों को लेकर कुछ मान्यताओं पर प्रकाश डालने का शुभारम्भ करें।

---

17 टॉड ट्रेवल्स पृ 24-25

जब कुछ विचारक इस अनुपम ग्रन्थ को पढ़ते हैं तो यह शका उनके मन म उठती है कि टाड ने राजपूतो की प्रशसा कर एक हिन्दू-मुस्लिम विद्वेष की भावनाओं को जगावा दिया। कुछ विचारक तो यहा तक लिखते हैं हिन्दू मुस्लिम अनवय का जन्म दाता था ऐसा करने से वह ब्रिटिश सत्ता की जडो को मजबूत बनाना चाहता था हम इस दलील को दो भागो म बांटते है एक तो यह कि राजपूतों की प्रशसा के गर्भ म एक राजनीतिक चाल थी और दूसरा यह पक्ष कि वह ब्रिटिश सत्तावादी नीति का पोषक था। गूढ़ विचार करने पर ये दोनो दलीलें सत्य की कसौटी पर नही उतरती।

यदि हम एनाल्स [illegible] प्रसगो को ले तो लगता है कि टाड जाति विशेष का राजनीतिक प्रेरणा से प्रशसक नहीं था। वह तो तथ्यों का खोजक और गुण ग्राहक था। उसने राजपूतो की प्रशसा जाति विशेष के नाते न कर शौर्य साहस बलिदान त्याग आदि गुणो को लक्ष्य कर की थी। जहा उसने इन म दोष देखे हैं उनकी उपेक्षा नहीं की है। वह लिखता है कि राजपूत गुण और अव गुण और दुराग्रह के सम्मिश्रण हैं। अफीम शराब आपसी वैमनस्य और अदूर दर्शिता जो उनमे पाई उसकी उसने खुलकर निन्दा की है। वह लिखता है कि पुरानी मान्यताओं के कारण उनमे कई खराबियां आ गई थी। ये लोग दूसरो की आखो म देखते हैं और दूसरो के कानों से सुनते हैं।[18] जहा प्रताप[19] के शौर्य का बखान है तो अपने अच्छे मित्र भीमसिंह[20] के बारे म उसे बुद्धिमान सहिष्णु और मिलनसार कहने के साथ विलासिता म विश्वास करने वाला अनियमित जीवन का प्राणी तथा उदारता म अविवेक बतलाया है। उदयसिंह की शौर्य की जहां दुहाई दी है उनके बहु विवाह के दुष्परिणामो को भी खूब झिड़का है।[21] अरिसिंह को तो अनिष्टकारी बुद्धिमान बताया है।[22] जयपुर म महाराजा माधोसिंह और ईश्वरसिंह तथा राजमाता का षड्यन्त्र और मन्त्रिपरिषद की अदूरदर्शिता का नग्न स्वरूप प्रदर्शित करने म उसने कोई कसर नही रखी।[23]

जहा हम मध्यकालीन नरेशों के बल और पौरुष की प्रशसा उसकी

---

18 टाड एनाल्स पृ 136 आर पी भा 2 पृ 30
19 टाड भा 1 पृ 399 400
20 टाड ट्रवल्स पृ 34
21 टाड एनाल्स भा 1 पृ 372
22 टाड एनाल्स भा 1 पृ 496
23 टाड एनाल्स भा 3 अध्याय 6 पृ 1361-1362

कृति म पाते है वहां पिछले नरेशों की एकानता, राजनैतिक लघुता प्रात
रिक विरोध, चूडावत शक्तावत का वमनस्य जिसको उसने निर्दिष्ट प्रमाणित
किया है ।[24] साथ ही साथ उसने अजमेर के खानियो की कृति चारणों
व ब्राह्मणो की मांगने की प्रवृति कई नरेशो के सलाहकारों की तुच्छ नीति
को अच्छे लक्षण की सज्ञा म नही लिया है । जालमसिंह की प्रशसा[5]
की है तो जोधपुर के महाराजा भीमसिंह की निन्दा भी की है । इसी
प्रकार महाराजा जसवन्तसिंह की दिलेरी का बखान उसकी पुस्तक म मिलता
है वहां उसके औचित्य और मय को ठीक नहीं बतलाया है । उसने जस
वन्तसिंह की कभी अपने उत्थान की प्रयत्नशीलता म ही रुचि रखना बतलाया
है यह बतलाते हुए कि यदि वह जयपुर से मिलकर औरंगजेब की नीति
का विरोध करता तो राजस्थान का इतिहास ही दूसरा होता । विजयसिंह
के बारे म वह लिखता है कि उसके नसीब म विजय लिखी ही नहीं थी।
यदि मारवाड़ निबल हुआ तो उसमे गुलाबराय पासवान का प्रभाव एक बड़ा
कारण था ।[26] जसलमेर के बरीसाल, मूलराज और सालमसिंह के षड
यन्त्रों का पर्दाफाश करने म उसने कोई कसर नहीं रखी । वह लिखता है
कि जयपुर की राजमाता चूडावतजी पर महावत फीरोज का प्रभाव राज्य
को निबल करने म एक प्रमुख बिन्दु था । पुन वह लिखता है कि जगत
सिंह के समय एक दर्जी और बनिये की साजिश ने जयपुर राज्य की आर्थिक
स्थिति को निबल बना दिया था ।[27] जब हम उसे राजपूत जाति का प्रशसक
कहते है तो एक तथ्य पक्ष के दूसरे पहलू को नहीं देखते जिसने वस्तु
स्थिति पर पर्दा डालने की कभी कोशिश नहीं की ।

इस प्रशसा या निन्दा म कोई राजनीतिक चाल नहीं थी । वह
एक सच्चे इतिहास की झलक थी जो टॉड ने प्रस्तुत की थी । अतएव य
कथन निराधार है कि वह राजपूतो का चारण और भाट था या उनकी
प्रशसा उसकी एक राजनीतिक चाल थी । या वह हिन्दू मुस्लिम विद्वेष क
प्रकरण का जन्मदाता था । वास्तविकता तो यह थी कि जो उसने मूल्यां
कन म जैसा प्रमाणित हुआ उसने उसे उसी ढग से प्रस्तुत किया ऐसी

24 टाड एनाल्स भा 1 पृ 417
25 टॉड एनाल्स भा 3 पृ 1613–1619
26 टॉड एनाल्स भा 2 पृ 986–988
27 टॉड एनाल्स भा 2 अध्याय 13, पा पा न 58, टाड का पत्र का 1
टाड एनाल्स भा 3 पृ 1363

स्थिति में रक्तभेद या धर्म भेद आदि की चर्चा उनके दृष्टिकोण में बतलाना सर्वथा असंगत है।

टाड के एक पक्ष पर प्रकाश डालना आवश्यक है जो उसके कृतित्व तथा व्यक्तित्व से सम्बन्धित है। उसके रक्त में स्काटलैण्ड जैसे स्वतन्त्र प्रेमी सम्मान की पितृ परम्परा के संस्कारों का संपुट था। इसके पिता व प्रपिता ने वहां के स्वतन्त्रता का आन्दोलन की घटनाओं को देखा था। इंग्लैण्ड द्वारा अपनाई गई दमन नीति का रोष अब भी जागृत था। इनके दास्तानों का सुनकर बालक टॉड में स्वतन्त्रता प्रेम उत्पन्न होना स्वाभाविक था। दूसरा इसका जन्म फ्रांस की राज्य क्रान्ति के तीन वर्ष पश्चात् अर्थात् 1782 ई. में हुआ था। इंग्लैण्ड का जनमत फ्रांस क्रान्ति का पक्षधर था। फोक्स[28] के लेखों में फ्रांस की क्रान्ति के समानता स्वतन्त्रता और एकता के सिद्धान्तों का पूरा प्रतिपादन था और इन लेखों को सबत्र बड़ी रुचि से पढ़ा जाता था। वर्डसवर्थ और कालरिजी की कविताओं में भी इन भावों की स्पष्ट झलक थी जिनको इंग्लैण्ड में बड़ी मान्यता थी। बालक टाड इस जनमत के वातावरण में पनपा था और उसका आस्वादन किये हुए था। वह स्वयं एक प्रसंग में लिखता है कि मैंने मोन्टेस्क्यू, ह्यूम मिलकर तथा गिब्बन के ग्रन्थों का अध्ययन किया है और उन्हें भली प्रकार समझा है। हम जानते हैं इन महान विचारकों ने स्वाधीनता और स्वतन्त्रता के महत्व पर बहुत बल दिया है। मलहिन पिंकार आदि इतिहासकारों ने इन लक्षणों को स्वतन्त्रता के जागरण के अग्रदूत कहा है। टाड की स्वतन्त्रता प्रेम की यह पृष्ठ भूमि और उनकी इसके प्रति ममता को अनेक उनके लेखन में कई स्थलों में मिलती है। राजपूतों के स्वभाव की प्रशंसा में गहराई में पहुंच कर वह लिखता है— In domestic circle restraint is thrown aside and no authority controls the freedom of (their) expression वह फिर लिखता है Their independence is sacred

इसी स्वतन्त्रता की भावना का प्रयोग उसने अपनी नीति में भी खूब निभाया है यही एक प्रमुख कारण था कि उसके ऊपरीय अधिकारी उसके विचारों से सहमत नहीं थे। अभाग्यवश भारतीय सत्ता नीति के तीन[29] स्तम्भ उसके पूर्वज थे। वारेन हेस्टिंग्स सत्ताधारी नीति के पक्ष में वेरहमी का नजारा

---

28 टाड एनाल्स प. 147

29 एचीसन ट्रीटीज भा 3 प 102 103, 137 322 आदि।

अपनी काली करतूतें बता चुका था। वेलेजली की एलाइन्स नीति में शोषण की प्रतिक्रिया का नग्न नाच भारतीय रंगमंच पर प्रदर्शित किया जा सर्वविदित है। इसी तरह लार्ड हेस्टिंग्ज ने इसी नीति का परिवर्तन कर कई देशी राज्यों को दवाकर ब्रिटिश-भयुर के शिकार बना दिये थे। उदारवादी टाड को इस दूषित राजनीति के वातावरण में काम करना था। भला जन्म से स्वतन्त्रता के विचारों की जन्मघुटि से पालित टॉड इन अमानुषिक नीति का ठीक ठीक किस प्रकार परिपालन कर सकता था। वह अपने एजेन्ट पद से इस सत्तावादी नीति की आलोचना दबी जबान में करता रहा और इससे उसके विरोध की सामग्री इकट्ठी होती रही। यही कारण था कि वह केवल स्वतन्त्र अधिकार का प्रयोग केवल कुछ वर्ष ही कर पाया जिस अवधि में जोधपुर और सिरोही क्षेत्र उसके अधिकार से अलग कर दिये गये और जसलमेर और मेवाड़ के दायरे में भी उस पर अंकुश लगा दिया गया। स्वाभिमानी टॉड को विवश होकर अपने उत्तरदायित्व से मुक्ति लेनी पड़ी।

अपने 'एनाल्स'[30] में तो उसने 'एलाइन्स' नीति की जो भरकर निन्दा की है और अपनी सरकार को आगाह किया कि भारत में ब्रिटिश सत्ता इस नीति से स्थाई नहीं हो सकती। वह लिखता है—'With our presnt system of alliances so pregnant with evil from their origion would lead to fatal consequences

जब उसके ऐसे विचारों का खण्डन कर ऊपरीय अधिकारी उस अपनी नीति का समर्थन रियासतों के हितों में मध्ययुग की झांकी बतलाने लगे तो इसके प्रतिवाद में उसने लिखा कि जो पवित्र सतयुग की दुहाई आप देकर राजाओं को गुमराह कर रहे हैं वह ठीक नहीं। मुझे सन्देह है कि क्या ये लोग अपने भालों का खूंटी पर टांक देंगे? क्या उनकी तलवारों का प्रयोग हल जोतने में किया जायगा और क्या उनकी ढालों का प्रयोग टोकरियों के लिए होगा?' ब्रिटिश सत्तावादी नीति का खण्डन करते हुए लिखते हैं— our glory is sumour than reality our con guest is like Alexnder is congusst वह हस्तक्षेप नीति के विरोध में साहस से लिखता है कि इन राज्यों में हस्तक्षेप करना घातक प्रमाणित होगा और इससे विवाद और झगड़े बढ़ेंगे। यदि हम इनके विरुद्ध शस्त्रों के प्रयोग से दमनीय नीति को अपनायेंगे तो वह नीति इन राज्यों के लिए धूमकेतु बनेगी। यदि हम इनका विनीनीकरण करेंगे और राज्य का विस्तार करेंगे तो इसका फल यह होगा कि हम उनमें उनकी प्रसन्नता छीन लेंगे

30 टॉड एनाल्स भा। पृ 147 152

और हमसे अपना स्वाइत्व छीना जायगा। ये लोग हमारे तभी तक मित्र बने रहगे और अच्छे मित्र साबित होंगे जब तक उन्हें अपने परम्परागत अधिकार तथा सत्ता को बनाय रखने का आश्वासन न दिया जायगा और जब तक उनक आतरिक मामलो मे जसा कि किया जा रहा है, हस्तक्षप अनुचित होगा।

बमे टाड क उच्च अधिकारियो के लिए टॉड के ये विश्वास मिथ्या एव ममता पूर्ण दिखाई दिया परन्तु उसके पीछे आन वाले लाड बर्निग म भी अपन पत्रो म स्पष्ट स्वीकार किया है कि ब्रिटिश राज्य यहा क स्वतन्त्रता क विचारों का तभी मुकाबला कर सकेगा जब तक उनका जहाजी बडा मजबूत बना रहेगा अन्यथा यहा ब्रिटिश राज्य 50 वष स भी अधिक नहीं टिकने पाएगा। देखिये टाड के विचारो की सगति किस प्रकार बर्निग जस मतावा ी पराक्ष व अपरोक्ष रूप म समथन करते हैं। ये टॉड क इतिहास लखन की गरिमा है जिसका पहुच पाना दुसाध्य है। रोस ने अच्छ इतिहास लखन की महा म स्पष्टवादिता सत्यान्वेषण और साहस को प्राथमिकता दी है। इस गुण का समावेश टाड की इतिहास कृति म पूणत पाया जाता है। वह मानता था कि जहां हम किसी जाति क धम मान्यता व स्वतन्त्रता पर आघात पहुचाते हैं तो हमारी भी वही गति होगी जो विश्व क बड-बड राज्यो का रमी प्रवृति के फलस्वरूप हुई थी। इस प्रकार को बात अपन सत्तावादी स्वामियों को रुचिकर नही हुई जो एक कटु सत्य था।

टॉड की कृति म कई ऐसे स्थल हैं जहा लखन म चित्रण का समावेश है जिसे Pen picturing कहते है इतिहास म घटनाओं की उपस्थिति का चित्रण कर उसने उसे प्राणवान बनाने म कमाल किया है। आबू के शिखर की चोटिया स प्राकृतिक छटा का वणन जिसम नदी नाले घाटियां मसनन मदान हरे-भरे खेत सम्मिलित हैं एसे दर्शाये गये हैं कि व एक साथ आंखों क सामने नाचन लगते हैं। यहा तक राजस्थान के सूखे मरुस्थल के वणन म आत्मा का फूक कर छोटे घास फूस, दुष्प्राप्य ओसिस चमते विरल रसीले टीले व बनती-बिगडती झोपडिया के दिखाव में उसन कमाल ही दिखाया है। जब उसकी कलम तक्षण क विश्लेषण में उतरती है तो हाव-भाव नाच-गाना वस्त्र और आभूषण वाला मूर्तियो का साक्षात्कार आखो क सामने उतर कर हृदयगम हो जाता है। रणकपुर चढोली कीर्तिस्तम्भ, मण्डार क नारेय आदि का स्पष्टीकरण जितना सुनने क द्वारा नही हो सकता वह उसकी लेखनी ने चित्रित कर दिया है।[31]

31 टाड एनाल्स भा 1 पृ 275 277 289, 290, 515 670, 671 भा 2 756-61 टॉड ट्रवल्स, पृ 94-96

जहां सामाजिक तथा धार्मिक जीवन के इतिहास का प्रश्न है टॉड ने उसको प्रथम बार उजागर किया है। यह परिपाटी श्यामलदासजी व ओझाजी के इतिहास में नहीं देखी जाती। मेरी तो मान्यता है कि जितना राजनीतिक इतिहास उसने लिखा है उसमें भी अधिक उसने जन जीवन, जाति गत रस्म-रिवाज, धार्मिक मान्यता त्यौहार आदि के बारे में हमें जानकारी दी है। जहां-जहाँ वह गया वहां की उपज पशुधन, खनिज, आबोहवा उसकी आँखों से ओझल न हो सके जिन्हें उसने अपने लेखन में उचित स्थान दिया। यहां तक कि सिवार कुएं वादित्र खाद्य व्यवस्था व औषधियों का प्रभाव आदि के वर्णन में उसने कमाल कर दिया। मेर, भील, भाट आदि के रस्म रिवाज और जन-जाति में यहां तक कि नरबली के वर्णन में जान डाल दी। अक्षयतृतीया फाग होली दीवाली नाग पचमी बसंत पंचमी रक्षा बन्धन, गनगौर सक्रान्ति आदि धार्मिक व सामाजिक पर्वों का चित्रण बड़ी खूबी से कर डाला और उनके अन्तर्गत कार्यक्रियां का बयान नहीं छोड़ा। इतिहासकार में एक अच्छे समाज शास्त्री का ज्ञान होना चाहिये और उसके जरिये इतिहास में बल प्राण प्रतिष्ठा हो सकती है, उसे हम टॉड को पढ़ कर सीखना होगा। उन्नीसवीं सदी में इस क्षेत्र को व्यापकता से सम्मान देना टॉड की महानता है।[32] टॉड के एनल्स में एक विशिष्टता विलक्षणता लिए हुए है। क्योंकि वह रोम, ग्रीस इजिप्ट, सीरिया आदि देशों के इतिहास व लोक कथाओं और महापुरुषों के चरित्र का अच्छा ज्ञाता था और जब उसने भारतीय इतिहास पुराण लोककथाओं की जानकारी सुनकर या पढ़वाकर ली तो उसे कई आख्यान और महापुरुषों के चरित्र में साम्यता दिखाई दी।[33] इस स्थिति से वह इस निश्चय पर पहुंचा कि सांस्कृतिक क्षेत्र में प्राकृतिक सीमाओं का कोई अवरोध नहीं है। जीवन व संस्कृति की धारा का प्रभाव अविरल रूप से युग-युगान्तर में प्रवाहित होता रहता है। इसका आधार मानकर उसने इस प्रवाह का वेग पश्चिम से पूर्व की ओर मोड़ा क्योंकि भारतीय वैदिक साहित्य की जानकारी के अभाव में उसे पाश्चात्य संस्कृति का समृद्ध ज्ञान पश्चिम से पूर्व की ओर ले गया। वास्तविकता तो यह थी कि वैदिक संस्कृति का प्रभाव व्यापक रूप से यूरोप व मध्य एशिया की ओर बढ़ा इस सूक्ष्म तत्व की ठीक पहिचान न होने से जैसा कि ऊपर लिख आये हैं कि राजपूतों को सीथियन और उनके रस्म

---

32 टॉड एनाल्स भा 1, पृ 74 79 85 86-91 140 141 168 180 आदि

33 टॉड, एनाल्स भा 1 अध्याय 1 2

रिवाज उस प्रसग व प्रश्व पूजन स्त्रियो की स्थिति का उनम जोड दिया।[34] कुम्भलगढ की वेदी को भी पाश्चात्य सत्यता का नमूना बतलाया । फिर भी विलक्षण बात यह था दिखाई देती ह कि टाड न सस्कृति के स्दरूप म एकता का अनुभव किया जो मानव एकता की आवाज का मूलाधार बना । यहा की जनजाति म कल्ट का समावेश राजपूतों म साथियन एव नीर म गगा तक से तुर्किस्तान, तोरणद्वार को बोधिक राम का लका यात्रा का मसोपोटा-मियन अभियान तथा प्राचीन यूनानी फारसी रोमन इजिप्शियन गोथ आदि नामो को Indo Gothic एव Indo sythenia की सज्ञा दी । हल्दीघाटी[35] की विशिष्ट और विशाल सेन की तुलना थर्मोपोली स कर क्षत्रफल और परिणाम की अपेक्षा भावात्मक घटना मे समानता का समावेश किया । फिर भी इन समानताओ म टाड को तुलनात्मक अध्ययन करन का दृष्टिकोण और सास्कृतिक समन्वय प्रणाली को प्रधानता दना इतिहास का एक उपान्य अग मानना समीचीन होगा ।

इतने बडे ऐतिहासिक धन सचय का पिटारा अब भी अन्वषको की ओर झाक रहा ह । हमारा कतव्य ह कि इसम ग्रान बान सचित घटनाओ को फिर से सजोया जाय । और जिन मान्यताओ का अनमाल युग की नीति और रीति म स्थान ह उन्ह दर्शाया जाय । विश्व एकता का जा सूत्र 'एनाल्स मे निहित ह उसका छोर ढूढा जाय । वश परम्परा का कडिया व पाश्चात्य व पूर्वीय देश अवस्था क पारस्परिक सम्बन्धों का ठीक स अनु सधान अपेक्षित ह । यदि हम इन विश्रखला एव श्रखला का तारतम्य बिठा सकें तो हम उस महान आत्मा को शाश्वत शाति का भागीदार बना सकग ।

कनल टाड म एक अच्छ व उदार प्रशासक होन क गुण थ । वह प्रजा पर अपनी सत्ता थोपने क बजाय उनकी वेदना समझन का प्रयत्न करता था । वह मानव भावनाओ का अच्छा पारखिया था । जब वह भीला क इलाका म गया और उनकी मनोवृति का अध्ययन किया तो उसन उनक उग्र स्वभाव तथा लूट कसोट की प्रवृति का विश्लषण करते हुए ठीक निरूपण किया कि भील प्रारम्भ से इस भूभाग के स्वामी थ जिनको उनस छीन लिया गया । ये बात उनको हरदम चुभ रही थी जिसका विस्फोट लूट कसोट का वृति म होता था ।

---

34 टाड, एनाल्स पृ 70 98

35 टाड एनाल्स, भा I पृ 393 - 394

अतएव एक उदार प्रशासक के रूप म वह अपनी यात्रा के वर्णन म लिखता कि उनके स्वामित्व का खजाना उनको जगलों की सम्पन्न को नि शुल्क उपयोग करने का द्वार हो लिया जाना चाहिये । यही कारण है कि भीलो के साथ की गई सधियो मे इस प्रकार की व्यवस्था मे टॉड का मार्गदर्शन बडा सहायक बना । न्याय सम्बन्धी नियम बनाने म भी उसका दृढ़मत था कि वह नियम या कानून नही है जिसम समानता और सद्भावना न हो। सरकार मा इसी प्रकार के विचार कानून के सम्बन्ध म लिये थ । व लिखते है कि— We Prcrose no rich innovation we wish to give no shock to the prejudice of any part of our subject withot wounding religious or caste feelings ।

टाड का हृदय द्रवित हो जाता है जब वह किसानों की स्थिति का वर्णन करता है । वह हमेशा लाग बाग बराड आदि के विरोधी रहा । उसने पंचवर्षीय एवं निश्चित लगान जो उसके पूर्व शासक मानते आये थे उसका विरोध किया । मेवाड म प्रचलित लाटा व कूता जिसे सभी ग्रामीण पसन्द करते थे वह भी उसका पक्षधर था । अपने 'एनाल्स म किसानो की दयनीय दशा पर टिप्पणी करते हुए उसने लिखा है कि किसान राजकीय दबाव की चक्की म पीसा जाता है वह ठीक नही है । गोला प्रथा तथा साहूकारी रिवाज का भी वह कभी पक्षधर नहा था जो उसके उच्च विचारों का प्रतीक है । इन सभी प्रथाओं की निंदा करते हुए वह लिखता कि यह सभी अव्यवस्थित समाज के पोषक तत्व है जिनका आधार लोभ और लूट की प्रवृत्ति मात्र है । एक प्रभुता व युद्ध मे जितना साहस था और कुचले हुए व्यक्ति के प्रति जितना मोह था [36] । आज के युग में सत्ताधारियों के लिये टॉड की नीति प्रेरणा स्रोत बन सकती है ।

कर्नल टॉड और मेवाड

कर्नल टाड 1806 म सिंधिया तथा अपने अधिकारी के साथ सब प्रथम मेवाड म आया । यहाँ महाराणा भीमसिंह से मिलने के अवसर ने उसे उस राणा के रहन सहन, बातचीत और व्यवहार म परिचित करा दिया । उसने महाराणा की प्रशंसा म लिखा है कि उसम एक सभ्य और शिष्ट राजा के पूर्ण लक्षण विद्यमान हैं । सम्भवत वह उसी समय से महाराणा का पूर्ण प्रशंसक बन गया । [37]

36 टॉड ट्रैवल्स, भा 1, प 19, 32, 208 201

37 टॉड एनाल्स, प 545

भाग्यवश महाराणा भीमसिंह का प्रशसक टाड मार्क्यूयस हेस्टिंग्ज के द्वारा 31 जनवरी 1818 ई के आदेश द्वारा राणा के दरबार मे उसका प्रतिनिधि नियुक्त किया गया और उसका शासकीय पद एजेन्ट टू द वेस्टन राजपूत स्टेट निरूपित हुआ जिसका वेतन 1500/ रू मासिक था । जब जहाज पुर के मार्ग से वह नाथद्वारा पहुचा तो उसको बधाई देने के लिए एक सरदार गया और वहा से लौटने पर उसने मोतीमगरी जो उदयपुर से 2 मील की दूरी पर है वहा उसके स्वागत की व्यवस्था की गई । राजकुमार जवानसिंह ने टाड को बिछाये हुए कालिन पर 1 माघ 1818 को अगवानी कर एक शानदार और शालीन ढग से स्वागत किया । कर्नल टाड राज कुमार के आचरण से इतना प्रभावित हुआ कि वह लिखता है कि राजकुमार मे प्रताप के वशज होने के विनम्र और शालीन गुण विद्यमान थे।[38] टाड को सूरजपोल द्वार से नगर में प्रवेश कराया गया और उसके ठहरने की व्यवस्था रामप्यारी[39] बाग मे की गई जो एक चाकोराकार भव्य भवन था जिसमे आवास के कई कमरे बीच मे दालान जिसके तीनो ओर बरामदे थे । महाराणा ने एजेन्ट की महमानदारी मे एक सौ थाल मिठाई मेवे व फलो के भेजे साथ ही एक हजार रू की थैली सेवको को बाटने के लिए भेजी गई ।

दूसरे दिन टाड को चार बजे राजप्रासाद में निमन्त्रित किया गया और अगवानी मे मन्त्री, मुसद्दी, सरदार और राजकीय लवाजमा भेजा गया । इसकी सवारी भटियानी चोहटे से जगदीश चौक होती हुई महलो पहुची । स्वय टॉड ने राज महलो तथा मार्ग मे जन समुदाय भाट गायक आदि के उल्लासो का अच्छा वर्णन किया है । त्रिपोलिया और गणेश ड्योढी होते हुए उसे ले जाया गया जहा बाजीराव के साथ महाराणा की भेट हुई थी । मखमल की दरी पर गद्दी थी और उसके सामने एजेन्ट को बिठाया

---

38 वही पृ 549 हकीकत बही मे भीमसिंह ने टाड का औपचारिक पुन स्वागत लवाजमे तथा सरदारो के साथ सूरजपोल दरवाजे पर किया। हकीकत पृ 46

39 रामप्यारी महाराणा हमीरसिंह (द्वि)की कृपा पात्र दासी थी जिसका राज दरबार के काम मे बडा प्रभाव था । ये बाग पुराने तोपखाने के निकट स्थित है जिसमे आजकल राजकीय आयुर्वेद रसायनशाला तथा एक शोध संस्थान चलता है । मुख्यद्वार पर कर्नल टाड के नाम की एक प्लेट भी लगी हुई है । भवन अब जीर्ण सीर्ण दशा मे है ।

गया और उसके सेना और मन्सार व पासवान तथा पीछे अनुचरों की पंक्ति थी। कुछ समय बातचीत के उपरान्त अतर पान की रस्म अदा की गई और उसे एक हाथी व घोड़ा मय साज-सज्जा के कण्ठी आदि उपहार में दिये गये।[40]

उस दिन महाराणा भी एजेन्ट की रेजीडेंसी गये और औपचारिक चर्चा व भेंट में सज्जा युक्त हाथी, घोड़े, शाल दुशाले व कीमती वस्त्र व जवाहरात से आपसी सम्मान की रस्म अदा की।[41]

कर्नल टाड के साथ इन चार वर्षों में (1818 1821) में महाराणा का सम्पर्क इतना घनिष्ट हो गया कि दशहरा, दीपावली होली आदि त्यौहारों तथा चौगान पर हाथी घोड़े भैंसे आदि की दौड़ व लड़ाइयां में टाड का आमन्त्रित किया जाना था और हर समय बड़े सम्मान के साथ शिष्ट की रस्म अदा की जाती थी जिसका विशद वर्णन महाराणा भीमसिंह की हकीकत बहियों[42] में उपलब्ध है। इस प्रकार के सम्पर्क से दोनों के मधुर सम्बन्ध रहने और शिष्टाचार पूर्ण व्यवहार की जानकारी हमें मिलती है। कोई भी उत्सव या त्यौहार राजकीय रूप में मनाया जाता था टाड की उपस्थिति उसके मेहमानों के साथ होना अनिवार्य सा होता था।

जब टॉड मेवाड़ का एजेन्ट बनकर आया उस समय लगातार पूर्व के तीन चार महाराणाओं के बालक या अयोग्य होने और राज्य प्रबन्ध में अव्यवस्था, सरदारों में फूट और राज परिवार में गृह कलह आदि होने से मेवाड़ की आंतरिक स्थिति बहुत बिगड़ गई थी। मराठों के समय-समय पर होने वाले आक्रमणों ने जन-जीवन को ग्रस्त व्यस्त कर दिया था। राज्य की आर्थिक व्यवस्था ऐसी खोखली हो चली थी कि राजकोष में आने वाली रकम मुकातदारों की जेबों को भरती थी। जागीरदारों ने भी खालसा भूमि का अधिकांश भाग अपनी-अपनी जागीर में सम्मिलित कर दिया था। सरकारी चुंगी की वसूली प्रायः रूप से अधिकारी ही हड़प लेते थे। केवल भीतरी गिर्वा के परगनों व आस पास के गांवों से सरकारी रकम वसूल होने पाती थी। चारों और डाकुओं के आतंक से जन और धन की हानि होना एक स्वाभाविक घटना बन चुकी थी। चूंडावतों और

---

40 टॉड, एनाल्स, भा 1, पृ 549 550 42 वही पृ 551-55
41 वही पृ 553
42 हकीकत बही, महाराणा भीमसिंह न 25 27, 28

शक्तावतों का पारस्परिक विरोध बढ़ता जा रहा था। महाराणा का राज-काज चलाने के लिए इधर उधर से कर्ज का प्रबन्ध करना पड़ता था। छोटे-मोटे सरदार भी विरोध के मार्ग को अपनाने पर तुले हुए थे। भील भी जंगली इलाकों में लूट खसोट पर उतारू थे।[43] अतः मेवाड़ की स्थिति शोचनीय थी इसमें कोई सन्देह नहीं परन्तु इस स्थिति का चित्रण जो टाड ने किया है वह अतिरंजित अवश्य है। जब टॉड 1806 में सिंधिया की सेवा में रहने वाले एक राजपूत के साथ पहले-पहल मेवाड़ में आया तो उसने जैसा कि वह लिखता है कि मेवाड़ की दशा अच्छी थी परन्तु जब एजेन्ट के रूप में 12 वर्ष के बाद दुबारा आता है तो वह लिखता है "जहाजपुर होकर कुम्भलमेर जाते हुए मुझे एक सौ चालीस मील में दो कस्बों के सिवा और कहीं मनुष्य के पैरों के चिह्न तक नहीं दिखाई दिये। जगह जगह बबूल के पेड़ खड़े थे और रास्तों पर घास उग रही थी। उजड़ गावों में चीते सूअर आदि वन्य पशुओं ने अपने रहने के स्थान बना रखे थे। भीलवाड़ा जो एक सरसब्ज कस्बा था, तथा मेवाड़ में व्यापार का केन्द्र था और जहाँ 6000 घरों की आबादी थी बिल्कुल उजड़ गया। महाराणा का केवल उदयपुर चित्तौड़ तथा माण्डल पर अधिकार रह गया था और सेना रखने के लिए उसके राज्य की आय काफी न थी। उस समय राज्य की आर्थिक दशा ऐसी थी कि महाराणा को अपने खर्च के लिए कोटा के जालिमसिंह झाला से रुपये उधार लेने पड़ते थे। मेर और भील पहाड़ों से निकल कर मुसाफिरों को लूटते थे। रुपये का सात सेर नमक बिकता था क्योंकि मेवाड़ के बाहर खतरे थे। महाराणा के तबेले में 50 सवार भी नहीं रहते थे और कोठारिया का सरदार जिसकी जागीर की सालाना आमदनी पहले 50 000 रुपये थी अब एक भी घोड़ा रखने की स्थिति में नहीं था।"[44]

वह फिर एक जगह लिखता है कि उदयपुर में जहाँ 50 हजार घर आबाद थे वहाँ केवल तीन हजार रह गये थे। तो आश्चर्य की बात है कि स्वयं लेखक जब रामप्यारी बाग से राजप्रसाद जा रहा था तो वह लिखता है कि हजारों नागरिक स्त्रियाँ बाल बच्चे कतारों में उसका जय

---

43 टाड, एनाल्स भा 1 पृ 553-555 ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास भा [illegible] पृ 673 703

44 टॉड एनाल्स भा 1 पृ 554 555 ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास भा 2 पृ 702 703

जयकार कर रहे थे और वंदना में मत्य गान और कविता को बड़े चाव से दगा व सुना जा रहा था। यहां तक कि लोग उसको पारितोषक दकर प्रोत्साहित कर रहे थे। महल के प्रांगण में भी बड़ी भीड़ थी इस विवरण स तो लगता है कि उदयपुर की आबादी तीन हजार पर मे कई गुना अधिक थी।[45]

ऊपर के वर्णन में अनेक विरोधाभास हैं जिनको महाराणा अरिसिंह (द्वि)भीमसिंह तथा जवानसिंह की हकीकतो खतूनियों और भण्डारों के रिकार्डों से स्पष्ट किया जा सकता है। जहाजपुर से कुम्भलगर के एक सौ चालीस मील में टॉड को एक भी मनुष्य के पद चिन्ह न मिलना निराधार है। क्योंकि उपरोक्त साधनों से इस भू भाग से जिसका जिक्र टॉड ने निरजन होने का लिखा है वह आबाद था और उसके अन्तर्गत सैकड़ो गावों से लगान चुगी आदि वसूल होते थे। भीलवाड़ा को भी वीरान बताया गया था और यह दावा किया गया था कि टॉड के आने पर लोग हर्षोल्लास से लौट रहे थे। परन्तु तत्कालीन साधन इस बात के साक्षी है कि उस अवधि में वहां हाट और बाजार लगते थे। महाराणा के पास केवल उदयपुर, चित्तौड़ और मांडलगढ़ रह गये थे इसमें भी सत्य कम है। हुर्डा, मंडाडा भीतरी गिर्वा, जावर आदि भागों का लगान व दाण राजकोष में जमा होते थे। यहां तक कि जावर स 50 000 का राज्य की वार्षिक आय होती थी।[46]

भीमसिंह की आर्थिक स्थिति के सम्बन्ध में टॉड लिखता है कि जालिमसिंह (कोटा) तथा बापना से कर्ज लेकर अपना दैनिक व्यय की व्यवस्था करनी होती थी और अपने गहने जेवर भी बेचना पड़ा था। परन्तु पाड़ की ओवरी का बहियां और राज्य की आय-व्यय के लेखा की बहियां से ऐसी स्थिति नहीं लगता। रोजमर्रा की पोशाक और मान व जवाहरात भीमसिंह उपयोग में लाते थे और त्योहार पर तो इससे भी अधिक मूल्य की पोशाक और आभूषण काम में लाये जाते थे जो कपड़द्वार भण्डार और पाण्ड की ओवरी में लिए जाते थे, और उन्हें दैनिक बहियों में दर्ज किया जाता था।[47]

इसी तरह वह लिखता है कि महाराणा के पास पचास घोड़े

---

45 वही भा 1 पृ 550 बही न 25 नगीनाबाड़ी वि स 1875
46 हकीकत बही अरिसिंह(द्वि) व हकीकत बही भीमसिंह 1875-1880
47 पाड की ओवरी व कपड़द्वार बहिया 1861 1885

नही थे जो अपनी सवारी के अवसर पर उपलब्ध हो। वस्तुत स्थिति ऐसी थी कि महाराणा के तबेले म नए नए घोडे खरीद कर दाखिल किए जाते थे उनकी सूची और उसकी नामावली पचास से कई गुना अधिक थी। तबेले भी दस के लगभग थ। जिनम घोडे रख जाते ■ और खास घोडो को खापसी रोजाना दी जाती थी। खाना की पायगा नौका की पायगा सरणा की पायगा दसा की पायगा फुटकरयारी पायगा और बडी पायगा उस उस समय की प्रमुख घुडसालें था[48]। बडा हास्यपद लगता है कि कोठारिया के सरदार के पास महलो म जाने के लिए एक भी घोडा नही था।

कनल टॉड की नियुक्ति महाराणा की सत्ता को प्रभावशील बनाने तथा उनके जागीरदारो द्वारा दबाये गय खालसा के गावो को पुन प्राप्त कराने मेवाड की आर्थिक स्थिति को सुधारने खिराज की समयगी समय पर कराने म सहायता करने के लिए की गई थी।[49] इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसके कायक्रम म सबस पहले प्राथमिकता महाराणा और जागीरदारो के सम्बन्ध को दी गई। उनके दरबार म हाजिर रहने कुछ घोडो के साथ राजधानी म बने रहने तथा खालस के गावो को वापस दिलाने आदि ऐसे विवादग्रस्त प्रश्न थ जिनको लेकर महाराणा और जागीरदारो में तनाव बना रहता था। इस विवाद को सुलझाना आवश्यक समझ कर कनल टाड ने महाराणा और जागीरदारो की बैठको ■ भाग लिया और उस मसले का समाधान ढूढा गया परन्तु सरदारो को वश म करना साधारण बात नही थी क्योकि वे न तो दबाये गये गावो को ही लौटाना चाहते थे और न महाराणा की इच्छा अनुसार अब जमीयत के दरबार म लम्बे समय तक रहकर चाकरी देना चाहते थ। वे अपने प्राचीन सामन्ती अधिकारो को यथावत बनाये रखने पर अडे हुए रहे थ। महाराणा भीमसिंह की हकीकत बहिया[50] से लगता है कि लगभग कार्तिक वद 1876 स कार्तिक 7 तक महलो जगनिवास भीमविलास आदि स्थानो म तीसरे प्रहर से रात तक समझौते सम्बन्धी बैठकें लगातार चलती रही। एक दिन तो रावत अमीर

---

48 हकीकत बहियां 1861 1880

49 एडम का पत्र टाड को 3 फ कान्स 6 मार्च 1818 न 7 पा सा प्रा दिल्ली एडम का पत्र मेटकाफ को, 2 फ कान्स, 6 मार्च 1818 न पो सी दिल्ली

50 महाराणा भीमसिंह की हकीकत बही वि स 1876

सिंह इतना उत्तेजित हो गया कि कर्नल टाड ने उसका विरोध किया और वह उठ कर चल दिया। जो सरदार विरोध कर रहे थे उन्हें स्वयं महाराणा ने रात में समझाया। अंत में 5 मई 1818 को 15 घण्टे के वाद-विवाद के बाद एक कौलनामा तयार किया गया जिस पर बेगू के सरदार ने सबसे पहले हस्ताक्षर किये और तब आमेट देवगढ़ आदि ठिकानों के सरदारों और अन्य सरदारों के प्रतिनिधियों ने अपने-अपने हस्ताक्षर कर दिये। शक्तावतों के मुख्य सरदार ने सबसे अंत में अपने हस्ताक्षर किये।

कौलनामे की कुल दस धाराओं में सरदारों द्वारा दबाई गई खालसा भूमि को लौटाना, व्यापार बिस्वा कर आदि राज्य के हक परित्याग, अपने ठिकानों में चोरी न होने देने, देशी या परदेशी सौदागरों बनजारों आदि व्यापारियों की रक्षा करने, महाराणा की आज्ञानुसार सेवा करने, प्रजा के साथ सद्व्यवहार करने, कौलनामे का पूर्ण निर्वाह करने और कौलनामे की शर्तें नहीं मानने वाले सरदार को उचित दण्ड देने का प्रावधान था।[51]

महाराणा भीमसिंह ने इन शर्तों के अन्तर्गत ठिकानों व खालसे के गावों की जांच पड़ताल शुरू की और जागीरदारों से अपने असली पट्टों को मंगवाया। पट्टा बही न. 80 संवत 1877 से ज्ञात होता है कि जिनके पास पट्टे थे और उनके गावों का विवरण था उन्हें छोड़कर बाकी के गावों को खालसा कर लिया गया और जिनके पट्टे नहीं पेश हुए, उदाहरणार्थ भीण्डर उनके गावों को ठिकाने के बड़े बूढ़ों की याद के अनुसार नये पट्टे कर दिये गये।

परन्तु फिर भी कौलनामे पर पूरा अमल नहीं होने पाया, जिससे सन 1827 में कप्तान कोब को दूसरा कौलनामा तयार करना पड़ा।[52] टाड के चले जाने के बाद अंग्रेज अधिकारी वर्गों ने 1853 में सारी स्थिति की पुनः जांच की और टॉड के कौलनामे की आलोचना की गई। क्योंकि उसने छटूंद के जमा कराने का दायित्व सरदारों पर डाला था और वे इसका विरोध कर रहे थे। परन्तु टाड के समर्थन में यह कहना है कि

---

51 कौलनामे की धाराओं के लिये देखें इस पुस्तक में प्रकाशित लेख जेम्स टाड का मेवाड़ सामन्तों के साथ कौलनामा पृ 142-45

52 ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास भा 2, पृ 709

पुरानी सामन्ती व्यवस्था के प्राचीन ढाचे को भग्न कर महाराणा की सत्ता की पुनर्स्थापना का प्रयत्न किया था क्योंकि पुरानी व्यवस्था को कायम रखने के बहाने सरदार अपने अधिकारों पर तो बल दे रहे थे परन्तु महाराणा के प्रति अपने कर्त्तव्यों की उपेक्षा कर रहे थे जो सर्वथा मान्य नहीं था। उनके विचार में परम्परागत संस्थाएं विकास और सुधार में बाधाएं उपस्थित कर रही थी उनके बने रहने का कोई औचित्य नहीं था और टाड का प्रयत्न व्यवस्था स्थापित करने का स्तुत्य प्रयास था।[53]

कर्नल टॉड का दूसरा महत्वपूर्ण काम मेवाड की आर्थिक स्थिति में सुधार लाना था क्योंकि उस समय 30 000 रु से अधिक राजस्व की आय न थी। टॉड ने 1818 ई की राज्य की आय 120000 बताई है जो बढकर 1821 ई में 8 77 034 रु हो गई और 1822 में 11-12 लाख रु तक अनुमान किया गया। महाराणा भरीसिंह की हकीकत बही में केवल जावर की खान से आय 50 हजार रु थी तो टॉड के आकडे टाड के आंकडों से अधिक विश्वस्त दीख पडते है। लगता है कि कर्नल टाड ने आय को कम बतलाकर बढी हुई आय बतलाने में उसने अपनी उपस्थिति का ढिन्डोरा पीटना चाहा हो। अपने समय के आर्थिक सकट की पुष्टि में जोरावरमल से कर्ज दिलाकर महाराणा के दैनिक व्यय के लिए 18 रु प्रति सैकडा ब्याज दर से 1000 रु स्थिर किया। सूद के देने के लिए वह समय समय पर महाराणा को पत्र भी लिखता रहता था। एक दो पत्रों[54] में टाड ने लिखा कि आप भीम पलटन बनाकर और राज परिवार को खालसे की जमीन देकर राज्य की आय व्यवस्था का सतुलन बिगडा रहे हैं। ऐसी हालत में कर्जदारो के सूद की अदायगी कैसे होने पायगी? इस प्रकार की चिठ्ठियों में स्पष्ट है कि टाड महाराणा के शासन में सधि के विरुद्ध हस्तक्षेप करने लग गया था जिससे महाराणा तथा उसके अधिकारी वर्ग में ब्रिटिश सत्ता की ओर असतोष की भावना पनपने लगी थी। सभवत इस स्थिति का समझकर टॉड शनै शनै आतरिक शासन प्रबन्ध से अपना हाथ खींचने लगा था जो उस समय के उसके पत्रों व्यक्ति से होता है।

राज्य आय की वृद्धि हेतु सुधार के लिए टाड ने कई स्थानो की

53 हेनरी लारेन्स का पत्र सेक्रेट्री गवर्मेन्ट को दि 21 अगस्त 1855 कान्स 4 जनवरी 1857, न 115 फो पा 51 वशिष्ठ टाड (पा लि)

54 कर्नल टाड के पत्र दि 1877 म स 13, म अ केंद्र

चूंगी वसूली का काम मुकातेन्दारो को सुपुर्द किया और पुराने मुकातेन्दारो को यथावत् बनाये रखा । इन चूंगीयो के नाकों से होने वाली आय राज्य की आय का मुख्य साधन था । उसके कुछ एक पत्रों [5] से प्रमाणित होता है कि वह इस आय स्रोत से वसूली में महाराणा की सहायता करता था और उससे इस सम्बन्ध में आश्वस्त रखता था ।

राजस्व वसूली में भी उसने कमादारों व अपने चपरासियो द्वारा वसूली की व्यवस्था की थी । इस दूसरे प्रबन्ध से यह आशय था कि राज्य के कामदार यदि वसूली में ढिलाई करें तो उसके चपरासी वसूली में अनियमितता पर रोक लगा सकें । आशय तो ठीक था क्योंकि अराजकता के कारण राजकाय कामदार वसूली में अपने स्वार्थ की सिद्धि करते थे जिस पर चपरासियों द्वारा उन पर अकुश रखा जा सकता था । परन्तु इस द्वध प्रबन्ध से कृषकों को असुविधा होती थी और अपने अदायगी में कभी-कभी चपरासियों का दबाव भी असहनीय हो जाता था । आगे चलकर य व्यवस्था बद कर दी गई । [6]

ये तो ठीक है कि मराठा के आक्रमण और सरदारो के लूट-खसोट में भागीदारी के कारण कई व्यापारी मेवाड छोडकर अन्यत्र चल गये थे । कनल टाड ने घोषणा-पत्र निकाल कर किसानो और व्यापारायो को पुन लौटने और उनकी सुरक्षा का आश्वासन दिया । फलत कई व्यापारी पुन मेवाड लौट आए । परन्तु यह सारा श्रेय कर्नल टाड को नहीं जाता । महाराणा भीमसिंह ने भी राजस्थान मध्यप्रदेश और संयुक्त प्रान्त के व्यापारियों को समय-समय पर लगने वाले हाटो में आमन्त्रित किया था । एक आदेश में महाराणा ने स्थानीय जागीरदारों को आगाह किया कि वे अपनी अपनी अमलदारी के व्यापारियों को श्री एकलिंग जी में होने वाली एक धार्मिक मेले में भेजें जिनकी सुरक्षा की व्यवस्था सरकार देगी और उनसे माल की चुगी माफ कर दी जायगी । महाराणा ने जयपुर सीरोज प्रयाग और पंजाब आदि प्रान्तों में भी ऐसा आशय के घोषणा पत्र भेजे थे । इस प्रकार के घोषणा पत्रों से मेवाड की सुव्यवस्था पर तथा राज्य की आर्थिक

---

55 पत्र टॉड का भीमसिंह के नाम से 1876 का वि 6 म प के बही में 1877, बस्ता न 14,
56 टॉड का पत्र मेटकाफ दा 26 अप्रेल कोम 12 जून 1819 न 34 35 फो पो न आ दि 51 वरिष्ठ पा सो पृ 32

नीति पर प्रकाश पड़ता है। महाराणा ने इन्दौर से सेठ जोरावरमल को उदयपुर में बुलाकर उसकी पेढ़ी स्थापित की। नये ढंग से किसानों को सहायता देने, चोर व लुटेरों को दण्ड दिलाने और राज्य में शान्ति स्थापित करने में अपना सहयोग दिया।[57]

टॉड के सम्बन्ध में जो आलोच्य बिन्दु है उससे लगता है कि टॉड का मानस मनोनुकूल रूप से मेवाड़ के साथ मधुर सम्बन्ध बनाये रखने का था परन्तु कुछ बातें व्यवस्था की बढ़ा चढ़ाकर सम्भवतः उसने इसलिए लिख दी क्योंकि प्रभुसत्ता की नीति का औचित्य भी उसे बतलाना था। दोनों पक्षों में समन्वय बनाये रखना उसका चातुर्य और कार्य-कुशलता का प्रमाण है।

—

57 महीवालों का हिसाब भीमसिंह के समय का रजिस्टर नं 1 म स प्र के टॉड राजस्थान भा 1, पृ 555 562, ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, भा 2 पृ 706 709,

कालजयी अमर इतिहासकार टॉड

--एडवोकेट स्वरूपसिंह चूण्डावत

कर्नल जेम्स टाड का ग्रन्थ "राजस्थान (एनल्स)" आज विश्व में एक अमर कृति बन गई है। उसमें एक साथ तीन गुणों का समावेश है। राजस्थान का वैज्ञानिक ढंग से लिखा हुआ पहला इतिहास ग्रन्थ है, साथ ही उसकी भाषा में एक महाकाव्य की मान्यता है। इन दोनों गुणों के साथ वह समाजशास्त्र का भी एक अनुपम ग्रन्थ है। इस प्रकार यह एक गाथा (महाग्रन्थ) है। और इसी के फलस्वरूप वह काल की सीमाओं को लांघ कर आज भी अमर है।

ओझा जी ने टाड को राजस्थान के इतिहास का पिता कहा है। पर कानूनगो ने बहुत ही ओज पूर्ण शब्दों में लिखा है कि टॉड के रूप में राजस्थान को हेरोडेटस मिल गया।

टाड की महानता लोगों ने स्वीकार न कर उसको समझने का प्रयास नहीं किया। उसने अल्पकाल में जो सेवा की है वो भुलाई नहीं जा सकती है। 1799 में वह भारत में आया व 1822 में चला गया। इस अल्प अवधि में उसने कई रूपों में विविध आयामों में जो राजस्थान की सेवा की है उतनी एक विदेशी होते हुए कोई व्यक्ति न कर सका।

सर्वप्रथम उसने इस पूरे प्रदेश का सर्वेक्षण किया व एक सही नक्शा बनाया। इसके पहले कोई मानचित्र न था व जो थे पूरे एकदम गलत थे। नक्शा बनाने के बाद वह पोलिटिकल एजेंट बनकर आया और सारी व्यवस्था की। आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के लिये व्यापक प्रयास किये व सामन्तों के साथ कौलनामे किये। तदन्तर सारी ऐतिहासिक सामग्री को इकट्ठा कर राजस्थान का इतिहास लिखा जो एक अनुपम कृति है। इसके फलस्वरूप राजपूत जाति की कीर्ति जो भारत में सीमाबद्ध थी वह भूमण्डल में फैल गई। टॉड ने ग्रीस के इतिहास से वीरों के उदाहरण देकर यह सिद्ध किया कि जिन वीरों पर यूरोप गर्व करता है उससे राजस्थान में तो कहीं अधिक वीर योद्धा हुए हैं।

1931 में द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में जब अंग्रेजों ने कहा कि यदि भारत को स्वराज्य दिया गया तो वह अपनी स्वाधीनता की रक्षा न कर सकेंगे तब उत्तर में गांधी जी ने टाड का उदाहरण देकर कहा कि राजस्थान में कोई गाँव ऐसा नहीं है जिसमें लानीडास जैसा वीर व कोई रण क्षेत्र ऐसा न हो जो थरमापोली से कम हो। अतः रक्षा करने में हम सक्षम हैं। अंग्रेज निरुत्तर हो गये क्योंकि ऐसा कहने वाला स्वयं एक अंग्रेज था।

एनल्ज की महाभारत से तुलना की जा सकती है। जो भारतीय वाङ्मय में महाभारत का स्थान है वही स्थान राजस्थान में टाड के एनल्स का है।

इस ग्रंथ के प्रकाशन के बाद भारत में मुख्यतः बंगाल में जिस प्रकार महाभारत की कथाओं से कालीदास माघ श्री हर्ष प्रभृति संस्कृत के साहित्य महारथियों ने नाटक चम्पू, काव्य उपन्यासों की रचना की उसी प्रकार इस आधुनिक महाभारत से बंकिमचन्द्र चटर्जी द्विजेन्द्रलाल राय प्रभृति विद्वानों ने नाटकों व उपन्यासों की रचनायें की है। समूचे भारतीय वाङ्मय को एक नया दृष्टिकोण मिला है। पहले भारतीय वाङ्मय में केवल पौराणिक कथाओं की व पात्रों की भरमार थी पर टाड के इन ग्रंथों के प्रकाशन के बाद ऐतिहासिक प्रजा की बाढ़ आ गई। हम यह अधिकार पूर्वक कह सकते है कि साहित्य या राजनीति में जो 19 वीं शताब्दी में पुनर्जागरण हुआ है वह टाड की देन है।

भारत को पहली बार महसूस हुआ कि उसके पास भी प्रताप दुर्गादास चूडा कुम्भा सांगा जैसे अप्रतिम वीर हैं जिन्होंने मध्य काल में अपनी अमिट छाप छोड़ी ऐसे चरित्रवान व्यक्ति किसी भी राष्ट्र के लिए गौरव की बात है और जिनके आदर्श मूल्य अन्धकार में प्रकाश दिखा सकते हैं।

इस प्रकार टाड राजस्थान के निर्माण के लिए एक अवतारी पुरुष सिद्ध हुआ। उस व्यक्ति की महानता व उच्चता इसी से प्रकट होती है कि उसने जो सम्राट जॉर्ज चतुर्थ को समर्पण किया है उसमें प्रार्थना की है कि जो महान जाति जिसने पूरे एक सहस्र वर्ष संघर्ष कर युद्ध अकाल अराजकता को पराजित किया है वो आपके संरक्षण में आई है। आपका कर्त्तव्य होगा कि इस महान जाति को शीघ्र ही पुनः स्वाधीनता प्रदान करें जो महान ब्रिटिश जाति के लिए एक गौरवपूर्ण कृत्य होगा। और इसी को उद्धृत करते हुए 1947 के जुलाई में जब भारत मंत्री लार्ड पैथिक लारेंस ने संसद में कहा कि हम जो स्वाधीनता भारत को दे रहे हैं उसकी नींव तो दूरदर्शी अंग्रेज विद्वानों ने पहले ही डाल दी थी।

हम मूल रूप में टॉड की देन को निम्नलिखित बिन्दुओं में अंकित कर सकते हैं—

1 सर्वप्रथम टॉड ने राजस्थान का मानचित्र बनाया।
2 संधि के बाद शासक के रूप में वह केवल 4 वर्ष रहा, पर शासन को सुदृढ़ कर दिया।
3 अर्थ प्रबन्ध सुचारु रूप में इस प्रकार किया कि पूरा उजड़ा हुआ परगना फिर बस गया और 4 वर्ष में आय 4 गुनी हो गई।
4 सामंतों के साथ बिना विवाद के कौलनामा कर उनको संतुष्ट कर दिया व सब तरह की शिकायतें व उपद्रव खत्म कर दिए।
5 इतिहास जो भाटों की वंशावलियों व ख्यातों तक सीमित था उसको पहली बार वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया फलतः उसका रचा इतिहास इतिहास की सीमाओं को लांघ कर एक सागर(महाग्रंथ)बन गया। जिस प्रकार महाभारत पंचम वेद बन गया उसी प्रकार टॉड राजस्थान(एनल्स)ग्रंथ केवल इतिहास ग्रंथ न रहकर एक विश्व कोष बन गया है। इसमें वीरों के चरित्र भूगोल समाजशास्त्र सामंती प्रथा की विवेचना यात्राएँ कृषि व खनिजों का विवरण राजपूतों की गौरव गाथाओं के साथ उनकी सामाजिक कुरीतियों इत्यादि सभी का समावेश है। जैसे महाभारत के लिए कहा गया है जो इसमें है वह अन्यत्र भी है और जो इसमें नहीं है वह और कहीं नहीं मिलता।
6 इसके उपरान्त जिस शैली में लिखा गया है उसके बारे में कहा गया है उसमें होमर व्यास व वर्जिल का समन्वय है। ऐसी भव्य शैली के दर्शन दूसरे ग्रंथों में नहीं मानते हैं। इसमें महाकाव्य की भव्यता दिखती है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है टॉड ने 'राजस्थान' लिखकर भारत भूमि को गौरवान्वित किया स्वराज्य का मार्ग प्रशस्त किया व राजपूत जाति की कीर्ति को विश्वव्यापी बना दिया। इस महापुरुष का ऐसा ही स्मारक बनाकर राजस्थान को उऋण होना चाहिए। पर चाहे राजस्थान इस कालजयी इतिहासविद का स्मारक बनाये या नहीं टॉड प्रत्येक राजस्थानवासी के हृदय में अमर बना रहेगा।

जब तक हल्दीघाटी के दिवेर के रण क्षेत्र कुंभलगढ़ व्यापें तब तक प्रत्येक राजपूत अपने घरों में जुझार की पूजा करता रहेगा और जब तक सारे संसार के पर्यटक प्रत्येक पुस्तक भण्डार पर टॉड राजस्थान क्रय करता रहेगा उस काल तक टॉड बिना स्मारक के ही अमर बना रहेगा। टॉड ने अपनी अमर कृति से काल व देश की सीमाओं को लांघ कर उन महान कालजयी वाणी के वर पुत्रों में स्थान बना लिया है जिनको मानवता कभी भी नहीं भुला सकती।